

Published by
DALSUKH MALWANLA
Secretary
RAKRIT TEXT SOCIETY
VARANASI-5

Price Rs. 10/-

Available from :

- 1 MOTILAL BANARASIDASS, NEPALI KUTRA Post Box 75 VARANASI.
- 2 CHAUKHAMBHA VIDYABHAVAN CHAWK, VARANASI
- 3 GURJAR GRANTHARATNA KARYALAYA, GANDHI ROAD, AHMEDABAD-1.
- 4 SARASWATI PUSTAK BHANDAR, RATAMPOLK, HATHIKHAKA AHMEDABAD-1.
- 5 MUNSHI RAM MANOHARLAL NAI SARAK, DELHI.

Printed by :-
JAYANTI DALAL
Vasant P Press
Gheekanta, Gheebhar's Wadi,
AHMEDABAD-1.

सिरिदेववायगविरह्यं

नंदीसुत्तं

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरह्याए चुण्णीए संजुयं

संगोधकः सम्पादकश्च

मुनिपुण्यविजयः

जिनागमरहस्यवेदिजैनाचार्यश्रीमद्विजयानन्दमूरिवर(प्रसिद्धनाम--भात्मारामजीमहाराज)शिष्यरत्न--
प्राचीनजैनभाण्डागारोद्धारकप्रवर्तकश्रीमत्कान्तिविजयान्तेवासिनां
श्रीजैनआत्मानन्दग्रन्थमालासम्पादकानां मुनिप्रवरश्रीचतुरविजयानां विनेयः

प्रा कृत ग्रन्थ परि ष द्,

वाराणसी-५

अहमदाबाद-९,

प्रकाशक ~

बलसुध मासपत्रिका

सैक्टर १ प्रेस बेस्ड सोसायटी

वाराणसी-५

सुरक १-

अपेक्षित इच्छा

वर्षा सिन्धीय प्रग

बीबांदा कैलाशजी बायी

अहमदाबाद-१

गंथसमप्पणं

वरमुयसायरवीईतरतमण-वयग-कायजोगाण ।
वरज्जिणआगमपयडणकरणे अपमत्तजोगाण ॥ १ ॥
जोगाजोगविहन्नुण नूण गभीग्गिमाए, गरिमाण ।
'आगमउद्धारय'वरउवाहिमंताण सताण ॥ २ ॥
आयरियपुगत्राण सागरआणंदसूरिणामाण ।
मह्णायसइसच्चावयाण दुसमम्मि कालम्मि ॥ ३ ॥
करकमलकोसमञ्जे ताणं सपट्ठ दिवगयाण मए ।
अप्पिज्जइ गथोऽय विणएण पुण्णविजएण ॥ ४ ॥

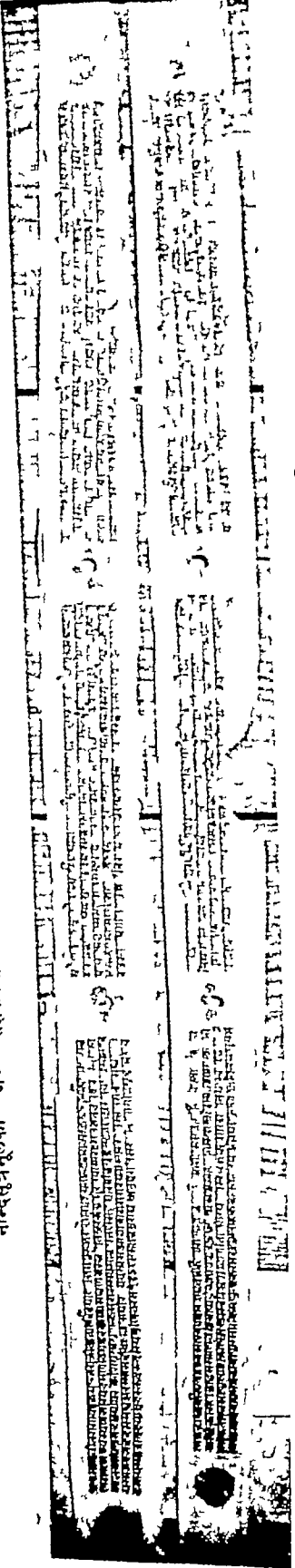
ग्रन्थसमर्पण

जिनका मन-बचन-कायबोग श्रेष्ठ श्रुतसागसकौ तरंगोमें तैरसा
था वो श्रेष्ठ विनागमके प्रकाशनमें अप्रमत्तयोगसे प्रवृत्त थे, योग-
अयोग के निबेद में कुशल थे, गाम्भीर्यगुणकी गरिमासे अलित थे,
'आगमोद्धारक'कौ श्रेष्ठ पदवीसे विद्युपित सन्त थे, और दुःखमहात्ममें
जिन्होंने अपने आपमें 'महानाद' शब्दको सत्य सिद्ध किया था ऐसे
साम्प्रत काळमें विरगत आचार्यश्रेष्ठ श्रीसागरानन्दसरित्रीके पवित्र
करकमल रूप कोपमें यह ग्रन्थ जिनमूर्ख समर्पित करता हूँ ।

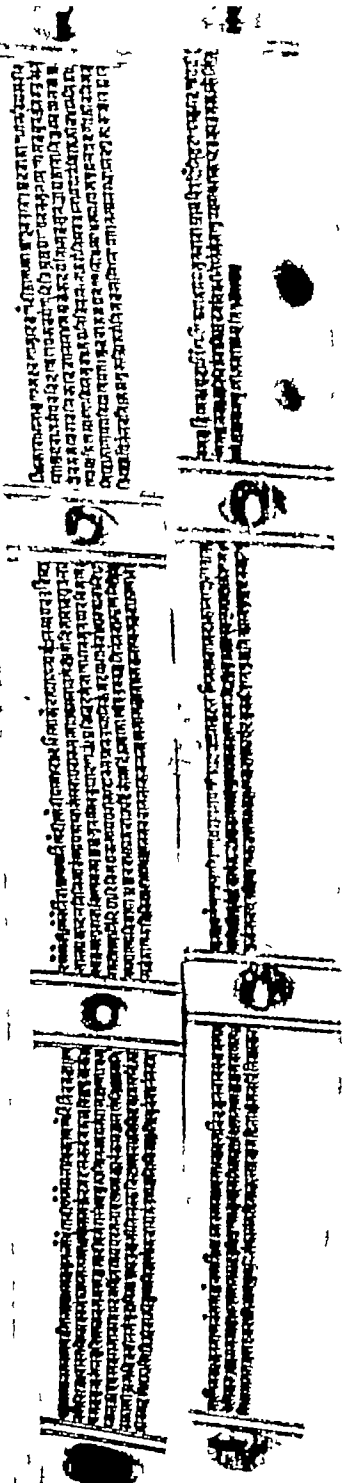
पुष्पविजय

नन्दिसूत्रमूलकी 'वे०' सहाकप्रतिके प्रथम पत्रकी प्रथम पृष्ठ और अन्तिम (२६वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ ।

नन्दिसूत्रमूलकी 'वे०' सहाकप्रतिके प्रथम पत्रकी प्रथम पृष्ठ और अन्तिम (२६वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ ।

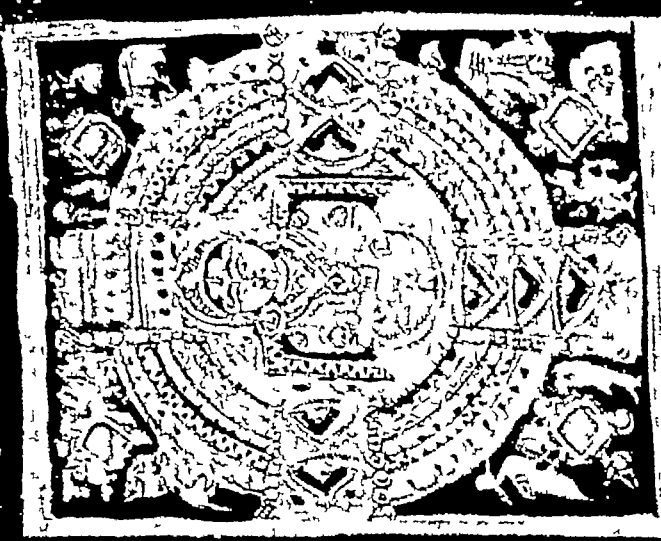


नन्दिसूत्रमूलकी 'ग०' सहाक प्रतिके प्रथम और अन्तिम (१९वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ ।



नन्दिसूत्रमूलकी 'वे०' सहाकप्रतिका जिन पत्रसे प्राप्त होता है उन १८वें पत्रकी और अन्तिम (२०३वाँ) पत्रकी द्वितीय पृष्ठ ।

परपत्रं श्रीहरश्चरितम् ॥ श्रीजासनाधिष्ठायकायतनम् ॥ श्री इहं रं दिशु रिसु रन्पा
कर्म ॥ इयश्चरजीवजागी विआणउङ्गुगणुङ्गुगाणवाडाङ्गनालाङ्गवश
इयश्चरगिआमालावया ॥ इयश्चरआणपर ॥ वा विवयराणअप्रबिमोङ्गयश ॥ इय
इयुलागाणइयश्मदप्यामदावीरा ॥ प्रनहसवैङ्गुयद्येअसभइङ्गिगसर्वी
रसाचहश्चरानमसिअसानहैबुअरयसा ॥ आयानवगागदणकुअरयणनरिअदसणदि
उहरवगा ॥ सधनगरनह ॥ तअकंउरशिवपागारा ॥ धसजमत
उपारिअह्वसा ॥ अण्डिवकसकंउलाउसयासधकसा ॥ य
स्सतवतियमउयउङ्गुवसा ॥ सधरदभनगतउससाया
कसरयङ्गलादविगागयसाकुअरयणदीदतालसा ॥ यवम
युगाकसरालसा ॥ शासव ॥ गङ्गाणमङ्कअरिपरिबुडसा ॥ इि ॥
पउमसभइसभागागभदसपवसा ॥ पलिवसकसमयलगाअकिरिअरजुडइरिसनिवै
ऊयसधवद तिमलसमचयिउहङ्गुवागा ॥ ए ॥ रंति ॥ उअगादयदनासगासातवातअदिता
लससा ॥ नाणुड्याअसङ्गराहदसमधससा ॥ णानहधिश्ललागिरियस्ससकायाजागमाररक
अरकादस्मन्तगवर्जसंघसमुहसभदसा ॥ श ॥ मभइसावइदइहृदगाहावगादणदस



नेदिलसाभेडलपावयसागणि विआणविद्यावरण विवयसा ॥ गणदिनतीपरणविचची ॥ आयविसादीभेडलगासुअसदीअरायअयसा ॥ विदारकयस्मन्वर
णदिवीपुअउरयधक्कागस्मन्हायवकागसा ॥ साविसिपिएसिउह्यमासमुहसायुसा ॥ इइकालिअसभइसासमुहसायुसा ॥
अणुनाअयवइ ॥ किउरअरयणाणेदसाणकययस यद्वारसइसिसासिआणा ॥ तिसोदस्समदातिसोदस्सोडिद्वेयेयसन्नीणवदपुसत्रोएहरगहाचीपादीव
सागरयसचीएखुहिआदिमाएविनतीगमद्विआदिमाणएवितीगअगबलिआणवगइलिआणविकारुणोवदीयसीगरुलाववयस
धरणोववायसा ॥ वसमाणोववायसा ॥ वल्लधराववायसा ॥ दिविदाववायसा ॥ वडाणशुअसा ॥ नागपरिअवणिआणनिग्दाठलिआणकि
णिआणकणवदिसिआणा ॥ उफिआणे ॥ वृषइ ॥ लिआण ॥ वक्षी ॥ दसाणा ॥
तअग्गानिसमाणसाव ॥ सिपिएण ॥ सिगहसा ॥ सञ्जइसा ॥ अणुसाअ ॥
पवहइ ॥ किआयारसभेअडगसठाणस्ससमेवायस्सविवादय
इअदसाणा ॥ अवागरणणा ॥ दिवागअससा ॥ दिदिवायसा ॥ सबसा ॥
इस्ससाकसाइसाणसाकणगा ॥ नाहसासञ्जइसाअयुमायपववइ ॥ यमसभागाणदहणेश्चरिगअवाणो ॥ तइनएण ॥ उहिसोमिमभुहिसोमि ॥ अणु
डाणासिवा ॥ तवसमवा ॥ ॥ इ ॥ ॥ ॥ अ ॥ ॥ ॥ सुसंभवउ ॥ कल्याणसञ्ज ॥ ॥ संवराणइएवाएइयावणअ ॥ दिधबुधेगदीसञ्जोपचदहलि



नदिसवश

प्रस्तावना

॥ जयन्तु वीतरागाः ॥

चूर्णिसहित नन्दीसूत्रके सशोधनके लिये मूलसूत्रकी आठ और चूर्णिकी चार, एवं सब मिलकर बारह प्रतियाँ सामने रखी गई हैं। इनमें से मूलसूत्रकी तीन और चूर्णिकी एक, ये चार ताडपत्रीय प्रतियाँ हैं। इन सबका परिचय इस प्रकार है —

जे० प्रति—यह प्रति जेसलमेरके किलेमे स्थित खरतरगच्छीय युगप्रधान आचार्य श्रीजिनभद्रसूरि ताडपत्रीय ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। सूचामें इस प्रतिका क्रमाङ्क ७७ है। इसमें पत्र १ से २६ में नन्दीसूत्र मूल है और पत्र १ से २९७ में श्रीमलयगिरिसूरिकृत वृत्ति है। प्रतिकी लवाई-चौडाई ३३।।।×२।। इंच है। प्रतिपत्रमें पत्रकी चौडाईके अनुसार चार या पांच पंक्तियाँ लिखी हैं। प्रति तीन विभागमें लिखी गई है। प्रति शुद्धतम है। पुष्पिकाके लेखानुसार इस प्रति का सशोधन खरतरगच्छीय आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिनं स्वयं किया है। अनेक स्थानपर आपने उपयोगी टिप्पणियाँ भी की हैं, जो हमने हमारे मुद्रणमें तत्तत् स्थान पर दे दी हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका इस प्रकार है —

स्वस्ति । सवत् १४८८ वर्षे श्रीसत्यपुरे पौष वदि १० दिने श्रीपार्श्वदेवजन्मकल्याणके श्रीखरतरगणाधिपै श्रीजिनराजसूरिपट्टालंकारसारै प्रभुश्रीमज्जिनभद्रसूरिसूर्यावतारै श्रीनन्दिसिद्धान्तपुस्तक स्वहस्तेन शोधितं पाठितं च । तच्च श्रीश्रमणसङ्घेन वाच्यमानं चिर नन्दतु ॥

सामान्यतया श्रीजिनभद्रसूरिके उपदेशसे लिखाई गई प्रतियाँ स्तम्भतीर्थ(खंभात)निवासी खरतरगच्छीय श्रावक परीक्षित धरणाशाह या श्रीमालिजातीय (१) वलिराज-उदयराजकी पाई गई हैं। किन्तु इस प्रतिमें इन तीनोंमेंसे किसीके नामका उल्लेख नहीं है। यहा यह भी स्पष्ट होता है कि अपने विहारगन क्षेत्रोंमें भी आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिको अन्य मुख्य कार्योंके साथ साथ पुस्तकलेखन-सशोधन-अव्यापनादि कार्य भी था।

स० प्रति—यह प्रति पाटन-सववीपाडाके लघुपोशाळिक ताडपत्रीय जैन ज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसके पत्र ८२ हैं। प्रतिपत्रमें तीन या चार पक्ति लीखी हैं। प्रतिपक्तिमें ४० से ४३ अक्षर लिखे हैं। प्रति दो विभागमें लिखी है। इसकी लवाई-चौडाई १४×१।।। इंचकी है। प्रतिकी लिपि सामान्यतया अच्छी है। अन्तमें लेखककी पुष्पिका नहीं है। इसके अन्तमें अनुज्ञानन्दी नहीं है।

ख० प्रति—यह प्रति खंभातके श्रीशान्तिनाथताडपत्रीय जैनज्ञानभंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। प्राच्यविद्यामंदिर-वडौदासे प्रकाशित इस भंडारकी सूचीमें इसका क्रमाङ्क ३८ है। इसमें पत्र १ से १८ में नन्दीसूत्र मूल है, पत्र १८-१९ में अनुज्ञानन्दी है और पुन पत्र १ से २४७ में नन्दीसूत्रकी मलयगिरीया वृत्ति है। प्रतिकी लवाई-चौडाई ३१।।।×२।। इंच है। ताडपत्रकी चौडाईके अनुसार तीनसे पाँच पक्तियाँ लिखी हुई हैं। प्रतिपंक्तिमें १०१ से ११९ अक्षर लिखे पाये जाते हैं। प्रति शुद्धप्राय है और लिपि सुन्दरतम है। प्रति तीन विभागमें लीखी गई है। अन्तमें इस प्रकारकी पुष्पिका है —

सं० १२९२ वर्षे वैशाख शुदि १३ अथेह वीजापुरे श्रावकपौषधालाया श्रीदेवभद्रगणि प० मलयकीर्ति प० अजितप्रभगणिप्रभृतीना व्याख्यानत ससागसारता विचिन्त्य सर्वज्ञोक्त शास्त्र प्रमाणमिति मनसि ज्ञात्वा सा० धणपालसुत सा० रत्नपाल ठ० गजसुत ठ० विजयपाल श्रे० देवहासुत श्रे० वीलहण मह० जिणदेव मह० वीकलसुत ठ० आसपाल श्रे० साल्हा ठ० सहजासुत ठ० अरसीह सा० राहडसुत सा० लाहडप्रभृतिसमस्तश्रावकै मोक्षफलप्रार्थकै समस्तचतुर्विधसवस्थ पठनार्थं वाचनार्थं च समर्पणाय लिखापितम् ॥छा॥ इन्हीं विजापुरके श्रावकोंकी लिखाई हुई अन्य कई ताडपत्रीय प्रतियां खंभातके इस भाण्डागारमें विद्यमान हैं।

ये प्रति—यह प्रति अहमदाबादके डेल्टा उपाध्यके ज्ञानमंडारकी है। इसमें मध्यमितीमा टीका भी पचपाठरूपसे लिखित है। साबमें अनुशान्दी भी है। कागज पर लिखी हुई यह प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीमें लिखी माध्यम होती है।

ख० प्रति—यह प्रति अहमदाबाद क्वारकी पोत्रके उपाध्यके ज्ञानमंडारकी है। इसकी पत्रसंख्या ३५ है। हरफ पत्रमें नव पंक्तियाँ हैं। हरेक पंक्तिमें ३१ स ४२ अक्षर लिखे हैं। प्रतिकी लिपि सुन्दरतम है। अक्षर भेदे हैं। कागज पर लिखी हुई इस प्रतिके अंतमें डेस्कक्री पुष्पिका इस प्रकार है—

नन्दी सम्पत्ता ॥३॥ सं १४८५ वर्षे फगुन सुदि ७ शनी श्रीमीमपछीय.. [अक्षर बीगाड दिये हैं]।

श्री ॥३॥ शुभं मन्त्र ॥३॥

इस पुष्पिकामें भी अक्षर बीगाड दिये हैं उनके रबानमें बहार इस प्रकार नये अक्षर लिखे हैं—

साह शीवच्छासुत साह सदिसक्षय स्वपुष्पार्थ पुस्तकमंडार काराविता सुत वर्षमानपुस्तकपरिपाठनार्थ ॥ ७ ॥

भो० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीदेवचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित मोदी ज्ञानमंडारकी है। यह प्रति विक्रमकी सोष्टहवीं सदीमें लिखी हुई है।

शु० प्रति—यह प्रति पाटन—श्रीदेवचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरमें स्थित धुमनौरजैनज्ञानमंडारकी है। प्रति प्राब सुख है। प्रति अनुमान सत्रहवीं सदीके उत्तरार्धमें लिखी प्रतीत होती है।

सु० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरान दसुरिवरसम्पादित श्रीमल्लभगिरिकृतटीकापुस्तक है। जो आपने आगम भाषनाके समय सम्पादित की है। यह आहृति बि सं १९७३में आगमोद्भवसमिति—सुरतकी ओरसे प्रकाशित हुई है।

पूर्णांकी प्रतियाँ

जे० प्रति—यह प्रति बेसछमेर किल्लेमें स्थित श्रीभिनःश्रीय साष्टपत्रीय जैन ज्ञानमंडारकी ताडपत्रीय प्रति है। इसका क्रमांक ४१० है। इस क्रमांकमें तीन ग्रन्थ हैं—१ दशवैकाचिक भगल्लवसिंहोमा पूर्णा पत्र १८४। २ नदीसूत्रपूर्णा पत्र १८५—२२३। ३ अनुयोगश्रारसूत्रपूर्णा पत्र १२४—२७५। इनमेंसे नन्दीपूर्णा और अनुयोगश्रारपूर्णा, ये दोनों पूर्णायाँ किसी गंडार्थकी संशोधित हैं। प्रतिकी स्कार्—पोडाई २५×२॥ इंचकी है। प्रतिके अंतमें डेस्कनसंबद् या डेस्कक्रीपुष्पिका नहीं है। तथापि प्रतिका रंग-रंग देखनेसे प्रतीत होता है कि—यह प्रति तेरहवीं सदीमें लिखित है। प्रति सुखप्राय है।

भा० प्रति—यह प्रति आगमोद्धारक श्रीसागरानदसुरिवरसम्पादित मुद्रित प्रति है। बिराका प्रकाशन श्रीचपलदेवजी केशरीमल्लजी श्वेताम्बरसंस्था—रतलामकी ओरसे हुआ है। पुष्पकी इसकी कोई अच्छी प्रति न मीम्नेके कारण यह बहुत अशुभ छपी है। फिर भी एक प्राक्तरकी ओरसे हमारे संशोधनमें यह आहृति काममें ही आई है।

दा० प्रति—यह प्रति किनागमत्र पुष्य श्रीशिवयदानमुरिमहाराजसम्पादित मुद्रित प्रति है। बा भाई हीमात्मछके द्वारा प्रकाशित है। इसमें भी काफ़ी अशुद्रियाँ हैं। तथापि पुष्य सागरानदसुरिवर की आहृतिकी अपेक्षा यह कुछ अच्छी आहृति है। पूर्णिके सम्पादन और संशोधनके समय पाटन—श्रीदेवचन्द्राचार्यजैनज्ञानमंदिरकी एक प्रति और श्रीमल्लभार्थ दक्षपतमार्थ मारतीय संरक्षि विधामंदिरकी प्रतिको भी साम्म रखनी थी। ये दोनों प्रतियाँ क्रमशः सोष्टहवीं और सत्रहवीं सदीमें लिखी हुई प्रतियाँ हैं और अशुद्रिमयूर प्रतियाँ हैं। तथापि छुट पाठोंके निर्णयमें ये भी सहायक हुए हैं।

इस पूर्णांके संशोधनमें हमारे लिये सुदय आचार्यस्वम् जे० प्रति ही है, जो अतीत छुट प्रति है।

एषप्रतियाँकी विनयता

सं० ४० भो० ये तीन प्रतियोंका प्रतिकेम्नके बाद किसी विद्वान्ने संशोधन नहीं किया है।

जे० खं० ल० शु०, ये चार प्रतियाँ सञ्गोधित प्रतियाँ हैं। इनमें भी जे० प्रतिक्रा सञ्गोधन खरतरगच्छीय गीतार्थ आचार्य श्रीजिनभद्रसूरिने किया है, जिसमें आपने नन्दोमूत्रके प्रक्षित पाठादिके विषयमें स्थान स्थान पर टिप्पणीयाँ की हैं, जो हमने हमारे इस प्रकाशनमें दी हैं, देखो पृ ५ टि १०, पृ. ८ टि १०, पृ. १० टि ७, पृ ११ टि ११, पृ १२ टि ५ इत्यादि।

शु० प्रति अधिकतर अंगमें खं० प्रतिसे मीलतीश्रुलती होने पर भा जुदा कुलको मालूम होती है। इसमें स्थविरावलिकी प्रक्षित मानी जानेवाली गाथायें नहीं हैं, देखो पृ ८ टि १०, पृ. १० टि ७, पृ ११ टि ११। छट्टे परिषसूत्रमें जो तीन गाथायें प्रक्षित हैं वे भी इस प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ १२ टि ५। इसी प्रकार मन पर्यवज्ञानके द्रव्यक्षेत्रादिविषयक सूत्रपाठमें जो सूत्रपाठ चूर्णिकार एव हरिभद्रसूरिको अभिप्रेत है वह इस प्रतिसे पाया गया है, देखो पृ. २३ टि ३। ऐसी जो जो अन्यान्य विशेषतायें इस प्रतिकी हैं उनका पादटिप्पणीयोंमें उल्लेख कर दिया है। यहा पर परीक्षण एवं अभ्यासकी दृष्टिसे पाठभेदोंका निरीक्षण करनेवाले विद्वानोंसे प्रार्थना है कि इस मुद्रणमें पृ १० टि ७, पृ ११ टि ११ आदि दो-चार स्थानोंमें P प्रतिका निर्देश किया है वह P प्रति कौनसी ? और किस भडारकी थी ? यह मेरी स्मृतिसे चला गया है। फिर भी यहाँ इतनी सूचना कर देता हूँ कि—शु० प्रति कुल अशमें इस P प्रतिसे मीलतीश्रुलती प्रति है। अर्थात् जैसे—गोविंदाण पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने० ये दो गाथायें P प्रतिमें नहीं हैं इसी तरह शु० प्रतिमें भी उपलब्ध नहीं हैं, देखो पृ १० टि ७। यद्यपि प्रस्तुत मुद्रणमें इस स्थानमें P प्रतिके साथ शु० प्रतिका उल्लेख छुट गया है किन्तु भडारमें जा कर शु० प्रतिको पुन देखके निश्चित किया है कि गोविंदाणं पि णमो० तथा तत्तो य भूयदिन्ने० ये दोनों गाथायें शु० प्रतिमें भी नहीं है। एवं—वंदामि अज्जधम्मं० तथा वंदामि अज्जरक्खिय० ये दो गाथायें शु० प्रतिमें नहीं हैं, देखो पृ. ८ टि १०। चूर्णी एव टीकाओंमें इन चार गाथाओंका उल्लेख या व्याख्यान नहीं है। नन्दीसूत्रकी ऐसी और भी प्रति मेरे देखनेमें आई है, जिसमें ये गाथायें नहीं हैं। फिर भी नन्दीसूत्रकी प्राचीन ताडपत्रीय प्रतियोंमें और दूसरी बहुतसी पदहवीं-सोलहवीं शती में लिखित कागजकी प्रतियोंमें ये गाथायें अवश्य ही उपलब्ध हैं। यहा प्रश्न होता है कि—चूर्णिकार और टीकाकारोंने इन गाथाओंका स्पर्श तक क्यों नहीं किया है ?

जे० और मो० प्रतिकी विशेषता यह है कि—इसमें प्राय लुप्तव्यञ्जनके स्थानमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग न होकर केवल अ और आ की श्रुतिवाले प्रयोग ही हैं, जो पूज्य श्रीसागरानन्दसूरिमहाराजके मुद्रणमें नजर आते हैं। ये दो प्रतियाँ उस परम्पराकी हैं, जिसमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग कम हैं। आदि ण प्रयोगके स्थानमें नका प्रयोग मुख्य है। जैसे कि—नाण नाह नमसिय नियम नदिघोस निग्गय नाल निम्मल सुयनिरिसिय आदि।

डे०शु० प्रतियाँ नप्रयोगके विषयमें जे०मो० प्रतियोंके समान हैं, किन्तु इन प्रतियोंमें अस्पष्ट यश्रुतिके प्रयोग ही प्रयुक्त हैं।

खं०स० प्रतियोंमें णप्रयोगकी प्रधानता है। किन्तु स० प्रतिमें फुरन्त महन्त समन्ता आदि परसवर्णके प्रयोग नजर आते हैं, इतना खं० और स० प्रतिका भेद है। इसी तरह स० और खं० प्रतिका अन्तर यह है कि खं० प्रतिमें चडुलियम्वा पदीवम्वा आदि जैसे प्रयोग भी प्रयुक्त दिखाई देते हैं देखो पृ. १६ टि० ३।

उपर आठ प्रतियोंका परिचय दिया गया है, जो आज उपलब्ध प्रतियोंमें प्राचीन प्रतियाँ हैं। इतनी प्रतियाँ एकत्र करने पर भी चूर्णिकार एवं वृत्तिकारसम्मत ऐसे अनेक पाठ हैं जो इन इतनी प्रतियोंसे भी प्राप्त नहीं हुए हैं। इनका सूचन पादटिप्पणियोंमें यथास्थान किया है।

इस नन्दीसूत्रके सञ्गोधन, पाठ, पाठभेद, पाठोंकी कमीवैशीके निर्णयके लिये चूर्णि, हरिभद्रवृत्ति, मलयगिरिवृत्ति, श्रीचन्द्रीय

दिप्यन् इत आरोग्येक समप्रमाणे उपयोग किया गया है, इतना ही नहीं किन्तु यहाँ जहाँ नन्दोद्भवके उदरण प्यास्मान आदि बाये हैं ऐसे द्वादशशान्तयचक्र, समवायाहस्य एव भगवतीसूक्तकी अमयदेवीया वृत्ति, विस्वावस्यकमस्मारीया वृत्ति, पाणिहस्यवृत्ति आदि अनेक शास्त्रिका उपयोग भी किया है, जिसकी प्रतीति इस सम्पादनकी पाठदिप्यगियोंको देखनेसे होगी।

नन्दोद्भवकी पूर्णिके संशोधनके लिये मेरा आचाररत्नम् जैसेस्मरकी प्रति ही है। अगर यह प्रति प्राप्त न होती तो इसका जो गौरवपूर्ण सम्पादन हुआ है, वह शक्य न बनता। संस्कृत टीका निर्माणके बाद पूर्णिकेका अध्ययन कम हो जानेसे प्राय मान ज्ञानमहारोमें जो जो आगमिक या भागमेर शास्त्रिक पूर्णिप्रथाओं हस्तप्रतियाँ हैं, वे सभी अशुद्धि भाषाभाषारत्नरूप हो हो गई हैं। इतनी बात अरु है कि—ज्यो ज्यो प्रति प्राचीन ज्यो ज्यो अशुद्धियाँ कम रहती हैं। किन्तु एक ही युगकी प्रतियोंके लिये यह अनुभव हुआ है कि—अगर वह प्रति प्राचीन प्रतिकी या मिस प्रदेशादिस्त प्रतिकी नकल न हो कर, उसी युगकी या प्रदेशकी उत्तरोत्तर नकलकी नकल हो, तब तो उत्तरोत्तर अशुद्धियोंकी वृद्धि ही होती रही है इतना ही नहीं पत्तियोंकी पत्तियाँ और सन्दर्भ के सन्दर्भ गायब हो गये हैं। अस्तु, मेरेको जैसेस्मरकी प्रति मीठी, यह मैं सिर्फ अपना ही नहीं साक्षमें सब शास्त्रपाठी जैन गीतार्थ मुनिगण एव मित्रानोका भी सौभाग्य समझता हूँ।

अनेक आगमोंकी पूर्णि वृत्ति आदिके अन्वेषणसे प्रतीत हुआ है कि—अगर प्राचीन एव अस्मा अस्मा कुलकी प्रतियाँ प्राप्त न हो तो मुद्रणादिमें प्राय सैकड़ों अशुद्धियाँ पाठपरावृत्तियाँ आदि रहनेका सम्भव रहता है, इतना ही नहीं सन्दर्भके सन्दर्भ छूट जाते हैं। विद्वान् संशोधकोंके प्यानमें जानेके लिये मैं यहाँ एक बातको उद्धृत करता हूँ—

अनुयोगप्रारम्भकी पूर्णिका संशोधन मैंने पाठन ज्ञानमहारकी जो प्राचीन छाडपत्रीय हस्तप्रतियाँ और संभास्के श्रीराष्ट्रिनाथ ज्ञानमहारकी जो छाडपत्रीय प्रतियाँ एव चार प्रतियोंके आधारसे सुचारुतया कर लिया। कुल टीकाखान होने पर भी दिखने विश्वास हो गया था कि—एकदम संशोधन अशुद्ध हो गया है। किन्तु जब जैसेस्मर जानेका मोका मिला और जबकि ज्ञानमहारकी प्राचीन छाडपत्रीय प्रतिये सुखना की तो फिचन ही छाडपत्रीय दूर हुए, इतना ही नहीं, परन्तु अस्मा अस्मा खानमें हो कर दस—बारह पंक्तियाँ चिठना दूसरे कुलकी प्रतियमें छूट गया हुआ मया पाठ प्राप्त हुआ और अनेकानेक अशुद्धियाँ भी दूर हुईं। यह प्राचीन प्राचीनतम एवं अस्मा अस्मा कुलकी प्रतियोंके उपयोगका साक्ष्य है।

प्रसंगबश यहाँ यह कहना भी उचित है कि—इस नन्दोद्भवपूर्णिके संशोधन एवं सम्पादनमें सापुत्र उपयोगमें आई गई प्रतियोंके अभाववा दूसरी अनेक प्रतियाँ मैंने समय-समय पर देखी हैं, इससे ज्ञात हुआ है कि—जैसेस्मरकी प्रतिकी अपेक्षा इन प्रतियोंमें त द प आदि कणिके प्रयोग विपुल प्रमाणमें नजर आये हैं।

नन्दोद्भवके प्रणेता

नन्दोद्भवकारने नन्दोद्भवमें कहीं भी अपने नामका निर्देश नहीं किया है, किन्तु पूर्णिकार श्रीजिनवासगणि महारने अपनी पूर्णिकेमें सूत्रकारका नाम निर्दिष्ट किया है, जो इस प्रकार है—

“एवं कसमगच्छेयारी धेराबल्लिके य दसिप अरिहेसु य दसितसु इंसगजितोसो देववायगो साहुवप बिल्लुएण इणमाह” [पत्र ११]

इस उल्लेखप्राता पूर्णिकारने नन्दोद्भवप्रणेता स्वविर श्रीदेववाचक हैं—ऐसा बतलाया है। आचार्य श्रीहरिसूरि एवं आचार्य श्रीमन्मन्मिरिसुरिने भी इसी आशयका उल्लेख अपनी अपनी टीकामें किया है, किन्तु इनका मूल आधार पूर्णिकारक उल्लेख ही है। पूर्णिकारके उल्लेख ही ज्ञात होता है कि—नन्दोद्भवके प्रणेता नन्दोद्भवकारिबराबल्लित अथितस्वविर श्रीदुप्यगणिके त्रिप्य श्रीदेववाचक हैं।

पंचामजी श्रीरुन्ध्यागविजयजीमहाराजने अपने 'चरनिर्माणसवन और जैन साधना' निबन्धमें (नागरीप्रचारिणी भाग १० अंक १) अनेकानेक प्रमाण और युक्ति द्वारा नन्दीमूत्रप्रणता स्वविर दववाचक और जैन आगमोंकी मायुरा एवं वाल्मी वाचनाओंको सवाहित करनेवाले श्रीदेवद्विगणि क्षमाश्रमणको एक मननाया है।

नन्यकर्मग्रन्थकार आचार्य श्रीदेवेन्द्रसूरि महाराजने अपनी स्तोत्र ग्रन्थमें देवद्विगण, देवद्विगणमाश्रमण नामके उल्लेखपूर्वक अनेकवार नन्दीमूत्रपाठके उद्देश्य दिये हैं। यह भी उन्होंने देववाचक और देवद्विगणमाश्रमणको एक व्यक्ति मानके ही दिये हैं। यह भी श्रीरुन्ध्यागविजयजी महाराजकी मान्यताको पुष्ट करनेवाला सूत्र है। तथापि नन्दीको स्वविरावरीमें अनिम स्वविर दृश्यगणि है, जिनको नन्दीचूर्णिकारन दववाचकके गुरु दर्शाये हैं। तब कल्पमूत्रको वि. सं० १२५६ में लिखित प्रतिलेख के अनुसार आज पर्यन्तकी प्राचीन-अर्वाचीन तात्पर्यीय एवं कागजकी प्रतियोंमें स्वविरावरीका पाठकी कर्गी वैशिके कारण कोई एक स्वविरका नाम व्यवस्थितरूपमें पाया नहीं जाता है। इस कारण उन दोनों स्वविरोंको एक मानना यह कहा तक उचित है, यह तन्त्र विद्वानोंके लिये विचारणीय है। देववाचक और देवद्विगणमाश्रमण उन नाम और विशेषण-उपाधियों में अन्तर्गत है। साथमें यह भी देखना जरूरी है कि नन्दीमूत्रका स्वविरावरीमें वायव्यपथ, वायव्य, इस प्रकार वायव्य शब्दका ही प्रयोग मिलता है, दूसरे कोई वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर जैसे पदका प्रयोग नजर नहीं आता है। अगर देववाचकको क्षमाश्रमणकी भी उपाधि होना तो नन्दीचूर्णिकार जरूर लिखते हैं। जैसे द्वादशारनयचक्रकाके प्रणेता सिंहवादी गणि क्षमाश्रमण, विशेषावश्यककी वपूर्ण स्तोत्र टीकाको पूर्ण करनारा केदार्यवादी गणि महत्तर, सम्पत्तिके प्रणेता वादी मिद्धमनगणी दिवाकर आदि नामोंके साथ दो विशेषण-उपाधियां जुटा हुई मिलती हैं इसी तरह देववाचकके लिये भी दो उपाधियोंका निर्देश जरूर मिलना। अतः देववाचक और देवद्विगणमाश्रमण, ये दोनों एक ही व्यक्ति हैं या भिन्न, यह प्रश्न अब भी विचारणीय प्रतीत होता है। कल्पमूत्रकी स्वविरावरी और नन्दीमूत्रकी स्वविरावरीका मेलजोल कैसे, कितना और कहां तक हो सकता है, यह भी विचारणीय है।

वाचकपदकी अपेक्षाकृत प्राचीनता होने पर भी कल्पमूत्रकी समयसमय पर परिवर्धित स्वविरावरीमें धेर और स्वमामण पदका ही निर्देश नजर आता है, यह भी दोनों स्वविर और स्वविरावरीकी विशेषता एवं भिन्नताके विचारका साधन है।

यहाँ पर प्रसंगोपात्त एक बात स्पष्ट करना उचित है कि—भद्रेश्वरमूर्तिकी कृतावरीमें एक गाथा निम्नप्रकारकी नजर आती है—

वाडं य स्मसासमणे दिवाकरं वायगे ति एगदु । पुत्रगय जस्सेस जिणागमे नम्मिमे नामा ॥

अर्थात्—वादी, क्षमाश्रमण, दिवाकर और वाचक, ये एकार्थक-समानार्थक शब्द हैं। जिनागममें जो पूर्वगत शास्त्र हैं उनके शेष अर्थात् अर्थोंका पारस्परिक ज्ञान जिनके पास है उनके लिये ये पद हैं।

इस गाथासे यह स्पष्ट है कि—उन उपाधियोंवाले आचार्योंके पास पूर्वगतज्ञानकी परंपरा थी। किन्तु आज जैन परंपरामें जो ऐसी मान्यता प्रचलित है कि—इन पदधारक आचार्योंको एक पूर्वआदिका ज्ञान था, यह मान्यता भ्रान्त एवं गलत प्रतीत होती है। कारण यह है कि—अगर आचाराद्वादि प्राथमिक अंगभागम शीर्षविशेषी हो चूके थे, उस दशामें पूर्वश्रुतके अखट रहनेकी संभावना ही कैसे हो सकती है ?

स्वविर श्रीदेववाचककी नन्दीमूत्रके सिवा दूसरी कोई कृति उपलब्ध नहीं है।

चूर्णिकार

नन्दीमूत्रचूर्णिके प्रणेता आचार्य श्रीजिनदास गणि महत्तर हैं। सामान्यतया आज यह मान्यता प्रचलित है कि—जैन आगम उपरके भाष्योंके प्रणेता श्रीजिनभद्र गणि क्षमाश्रमण और चूर्णियोंके रचयिता श्रीजिनदास गणि महत्तर

ही है, और ऐसे प्राचीन उद्योग पहाड़ी भादिये पाये भी जाते हैं किन्तु माष्य पूर्णियोक बबगाहन बाद ये दोनों माष्यताएं गस्त प्रतीत हुई हैं। यहाँ पर माष्यकारोंका विचार अप्रस्तुत है, अतः सिर्फ यहाँ पर केन आगमके उतर को प्राचीन पूर्णियाँ उपलब्ध हैं उनके विषयमें ही विचार किया जाता है। आज जैन आगमके उतर को पूर्णिलामक प्राकृतमायाप्रमाण म्याष्याम्ब्य प्राप्त हैं उनके नाम क्रमशः ये हैं—

१ आचारार्ज्यूर्ण २ सूत्ररत्नार्ज्यूर्ण ३ मगकतीर्ण ४ जीवामिगमर्ण ५ प्रज्ञापनास्रशरीरपदूर्ण ६ बम्बूदीप-
करणूर्ण ७ दशाक्षर्यूर्ण ८ कल्पूर्ण ९ कल्पविरोधूर्ण १० म्बद्वारस्रचूर्ण ११ निधीयस्रविशेषूर्ण १२
पद्यकल्पूर्ण १३ अतकल्पबृहत्तूर्ण १४ आनन्द्यरूपूर्ण १५ दशाकाशिकूर्ण १६ अगमस्यसिद्धता १७ क्शाकाशिकूर्ण
दशविषयात्म्या १८ उचाराप्ययनूर्ण १९ नन्दीस्रर्ण २० अनुयोगद्वारूर्ण २१ पाक्षिकूर्ण ।

उपर जिन बीस पूर्णियोक नाम दिये हैं उनका और इनके प्रणेताओंके विषयमें विचार करनेके पूर्व पत्रलिप्यक पूर्णि-
म्बकोके प्राप्त उद्येसोंको मैं एकसाथ यहाँ उद्यत कर देता हूँ, जो मज्जिम्यमें विशानोंके त्रिये काम्यकी विचारतामकी बनी रहे ।

(१) आचारार्ज्यूर्ण । अन्तः—

ये हु निरात्मगम्यविद्विषो । शेष तत्रेव ॥ इति आचारार्ज्यूर्ण परिसमाप्ता ॥ नमो सुयदेवमाप
मगर्हप ॥ प्रथमम् ८३ ॥

(२) सूत्ररत्नार्ज्यूर्ण । अन्तः—

सहामि जय सूत्रेति गेष्टम् सम्मिति ॥ नम सर्वविदे वीराय विगुप्तमोक्षाय ॥ समातं च्छे सूत्ररत्नाभिं
द्वितीयमर्ज्यूर्णमिति । मत्र भवतु श्रीजिनशासनाय । द्वाद्वादार्ज्यूर्णः समाता ॥ प्रथमम् ९५० ॥

(३) मगकतीर्ण—

श्रीमगकतीर्ण परिसमाप्तेति ॥ इति म्त्र ॥

सुअदेवम् सु बदे बहि पसापण सिक्खियं नाण । दिव्य पि बतव (शिव)देवि पसक्काणि पणिबवामि ॥ प्रथम ६७ ७ ॥ श्रीम

(४) जीवामिगमर्ण—

इत् पूर्णिकी प्रति अथावधि ज्ञात किन्ती महारमें देसुमें न्दी जाई है ।

(५) प्रज्ञापनास्रशरीरपदूर्ण । अन्तः—

अमिह समयविस्मय कवं बुद्धिभिक्रयेण होजा हि । तं विगणवणविहन्नु स्मिक्कं मे पसोहिदु ॥ १ ॥

॥ शरीरपदस्त बुण्णी जिणभइस्समासमभकित्तिवा समत्ता ॥ अनुयोगद्वारूर्णियं पत्र ७७ ।

याकिनीमहचारासुज आषाय श्रीहरिमद्वाररिक्त अनुयोगद्वारस्सुद्धति पत्र ९९ में भी यही उद्येल है ।

(६) बम्बूदीपकरणूर्ण । अन्तः—

एवं उदरिक्कमागस्स तेरासिय पउत्रियम् । विरुणेहपुइडोओ आणेयम्मासा ॥ अंबुदीपपव्याधिइरबावं बुण्णी समत्ता ॥

(७) दशाक्षर्यूर्ण । अन्तः—

बाव णवा वि । बाव करणओ—सम्भेति पि जवाणं गाथा ॥ द्वाद्वादार्ज्यूर्ण समाता ॥

(८) कल्पूर्ण—

आउक्कम्मा स गइहा ९९ । विवरण च्छा विसेसावस्समासासे । 'सामितं च्छे फाडीगे को केवत्थिं
भव' अथे वा केत्थिं को उं ति यहा कम्मपगाडीच् । पत्तं पसेण गत्त ।

अन्तः—

तओ य आराहणातो छिण्णससागी भवति ससारसतर्हि छेतु मोक्ख पावतीति ॥ कल्पचूर्णी ममाता ॥
ग्रन्थाम्रम्—५३०० प्रत्यन्तरगगनया निर्गातम् ॥ [सर्वग्रन्थाम्रम्—१४७८१] ॥

(९) कल्पविशेषचूर्णि—

कल्पविसेसचुण्णी समत्तेति ॥

(१०) व्यवहारचूर्णि । अन्तः—

व्यवहारस्य भगवत अर्थविवनाप्रवर्त्तने दक्षम् । विवरणमिदं समाप्तं श्रमगगणानाममृतभूतम् ॥१॥

(११) निनीथविशेषचूर्णि । आदिः—

नमिऊगऽऽहताण, सिद्धाण य कम्मचक्रमुक्काण । सत्रणमिगेहविमुक्काग सञ्चसाहग भावेण ॥१॥

सविसेसायरजुत्त काउ पगामं च अत्थदायिस्स । पञ्जुण्णखमासमणस्स चरण-कण्णाणुपालस्स ॥२॥

एवं क्यप्पणामो पक्कप्पणामस्स विवरणं वने । पुव्वायरियक्यं चिय अहं पि त चेव उ विसेसे ॥३॥

भगिया विमुत्तिचूला अट्टणाऽवमगे णिसीहचूलाए । को संबंधो निस्सा भण्णड, इगमो तिसामेहि ॥४॥

तेरहवा उद्देगके अन्तमें—

सर्करजडमउडविभूसणस्स तण्णामसरिसणामस्स । तस्स सुतेणेस कता विमसचुण्णी गिसीहस्स ॥

पट्टहवा उद्देगके अन्तमें—

रैविकरमभिधाणकखरसत्तमवगतअक्खरजुण्ण । गाम जस्सि-यीण नुत्तण तिस्से कया चुण्णी ॥

सोलहवा उद्देगके अन्तमें—

देहेडो सीह थोरा य ततो जेट्टा सहोयरा । कण्णिट्टा देउलो णण्णो सत्तमो य तिइज्जिओ ।

एतेसि मञ्चिमो जो उ मदेवी(मदधी) तेण वित्तिता(चिन्तिता) ॥

अन्तः—

जो गाहासुत्तथो चेवविधपागटो फुडपदथो । रडओ परिभासाए साहण अणुगहट्टाए ॥१॥

ति-चउ-पण-ऽट्टमवगे ति-पग-ति-तिगक्खरा ठवे तेसि । पढम-ततिपहि णिट्टुड सरजुएहि णाम कयं जरस्स ॥२॥

गुरुदिण्णं च गणित्तं महत्तरत्तं च तस्स लुट्टेण । तेण कतेसा चुण्णी विसेसगामा णिसीहस्स ॥३॥

णमो सुयदेवयाए भगवतीए ॥ जिणदासगणिमहत्तरेण रडया णिसीहचुण्णी समत्ता ॥

(१२) पञ्चकल्पचूर्णि । अन्तः—

कप्पणयस्स भेओ परूविओ मोक्खसाहणट्टाए । ज चरिऊग सुविहिया करेति दुक्खक्खय धीरा ॥

पञ्चकल्पचूर्णिः समाता ॥ ग्रन्थप्रमाणं सहस्रत्रय शतमेक पञ्चविंशत्युत्तरम् ३१२५ ॥

(१३) जीतकल्पवृद्धचूर्णी । अन्तः—

इति जेण जीयदाण साहणऽइयारपरुपरिसुद्धिकर । गाहाहिं फुड रइय महुरपयत्थाहिं पावणं परमहियं ॥ १ ॥

१. इस गाथासे ज्ञात होता है कि चूर्णिकार श्रीजिनदासगणिमहत्तरके पिता का नाम नाग अथवा तो चन्द्र होगा ।

२ इस गाथाके अर्थका विचार करनेसे चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरकी माताका नाम प्राकृत गोवा संस्कृत गोपा अधिक सम्भवित है ।

३ इस गाथामें उल्लिखित देहद आदि, चूर्णिकार श्रीजिनदासगणि महत्तरके सहोदर भाई हैं ।

विश्वभस्वमासमण निविध्यसुत्तञ्चलामगामस्ररण । तमह बंदे पयसो परम परमोबगारकारिणं महर्ष्य ॥ २ ॥

॥ वीरकेत्यचूर्णि समाता । सिद्धसुनरविरिया ॥

(१४) भावश्यकचूर्णी । अन्तः—

करणयो—सन्नेति पि मबाण गाथा ॥ इति भावस्सगनिष्पुचिपुष्पी समाता ॥ मगळं महाश्री ॥

(१५) दक्षकालिकद्वयभ्मास्त्यसिहचूर्णी । अन्त —

एवमेत बन्धसमुत्थितगदिबरण-करणयोगयकृत्तणाम्भ्यं मन्वाणामणकभासार्णं मविमजणांदिफरं सुविज
समासषयणेभ्य दसकालियं परिसमथं ॥

मम ॥ वीररत्स मगळतो तिष्ये कोडीगणे सुबिपुष्पि । गुणगगबइरामत्सा वैरसामिस्स साहाय ॥ १ ॥

महरिसिसरिससमाबा भावाऽमाबाण मुणितपरमत्था । रिसिगुचस्रमासमणा सना-समाण तिपी आसि ॥ २ ॥

तेसि सीसिण इमा कळसमयमईदणाम्भेग्जेणं । दसकालियस्स सुष्पी प्माण रयणातो उबगळा ॥ ३ ॥

रुधिरपद-संसिणियता छडिमपुणरुत्तकिबरपसंगा । वस्साणमंतरेणामि सित्तसमतिनोभणसमत्था ॥ ४ ॥

ससमन्न-परसममणयाणं नं न ण समापितं पमायेण । त स्मह पसाहेइ य इय विण्णवी पन्नमणी ॥ ५ ॥

॥ दसकालियसुष्पी परिसमथा ॥

(१६) दक्षकालिकद्वयचूर्णी ब्रह्मविवरणारुपा । अन्त—

बन्धमणायत्तरं 'कळमाओ समापी' जीवणफळो बत्स गतो समाईए पि । अहा तेज पतिष्ण येव
भारइगा मवंति पि ॥ दसकालिकचूर्णी सम्मण ॥ प्रभाप्रश्न ७४० ॥

(१७) उचराध्ययनचूर्णि । अन्तः—

बाणिभङ्गसंभूतो कावियमापिता य पज्जसाईयो । गोमास्सियमहसरयो निक्खतो आसि खेगम्मि ॥ १ ॥

ससमम-भरसमबकिञ्च भोयस्ती देह्मं सुगंमिरो । सीसगणसंपरिखो वनत्ताणरतिष्पियो भासी ॥ २ ॥

पैसि सीसण इम उचराध्ययणाण सुष्पिन्मंडं सु । ख्यं मणुगगळ्ळं सीसार्णं मवदुदीणं ॥ ३ ॥

न पश्य वस्सुत्त अमाणमाणेण विरत्तिं होजा । मं अणुओगधरा म अणुचितेत्तं समारैत्त ॥ ४ ॥

॥ पद्विओचराध्ययनचूर्णी समाता ॥ प्रभाप्र प्रथकराणन्या ५८५ ॥

(१८) नन्दीस्रचूर्णि । अन्तः—

णि रे ण ग म च ण ह स दा वि वा (१) पसुपतिसंलग्नमट्टिताकुल्ल ।

कमट्टिता भीमवचितियकसरा फुडं कइयसअभिभाण कलुणो ॥१॥

धकारो पक्षुसु बर्षातेसु म्यतिकान्तेसु भावनवतेसु नन्द्याध्ययनचूर्णी समाता इति ॥ प्रभाप्रश्न १५ ॥

(१९) अनुयोगद्वारस्रचूर्णि । अन्तः—

वरणमेव गुणो वरणगुणो । अहवा वरण चारिम् गुणा समाधिया अणमविभा तेसु जो बहट्टिओ साइ सो
सम्भवसम्मलो मवटीति ॥

॥ इति भीधेताम्बरानाबर्भीमिन्दसगधिमहचरपम्प्यादानामनुयोगद्वारार्णा चूर्णिः ॥

१ इय चूर्णि पर विष्णु रत्नदेवाय श्रीभीमवदरिणी प्रह्लादचूर्णिना द्रव्यचूर्णिके नामते उल्लेख करते हैं ।

(२०) पाक्षिकसूत्रचूर्णि । अन्तः—

अनुष्टुप्मेदेन छदसा प्रथाप्र चत्वारि गतानि ४०० ॥ पाक्षिकप्रतिक्रमणचूर्णा समाप्तेति ॥ शुभ-भवतु सकल-सवस्य । मंगल महाश्री ॥

१ उपर जिन बीस चूर्णियोंके आदि-अन्तादि अशोकें उल्लेख दिये हैं इनके अवलोकनसे प्रतीत होता है कि—प्रज्ञापना-सूत्रके वारहवें शरीरपदकी चूर्णि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमण कृत है । आज इसकी कोई स्वतन्त्र हस्तप्रति जानभंडारोंमें उपलब्ध नहीं है, किन्तु श्रीजिनदासगणि महत्तर और आचार्य श्रीहृग्भिद्रसुरिने क्रमशः अपनी अनुयोगद्वारसूत्र उपरकी चूर्णि और लघुवृत्तिमें इस चूर्णिको समग्र भावसे उद्धृत कर दी है, इससे इसका पता चलता है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमा-श्रमणने प्रज्ञापनासूत्र उपर सम्पूर्ण चूर्णा की हो, ऐसा प्रतीत नहीं होता है । इसका कारण यह है कि—प्राचीन जैन ज्ञानभंडारोंमें प्रज्ञापनासूत्रचूर्णाकी कोई हाथपोथी प्राप्त नहीं है । दूसरा यह भी कारण है कि—आचार्य श्रीमलयगिरिने अपनी प्रज्ञापनावृत्तिमें सिर्फ शरीरपदकी वृत्तिके सिवा और कहीं भी चूर्णापाठका उल्लेख नहीं किया है । अतः ज्ञात होता है कि श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणने सिर्फ प्रज्ञापनासूत्रके वारहवें शरीरपद पद पर ही चूर्णा की होगी । आचार्य मलयगिरिने अपनी वृत्तिमें इस चूर्णाका छ स्थान पर उल्लेख किया है ।

२ नन्दीसूत्रचूर्णी, अनुयोगद्वारचूर्णी और निगीथसूत्रचूर्णीके प्रणेता श्रीजिनदासगणि महत्तर हैं । जो इन चूर्णियोंके अन्तिम उल्लेखसे निर्विवाद रूपसे ज्ञात होता है । निशीथचूर्णिके प्रारम्भमें आपने अपने विद्यागुरुका शुभनाम श्रीप्रद्युम्न क्षमाश्रमण वतलाया है । समभव है कि आपके दीक्षागुरु भी ये हों । इन चूर्णियोंकी रचना जिनभद्र गणि क्षमाश्रमणके वादकी है । इसका कारण यह है कि—नन्दीचूर्णिमें चूर्णिकारने केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोग-एकोपयोग-क्रमोपयोगकी चर्चा की है एवं स्थान स्थान पर जिनभद्रगणिके विशेषावश्यक भाष्यकी गाथाओंका उल्लेख भी किया है । अनुयोगद्वारचूर्णीमें तो आपने श्रीजिनभद्रगणिकी शरीरपदचूर्णाको साधन्त उद्धृत कर दी है । अतः ये तीनों रचनायें श्रीजिनभद्रगणिके वादकी ही निर्विवाद सिद्ध है ।

३ दशवैकालिकचूर्णीके कर्ता श्रीअगस्त्यसिंहगणी हैं । ये आचार्य कौटिकगणान्तर्गत श्रीवज्रस्वामीकी शाखामें हुए श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणके शिष्य हैं । इन दोनों गुरु-शिष्योंके नाम शाखान्तरवर्ति होनेके कारण पद्यावलीयोंमें पाये नहीं जाते हैं । ऋणसूत्रकी पद्यावलीमें जो श्रीऋषिगुप्तका नाम है वे स्थविर आर्यसुहस्तिके शिष्य होनेके कारण एवं खुद वज्रस्वामीसे भी पूर्ववर्ती होनेसे श्रीअगस्त्यसिंहगणिके गुरु ऋषिगुप्तसे भिन्न हैं । ऋणसूत्रकी स्थविरावलीका उल्लेख इस प्रकार है—

धेरस्स ण अज्जसुहत्थिस्स वासिद्धसगुत्तस्स इमे दुवालस थेरा अत्तेवामी अहावच्चा अभिण्णायया होत्था । तं जहा—

धेरे य अज्जरोहण १ जसमदे २ मेहगणी ३ य कामिद्धी ४ ।

सुद्धिय ५ सुप्पडिबुद्धे ६ रक्खिय ७ तह रोहगुत्ते ८ य ॥ १ ॥

इसिगुत्ते ९ सिरिगुत्ते १० गगी य वमे ११ गणी य तह सोमे १२ ।

दस दा य गणहरा खल्ल एए सीसा सुहत्थिस्स ॥ २ ॥

स्थविर आर्यसुहस्ति श्रीवज्रस्वामीसे पूर्ववर्ती होनेसे ये ऋषिगुप्त स्थविर दशकालिकचूर्णिप्रणेता श्रीअगस्त्यसिंहके गुरु श्रीऋषिगुप्त क्षमाश्रमणसे जुदा है, यह स्पष्ट है ।

आवश्यकचूर्णी, जिसके प्रणेताके नामका कोई पता नहीं है, उसमें तपसयमके वर्णनप्रसंगमें आवश्यकचूर्णिकारने इस प्रकार दशवैकालिकचूर्णाका उल्लेख किया है—

सुनो दुबिद्धो—इच्छो अममरो व । अथा दसवेतासियसुणीए चाउओदण्त (! चाळणेदाण्त) अउदण्ठेण
 ठिवाट्ट सापुसु पठिवायणीय ८ । [आकस्यकचूर्णी विभाग २ पत्र ११७]

आयश्यकचूर्णिके इस उदरणमें दशवैकालिकचूर्णिका नाम नमर आता है । दशवैकालिकसूत्रके उपर दो चूर्णियाँ
 आब प्राप्त हैं—एक स्वबिर अगस्त्यसिंहप्रणीत और दूसरी बा आगमोद्वारक धीसागमान्दस्त्रि महाराजने रत्नामकी श्री-
 ऋषयदेवजी केजारीमछमी बैन थेतान्तर संस्थाकी ओरसे सम्पादित की है जिसके कृत्तिक नामका पता नहीं मीसा है और
 जिसके अनेक उदरण याकिनीम्हत्तरापुत्र आचार्य श्रीहरिमद्रस्त्रिने अपनी दशवैकालिकसूत्रकी सिध्यहिताइतिमें खान खान
 पर हृदयविरणके नामसे दिये हैं । इन दो चूर्णियोंमेंसे आयश्यकचूर्णिकारको कौनसी पूर्णि अमिप्रेत है ? यह एक कठिनसी
 समस्या है । फिर भी आकस्यकचूर्णिके उपर उल्लिखित उदरणको गौरसे देखनेसे अपन निर्णयके समीप पहुँच सकते हैं । इस
 उदरणमें “चाउओदण्त” यह पाठ गलत हो गया है । वास्तवमें “चाउओदण्त” के खानमें मूल्याट “चाळणेदाण्त” ऐसा
 पाठ होगा । परन्तु मूलखानको जिना देखे ऐसे पाठोंके मूल आशयका पता न बनन पर केवल शाब्दिक हृदि करके संख्या
 कथ पाठोंको विश्रानोने गलत बनाने के संख्याकथ उदाहरण मेरे सामने है । दशवैकालिकसूत्रकी प्राप्त दोनों चूर्णियोंको मैंने
 बराबर देखी है, किन्तु “चाउओदण्त”का कोई उल्लेख उनमें नहीं पाया है और इसका कोई सार्थक सम्बन्ध भी नहीं है । दश-
 वैकालिकसूत्रकी अगस्त्यसिंहिया चूर्णिमें अपने निरूपणकी समाप्तिके बाद “चाळणेदाणि” [पत्र १९] ऐसा चूर्णिकारन लिखा
 है, जिसको आयश्यकचूर्णिकारने “अममरोदण्त” वाक्यद्वारा सूचित किया है । इस पाठको बादके विश्रानोने मूल खानसिद्ध
 पाठको जिना देखे गलत शाब्दिक सुभारा कर बिगाड दिया—ऐसा निश्चितरूपसे प्रतीत होता है । अतः मैं इस निर्णय पर आया
 हूँ कि—आयश्यकचूर्णिकारनिर्दिष्ट दशवैकालिकचूर्णि अगस्त्यसिंहिया चूर्णी ही है । और इसी कारण अगस्त्यसिंहिया चूर्णी
 आयश्यकचूर्णिके पूर्वकी रचना है ।

आचार्य श्रीहरिमद्रस्त्रिने अपनी सिध्यहिताइतिमें इस चूर्णीका खास उौरसे निर्देश नहीं किया है । सिद्ध रश्मिका-
 सं रत्तिवाक्या नामक दशवैकालिकसूत्रकी प्रथम चूर्णिकाकी व्याख्यामें [पत्र २७३-२] “अन्ये तु म्याकठते” ऐसा निर्देश करके
 अगस्त्यसिंहिया चूर्णीका मतान्तर दिया है । इसके सिवा कहीं पर भी इस चूर्णिके नामका उल्लेख नहीं किया है ।

इस अगस्त्यसिंहिया चूर्णिमें वक्ताकथती संख्याकथ वाचनाव्तर—पाठभेद अर्थभेद एवं सूत्रपाठोंकी कमी-बेशीका काय्ये
 निर्देश है, जो अतिमहत्त्वके हैं ।

यहाँ पर प्यान वेन बेसी एक बात यह है कि—दोनों चूर्णिकारोंने अपनी चूर्णिमें दशवैकालिकसूत्र उपर एक प्राचीन
 चूर्णी या हृदिका समान रूपसे उल्लेख रखनाचूँकि का चूर्णिमें किया है । जो इस प्रकार है—

पुण्य इमस्तो हृदियतातो म्पुदेसमेच्छयाभासो । अथा—

दुक्तं च दुस्तमाए भीविउ येर लुसुमगा पुणो कामा २ ।

सातिष्कुम्भ मशुत्ता ३ अथिरुटाणं विम दुक्तं ४ ॥ १ ॥

शोमजगामि य विजा ५ क्त च पुणो न्तिविम मवति ६ ।

अहरोबसंपथा वि य ७ दुसुमो अयो गिदे गिद्धिणो ८ ॥ २ ॥

निवयति परिकिसेसा ९ बनो ११ साव्यबोग गिद्धिवातो १३ ।

एते तिण्णि वि बोसा य हाति अणगातवासमि १ १२ १४ ॥ ३ ॥

सापारणा य भोगा १५ पठेकं पुण्य-पावडलमेव १६ ।

शीमयनि माणवाणी कुसमावअणवठमणिर्ब १७ ॥ ४ ॥

णत्थि य अवेदयित्ता मोक्खो कम्मस्स निच्छओ एसो १८ ।
पदमट्टारसमेत वीरवयणसासणे भणितं ॥ ५ ॥ ”

अगस्त्यसिंहीया चूर्णी

दूसरी मुद्रित चूर्णोंमें [पत्र ३५८] “एत्थ इमाओ वृत्तिगाथाओ । उक्तं च” ऐसा लिखकर उपर दी हुई गाथायें उद्धृत कर दी हैं ।

इन उल्लेखोंसे यह निर्विवाद है कि—दशवैकालिकसूत्र के उपर इन दो चूर्णियोंसे पूर्ववर्ती एक प्राचीन चूर्णी भी थी, जिसका दोनों चूर्णीकारोंने वृत्ति नामसे उल्लेख किया है । इससे यह भी कहा जा सकता है कि—आगमोंके उपर पद्य और गद्यमें व्याख्याग्रन्थ लिखनेकी प्रणालि अधिक पुराणी है । और इससे हिमवन्तस्थविरावलीमें उल्लिखित निम्न उल्लेख सत्यके समीप पहुंचता है—

“तेषामार्यसिंहानां स्थविराणा मधुमित्रा-ऽऽर्यस्कन्दिलाचार्यनामानौ द्वौ शिष्यावभूताम् । आर्यमधुमित्राणां शिष्या आर्यगन्धहस्तिनोऽनीवविद्वांस प्रभावकाश्चाभवन् । तैश्च पूर्वधरस्थविरोत्तसोमास्वातिवाचकरचित-
तत्त्वार्थोपरि अशीतिसहस्रश्लोकप्रमाण महाभाष्यं रचितम् । एकादशाङ्गोपरि चाऽऽर्यस्कन्दिलस्थविरा-
णामुपरोधतस्तैर्विवरणानि रचितानि । यदुक्तं तद्विज्ञाऽऽचाराङ्गविवरणान्ते यथा—

धेरस्स महुमित्तस्स सेहेहिं तिपुब्बनागजुत्तेहिं । मुणिगणधिवदिप्पहिं ववगयरायाइदोसेहिं ॥ १ ॥

वंभदीवियसाहामउडेहिं गयहत्थिविबुहेहिं । विवरणमेय रइय दोसयवासेसु विक्रमओ ॥ २ ॥

आचाराङ्गसूत्रके इस गन्धहस्तिविवरणका उल्लेख आचार्य श्रीगीलाङ्कने अपनी आचाराङ्गवृत्तिके उपोद्घातमें भी किया है । कुछ भी हो, जैन आगमोंके उपर व्याख्या लिखनेकी प्रणाली अधिक प्राचीन है ।

४ उत्तराध्यनसूत्रचूर्णिके प्रणेता कौटिकगणीय, वज्रशाखीय एव वाणिजकुलीय स्थविर गोपालिक महत्तरके शिष्य थे । इस चूर्णिकारन चूर्णोंमें अपने नामका निर्देश नहीं किया है । इनका निश्चित समयका पता लगाना मुश्किल है । तथापि इस चूर्णोंमें विशेषावश्यकभाष्यकी स्वोपज्ञ टीकाका सन्दर्भ उल्लिखित होनेके कारण इसकी रचना जिनभद्रगणि क्षमाश्रमणके स्वर्गवासके बादकी है । विशेषावश्यक भाष्यकी स्वोपज्ञ टीका, यह श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकी अन्तिम रचना है । लघु गणधरवाद तक इस टीकाका निर्माण होने पर आपका देहान्त हो जानेके कारण बादके समग्र प्रयत्नकी टीकाको श्रीकोट्यार्यवादी गणी महत्तरने पूर्ण की है ।

५ जीतरूपवृहच्चूर्णिके प्रणेता श्रीसिद्धसेनगणी हैं । इस चूर्णिके अन्तमें आपने सिर्फ अपने नामके अतिरिक्त और कोई उल्लेख नहीं किया है । श्रीजिनभद्रगणि क्षमाश्रमणकृत ग्रन्थके उपर यह चूर्णी होनेके कारण इसकी रचना श्रीजिनभद्रगणिके बादकी स्वयंसिद्ध है । इस चूर्णिको टिप्पणककार श्रीश्रीचन्द्रसूरिने वृहच्चूर्णीनामसे दर्शाई है—

नत्वा श्रीमन्महावीर परोपकृतिहेतवे । जीतरूपवृहच्चूर्णेन्याख्या काचित् प्रकाशयते ॥ १ ॥

उपरनिर्दिष्ट सात चूर्णियोंके अतिरिक्त तेरह चूर्णियोंके रचयिताके नामका पता नहीं मिलता है । तथापि इन चूर्णियोंके अवलोकनसे जो हकीकत ध्यानमें आई है इसका यहाँ उल्लेख कर देता हूँ ।

यद्यपि आचाराङ्गचूर्णी और सूत्रकृताङ्गचूर्णिके रचयिताके नामका पता नहीं मिला है तो भी आचाराङ्गचूर्णोंमें चूर्णिकारने पददृ स्थान पर नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख किया-है, उनसेसे-सात स्थान पर “भदन्तनागज्जुणिया” इस प्रकार बहुमानदर्शक ‘भदन्त’शब्दका प्रयोग किया है, इससे अनुमान होता है कि ये चूर्णिकार नागार्जुनसन्तानीय कोई स्थविर होने चाहिए । सूत्रकृताङ्गचूर्णोंमें जहा जहा नागार्जुनीय वाचनाका उल्लेख चूर्णिकारने किया है वहा सामान्यतया

नागञ्जुषिया इतना ही सिद्धा है। अतः ये दोनों पूर्णिकार भङ्गा भङ्गा ज्ञात होते हैं। सूत्ररत्नाञ्जुषिमें त्रिनम्रगणिके विवेकात्मकभाष्यकी गाथायें एव स्वोपज्ञ टीकाके सम्प्रम अनेक स्थान पर उद्धृत किये गये हैं, इससे इस पूर्णिकी रचना श्रीमिनम्रगणिके बादकी है। तब आधाराञ्जुषिमें त्रिनम्रगणिके कोई प्रबन्धका उल्लेख नहीं है, इस कारण इस पूर्णिकी रचना श्रीमिनम्रगणिके पूर्वकी होना सम्भव अधिक है।

भगवतीसूत्रचूर्णमें श्रीमिनम्रगणिके विशापयवतीप्रबन्धकी गाथाओंके उद्धरण होनेसे और कल्पचूर्णमें साधत्विसेसावससगमासका नाम उल्लिखित होनेसे इन दोनों पूर्णिकोंकी रचना निश्चित रूपसे श्रीमिनम्रगणिके बादकी है।

दशास्यचूर्णमें केवलज्ञान-केवलदर्शनविषयक युगपदुपयोगादिबादका निर्देश होनेसे यह पूर्णिकी भी श्रीमिनम्रगणिके बादकी है।

आनन्द्यचूर्णिके प्रणेताका नाम पूर्णिकी कोई प्रतिमें प्राप्त नहीं है। श्रीसागरानन्दसुरि महाराजमें अपन सम्पादनमें इसको त्रिनम्रगणिके अष्टादश शतकई है। प्रतीत होता है कि—आपका यह निर्देश श्रीमैसागरोपाध्यायवत्त तपागण्यय पदावर्षके उल्लेखको देस कर है, किन्तु वास्तवमें यह सत्य नहीं है। अगर इसके प्रणता त्रिनदासगणि होते तो आप इस प्रासादमूत म्हती पूर्णिके त्रिनम्र गणिके नामका या विवेकात्मकभाष्यकी गाथाओंका जरूर उल्लेख करते। मुझे तो म्हती प्रतीत होता है कि—इस पूर्णिकी रचना त्रिनम्रगणिके पूर्वकी और नन्द्यचूर्णरचनाके बादकी है।

दशवैकासिकचूर्णिके (दशविषयमें) और व्यपहारचूर्णिके श्रीमिनम्रगणिकी कोई कृतिका उद्धरण नहीं है, अतः ये पूर्णिकी भी त्रिनम्रगणिके समाप्तमणके पूर्वकी होनी चाहिए।

अन्वृष्टीपकरचूर्णिके, यह अन्वृष्टीपप्रदक्षिकी पूर्णिकी मानी जाती है किन्तु वास्तवमें यह अन्वृष्टीके परिशि-श्रीवा म्नु पृष्ठ भावि आठ प्रकारके गणितको स्पष्ट करनेवाक किसी प्रकारकी पूर्णिकी है। वर्तमान इस पूर्णिके मूक प्रकरणकी गाथाओंके प्रतिक मात्र चूर्णिकारने दिये हैं, अतः कुछ गाथाओंका पता त्रिनम्रगणिके दशवैकासिकप्रकरणसे म्हा है, किन्तु कितनीक गाथाओंका पता नहीं पका है। इस पूर्णिके त्रिनम्रगणिके दशवैकासिकप्रकरणसे म्हा है, किन्तु अतः यह पूर्णिकी उनके बादकी है।

म्हों पर पूर्णिके त्रिषि उल्लेखोंको अध्ययमें रस कर पूर्णिकारके विषयमें जो कुछ निवेदन करनेका या वह करनेके बाद अंतमें यह सिद्धना प्राप्त है कि—प्रकाशमान इस म्ण्यचूर्णिके प्रणेता श्रीमिनम्रगणिके अष्टादश हैं त्रिका रत्नप्रसमय स्वतन्त्रा प्राप्त नहीं है, त्रि भी आज नन्द्यचूर्णिकी जो प्रतियाँ प्राप्त हैं उनके अन्तमें संकतका उल्लेख नबर भासा है, जो पूर्णिके रचनाका संबन्ध होनेकी संभावना अधिक है। यह उल्लेख इस प्रकार है—

शकटाः पञ्च वर्षरतेषु व्यतिक्रान्तेषु अष्टनवतेषु न्यप्ययनपूर्णा समाप्ता इति ।

अर्थात् शके ५९८ (वि सं ७३३) वर्षमें न्यप्ययनपूर्णा समाप्त हुई। इस उल्लेखको कितनेक विद्वान् प्रतिका केवलसमय मानते हैं, किन्तु यह उल्लेख न्यप्ययनपूर्णिकी समाप्तिका अर्थात् रचनासमाप्तिका ही निर्देश करता है, केवलकाशका नहीं। अगर प्रतिका केवलकाश होता तो 'समाप्ता' ऐसा न लिख कर 'अस्तित्वा' ऐसा ही लिखा होता। इस प्रकार पयत्नमें रचनासंकेत लिम्बनकी प्रया प्राचीन युगमें बीड़ी, त्रिका उदाहरण आचार्य श्रीतीकाहकी आचाराञ्जुषिमें प्राप्त है।

१ श्रीतीका १ ५५ वि ५ ५ वें वाक्योपसृष्टि अर्थात् १। त्रितीय-वृहत्कल्पमाध्याऽऽनन्द्यचूर्णिके चूर्णिकायाः श्रीमिनम्रगणिके अष्टादशवत् पूर्वगतसुतधरश्रीप्रद्युम्बहासम्यादिशिष्येभ्यः श्रीहरिमप्रसूतितः प्राचीना एव पया-काशमादिनो बोध्याः । १११५ श्रीमिनम्रगणिके उपलब्धाः । अथ च त्रितीयवृहत्कल्पमाध्याऽऽनन्द्यचूर्णिके अन्तर्गतः । इतिवत् न्यप्ययनपूर्णा ११ ४ १५१०

सूत्र और चूर्णिकी भाषा

नन्दीसूत्र और इसकी चूर्णिकी भाषाका स्वरूप क्या है ? इस विषयमें अभी यहाँ पर अधिक कुछ मैं नहीं लिखता हूँ । सामान्यतया व्यापकरूपसे मेरेको इस विषयमें जो कुछ कहना था, यह मैंने अखिलभारतीयप्राच्यविद्यापरिषत्-श्रीनगरके लिये तैयार किये हुए मेरे “जैन आगमघर और प्राकृत वाङ्मय ” नामक निबन्धमें कह दिया है, जो ‘श्रीहजारीमल स्मृतिग्रन्थ’में प्रसिद्ध किया गया है, उसको देखनेकी विद्वानोंको सूचना है ।

परिशिष्टादि

चूर्णिके अन्तमें पाच परिशिष्ट और शुद्धिपत्र दिये गये हैं । पहले परिशिष्टमें मूल नन्दीसूत्रमें जो गाथायें हैं उनको अकारादिक्रममें दी गई हैं । दूसरे परिशिष्टमें नन्दीचूर्णिके चूर्णिकारने उद्धृत किये उद्धरणोंको अकारादिक्रमसे दिये हैं । तीसरा परिशिष्ट चूर्णिके पाठान्तर और मतान्तरोंका है । चौथे परिशिष्टमें नन्दीसूत्र और चूर्णिके आनेवाले ग्रन्थ, ग्रन्थकार, स्थान, नृप, श्रेष्ठी, नगर, पर्वत आदि विशेषनामोंका अनुक्रम है । पाँचवे परिशिष्टमें सूत्र और चूर्णिके आनेवाले विषययोक्तक एवं व्युत्पत्ति-योक्तक शब्दोंका अनुक्रम दिया गया है । इन परिशिष्टोंके बादमें शुद्धिपत्रक दिया गया है । वाचक और अध्येता विद्वानोंसे नम्र निवेदन है कि इस ग्रन्थको शुद्धिपत्रके अनुसार शुद्ध करके पढ़ें ।

संशोधन और सम्पादन

इस ग्रन्थके संशोधनमें अनेक महानुभाव विद्वान् व्यक्तियोंका परिश्रम है । खास तोरसे पं भाई अमृतलाल मोहनलाल भोन्नकका इस सम्पादनमें महत्त्वका साहाय्य है । जिसने चूर्णिके और मूल सूत्रकी प्रामाणिक प्राण्डुलिपि (प्रेसकॉपी) तैयार की है, साधन्त प्रुफपत्र देखे हैं और इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण परिशिष्ट भी किये हैं । भाई श्री दलसुखभाई मालवणिया—मुख्यनियामक छा द भारतीय सस्कृतिविद्यामदिर—अहमदाबाद तथा पंडित वेचरदासभाई दोसीने मुद्रणके वादमें साधन्त देखकर अशुद्धियोंका परिमार्जन किया है, जिसके फलस्वरूप शुद्धिपत्र दिया है । भाई श्रीदलसुख मालवणिया का आगमोंके संशोधनमें श्राधत्त साहाय्य प्राप्त है, यह परम सौभाग्यकी बात है ।

वसत प्रिन्टींग प्रेसके सचालक श्री जयति दलाल और मेनेजर श्री गालिलाल गाह प्रमुख प्रेसके सर्व भाईओंका प्रस्तुत मुद्रणकार्यमें आतरिक सहयोग भी हमारे लिए चिरस्मरणीय है ।

चूर्णिके नन्दीसूत्रके संशोधनमें मात्र ग्रन्थकी प्रतियोंका ही आधार रखा गया है, ऐसा नहीं है, किन्तु मूलसूत्र एवं चूर्णिके उद्धरण प्राचीन व्याख्याग्रन्थोंमें जहाँ जहाँ भी देखनेमें आये उनसे भी तुलना की गई है । इस प्रकार प्राचीन प्रतियाँ, प्राचीन उद्धरणोंके साथ तुलना एव अनेक विद्वानोंके बौद्धिक परिश्रमके द्वारा इस नन्दीसूत्र एव चूर्णिका संशोधन और सम्पादन किया गया है । मैं तो सिर्फ इस संशोधन एवं सम्पादनमें साक्षीभूत ही रहा हूँ । अत इस ग्रन्थके महत्त्वपूर्ण संशोधन एवं सम्पादन का यश हम सभीको एकसमान है ।

अन्तमें गीतार्थ मुनिप्रवर एवं विद्वानोंसे मेरी नम्र प्रार्थना है कि—मेरे इस संशोधनमें जो भी छोटी मोटी श्रुति प्रतीत हो, इसकी मुझे सूचना दी जायगी तो जरूर अतिरिक्त शुद्धिपत्रकी तोरसे उसको आदर दिया जायगा ।

स २०२२ माघ शुक्ल पूर्णिमा
अहमदाबाद

मुनि पुण्यविजय

चूर्णियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
	चूर्णिकरणा उपक्रम-अन्तरम्	१	५	प्रत्ययज्ञानके इतिहासप्रबन्ध] मोक्षत्रयप्रबन्ध दो मेरे	१४
१	भाषा ११ मङ्गलसूत्र-गाथा २-३ महावीरपरमात्म्याकी स्तुति	२	१	इन्द्रियप्रबन्धके पाँच मेरे	१४
२	पद्या ४-१० सङ्गस्तुति-श्रीसंस्करी रच षड्, मय रच षड्, पूर्व सङ्ग और मन्वरिदिके रूपके द्वारा स्तुति	३-५	११	मोक्षत्रयप्रबन्धके तीन मेरे	१५
३	पद्या १५-१९ विनायाकीसूत्र- मोनीय विनोयो मयस्कर	६	१२	अवधिप्रबन्धके दो मेरे- क्षात्रीयार्थिक और मयप्रबन्धिक	१५
४	पद्या २०-२१ रामधरावकीसूत्र- मयान् महावीरके ११ मन्वरिदिके स्तुति	७	१३	क्षात्रीयार्थिक तथा पुनःप्रबन्धिक अथविज्ञानका स्वरूप	१५
५	भाषा २२-२९ स्वधिरावकीसूत्र- मुदस्वधिरिदिके स्तुति या २२ धर्ममा चम्बुत्सामि प्रभवत्सामि चम्बुत्सव या. २३ यद्योमत्र सम्मुक्तान मयवाहु, स्वधर्म, या २४ महागिरि सुदहली बहुक या ५ स्वाति, इवामान धामिन्व भोक्तर, या २६ आर्जसमुह, या २७ आर्जसहु या २८ आर्जसम्बिन् या २९ नाचक धर्मनापाहली, या ३ रेश्मिन्व नाचक, या ३१ सिंहनाचक, या. ३२ स्वधिरावया या ३३ विषयना या ३४-३५ नाचकन नाचक, या. ३६-३८ मूढविभाषाया या ३९ मौहित्व ४०-४१ इष्यगणि या ४२ कामान्तरावसे सर्व स्वधिरिदिके स्तुति	४-१२	१४	१ आनुबन्धिक अवधिज्ञानका स्वरूप कष्टके अन्तगत और धर्मगत मेरे तथा पुरतो अन्तगत धार्मिक अन्तगत पाशुतो अन्तगतार्थिक प्रमेदो का रचयन उन में प्रथिविज्ञेय आधिका विस्तार	१६
			२२	२ अथानुपार्थिक अवधिज्ञान	१७
			२३	३ मयमान अवधिज्ञान भाषा ४४-४५ अवधिज्ञानका चरम्य और उदाह अवधि क्षेत्र या ४६ ४९ इत्य-क्षेत्र काल-भाषकी अयेक्षाके अवधिज्ञानकी बुद्धिका स्वरूप या ५ इत्य-क्षेत्र काल-भाषका पारलरीक बुद्धिका स्वरूप या ५१ क्षेत्र-धामकी एतमताका विस्तार	१७-१८
			२४	४ इवमान अवधिज्ञान	१९
			२५	५ प्रतिपत्ति अवधिज्ञान	१९
			२६	६ अत्रिपत्ति अवधिज्ञान	१९
			२७	इत्य क्षेत्र काल माय क्षत्री अवधिज्ञानका स्वरूप	१९
			२८	या ५२ अवधिज्ञानका उपसंहार	२
			२९	मनपर्वजज्ञानका अवधिज्ञान	२
			३	मनपर्वजज्ञानके लक्षणमि सिनुममति दो मेरे	२९
६	पद्यासूत्र- पाँच ज्ञानके नाम मयादि पाँच ज्ञानकी मुमुपत्ति क्रम आदिका विवरण	१३	३१-३९	इत्य क्षेत्र काल माय क्षत्री लक्षणमि- सिनुममतिमनपर्वजज्ञानका स्वरूप और या ५३ मनपर्वजज्ञानका उपसंहार	२९
७	मन्वरिदिकीय प्रबन्ध परोक्ष रूपमें विवरण	१४		चूर्णियुक्त-अह इष्यप्रमेद और स्व-वि-अवहन इष्यप्रमेदका रचय	२९

सूत्र	विषय	पृष्ठ	सूत्र	विषय	पृष्ठ
३३	केवलज्ञानके भवस्थ और सिद्धकेवलज्ञान दो भेद	२५	५२	अपायके भेद और एकार्थिक शब्द	३५
३४-३६	भवस्थकेवलज्ञानके भेद और स्वरूप	२५	५३	धारणाके भेद और एकार्थिक शब्द	३६
३७	सिद्धकेवलज्ञानके अनन्तरसिद्ध परम्परसिद्ध दो भेद	२६	५४-५६	२८ प्रकारके मतिज्ञानका और व्यञ्जनाव-प्रहका प्रतिबोधक और मल्लक दृष्टान्त द्वारा स्वरूपनिरूपण	३७-३९
३८	अनन्तरसिद्धके तीर्थसिद्ध, अतीर्थसिद्ध आदि पद्रह भेद	२६	५७	द्रव्यक्षेत्र काल भाव आश्री आभिनिबोधिक ज्ञानका स्वरूप	४२
३९	चूर्णिमें-पद्रह भेदोंका विस्तृत स्वरूप	२६	५८	गा ७०-७५ आभिनिबोधिक ज्ञानके भेद, अर्थ, कालमान, शब्दध्रवणका स्वरूप, एकार्थिक शब्द और उपसहार	४३
४०	परम्परसिद्धकेवलज्ञान	२७	५९	श्रुतज्ञानके चौदह भेद	४४
४०	द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री केवलज्ञानका स्वरूप	२८	६०-६३	१ अक्षरश्रुतके सज्ञाक्षर, व्यञ्जनाक्षर और लब्ध्याक्षर, तीन भेद और स्वरूप	४५
४१	चूर्णिमें-केवलज्ञान-केवलदशनविषयक युग-पटुपयोग-एकोपयोग-त्रयोपयोगनादकी चर्चा	२८-३०	६४	२ गा ७६ अनक्षरश्रुत	४५
४१	गा ५४-५५ केवलज्ञानका उपसहार	३०	६५-६८	३ संज्ञिश्रुतके कालिक्युपदेश, हेतुपदेश और दृष्टिवादोपदेश तीन प्रकार, स्वरूप और ४ असंज्ञिश्रुत	४५-४७
४२	परोक्षज्ञानके आभिनिबोधिक श्रुतज्ञान दो भेद	३१	चूर्णिमें-ईहा, अपोह, मार्गणा, गवेपणा, चिन्ता, विमर्श इन शब्दोंके अर्थका स्पष्टीकरण		
४३	आभिनिबोधिकज्ञान और श्रुतज्ञानकी सर्वव सहभाविता	३१	६९	५ सम्यक्श्रुत-द्वादशाक्षीके नाम	४८
४४	चूर्णिमें-मतिज्ञान और श्रुतज्ञानका पृथक्करण		७०	६ मिथ्याश्रुत-भारत, रामायण हमी मासु-रुक्ल आदि प्राचीन अनेक जैनैतर शास्त्रोंके नाम और सम्यक्श्रुत-मिथ्याश्रुतका तात्त्विक विवेक	४९-५०
४४	मतिज्ञान और मतिअज्ञान तथा श्रुतज्ञान और श्रुतअज्ञानका तात्त्विक विवेक	३२	७१-७३	७-८ नादि-अनादि ९-१० सपर्यवसित अपर्यवसित श्रुतज्ञान, और उनका द्रव्य क्षेत्र काल भाव आश्री स्वरूप	५१
४५	आभिनिबोधिक ज्ञानके श्रुतनिश्चित अश्रुत-निश्चित दो भेद	३२	७४-७५	पर्यवाप्राक्षरका निरूपण और अतिगाट-कर्मावृत्त दशमें भी जीवको अक्षरके अनन्तमें माग जितने ज्ञानका शायतिक सद्भाव	५२
४६	अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकज्ञानके भेद, स्वरूप और उदाहरण	३३	चूर्णिमें- अक्षरपटलका विस्तृत निरूपण	५२-५६	
	गा ५६ अश्रुतनिश्चित आभिनिबोधिकके औत्पत्तिकी आदि चार भेद गा ५७-६० औत्पत्तिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण गा. ६१-६३ वर्णयिकी मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा ६४-६५ कर्मजा मतिका स्वरूप और उदाहरण, गा ६६-६९ पारिणामिक मतिका स्वरूप और उदाहरण		७६	११-१२ गमिक अगमिक श्रुतज्ञान	५६
४७	श्रुतनिश्चित मतिज्ञानके अवग्रह, ईहा आदि चार भेद	३४	७७	१३-१४ अक्षरप्रविष्ट और अक्षरवाद्यश्रुत	५६
४८	अक्षरके अर्थावग्रह व्यञ्जनावग्रह दो भेद	३४	७८	अक्षरवाद्यश्रुतके आवश्यक और आवश्यक-व्यतिरिक्त दो प्रकार	५७
४९	व्यञ्जनावग्रहके भेद और स्वरूप	३५	७९	आवश्यकश्रुत	५७
५०	अर्थावग्रहके भेद और एकार्थिक शब्द	३५	८०	आवश्यकश्रुतके कालिक और उत्कालिक दो प्रकार	५७
५१	ईहाके भेद और एकार्थिक शब्द	३५			

शुद्धियुक्त नन्दीसूत्रका विषयानुक्रम

पृष्ठ	विषय	पृष्ठ	पृष्ठ	विषय	पृष्ठ
८१	सत्त्विकमुक्त के २९ नाम	५७	१ ८-१	अनुबोधद्विचारके मुख्यप्रमाणानुबोध और	
८१	शुद्धिमें— २९ सत्त्विकमुक्तके नामोंका			प्रतिकामुबोध दो प्रकार तथा इनका स्वरूप	१
	सुस्पष्टत्ववैधियरूप			शुद्धिमें—सिद्धमन्त्रिकाका वर्णन	७
८२	सत्त्विकमुक्तके २९ नाम	५८	१११	शुद्धिका दृष्टिपथ	७१
	शुद्धिमें—शक्तिक भुक्त नामोंका सुस्पष्ट		११२-११३	दृष्टिपथका परिमाण और विषय	८
	त्ववैधियरूप। टिप्पणीमें नामोंकी कमी-		११४	दृष्टिपथकी विरासतकेो हानि	८
	वैधिका निर्देश		११५	दृष्टिपथकी भारतीयकेो मान	८१
८३	आचर्यकर्मविरिक्तमुक्त उपसंहार	६	११६	दृष्टिपथकी भारतीयकेो मान	८१
८४	अज्ञप्रविष्टमुक्तके ११ नाम	६१	११६	दृष्टिपथकी भारतीयकेो मान	८१
८५	१ आचारद्वयमुक्त स्वरूप	६१	११७	अज्ञ क्षेत्र का मूल नामी भुक्तानुबोध स्वरूप	८३
८६	२ दृष्टिपथद्वयमुक्त स्वरूप	६२	११८	या ८१ भुक्तानुबोध और ८२	
८७	३ स्वभावद्वयमुक्त स्वरूप	६२		भुक्तानुबोध का या ८३ शुद्धिके भाग	
८८	४ समभावद्वयमुक्त स्वरूप	६४		थका या ८४ सुभावभक्तानुबोध या ८५	
८९	५ विचारद्वयमुक्त स्वरूप	६५		दृष्टिपथका नामविधि और उपसंहार—नन्दी-	
९०	६ ज्ञानार्थकभासद्वयमुक्त स्वरूप	६५		दृष्टिपथकी समाप्ति	८२
९१	७ अज्ञानकर्मकाद्वयमुक्त स्वरूप	६६		प्रथम परिशिष्ट— नन्दीद्वयगत आचारमोक्ष	
९२	८ अज्ञानकर्मकाद्वयमुक्त स्वरूप	६७		अकारिक्रम	८५
९३	९ अनुसूतीनादिकर्मकाद्वयमुक्त स्वरूप	६८		द्वितीय परिशिष्ट— नन्दीशुद्धिगत उक्त	
९४	१० अज्ञानकर्मकाद्वयमुक्त स्वरूप	६९		रतोंका अकारिक्रम	८७
९५	११ विषयमुक्तके रूपविषय शुद्धविषय			तृतीय परिशिष्ट— नन्दीशुद्धिगत पादप्रकार	
	दो प्रकार तथा कर्म और स्वरूप	७		और मत्तन्त्रोंका निर्देश	८८
९६	१२ दृष्टिपथ के पांच भेद	७१		चतुर्थ परिशिष्ट— नन्दीद्वय और शुद्धिगत	
९७-१	१३ परिशुद्धिद्विचारके सात प्रकार और इनके भेद	७१		प्रथम अज्ञानकर्म के लिए सुस्पष्ट	
१ ६	दृष्टिपथके २२ प्रकार	७३		आदि के विशेषनामोंका अकारिक्रम	८९
१ ७	पूर्वपरिशिष्ट—श्रीरह पूर्व	७५		पञ्चम परिशिष्ट— नन्दीद्वय और शुद्धिगत	
				विषयविषय और सुस्पष्टपरिशिष्ट अज्ञानकर्म	९६



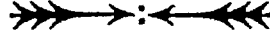
॥ णमो त्थु णं समणस्स भगवओ महड-महावीर-वद्धमाणसामिस्स ॥

णमो अणुओगधराणं थेराणं ।

सिरिदेववायगविरइयं

नंदीसुत्तं ।

सिरिजिणदासगणिमहत्तरविरइयाए चुष्णीए संजुयं ।



॥ नमो भगवते वर्द्धमानाय ॥

सव्वसुतक्खंघगादीण मगलाधिकारे णंदि त्ति वत्तवा । णंदणं णंदी, णंदंति वा अणयेति णंदी, णंदंति वा णंदी, पमोदो हरिसो कंदप्पो इत्यर्थः । तस्स य चतुव्विहो निक्खेवो । गंतासु णाम-ट्टवणासु दव्वणंदी जाणगो अणुवउत्तो । अहवा जाणग-भवियसरीरवतिरित्तो वारसविधो तूरसंघातो इमो—

भंभा १ मकुंद २ मइल ३ कडंब ४ झल्लरि ५ हुडुक्क ६ कंसाला ७ ।

काइल ८ तलिमा ९ वंसो १० पणवो ११ संखो १२ य वारसमो ॥१॥

[

]

भावणंदी णंदिसद्दोवयुत्तभावो । अहवा इमं पंचविहणाणपरूवगं णदि त्ति अज्झयणं, तं च सुत्तंसेण सव्वसुत-
व्वमंतरभूतं । तं च सव्वसुतारंभेसु विग्घोवसमणत्थमादीए मंगलं पयुज्जति । तस्स य मंगलट्टाणावसरपत्तस्स
गुरवो विणेयस्स अत्थ-सुतगोरखुप्पादणत्थं अविच्छेदसंताणागतसुतप्पदरिसणत्थं च इमं थेरावलिं कहेत्ता ततो से
अत्थं कइयंति । सव्वसुतत्था य जतो तित्थगरप्पभवा, अतो भत्तीए पणवग-सावग-पढग-चित्तगा य पढमताए
णमोकारं करेत्ता भणंति—

[सुत्तं १]

जयइ जगजीवजोणीवियाणओ जगगुरू जगाणंदो ।

जगणाहो जगबंधू जयइ जगपियामहो भयवं ॥ १ ॥

जयति० गाहा । सोर्तिदियादिविसय-कसाय-परीसहोवसेग-चउघातिकम्म-ऽट्टप्पगारं वा परप्पवादिणो य
जिणमाणो जित्तं वा जयति त्ति भण्णति । जगं ति-खेत्तंलोगो तम्मि जे जीवा तेसिं जाओ जोणीओ-सच्चित्त-सीत-
संबुडादियाओ चउरासीतिलक्खविहाणा वा विविहपगारेहिं जाणमाणो वियाणओ । अहवा जो जहा जेहिं कम्महिं
जाए जोणीए उव्वज्जति तं तथा जाणति त्ति विसिट्ठो जाणगो वियाणगो । अहवा जगगहणातो धम्मा-ऽधम्मा-
ऽऽगास-पुगलगगहणं, जीव त्ति सव्वजीवगहणं, जोणि त्ति-जीवा-ऽजीवुप्पत्तिठाणं, जहा य जं उप्पज्जति विग-
च्छति धुवं वा तं तथा सव्वं जाणइ त्ति वियाणगो । अनेन वचनेन केवलनाणसामत्थतो सव्वभावे सव्वहा जाणति

१ ऋद्धतादीण आ० दा० ॥ २ अणाए त्ति आ० । अणेण त्ति दा० ॥ ३ गयाओ णाम-ट्टवणाओ । दव्वं
आ० दा० ॥ ४ मादीय मंगलं पयुं आ० ॥ ५ वलिय कहेत्ता आ० दा० ॥ ६ कयंति आ० दा० ॥ ७ पण्णावगं
आ० दा० ॥ ८ जिणवसभो सललियवसभविक्कमगती महावीरो इत्युत्तरार्धपाठमेदश्चूणो । नाय पाठमेद कस्मिंश्चिदपि
सूत्रादर्शो उपलभ्यते ॥ ९ 'सग्गावघाति' आ० । 'सग्गुवघाति' दा० ॥ १० खेत्तभावो तम्मि आ० दा० ॥

- ० चि स्यापितं भवति । 'भगवतु' चि जगं ति-सम्प्रसङ्गिभोगो, तस्स भगवानेव गुरुः । क्वम् ? उच्यते—
 [बि० १८९ प्र०] घृणाति श्लाघामिति गुरुः, ध्रुवीतीत्यर्थः, तिरिय-भशुय-दना-ऽसुराए परिसारं पम्ममत्ताति ।
 जो वा न पुञ्जति तं सच्चं कइपति चि संभ गुरु, अनेन बचनेन परोपकारित्वं प्रदर्शितं भवति । भगा-सचा तन्न
 भाणंदकारी जगाणदो । कइं ? उच्यते-सञ्जेसि सचां भञ्जानादपोपवेसकरणचातो । भतो मणितं—"सञ्जे सचा न
 5 ईतच्चा ण परियावेतन्ना ण परिजेत्तन्ना न अजावेतम्भ" [भाषा सु १ अ ४ उ २ वृ ३] चि । भिसेसतो सञ्जेसि
 पम्मकइपचातो आकइकारी, ततो वि भिसेसतो मत्प्रसचाण ति । अनेन बचनेन हितोपदेशकृत्त्वं दर्शितं भवति ।
 भगा-सचा तं अणोहि परिमिञ्जमाणं रक्खइ चि जगाणादो । कइं ? उच्यते-मणो-भयण-काएहि कत्त-कारिता ऽजुमतेहि
 रक्खतो भगणादो भवति । अनेन बचनेन सम्प्राणीणं सणाइवा वसिता भवति । 'भगबंधु' चि भगा-सचा तेसि
 बंधु जगबंधु । कइं ? उच्यते-ओ अण्णो परस्स वा भावतीए वि न परिचयपि सो बंधु, भगवं च सुट्ठ वि
 10 परिसहोपसमादिस्स वारिजमाणो वि सचेसु बंधुचं अपरिचयंतो न विरोहेति चि भतो भगबंधु, अनेन बचनेन
 सम्प्रसचेसु संबंधुवा वसिता भवति । पितामहो चि जो पितुपिता स पितामहो, सो य भगवं वेव । सम्प्रसचाणं
 पितामहो कइं ? उच्यते-सम्प्रसचाणं अहिंसादिस्सत्तणो पम्मो पिता रक्खणचातो, सो य पम्मो भगवता पपीतो
 भतो भगवं धम्मपिता, एवं च सम्प्रसचाणं भगवं पितामहा चि । अनेन बचनेन पम्मं पइव आदिपुरिसचं स्यापितं
 भवति । एतए गाहाए पच्छस्स पारंत्तं इम-“जिणत्तमो सत्तमिभत्तमिज्जम [बि० १८९ डि०] गती महावीरो ।” जिण
 15 एव वसमो मिणवसमो । वसमो चि सजममाउम्भरणे । धंक्रमतो सुमा गापसंपाप्पक्रिया सत्तमिंत्वं भणति ।
 वास-दादिणार्थं वा पुरिम-पच्छिभत्तणाय न कम्मवत्तेवकरणं स विक्रमो भण्यति, दुपदस्स पुण एगवमपुञ्जनेनो
 वेव विक्रमो । सेसं षट् ॥ १ ॥ किंच—

जयइ सुयाणं पभवो तित्यंयराण अपच्छिमो जयइ ।

जयइ गुरु लोगाण जयइ महप्पा महावीरो ॥ २ ॥

- 20 जयति सुताणं० गाहा । राम-दोसादिभरी मिक्खतो भित्तो वा जयति चि । ['सुताणं'] सम्प्रसुताणं चि,
 सुतर्थात्त्वो भगवंताता पभवो । 'पभवो' चि पव्वती । अतिदुःखणपरिहारातो पच्छिमो चि अपच्छिमो भण्यति,
 अइवा पज्जाजुपुष्पीए अपच्छिर्मो, रिसमो पच्छिमो । अरिसिद्धजीवणोगस्स विसिद्धसण्णिवीवणोगस्स वा, अइवा
 सम्भरिदिमादिसंमत्ता ऽसमत्तसागस्स गुरुः । मइं वाठा मत्स सो य अक्रमवीरियसामत्पतो महात्मा, केववादि
 विसिद्धसदिसामत्पतो वा महात्मा ॥ २ ॥ किंच—

- 25 भइं सव्वजगुज्जोयगस्स भइं जिणस्स वीरस्स ।
 भइं सुरा ऽसुरणमंसियस्स भइं धुरयस्स ॥ ३ ॥

मइं मण्य० गाहा । मापते माति वा मद्रप्, तं भगवतो भवतु चि । सम्प्रजग ति-भगा । अद्विहो वि
 वागनिश्रतेनो माणित्तनो [अन नि० गा० १ ५०] । ससं कटं ॥ ३ ॥ इमं संपस्स वरुजगं—

१ ए-सहैया के वा ॥ २ ए एवमपत्ता के ॥ ३ "बन्धे पावा तन्ने भूवा बन्धे धीपा तन्ने तत्ता न इत्तना न
 अजावेतन्ना न परिवारेतन्ना न परिजेतन्ना न उरवेतन्ना" इति एव एवमाचारो ० ५ विसंयेव वा ॥ ५ महो भवति ।
 जनेन वा ॥ ६ एवारा वं ॥ ७ वापत्तायं भग वा ॥ ८ च्छिमो वीरो रिसमो वा ॥

[सुत्तं २]

भदं सीलपडागूसियस्स तव-णियमतुरगजुत्तस्स ।

संघरहस्स भगवओ सज्झायसुणंदिघोसस्स ॥ ४ ॥

भदं सील० गाहा । रहो सामणतो पंचमहव्वतमओ । उस्सितो त्ति तस्सऽट्टारससीलंगसहस्ससिता
जतपंडागा । वारसविहो तवो-इंदिय-णोइंदियो य णियमो एते अस्सा । सज्झायसदो णंदिघोसो । सेसं कंठं ॥४॥ 5
संघस्सेव इमं चक्ररूवग—

संजम-तवतुंवां-अयस्स णमो सम्मत्तपारियल्लस्स ।

अप्पडिचकस्स जओ होउ सया संघचकस्स ॥ ५ ॥

संजम० गाहा । विसुद्धभावचकस्स सत्तरसविधो संजमो तुवं । तस्स वारसविहत्तंमता अरगा । पारियल्लं
ति-जा वाहिरपुट्टयस्स वाहिररुभमी, सा से सम्मत्तं क्तं, जम्हा अण्णेहिं चरगादिएहिं जेतुं [जे० १८७ प्र०] ण 10
सकति तम्हा एयं जयति, अप्पडिचकं च एतं । णमो एरिसस्स [संघ] चकस्सेति ॥ ५ ॥ इमं संघस्सेव णगररूवग—

गुणभवणगहण ! सुयस्यणभरिय ! दंसणविसुद्धरच्छागा ! ।

संघणगर ! भदं ते अंक्खंडचरित्तपागारा ! ॥ ६ ॥

गुणभवणगहण० गाहा । तम्मि पुरिससंघणगरे इमे गुणा—पिंडविसुद्धि-समिति-गुत्ति-दव्वादिअभिगह-
मासादिपडिमाभोयरे य चरगादिया, एमाडिउत्तरगुणा तम्मि संघणगरे भवणा कता, भवण त्ति घरा, तेहिं 15
गहणं ति-निरंतरं संठिता घणा । तं च संघपुरिसणगरं अंगा-ऽणंगादिविचिच्चसुतरयणभरित्तं । खयोवसमितादि-
सम्मत्तमइयरच्छंओ य, मिच्छत्तादिक्यारवज्जितत्तणतो विसुद्धाओ । मूलगुणचरित्तं च से पागारो, सो य अखंडो
त्ति-अविराधितो निरंतिचार इत्यर्थः । सेसं कंठं ॥ ६ ॥ इमं पि संघस्सेव पंडुंमरूवग—

कम्मरयजलोहविणिग्गयस्स सुयस्यणदीहणालस्स ।

पंचमहव्वयथिरक्कणियस्स गुणकेसरालस्स ॥ ७ ॥

सावगजणमहुयैरिपरिवुडस्स जिणसूरतेयवुद्धस्स ।

संघपउमस्स भद समणगणसहस्सपत्तस्स ॥ ८ ॥

[जुम्मं]

कम्मरय० गाहा । कम्म एव रयो कम्मरयो । अहवा जं पुव्ववद्धं तं कम्मं, वज्जमाणं रयो, तं सव्वं पि

१ भद सील० इति संजमतव० इति गुणभवण० इति च सूत्रगाथात्रिक श्रीहरिभद्रसुरिभूतौ श्रीमलयगिरिपादवृत्तौ च
पधानुपूर्व्या व्याख्यातमस्ति ॥ २ इति० वृत्तौ मलय० वृत्तौ च "सुणेमिघोसस्स इति पाठमेदो निर्दिष्टोऽस्ति । अगचिजाशास्त्रेऽपि-
"तथ सरसपणे हिरण-मेघ-दुदुभि-वसभ-गय-सीह-सद्वल-भमर-रघणेमिणिग्घोस-सागस-कोक्किल-उक्कोस-कोच-चक्काक-हस-कुरर-चरिहिण-
ततीसर-गीत-त्राइट-तलतालघोस-उम्कुट्ट छेलित-फोडित-किंकिणिमहुरघोसपादुच्चावे सरसपण वूया । " इत्यत्र **णेमिणिग्घोस** इति पद वर्त्तते ॥
३ 'पडाता आ० ॥ ४ ख० मो० आदर्शयो केनापि विदुषा 'वारयस्स स्थाने 'वारस्स इति सशोधित वर्त्तते । एतत्पाठानुसार्थेव
मलयगिरिपादव्याख्यान वर्त्तते ॥ ५ 'तवो मद्वाअरगा जे० दा० ॥ ६ अखंडचारित्तं' सु० ॥ ७ 'च्छाया य आ० दा० ॥
८ 'कतवर' आ० दा० ॥ ९ 'णिरइचार आ० ॥ १० पउम' आ० दा० ॥ ११ 'यरपरि' हे० ल० ॥

जलोहमिव कल्प्यते । अह्ना पुत्रवर्द्धं कम्म पंको, पञ्चमार्णं जलोहो, ततो विष्मिगतो संप्रेतुगो । तस्स गाओ, सुत एव रयणं सुतरसमं तं से गाओ कृतो । पचमहम्पता य से थिर पि-इहा वे कम्पिय पि-बाहिरपचा कता । छाणा-मूळत्तराणा य से अणेगविहा [केसरा] तेहिं तुणेहिं भास्स पि-अधिकयोगपुक्कस्य गुणकेसरास्स मूणादिगणकेसरापुक्कतस्य इत्यर्थः ॥ ७ ॥

- 5 पित्तियगाहाप-परिबुद्धं चि-परिचारित, जिमहरस्स पम्मकइमकलाज्जेयेम प्रबोधिंत । अणेगसमक सरस्सा य से अमतरपचा कता । परिसस्स सपपदुमस्स मरं मवतु ॥ ८ ॥ इमं संघस्यरूपांगं—

तव-सजममयलंछण ! अकिरियाराहुमुहुदुद्धरिस ! णिबं ।

जय सघचद ! णिम्मलसम्मत्तिसुद्धजुण्हागा ! ॥ ९ ॥

तवसंजम० गाहा । संघचंदस्स भिंयो तव-सजमा, तेहिं संछितो । अकिरिय पि-अत्तियववादी ते राहुदुद्धं,

- 10 तेहिं दुभापरिसो पि-अ सक्ते जेतुं । 'णिबं' ति सम्पन्नाह । संहादिविसुद्धसम्मणं से बोणा । सेसं कंठं ॥ ९ ॥
सूरसंघस्यरूपांगं इमं—

परतित्थियगहपइणासगस्स तवतेयदित्तलेसस्स ।

णाणुज्जोयस्स जए मइ दमसघसूरस्स ॥ १० ॥

परतित्थिय० गाहा । इति-इर-श्रेण-सक्रोडक-चरा-तावसादयो परतित्थिया गाहा, तेसिं गाणातेयप्यमं

- 15 सुतादिमाम्पमाते भासेति । [वि० १८७ वि०] तव-अियमकरजातो य अतीवदिचिंतयेस्सो । छेस्स पि-रस्तीयो ।
सुतादिणाणुज्जोतसप्यस्स य इममिं जए संघसूरस्स मरं मवतु । सेसं कंठं ॥ १० ॥ इमं संघस्यरूपांगं—

मइ धिईवेलापरिबुद्धस्स सज्जायजोगमगरस्स ।

अक्खोमस्स भगवओ सघसमुद्धस्स रुद्धस्स ॥ ११ ॥

मइ चिति० गाहा । अंछ-वेदियतरे जं रमणं सा बेसा, सा य मेरा वि भण्णति, एवं संघस्यरस्स पिठो

- 20 बेसा, ताए परिबुद्धो चि-वेडितो । बायणाविसम्भापनागकरणं मगरो । परमबादोपसर्गादिभिर्न धुम्पये । रूदो मइतो । सेसं कंठं ॥ ११ ॥

इमं संघस्स वेदरूपांगं-तस्स य पच्चतस्स इमे रूपगा, तस्स य पच्चतस्स इमे अवयवा-येहं मेइसा उत्तसपो सिंहा, मेइसायुं कृहा, मेइसाए बयं गुहा, गुहामु य मेइहा सुवग्गादिधातवो, नोणादिघवीरियोसहिपग्गमित्तो, गिज्जरा य सभियजुत्ता, कुहरा य से मयूरादिपफिलउत्तमित्ता, अणुवग्गादिपिज्जुम्भतोवसोमित्तो य सो, कप्पा-
25 दिक्कमुत्तमित्तो य, अंतरतरेसु य वेदधितादितरणसोमित्तो । एतेसिं पदामं पडिरूवेण इमाहिं छहिं गाहाहिं उवसेहोरो—

१ पयुगो वा । पवगो वा ॥ २ गुणेहिं अम्मदित्तस्स ति अघिक वा ॥ ३ परिकरियस्स जिम वा ॥

४ इमं संघस्स संघरूपांगं वा ॥ ५ जोणहागा सु । गुणहागा के ॥ ६ मियो वाम तव वा ॥ ७ संघस्स सुएरूपगं तिम्भं वा ॥ ८ धीवेसा पं के ॥ ९ परियवस्स वरतं सपपदु । इत्थियदुएरि-सक्यमिरियी आनेदवगाअमुमारेव भ्याप्पनाअसि । कुण्णियसम्मत्तु वाउ दुआवावधं नोतमवते ॥ १० अइमहिं (! इत्थियं) वा ॥ ११ सुक्कवाहा के वा ॥ १२ विगिहा वा ॥ १३ भावादिमिचिचिसोसहि वा ॥ १४ संघ(पा)पो वा ॥

सम्मइंसणवइरददरूढगाढावगाढंपेढस्स ।

धम्मवररयणमंडियचामीयरमेहलांगस्स ॥ १२ ॥

णियमूसियकणयसिलायंलुज्जलजलंतचित्तकूडस्स ।

णंदणवणमणहरसुरभिसीलगंधुंछुमायस्स ॥ १३ ॥

जीवदयासुंदरकंदरूढरियमुणिवरर्मइंदइण्णस्स ।

हेउसयधाउपगलंतंरत्तदित्तोसहिगुहस्स ॥ १४ ॥

संवररजलपगलियउज्जरपविरायमाणहारस्स ।

सावगजणपउररवंतमोरणचंतकुहरस्स ॥ १५ ॥

विणयमयपवरमुणिवरफुरंतविज्जुज्जलंतसिहरस्स ।

विविहंकुलकप्परुक्खगणयभरकुसुमियकुलवणस्स ॥ १६ ॥

णाणवररयणदिप्पंतकंतवेरुलियविमलचूलस्स ।

वंदामि विणयपणओ संघमहामंदरगिरिस्स ॥ १७ ॥” [छहिं कुलयं]

सम्मइंसण० गाहा । णियमू० गाहा । जीवदया० गाहा । संवर० गाहा । विणय० गाहा ।
 णोणवर० गाहा । संघपव्वतस्स सम्मइंसैण चैव वइरं । तं च संकादिसल्लरहियत्तणयो ददं ति”^{१३} रूढं ति—वड्ढितं,
 कइं ? विसुज्जमाणत्तणयो । गाढं ति—अतीव, अवगाढं ति—ओगाढं, सदहाणत्तणतो जीवादिपदत्येसु अतीवओगाढं
 ति बुत्तं भवति । एत पेढं । धम्मो दुविहो मूलत्तरगुणेसु । सो य दुविहो वि वरो त्ति—पधाणो । तत्थुत्तरगुणधम्मो
 रयणा, तेहिं मडिता जे मूलगुणा ते चामीकरं ति, तं च सुवणं, तम्मयी मेहला, तथा जुत्तस्स मेहलागस्स ॥१२॥

नियमो ति इंदिय-णोइंदिएसु अणेगविधो, सो य णियमो सिलातला तेहिं चैव उस्सितो, असुभज्जवसाण-
 विरहितत्तणतो कम्मविसुज्जमाणत्तणतो वा उज्जलमुत्त-उत्थाणुसरणत्तणतो ये जलति चित्तं, चित्तिज्जइ जेण तं चित्तं,
 तं चैव कूडं ति चित्तकूडं तस्स । [जे० १८८ प्र०] णंदंति जेण वणयर-जोतिस-भवण-वेमाणिया विज्जाहर-मणुया य
 तेण णंदणं, वणं ति—वणसंडं । तं च लता-वल्लि-वित्तोणाणेगोसहिसतेहिं गहणं, पत्त-पल्लव-पुप्फ-फलोवेतेहिं मण-

१ ‘सणवरवइरददरूढ’ डे० शु० ल० सु० । ‘सणओयरदरूढ’ स० ॥ २ ‘ढपीढ’ सं० ॥ ३ ‘लायस्स स० ॥
 ४ ‘यलज्ज’ शु० ॥ ५ ‘गंधुद्धमा’ सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपु । ‘गधद्धमा’ हरि० वृत्तौ ॥ ६ ‘मयदइधस्स डे० । ‘मइदइधस्स ल० ॥
 ७ ‘तरयणदित्तो’ मो० सु० । ‘तरित्थदित्तो’ डे० ॥ ८ विणयणयपवरं’ मसुप्र० । चूर्णिंकृतस्सम्मत्त सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शं
 नोपलभ्यते ॥ ९ चिविहगुणकप्परुक्खगफलभरकुसुमाउलवणस्स ससुप्र० । चूर्णिंकृतस्सम्मत्त सूत्रपाठः कुत्राप्यादर्शं नोपलभ्यते ॥

१० सप्तदशगाथानन्तरं चूर्णिंकृदादिभिरव्याख्यात गाथायुगलमिदमधिक सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपूपलभ्यते—

गुणरयणुज्जलकडयं सीलसुयधतवमंडिउहेसं । सुयवारसंगसिहरं सघमहामदर वदे ॥१॥
 नगर रइ चक्क पउमे चंदे सूरु ससुह मेरुम्मि । जो उवमिज्जइ सयय तं संघ गुणायर वदे ॥२॥
 अत्रार्थे जेषु आदर्शे इय टिप्पणी वर्त्तते—“गुणेत्यादि गाथा २ वृत्तावव्याख्यातम्” ॥

११ णाणावरण० गाहा जे० दा० । अशुद्धोऽयं पाठमेव ॥ १२ ‘इसण से वइर जे० ॥ १३ ‘ति चिरवड्ढित आ० ॥
 १४ य उज्जलं-दित्तिमं चित्तिज्जइ तेण दित्तं, तं चैव आ० । अमत्तोऽशुद्धथाय पाठ ॥ १५ ‘विताणणेगसंठाणसंठि-
 तेहिं गहणं जे० दा० ॥ १६ ‘लोच्चतेहिं आ० ॥

हारिष्यतो मणहरं, गंधतो सुरमिगण । सीसवणसंभे वि जम्बा सापन्नो भंदति प्रमोदति रमतीत्यर्थः । विविरेसद्वि-
विसेसतो य मणहरं सीसवणं, विमुद्रमापक्यतो य म्नुगंधं, महा दम्बकणसंभं गंधेण उडुमात वि-भ्यातं तथा
सीसगंधेण सपस्त गंधुदुमायस्ते ॥ १३ ॥ किंच—

नं पञ्चतासर्णं सिस्वाकनस्वगणं तं कंदरं ति । मावे जीवेसु इयाकरणसुंदरं नं त कंदरं ति । तस्य य
५ तं-प्याबद्धे, दरितो चि-दप्यतो, सीवदयाकरणदप्यतो चि बुच मभति । को य सो? मुनिगणो । सो चेव मुनिगणो
मईदो परप्यबादिसासप्यसंपमयाण इंदो । कइं? सितबादुत्तममावक्यतो । हेदु चि-पकसपम्मो कारणं वा, ते
सतन्मासो मुचे समभति । ते य हेतयो भातू, ते य फगळति पक्यपगुहाए । सा य पक्यपगुहा णामादिर-
तणादिपई दिचा, खेळोसहिमादिओसहीहिं वा दिचा ॥ १४ ॥

एष विषोसविहृहस्त संपस्त सवरो चि-पद्यकलाण, त चेव सखिल, किंचि पञ्चतमातो भोसरितं उच्छरं,
१० इहावि र्नाइगभाषातो स्वयोवसमिप उच्छरं, ततो पसंबिता स्वतोवसमितसंवरदगपारा, स चेव भारा हारो, येव
विरायते-सोमति चि । सावगणो पउरो चि-बंहु प्रचुरः सो य गीतद्वणीए रभति चि-रबती, ते चेव मोरा
णावगादीहि य गभति । नं पञ्चतस्त कंदे समप्यदेसं स्वरलाकुसं [ब० १८८ दि०] च त कुहरं । एवं सपपञ्चतस्त
ईवगमंडबादी कुहरं ति ॥ १५ ॥

विणयकरणजातो विणयेमलो मुष्ठी । सो य विजयकरणचेण फुरते, त चेव फुरितं विन्नुतं ति-क्कोरितं,
१५ तं च उज्जसं ति-निम्मलं, तेव उज्जलचेव संपसिहरं जस्मितमिच लक्खिज्जति । सपसिहरं च पावयधिपुरिसा
दुट्ठ्ठा । तस्य य विविरेकुलुप्प्या साइनो कप्यकनसा, खीरासवादिसद्विपेछेहिं येणयमरा, लदिरेदुट्ठिता साइनो
कुमुमिती कुलपण चि दहन्ना ॥ १६ ॥

मति-सुतादिनाया घर चि-पहाया, ते चेव गाणावरुत्तियादिरतवा इव कंठा, कंठा इवि-कंतिजुचा ।
कंतिजुचत्तणां चेव सपिसतेव जीवादिपइत्यसकनाबसमतो दिप्यंति । नाणस्त य मसो जाणावरणं, तस्मिगमातो
२० य विगतमसं । धूमामभिरिद सिहरोवरि धूमा, सो य जाणाविसपयणेहिं जुचा, जुगप्पहाणो पुरिसो धूमा इति ।
एवं संपञ्चतस्त पेहादिधूमपइइसावकप्यिपस्त भदामि विणयपपतो चि छण्व वि गाहावं एवं क्रियापदं ति ॥ १७ ॥

एवं परमवित्पगरस्त सपस्त ये पणामे कते इमा अवसंरप्या आबली मण्णति—सा विविहा वित्पकर १
गणहर २ पेरास्ती ३ य । तस्य निमगारवन्दिदण्यत्यं इमं मण्णति—

[सुत ३]

वंदे उसभ अजिअ संभवमभिणदणं सुमति सुप्यम सुपाम ।
ससि पुप्फदंत सीयल सिज्जेस वासुपुज्ज च ॥ १८ ॥

१ स्म क्रिया । २ आ ५ २ इए- प्राक्के इत्यर्थः ३ उचिति आ ५ इयादि आ ॥ ५ बद्ध
आ ॥ ३ गीतगुणीए आ ॥ ७ बदे आ ॥ ८ पहाए आ ॥ ९ वगतो आ वा ॥ १० य पममरा आ
वा ॥ ११ ता गुणयत् ति आ ॥ १२ कंठाविहृह आ ॥ १३ सो य जाणाविसपयणकरुपावर्मगुणोदुत्तया
कुगप्पहाया पुरिसा धूमा आ ॥ १४ त आ ॥ १५ नरापण्णा आ आ ॥ १६ सेज्जेसं चं सु । सेपंतं चं ०

विमलमणंतंइ धम्मं संति कुंथुं अरं च मल्लिं च ।

मुणिसुव्वय णमि णेमी पासं तह वद्धमाणं च ॥ १९ ॥ [जुम्मं]

वंदे उस्सभ० गाहा । [विमल० गाहा य] कंठा ॥१८॥१९॥ चरमतित्थगरस्स इमा गणहरावली—

[सुत्तं ४]

पंढमेत्थु इंदभूती वितिण पुण होति अग्गिभूति ति ।

ततिण य वाउभूती तंतो वितत्ते सुहम्मं य ॥ २० ॥

मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिते चैव अयलभाता य ।

मेतज्जे य पभासे य गणहरा होंति वीरस्सं ॥ २१ ॥ [जुम्मं]

एत्थ गणहरावली ॥२०॥२१॥ तो सुधम्मात्तो थेरावली पवत्ता, जतो [जे०१८९ प्र०] भणति—

[सुत्तं ५]

सुहम्मं अग्गिवेसाणं जंवूणांमं च कासवं ।

पभवं कच्चायणं वंदे वच्छं सेज्जंभवं तहा ॥ २२ ॥

सुहम्मं अग्गिवेसाणं० सिलोगो । समणस्स णं० महावीरस्स कासवगोत्तस्स सुधम्मं अंतेवासी अग्गिवेसायण-सगोत्ते । सुहम्मस्स अंतेवासी जंवुणामे कासवे गोत्तेणं । जंवुणामस्स अंतेवासी पभवे कच्चायणसगोत्ते । पभवस्स अंतेवासी सेज्जभवे वच्छसगोत्ते ॥ २२ ॥

जसभदं तुंगियं वंदे संभूयं चैव मादरं ।

भदवाहुं च पाइणं थूलभदं च गोयमं ॥ २३ ॥

जसभदं० गाहा । सेज्जभवस्स अंतेवासी जसभदे तुंगियायणे वग्धावच्चसगोत्ते । जसभदस्स अंतेवासी इमे दो थेरा— भदवाहुं पंथीणगिसगोत्ते, समूतविजण य मादरसगोत्ते । समूतविजणस्स अंतेवासी थूलभदे गोतमसगोत्ते ॥२३॥

एलावंच्चसगोत्तं वंदामि महागिरिं सुहत्थिं च ।

ततो कासवगोत्तं बहुलस्स सखिवयं वंदे ॥ २४ ॥

१ ० मणंतय डे० ल० सु० ॥ २ णेमिं ख० जे० सु० ॥ ३ इद गाथायुगल चूर्णिकृता चूर्णी स्वयमेवेत्थमुल्लिखितमस्ति । पदमित्थ इंदभूई धीप पुण होइ अग्गिभूइ ति । तइय य वाउभूई तथो वियत्ते सुहम्मं य ॥ मंडिय-मोरियपुत्ते अकंपिप चैव अयलभाया य । मेयज्जे य स० डे० शु० मो० ॥ ४ वायभूई डे० ल० ॥ ५ तहा मो० ॥

६ एकविंशति-द्वाविंशतिगाथयोरन्तराले चूर्णिकृताऽव्याख्याताऽपि श्रीहरिभद्रसूरि-श्रीमलयगिरिपादाभ्यां स्वस्ववृत्तौ व्याख्याता जिनशासनस्तुतिरूपा इयमेका गाथाऽधिका सर्वेष्वपि सूत्रादशेषु वर्तते—

णेव्वुइपहसासणय जयइ सया सव्वभावदेसणयं । कुसमयमयणासणयं जिणिदवरवीरसासणयं ॥

जयति शु० । जयउ डे० ल० । जिणंदं ल० ॥

७ जंवुणाम स० ॥ ८ सिज्जंभवं ल० मो० ॥ ९ पायसं डे० ल० ॥ १० वाइणतिसगोत्ते आ० ॥ ११ वच्छसं स० डे० ल० । वत्तसं शु० ॥ १२ गुत्तं शु० ल० ॥ १३ कोसियगोत्तं समुप्र० । श्रीहरिभद्र-मलयगिरिपादाभ्यामेतत्पाठानु-सारेणैव व्याख्यातमस्ति । चूर्णिकृतसम्मतं सूत्रपाठो नोपलभ्यते कुत्राप्यादर्शो ॥

पलाबब० गाहा । धूमरस्त अंतेवासी इमे दो वेरा-महामिरी पलाबबसरोचे, सुहली य वासिदुसगोचे । सुहसिस्त सुद्विप्त-सुद्विप्तवायुयो आक्रीते जहा इसासु [अ० ८ सूत्रं २१०] तथा मामितन्वा, इहं तेहिं महिगारो बलिय, महागिरिस्त आबलीए अधिकारो । महागिरिस्त अंतेवासी बहुखे बलिस्तहो य दो नमसभातरा क्रासक-सोचा । तस्य बलिस्तहो पावयबी भातो, तस्य पुविकरणे भयति-“बहुधस्त सरिचय बंदे ” । ‘सरिचय’ ति सरिसययो, बयो य नम्मकारं पइच ना ना सरीएरिबिहवन्त्या सा सा वतो मणति ॥ २४ ॥

हास्यिगोत साइ च वदिमो हारिय च सामञ्ज ।

वदे कोसियगोत संदिल अज्जजीयघर ॥ २५ ॥

हारिय० गाहा । बलिस्तहस्त अंतेवासी साठी हारियसगोचो । सासिस्त अंतेवासी सामजो हारिउसगोचो चेव । सामनस्त अंतेवासी संदिलो कोसियसगोचो, सो य अज्जमीतपरो ति अज्ज ति-आर्ये माघ या नीत ति-सुचं परति, सुचस्यस्त अधिकुतिपरमघातो, बंदे ति पइसेस । पाठवं वा “जोभर” ति, आर्यत्वात् वीचं परेति-रसती- 10 त्यर्थः । अण्ये पुण मणति-संदिहस्त अंतेवासी जोभरो अणगारो, सो य अज्जसगोचो ॥२५॥ संदिहस्त सीसो—

तिसमुहसायकिति दीव-समुहेसु गहियपेयाल ।

वदे अज्जसमुहं अक्खुमियसमुहगभीर ॥ २६ ॥

तिसमुह० गाहा । पुञ्चवत्तिका-उपर ततो स्मृरा, उचरतो वेठइठो, एततरे स्वातकिची । सेसं कंठं ॥२६॥ तस्य सीसो [अि १८९ वि] इमो— 15

मणमं करग म्हासा पमावग णाण-दसणगुणाण ।

वदामि अज्जमगु सुयसागरपासु धीर ॥ २७ ॥

मणमं० गाहा । कामियपुञ्चसुचस्यं मणतीति मणको । वरण-करणकियां करातीति कारक । सुचस्ये य मणसा हार्यतो म्हारको । परपवादिजयण पत्रवचपमावको । नाव-ईसव-वरमगुणार्णं च पमावको भाषारो य । सेसं कंठं ॥२७॥ तस्य सीसो— 20

णाणमि दसणमि य तव विणए णिच्चकालमुज्जुत्तं ।

अज्जोणंदिल्लमण सिरसा वंदे पसणमणं ॥ २८ ॥

१ अत्र युक्तिरुता हरिमद्रपरेव सुहसिरी मगार इयासुतल्पावभाषवत्तविरात्म्यामि व वासिदुसगोत्रव अनाहित किञ्च मज्जयगिरिद्युतिरवैरव सुगगावदोभोम्यां वेद्यापत्यवयोत्रोव क्ववपिठ, तत्र तस्या एव प्रमाञ्च ॥ २ कोसियगोता वा ॥ ३ मयिष्ये वा ॥ ४ परगुं सार्यं च के इ ॥ ५ जीचरं इति चूर्णो पाठ्यतरम् ॥ ६ तेषां शाण्डिकपा-पार्श्वानां आर्येजीतपर-आर्येसमुद्रास्त्री इति किञ्चानुस्यम् । आर्येसमुद्रस्याऽऽर्येसमुद्रात्तत्राः अनावका सिध्दा वादा ” इति हिमवन्तस्यविदावस्थाम् पत्र १ ॥ ७ कारकिति च ॥ ८ परयेतरे वा ॥ ९ अज्जसंगुं च ॥ १० अहमिद्विस्तम-पावाभन्तं इ इति विद्याम परांशु सुचस्यित्तु गावाकुण्डमिवमिचमुपच्यते—

वदामि अज्जयममं बंदे ततो य मरगुं च । तच्छा य अज्जवर्दं तत्र-निचमगुणेहिं वयरसयं ।

वदामि अज्जटिकियवयणे टिकियवटिचसप्यस्ते । एवचकरंइयामूजो अणुमोगो टिकिभो सेदिं ॥

एत्यावापुचकियने केव अणमिव टियनी- वदामि अज्जयममं० “एतसि पावाहन न चूर्णो विहस्य आतकिचान्तर-वामिच्यवदिदि हन्त्याम्ये । ११ अज्जहमिविक च ॥

णाणम्मि दं० गाहा । कंठा ॥२८॥ तस्स सीसो—

वड्ढु वायगवंसो जसवंसो अज्जणागहत्थीणं ।

वागरण-करण-भंगी-कम्मप्पयडीपहाणाणं ॥ २९ ॥

वड्ढु० गाहा । 'वड्ढु' ति वृद्धिं यातु । को य सो ? 'वायगवसो' वायेंति सिस्साणं कालिय-पुञ्जसुतं 5
ति वातगा-आचार्या इत्यर्थः, गुरुसंणिहाणे वा गिस्सभावेण वाट्तं सुतं जेहिं ते वायगा, वंसो ति-पुरिसपञ्च-
परंपरेण ठितो वंसो भण्णति । सो चेव जसोवज्जणतो संजमोवज्जणतो वा जसवंसो भण्णति, सो य अणागतवंसो
इत्यर्थः । कस्स सो एरिसो वंसो ? भण्णति, अज्जणागहत्थीणं ति । केरिसाणं ? ति पुच्छा, भण्णति-जीवादिपदत्थ-
पुच्छासु वाकरणे सद्वाहुडे वा पहाणाणं, एवं चरणकरणे कालरुणेसु वा सञ्चभंगविकप्पणासु य तप्परुवणे य
तहा कम्मप्पगडिपरुवणाए पहाणाणं पुरिसाणं वड्ढु वायगवसो ॥२९॥ तस्स सीसो—

जच्चजणधाउसमप्पहाण मुदीय-कुवल्लयनिहाणं ।

वड्ढु वायगवंसो रेवइणक्खत्तणामाणं ॥ ३० ॥

जच्चजण० गाहा । जच्चजणगहणं किच्चिमवुदासत्थं, सरीरवण्णेण तन्निभो । तहा सरस-पक्कमुद्दियफलसण्णिभो
य । कुञ्चित्तो उवल्लो कुवल्लो, सो य कण्हकायो, कुवल्लयं वा-णीलुप्पलं, कुवल्लयं वा-रयणविसेसो । रेवतिवायगो
त्ति । सेसं कंठं ॥३०॥ तस्स सीसो—

अयलपुरा णिक्खंते कालियसुयआणुओगिए धीरे ।

वंमहीवग सीहे वायगपयमुत्तमं पत्ते ॥ ३१ ॥

अयलपुरा० गाहा । वंमहीवगसाहीणं आयरियाणं समीवे निक्खंतो सीहवायको, उत्तमवायकत्तणं च तक्का-
लमुत्तसंभवं पडुच्च । सेसं कंठं ॥ ३१ ॥ तस्स सीसो—

"जेसि इमो अणुओगो पयइ अज्जावि अड्ढभरहम्मि ।

वहुनगरनिग्गयजसे ते वंदे खंदिलायरिए ॥ ३२ ॥

जेसि इमो० गाहा । कहं पुण तेसि अणुओगो ? उच्यते-वारससंवच्छरिए महंते दुब्भिकखकाले भत्तद्वा
अण्णत्तो फिडित्तानं गहण-गुणणा-ऽणुप्पेहाभावत्तो सुते विप्पणट्ठे पुणो सुभिकखकाले जाते मधुराए महंते साहु-
समुदए खदिलायरियप्पमुहसंवेण 'जो जं संभरति' ति एवं संघडित्तं [जे० १९० प्र०] कालियसुतं । जम्हा य
एतं मधुराए कतं तम्हा माधुरा वायणा भण्णति । सा य खदिलायरियसम्मय ति कातुं तस्सतियो अणुओगो
भण्णति । सेसं कंठं । अण्णे भण्णति जहा-सुतं ण णट्ठं, तम्मि दुब्भिकखकाले जे अण्णे पहाणा अणुओगधरा ते 25
विणट्ठा, एगे खदिलायरिए संधरे, तेण मधुराए अणुयोगो पुणो साधुणं पवत्तितो ति माधुरा वायणा भण्णति,
तस्सत्तितो य अणुयोगो भण्णति ॥ ३२ ॥

१ 'भगिय-कम्म' ख० मो० विना । हाणि० वृत्तौ अयमेव पाठ आहतोऽस्ति ॥ २ संण्णिण्णे वा आ० ॥ ३ रेवयणं
दे० ल० ॥ ४ कुञ्चित्तो उवल्लो कुवल्लो आ० ॥ ५ जेसि तिमो ल० ॥ ६ अणुयोगो दा० ॥
सु० २

ततो हिमवतमद्वतविक्रमे धिङ्परकमर्महेते ।

सज्ज्ञायमणंतघरे हिमवते वदिमो सिरसा ॥ ३३ ॥

ततो हिम० गाहा । हिमवतपञ्चतेज महेतवणं वृद्धं मस्त सो हिमवतमहेतो, इह मरहे धतिय अन्तो वसुष्ठो धि, एस धुतिनायो । उचरतो वा हिमवतेण सेसदिसाद्यु य समुरेण निवारितो भसो, हिमवतनिवारयो ॥ ३३ ॥ सौ महेतो धि अन्तो हिमवतमहेतो । महेतविक्रमो कहे ? उच्यते-सामत्यतो, महेते वि कुम्भ-गन्ध-सपप्ययोयणे वरति धि, परप्यवादिभरण वा विसेसमदिसंपन्नचणतो वा महेतविक्रमो । अहया परिसहोयसगे तवधिसेसे वा पित्तियछेये परकमतो महेता । अणंतगम-पञ्चपचणता अन्तपरो ठ, महेत हिमवतनाम वदे । सेसं कंठं ॥ ३३ ॥

किंच—

कालियसुयअणुओगस्स धारए धारए य पुब्बाण ।

हिमवंतस्समासणे वंदे णागज्जुणायरिए ॥ ३४ ॥

कालिय० गाहा । हिमवतो येव हिमवतस्समासमणो । तस्स सीसा णाम्भुणायरितो ॥ ३४ ॥

तस्स इमा वृषकिचभा—

मिदुं-मद्ववसपण्णे अणुपुब्बिं वायगत्तण पत्ते ।

ओहसुयसमायारे णागज्जुणवायए वदे ॥ ३५ ॥

मिदु-मद्वव० गाहा । 'अणुपुब्बी' सामादियादिसुतमारणेज, काम्भो य पुरिमपरियायचणेज पुरिसाज्जु-पुम्भितो य वायगत्तणं पत्तो, ओहसुत य उत्समो, तं च आयरति । सेसं कंठं ॥ ३५ ॥

णाम्भुणवायगस्स सीसो भूतदिणो आयरितो । तस्मिमा गुणकिचभा ठिर्हिं गाहाहिं—

तंवियवरकणग-चपय विमउल्वरकमलत्राभंमंसरिणणे ।

भवियजणहिययदइए दयागुणविसारए धीरे ॥ ३६ ॥

अद्दमरहण्यहाणे बहुविहसज्ज्ञायसुमुणियपहाणे ।

अणुंओगियवरवसहे णाइलकुलवसणविकरे ॥ ३७ ॥

१ महेते क- सं म । केसु अती 'महेते' इति पाठस्योपरि दिप्यती वचा— "महेते इति इती व्याक्याण् । इति ॥

२ सुतिनायो वा ॥ ३ अतो हिमवतो धि अन्तो हिमवते महेतविक्रमो कहे ? वा ॥ ४ अतो महेतं वा सुतं महेतं वा ॥

५ पुज्जो ग ॥ ३ मिय म हे ॥ उच्यते-सामत्यतणं P अति विहाव उवात्सि एतत्रति-कृत्तव्यत इतं पावातुयकमभियम्—

गोर्धित्वां धि अन्तो अणुमोरो चिककधारमित्वां । चिक्रं अंति-वयानं परकमे पुद्गमित्वां ॥

ततो य भूयदिकं निधं तव-संजमे अनियिच्यं । पञ्चिपचणसामभं वंशामी संज्ञामधिहन्तु ॥

वतहावातुयकमभियं "इरमसि गावाहव न कुतो क्लृप्तित इति केसु अती दिप्यती ॥ ८ पुरिमपरि वा । पूरपरि के ॥

९ धर्मात्सि एतत्रतिव बरकजमतवियवर्षय इति पाठ उच्यते । मगला इरियमद्वाचकं 'बरकजगं गाहा' इति अती-इत्येव एव पाठ एतद्विद्योति । कुर्वी पुना "तवियं गाहा" इति अतीकरवनात् कुर्विता तवियवरकजगवर्षय इति पाठ आद्यः सम्भाष्यते । भीमकयगिरिराईरु "बरतवियेत्यादि गाथाचपय इति अतीकमिहइनेव बरतवियकजगवर्षय इति पाठोऽप्युच्यते । न पाठोऽप्युच्यते-मकमधीनारविर्दिह पाठोऽप्युच्यते एतत्तरेणु इत्येव ॥ १० ॥ अमसिदिह ५ । "अमसमय ६ ॥ ११ पुमोयिय ५ । पुमोययं ६ । अहियमद् मकयगिरिनिन्नामवयेव पाठः अरवती एतद्विद्योति ॥

१० अमसिदिह ५ । "अमसमय ६ ॥ ११ पुमोयिय ५ । पुमोययं ६ । अहियमद् मकयगिरिनिन्नामवयेव पाठः अरवती एतद्विद्योति ॥

भूयहिययप्पगब्भे वंदे हं भूयदिण्णमायरिण्ण ।

भवभयवोच्छेयकरे सीसे णागज्जुणरिसीणं ॥ ३८ ॥ [विसेसयं]

तेचिय० गाहा । गब्भो त्ति-पोमकेसरा । सेसं कंठं ॥ ३६ ॥

अड्ढभरह० गाहा । बहुविहो सज्जायो त्ति-अणपविट्ठो वारसविधो, अणंगपविट्ठो य कालिय-उकालित्तो अणेगविहो । सो य पयाणो त्ति, सुगुणितत्तणेण निस्संको त्ति कातुं । सेसं कंठं ॥ ३७ ॥

भूतहितय० गाहा । भूतहितं ति अहिंसा । [जे० १९० द्वि०] पगब्भं ति-धारिट्ठं । अहिंसाभावे पाग-ब्भता, अतीवअप्पमत्तताए अहिंसाभावपरिणता इत्यर्थः । सेस कंठं ॥ ३८ ॥

भूतादण्णस्स सीसो लोहिच्चो । तस्स इमा थुती—

सुमुणियणिच्चा-ऽणिच्चं सुमुणियसुत्त-ऽत्थधारयं णिच्चं ।

वंदे हं लोहिच्चं सब्भावुभावणात्तच्चं ॥ ३९ ॥

सुमुणित० गाहा । सुट्ठु मुणितं सुमुणितं । किं त ? भण्णति-जीवो जीवत्तणेण निच्चो, गतिमादिएहिं अणिच्चो । परमाणु अजीवत्तणेण मुत्तत्तणेण य निच्चो, दुप्पदेसादिएहिं वण्णादिपज्जवेहिं य अणिच्चो । सुट्ठु त मुणितं मुत्त-ऽत्थं धरेति । णिच्चकाल पि म्वे भावे ठितो सब्भावो, सँ-सोभणो वा भावो सब्भावो, सँ-विज्जमाणो वा भावो सब्भावो, त उव्भासए तच्चत्तणेण, तथ्यत्वेन इत्यर्थः । तं च लोहिच्चणामं आयरियं वंदे । सेसं कंठं ॥ ३९ ॥

तस्स लोभिच्चस्स सीसो दूसगणी । तस्स इमा थुती—

अत्थ-महत्थक्ख्वाणि सुंसमणवक्ख्वाणकहणणेव्वाणि ।

पयतीए महुरवाणि पयओ पणमामि दूसगणिं ॥ ४० ॥”

सुकुमाल-कोमलतले तेसिं पणमामि लक्खणपसत्थे ।

पादे पावयणीणं पाँडिच्छासएहि पणिवइए ॥ ४१ ॥

अत्थ-महत्थ० गाहा । खाणि त्ति-आगरो । सा य अत्थस्स खाणी । किंविस्सिट्ठस्स ? महत्थस्स । महत्थो य अणेगपज्जायभेदभिण्णो । अहवा भासगरुवो अत्थो, विभासग-सच्चपज्जववत्तीकरो य महत्थो । एरिसस्स अत्थस्स खौणी । का सा ? 'वाणि' त्ति संवज्जति । सुभो समण(णो) सुस्समण(णो), तस्स सुस्समणस्स वक्ख्वा[णकह]णं ति-अत्थकहणं, तस्मि अत्थकहणे सोत्ताराण करेति वाणी णेव्वाणी । अहवा वक्ख्वाणं ति-अणुयोगपरुवणं,

१ वरकणग० गाहा आ० । वरकणगतविय० गाहा दा० ॥ २ धारेयव्व । अहिंसा आ० । धारेव्वं मो० ॥ ३ धारयं वदे । सब्भावुभावणया, तत्थ लोहिच्चनामाणं ॥ इति सु० पाठ । नाय पाठश्चण्णि-वृत्तिकृतां सम्मत, नापि च सूत्रप्रतिष्ठाप्यते ॥ ४ सन् शोभनो वा भाव सद्भाव, सन्-विद्यमानो वा भाव सद्भाव इत्यर्थः ॥ ५ संघेज्जमाणो आ० ॥ ६ वक्ख्वाणी हे० ल० ॥ ७ सुसच्चणं चूर्णं पाठान्तरम् ॥ ८ व्वाणी हे० ल० ॥ ९ वाणी हे० ल० ॥ १० गणी हे० ल० ॥ ११ चत्वारिंशत्तमगाथानन्तर P प्रति विहाय मर्वासु सूत्रप्रतिष्ठाप्यते गाथेयमधिकोपलभ्यते—

तव नियम-सच्च-संजम-विणय-ऽज्जव-खति-महवस्याण । सीलगुणगहियाण अणुओगलुगपहाणाणं ॥ अत्र "गहियाण" इति "गदिताना" ख्यातानाम्" इति आवश्यकदीपिकाकृता व्याख्यातमस्ति । एतद्गाथात्रिये-जेसु० प्रती "एपाऽपि गाथा न वृत्तौ कुतश्चित्" इति टिप्पणी वर्त्तते ॥ १२ पडिं सु० ॥ १३ खाणी, दूसगणि त्ति संयं आ० ॥

कर्म वि-अनखेयमादियाहि कहराहि धम्मकर्मण । तत्थ कुट्टाण वि भागताण तस्स पाणी जेन्वाणि जणेति,
किमग पुत्र धम्मस्तरणद्वमागताण ? । अहना पाबो-“सुसवण” वि तत्थ सवण धि-कम्पा, तेसु सुहं जणेइ वि
सुस्सवणा, एवं इकारलोवातो भण्णति । अहपा सुस्सवणा सुस्सवा इत्यथः । संस कंठ ॥ ४० ॥ इमा वि दुरसगणिणो
वेव चण्णपुती—

5 सुकुमाल० गाहा । पनयण-दुवाल्लसंगं गणिपिडग नस्स अत्थि सो पाययन्ती, गुरपो पि कातु बहुवयण
मखितं । सेसं कंठ ॥ ४१ ॥ एस बामोकारा आयरिययुगप्यइणपुरिसाण विसेसमाइवातो फटो । इमा पुत्र
[बे० १९१ प्र०] सामण्णतो सुवविसिद्धान् कज्ज—

जे अण्णे भगवत्ते कालियसुयआणुओगिण्ण धीरे ।
ते पणमिउग्ग सिरसा णाणस्स पैरूवणं वोच्छ ॥ ४२ ॥

॥ येराबलिया नम्मत्ता ॥

10

जे अण्णे० गाहा । कटा ॥ ४२ ॥
एतं च नाणपकूयणअणयण अरिइस्स वेअत्थि, गो अवरिइस्स देग्गइ । अतो मखितं—

[सुत्त ६]

सेलचण १ कुट्टग २ चालणि ३ परिपूणग ४ इंस ५ महिस ६ मेसे ७ य ।

15

मसग ८ जल्लग ९ बिराली १० जाहग ११ गो १२ मेरि १३ आमीरे ॥ ४३ ॥

सा समासओ तिबिहा पण्णत्ता, त जहा-जाणिया १ अजाणिया २ दुब्बियइदा ३ ।

१ सेलचण० गाहा । एत्थ अरिहा इम कुहेसु-अण्णसरयधम्मसारिअ, पसस्वमाबितेसु य अणम्मसा
रिअ । तहा इंस-मेम-नक्ख-जाहगसारिअ अरिहा, गो-मेरी-आमीरेसु य पसत्योअणतोअणीता अरिहा । सेसा
अण्णअरिहा ॥ ४३ ॥

20

इमस्स य नाणपकूयणअणयणस्स पकूवणे परिसा भाणिनाइ तिबिहा भाणितम्भा । तत्थ भाणिया—
एव-दोसविसेसण्ण अण्णभिमाहिवा य कुस्सुइ-मठेसु । सा स्वल्ल भावणपरिसा गुणठविह्वा अणुपपम्भा ॥१॥

[कम्ममा गा ३६९]

१ किअइ हा ३ २ इविअण व । धविअण P ३ पकूवणं च ॥ ४ आमीरे अर्वास्सति एत्तमिडु । एव एव वाअ
अरिअइअ अकूयणित्थिअं अक्खमातोअस्ति ३ ५ एत्थयुअणत्तरं वे ३ मो अणं ४ मीडु कूवि-कूविअइअक्खमातोअस्तिअतोअ
अस्तिअ एत्तामातः पाठ अण्णत्तरं—

आणिया अहा—

अरिअणिअ अहा ईसा के सुइमि इह गुणपुणवमिअ । होसे य विअअअदी तं आणसु आणियं परिअ ।

अवाणिया अहा—

आ होइ पणरमइवा मियअवय-सीह-कुकुडगमूया । एवअणिव अलंअविवा अजाणिया सा मवे परिसा ॥

दुब्बियइदा अहा—

त य कत्थइ मिअमो व व पुच्छइ परिअअस्स होसेव । अत्थि अण्ण वाअपुणो पुअइ नायिअवयिअइवो ॥
एत्ताअस्तिअ वेअ अण्णअणिव मियअवयिअ विह्वल मियत्ता इअस्से— “आणियेअत्थेण एत्थ पावणव कुणो न
आक्खमात्तं अतोअण्णत्तरं धम्मत्तते” इति ॥ १ आमीरेसु आ ॥

इमा अजाणिया—

पगतीमुद्धमजाणिय मियछावय-सीह-कुकरगभूता । रयणमित्र असंठविता सुहसणप्पा गुणसमिद्धा ॥ २ ॥
[कल्पभा गा ३६७]

इमा दुव्वियइहा—

किंचिमत्तगाही पल्लवगाही य तंरियगाही य । दुव्वितड्ढिया उ एसा भणिता तिविहा भवे परिसा ॥ ३ ॥ 5
[कल्पभा. गा. ३६९]

एत्थ जाणिया अजाणिया य अरिहा ॥ एवं कतमंगलोवयारो थेरात्रलिक्रमे य दंसिए अरिहेसु य दंसितेसु दुस्सगगिसीसे देववायगो साहुजणहितट्ठाए इणमाह —

७. णाणं पंचविहं पणत्तं, तं जहा—आभिणिवोहियणाणं १ सुयणाणं २ ओहिणाणं ३
मणपज्जवणाणं ४ केवलणाणं ५ । 10

७. नाणं पंचविहं० इत्यादि । अस्य व्याख्या—णाती णाणं—अत्रोहमेत्तं, भावसाधणो । अहवा णज्जइ अपेजेति नाणं, खयोवसमिय-खाइएण वा भावेण जीवादिपदत्था णज्जंति इति णाण, करणसाधणो । अहवा णज्जति एतमिह चि णाणं, नाणभावे जीवो च्चि, अधिकरणसाहणो । पंच इति संखा । विधिरिति भेदो । पणत्तं पणवितं प्ररूपितमित्यनर्थान्तरम्, अत्थतो तित्थकरेहिं, सुत्ततो गणधरेहिं । अहवा पण्णा—बुद्धी, पहाणपण्णेण अवाप्तं पणत्तं, सम्मद्विट्ठिणा लद्धमित्यर्थः । अहवा पहाणपण्णातो अवाप्तं पणत्तं, तित्थकरसमीवातो गणधरेहिं 15 लद्धं ति बुत्तं भवति । अहवा पण्णा—बुद्धी, तीए अवाप्तं पणत्तं, तित्थकर-गणधरा-SSयरिएहिं कहिज्जंतं [जे० १९१ द्वि०] • बुद्धीए पणत्तमिति । तद्विचणेण अधिकतत्थं नाणं संवज्जति । जे पुव्वसुत्रणत्था पंच णाणभेदा तेपा प्रतिपद-मभ्युपगमे जहासदो । अत्थाभिमुहो णियतो बोधो अभिनिबोधः, स एव स्वार्थिकप्रत्ययोपादानादाभिनिवो-धिकम् । अहवा अभिनिबोधे भवं, तेण निव्वत्तं, तम्मत्तं तप्पयोयणं वाSSभिणिवोधिकं । अहवा आता तदभिनिवुज्झए, तेण वाSSभिणिवुज्झते, तम्हा वा[SSभिणि]वुज्झते, तमिह वाSSभिनिवुज्झए इत्ततो आभिनिवोधिकः । स एवाSSभि- 20 णिवोधिकोपयोगातो अनन्यत्तादाभिनिवोधिकम् १ । तहा तच्छृणोति, तेण वा सुणेति, तम्हा वा सुणेति, तमिह वा सुणेतीति सुत्तं । आत्मेव वा श्रुतोपयोगपरिणामादनन्यत्वाच्छृणोतीति श्रुतम् २ । अवधीयते इति अवधिः, तेण वाSवधीयते, तमिह वाSवधीयते, अवधाणं वा अवधिः, मर्यादेत्यर्थः । ताए परंपरोपणिवंधणातो दव्वादतो अवधीय(यं)त इति अवधी ३ । परि-सव्वतोभावेण गमणं पज्जवण पज्जवः, मणसि मणसो वा पज्जवो मणपज्जवो, स एव नाणं मणपज्जवणाणं । तहा पज्जयणं पज्जयः, मणसि मणसो वा पज्जयः मनःपर्ययः, स 25 एव नाणं मणपज्जयणाणं । तहा आयो पावणं लाभो इत्यनर्थान्तरम्, सव्वतो आतो पज्जातो, मणसि मणसो वा पज्जायो मणपज्जायो, स एव नाणं मणपज्जव(पज्जाय)णाणं । अहवा मणसि मणसो वा पज्जवा मणपज्जवा, तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जवणाणं । तहा मणसि मणसो वा पज्जया [मणपज्जया], तेसिं तेसु वा नाणं मणपज्जयणाणं । गमणपरावत्तेगो लाभो भेदा य बहुपरावत्ता । मणपज्जवम्मि नाणे णिरुत्तवयणSत्थ पंचेत्ते ॥ १ ॥ ४ ।

[] 30

१ जे होंति पगयमुद्धा मिग् इति कल्पभाष्ये ॥ २ तुरियं आ० दा० ॥ ३ सतद्विट्ठिणा आ० ॥ ४ तदित्यनेन अधिकृतार्थम् इत्यर्थः । “त जहा” इति सूत्रात्ते विद्यमान ‘तद्’ इति पदमनुलक्ष्येद वचनम् ॥ ५ इत्यतः इत्यर्थः ॥

“कथं कर्मणं सुदं सकलभसापारणं अणतं च ।” [विशेषा गा० ८४] इत्यर्थः ५। नाणसरो य सन्धत्वाऽऽ
 मिनितोषिकादीन् समाणाधिकरणा [बे० १९२ प्र०] दृष्ट्वा, तं जहा—आमिनिषाधिकं च तं नाण च आमिनि-
 षोषिकनाणं । एवं सन्धेयु वेदुष्यं । पुण्या य—किमेस मतिनाम्नादियो क्त्वा ? एत्य उचरं मण्ठि—एस
 सकारणो उचरणासो । इमे य से कारणा—सुष्ठसामिषचतो सन्धकाव्यविच्छेदद्विषेणतो इंदिया ऽर्द्धिदियणिमिष
 5 चणतो सुष्ठनत्वतोवसमकारणचयतो सम्बद्धादिविसयसामण्यचणतो परुषत्वसामण्यचयतो य सम्भावे य सेसप्राण
 संभवातो भतो भादीए मति-सुताइ क्त्वाइ । तेसु वि य “मतिपुञ्जत सुत” [सुतं ४२] ति पुञ्जं मतिपार्ण
 कृतं, तस्य य पिद्धतो सुत ति । अइया इंदिया-ऽर्द्धिदियनिमिषचणमविसिद्धे वि मति-सुतेसु परोचदेसचयमेचमदातो
 अरिहृत्तरव्यणकारणचणतो य मतिविसेसचणता य सुतस्स मतिभयतरं सुतं ति । मति-सुयसमाभकालचणता मिच्छ-
 ईसपपरिग्राहचणतो तन्निबन्धयसाइम्मस्यता सामिसाइम्मचणतो य क्तयइ काछेगसामचणतो य मति-सुतायंतं
 10 म्भधि धि मणितो । ततो य छउमत्यसामिसामण्यचणतो य पुमावविसयसामण्यचणतो य त्वयानसममावसाम
 ष्यचणतो य पक्षकस्यमावसामण्यचणता य अरिसमणतर मणपक्षयनायं ति । सक्त्वाणुचमचयतो सम्भियमुदचयतो
 य विरतसामिसामण्यचयतो य सन्धावसावलाभचणतो य सम्बुचमलद्विचणतो य तदंते क्त्वां मणित ॥

८ त समासओ दुविह पण्णत्त, त जहा—पञ्चक्ख च परोक्खं च ।

८ सम्भ पेत्तं समासतो दुविषं—पञ्चक्खं च परोक्खं च० इत्यादि । इह अप्पवत्तचयतो पुञ्ज पञ्चक्ख
 15 पण्यविज्जति । इह जीवो अन्तो । कइं ? उच्यते—“अयु ष्यात्तो” इति, णायप्यणताए अत्थे असाइ पि इषेच जीवो
 अन्तो, णावभावेच वाचति चि मणितं भवति । अइया “अय मोमने” इषेतस्स वा सन्धत्ये असाइ पि अन्तो,
 पाप्पति सुक्के वेत्थेयं । अन्तं पति ष्वति चि पञ्चक्खं, अर्द्धिदिय ति पुञ्जं मणति । चसराभो य से अरधिमादि
 येवा दृष्ट्वा । अन्हातो [बे० १९२ प्र०] परेसु नं भायं उप्पज्जति तं परोक्खं समेदं चसराभो इंदिय-अणो-
 निमित्तं दृष्ट्वा मणित ।

20 ९ से किं त पञ्चक्खं ? पञ्चक्खं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—इंदियपञ्चक्ख च णोइं-
 दियपञ्चक्खं च ।

१० से किं त इंदियपञ्चक्खं ? इंदियपञ्चक्खं पचविहं पण्णत्तं, त जहा—सोइंदिय-
 पञ्चक्खं चैत्थिदियपञ्चक्खं चाण्णिदियपञ्चक्खं र्सेण्णिदियपञ्चक्खं फासिदियपञ्चक्खं । से त
 इंदियपञ्चक्खं ।

25 ९ से किं तं पञ्चक्खं ? पुण्या । ‘स’ पि स पञ्चक्खनाभयेरो । ‘किं त’ ति परिक्खे, क्त्वापदं ति कुणं
 भवति । तं च किंसक्खं ? ति भापरियो पमदसुक्खणसिद्धु उत्तरकपफरणेच पञ्चक्खसक्खं करिदुक्कामो आइ—पञ्चक्खं
 बुधिइं पण्णत्त ति ।

१० इंदियं ति—पुग्गळेहिं सटावविम्भणिसुक्खं दम्भिवियं, साइंदियमादिइंदियायं सन्धावप्येतेहिं एवा
 अरभक्खतोवसमातो जा ष्ठी तं भाविवियं, तस्स पञ्चक्खं ति इंदियपञ्चक्खं । तं पंचविहं । पर आइ—अणु

१ क्त्वापदं मो ॥ २ ‘द्वित्त’ वा ॥ ३ ‘चण्ण’ यविसिद्धे वि सति सुते वि परो वा ॥ ४ अतो सम्भत्ता
 इकाळे वा ॥ ५ वेत्थेयं वा ॥ ६ परोक्खं तं वेई, चस वा ॥ ७ अणुइंदिय तं ॥ ८ चिर्द्धिदिय मो ॥ ९ ॥

द्विद्विद्यावत्थियपदेसमेत्तग्गहणतो सेसप्पदेसेसु अणुवलद्धी खयोवसमनिरत्थता वा भवति । आयरिय आह-ण एवं, पदीवदिद्वंतसामत्थतो, जहा चतुसालभवणेगदेसजालितो पदीवो सव्वं भवणमुज्जोवेति तथा द्विद्विद्यमेत्तप- देसविसयपडिवोथओ सव्वातप्पदेसोवयोगत्थपरिच्छेययो खयोपसमसाफल्लयां य भवति त्ति ण दोसो । भाविद्वियो- वयारपच्चकवत्तणतो एत पच्चकवं, परमत्थओ पुण चित्तमाणं एतं परोक्खं । कम्हा ? जम्हा परा द्विद्विद्या, भाविद्वियस्स य तदायत्तप्पणतो ॥

5

११. से किं तं णोइंदियपच्चकवं ? णोइंदियपच्चकवं तिविहं पणत्तं, तं जहा-ओहि- णाणपच्चकवं १ मणपज्जवणाणपच्चकवं २ केवलणाणपच्चकवं ३ ।

१२. से किं तं ओहिणाणपच्चकवं ? ओहिणाणपच्चकवं दुविहं पणत्तं, तं जहा- भवपच्चतियं च खयोवसमियं च । दोन्हं भवपच्चतियं, तं जहा-देवाणं च णेरतियाणं च । दोन्हं खयोवसमियं, तं जहा-मणुस्साणं च पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं च ।

10

११-१२. णोइंदियपच्चकवं ति इंदियातिरित्तं । त तिविहं ओहिमादी । अवहि त्ति-मज्जाया, सा य रुविद्वेसु त्ति, “रुविस्सऽवधे” [त्त्वा अ १ सू २८] त्ति वयणातो, तेसु णाणं ओहिणाणं । ‘भवपच्चइतो’ त्ति भणिते भणति-णणु ओधी खयोवसमिते भावे, णरगादिभवो से उदइए भावे, कं भवपच्चइतो भणति ? त्ति, उच्यते-सो वि खयोवसमितो चेव, किंतु सो चेव खयोवसमो णरग-देवभवेसु अवस्सं भवति त्ति, दिद्वंतो पक्खीणं आगासगमणं च, एवं भवपच्चइतो भणति । खयोवसमियं पुण णर-तिरियाणं, तेसु णावस्सं उप्पज्जति 15 त्ति खयोवसममेवक्खति ॥ खयोवसमसरूवं च सुत्तेणेव [जे० १९३ प्र०] भणितं—

१३. को हेऊ खयोवसमियं ? खयोवसमियं तयावरणिज्जाणं कम्माणं उदिण्णाणं खएणं अणुदिण्णाणं उवसमेणं ओहिणाणं समुप्पज्जति । अहवा गुणपडिवणस्स अणगारस्स ओहिणाणं समुप्पज्जति ।

१३. को हेतु त्ति इच्चादि । सो य खयोवसमो गुणमंतरेण गुणपडिवत्तितो वा भवति । गुणमंतरेण जहा 20 गगणव्भच्छादिते अहापवत्तितो छिद्देणं दिणकरकिरणं च विणिस्सिता दव्वमुज्जोवंति तथाऽवधिआवरण- खयोवसमे अवधिलंभो अहापवत्तितो विणेतो । गुणपडिवत्तितो— गुणपडिवण्णं इत्यादि । उत्तरुत्तर- चरणगुणविमुज्जमाणमवेक्खातो अवधिणाण-दंसणावरणाण खयोवसमो भवति । तक्खयोवसमे य अवधी उप्पज्जति ॥

१४. तं समासओ छुविहं पणत्तं, तं जहा-आणुगामियं १ अणाणुगामियं २ 25 वड्ढमाणयं ३ हायमाणयं ४ पडिवाति ५ अपडिवाति ६ ।

१४. आणुगामियं ति । अणुगमणसीलो अणुगामितो, तदावरणखयोवसमाऽऽतप्पदेसविसुद्धगमणत्तातो लोयणं च ॥

१ सूत्रमिदं प्रश्न-निर्वचनात्मकमपि उपलभ्यते-से किं तं भवपच्चइयं ? २ दुण्हं, तं जहा-देवाणं य णेरइयाणं य । से किं तं खयोवसमियं ? २ दुण्हं, तं जहा-मणुसाणं य पंचेदियतिरिक्खजोणियाणं य । जे० मो० वे० सु० । किञ्च- चूर्णित्तिहता नेदं पत्रोत्तरात्मकं सूत्रं सम्मतम् ॥ २ ‘इयं’ ति आ० दा० ॥ ३ ‘दियाणं ख० ॥

१५ से किं तं आणुगामिय ओहिणाण? आणुगामिय ओहिणाण दुविह पण्णत्तं, तं जहा-अंतगय च मज्झगयं च ।

१५. अंतगयं ति । जहा मत्तं वर्णतं पञ्चतंत, भविस्सित्तो अंतसरो । एवं ओरास्मियसरीरंते ठित गच ति परई, तं च भातप्यदेसफङ्गावाहि, एगदिसावसेंमाम्मा य अंतगतमोपिष्णावं मण्यति । अइवा सन्नातप्यदेसविस्सुदेसु वि ओरास्मियसरीरगतेण एगदिसिपासणगत ति अंतगतं मण्यति । अइवा पुत्ततरमत्सो मण्यति-एगदिसावपित्तपक्कद खेपातो सो अन्धिपुरिसो अंतगतो चि मग्गा तम्हा अंतगतं मण्यति । मज्झगतं पुण ओरास्मियसरीरमग्गे फङ्गाविसुद्धीतो सन्नातप्यदेसविस्सुद्धीतो वा सन्धिसावसेंमचयतो मज्झगतो चि मण्यति । अइवापत्तपित्तपक्कदत्तेचस्स वा अन्धिपुरिसो मज्झगतो पि अथा वा मज्झगता मण्यति ॥

१६ से किं तं अंतगय? अंतगयं तिविह पण्णत्तं, तं जहा-पुरओ अंतगयं १
१० मग्गओ अंतगयं २ पासतो अंतगयं ३ ।

१७ से किं तं पुरतो अंतगय? पुरतो अंतगयं से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुहलियं वा अलाय वा मणि वा जोई वा पदीव वा पुरओ काउं पणोळेमाणे पणोळेमाणे गच्छेज्जा । से च पुरओ अंतगयं ।

१८ से किं तं मग्गओ अंतगय? मग्गओ अंतगय से जहाणामए केइ पुरिसे उक्क वा चुहलियं वा अलाय वा मणि वा जोई वा पदीव वा मग्गओ काउं अणुकद्देमाणे अणुकद्देमाणे गच्छेज्जा । से च मग्गओ अंतगयं २ ।

१९ से किं तं पासओ अंतगय? पासओ अंतगय से जहाणामए केइ पुरिसे उक्क वा चुहलियं वा अलाय वा मणि वा जोई वा पदीव वा पासओ काउं परिकद्देमाणे परिकद्देमाणे गच्छेज्जा । से च पासओ अंतगय ३ । से च अंतगयं ।

२० से किं तं मज्झगय? से जहानामए केइ पुरिसे उक्क वा चुहलियं वा अलाय वा मणि वा जोई वा पदीव वा मत्सए काउं गच्छेज्जा । से च मज्झगय ।

१६-२० उक्क ति-दीविया । चुहलि पि-उणापिदी भग्गे पज्जसिता । अथाव ति-दास्य जसंत । मणि वा मत्तं । मोइ पि-मल्लगादिठित्त अगमिं जसंत । पदीवो पि-दीवता । 'पुरतो' पि अग्गतो 'पणोळ्णं' ति

१ सं श्री १६-१९ एतेषु तर्क अंतगये इति परवर्णनितः पाठो दृश्यते ॥ २ १०-१९ एतेषु चुहलियं इति पाठो वे मो ३ अत्र १०-१९ एतेषु चुहलियंवा अलायंवा पदीवंवा मणिंवा ओतिंवा इतिरूपः पाठो च श्री वल्ले ॥ ४ १०-१९ एतेषु अलायं वा पदीवं वा मणिं वा ओतिं वा पुरतो इति पाठो तर्कस्यै एवप्रसिद्धो दृश्यते । न च उक्क चुहलि-चुहलियंवा अलायः पाठो इत्याचार्यै उच्यन्तेत तथापि व्याख्यातृभ्योऽनुसारेणैवास्माकं नारायण गृहे पाठो दृश्योऽस्ति । अथायं वा मणिं वा पदीवं वा ओतिं वा पुरतो इति सू पाठस्तु नारायणोपस्थिते नारायणे दृश्यते ॥ ५ काउं उच्यते इत्येवमपि समुप्यहमायै गच्छेज्जा वे थ सु ॥

“णुद् भेरणे” इत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा परंपरेण नयनमित्यर्थः । ‘मग्गतो’ त्ति पिट्ठतो ‘अणुकड्डणं’ ति इत्थग्गहितस्स दंडग्गहितस्स वा अणु-पच्छयो कड्डणं ति । ‘पासतो’ त्ति दाहिणे वामे वा पासे सा(दो)पासय[जे० १९३ द्वि०]जमलट्ठित । परिकड्डियं ति-इत्थ-डंडगट्ठितं वा परि-पासतो ट्ठितस्स कड्डणं परिकड्डणं ॥

सीसो पुच्छति—

२१. अंतगयस्स मज्झगयस्स य को पइविसेसो ? पुरओ अंतगएणं ओहिणाणेणं 5
पुरओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ, मग्गओ अंतगएणं
ओहिणाणेणं मग्गओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणाणि जाणइ पासइ,
पासओ अंतगएणं ओहिणाणेणं पासओ चेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा जोयणां
जाणइ पासइ, मज्झगएणं ओहिणाणेणं सव्वओ सँमंता संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि
वा जोयणां जाणइ पासइ । से तं आणुगामियं ओहिणाणं । 10

२१. अंतगतस्स० इच्चादि । आयरियाऽऽह-पुरतो० इच्चादि । ‘सव्वतो’ त्ति सव्वाम्भु त्ति दिसि-विदिसाम्भु
‘समता’ इति सँव्वातप्पट्टेसेसु सव्वेसु वा विमृद्धफट्ठेसु । अहवा ‘सव्वतो’ त्ति सव्वाम्भु दिसि-विदिसाम्भु सव्वातप्प-
ट्टेसफट्ठेसु य । ‘से’ इति निहेसे अवधिपुरिसस्स, ‘मंता’ इति गाता । अहवा “समत्ता” इति समं-दव्वादयो तुल्ला
अत्ता इति-प्राप्ता इत्यर्थः ॥

२२. से किं तं अणाणुगामियं ओहिणाणं ? अणाणुगामियं ओहिणाणं से जहा- 15
णामए केइ पुरिसे एगं महंतं जोइट्ठाणं काउं तस्सेव जोइट्ठाणस्स परिपेरंतेहिं परिपेरंतेहिं
परिघोलेमाणे परिघोलेमाणे तमेव जोइट्ठाणं पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ, एंवमेव
अणाणुगामियं ओहिणाणं जत्थेव समुप्पज्जइ तत्थेव संखेज्जाणि वा असंखेज्जाणि वा
संबद्धाणि वा असंबद्धाणि वा जोयणां जाणइ पासइ, अण्णत्थ गए ण पासइ । से तं
अणाणुगामियं ओहिणाणं । 20

२२. णो गच्छंतमणुगच्छति त्ति अणाणुगामिकं, संकलापडिवद्धट्ठितप्पदीवो व्व, तस्स य खेत्तावेक्खखयो-
वसमलाभत्तणतो अणाणुगामित्तं । पेरतं ति-समंततो अँगणिमासण्णं, तस्स य जोइस्स सव्वतो दिसि-विदिसाम्भु
समंता परिघोलणं ति-पुणो पुणो इतो इतो परिसक्कणं ॥

२३. से किं तं वड्डमाणयं ओहिणाणं ? वड्डमाणयं ओहिणाणं पैसत्थेसु अज्झ-

१ पासे दोसु वा सय जमं आ० दा० ॥ २ मग्गओ अंतगएण० इत्यादिसूत्रांशं पासओ अंतगएण० इत्यादिसूत्रांश
ख० स० प्रत्यो पूर्वपरक्रमव्यत्यासेन वर्तते ॥ ३ समत्ता इति पाठमेत्थुर्णो निर्दिष्टोऽस्ति ॥ ४ “सव्वायप्पट्टेसु इत्यादौ तृतीयायें
सप्तमी” इति नन्दिवृत्तौ श्रीमलयगिरिपादरेतत्पाठोद्धरणे व्याख्यातमस्ति पत्र ८५-२ ॥ ५-६-११ ओहिणाण हे० ल० ॥
७-८ अणाणुगामियं ख० स० ल० शु० ॥ ९ सर्वाणु सूत्रप्रतिषु अत्र जोइट्ठाण इत्येव पाठो वर्तते ॥ १० पवामेव सु० ॥ १२ अणाणि-
पासेणं, तस्स आ० । अणाणिपासण, तस्स दा० ॥ १३ पसत्थेहिं अज्झवसाणट्ठाणेहिं ख० मो० ॥

वसांणह्वाणेषु वट्टमाणस्स वट्टमाणचरित्तस्स विमुञ्जमाणस्स विमुञ्जमाणचरित्तस्स
सव्वओ समता ओही वट्टइ ।

जावतिया तिसमयाहारगस्स सुट्टमस्स पणगजीवस्स ।
ओगाहणा जह्वा ओहीस्वेत्तं जहन्नं तु ॥ ४४ ॥

सव्वबहुअगणिजीवा णिगंतं जप्पिय मरेज्जांसु ।
स्वेत्तं सव्वदिसाग परमोही स्वेत्तनिदिट्ठो ॥ ४५ ॥

अंगुलमावलियाण भागमसंस्वेज्ज दोसु सस्वेज्जा ।
अंगुलमावलियंतो आवलिया अंगुलपुहत्तं ॥ ४६ ॥

हत्थम्मि मुहुत्ततो दिवसतो गाउयम्मि षोद्धव्वो ।
जोयण दिवसपुहत्तं पक्खंतो पण्णवीसाओ ॥ ४७ ॥

भरहम्मि अद्धमासो जंबुदीवम्मि साहिओ मासो ।
वास च मणुयलोए वासपुहत्तं च रुयगम्मि ॥ ४८ ॥

संस्वेज्जम्मि उ काले दीव समुहा वि होंति संस्वेज्जा ।
कालम्मि असंस्वेज्जे दीव-समुहा उ भइयव्वा ॥ ४९ ॥

काले चउण्ह चुट्ठी कालो भइयव्वु खेत्तचुट्ठीए ।
चुट्ठीए दव्व-पज्जव भइयव्वा खेत्त-काल उ ॥ ५० ॥

सुहुमो य होइ कालो ततो सुहुमयरय इवइ खेत्तं ।
अंगुलसेदीमेत्ते ओसप्पिणिओ असस्वेज्जा ॥ ५१ ॥

से त्त वट्टमाणय ओहिणाण ।

- २१ वर्षं पट्टी, पुष्पावस्थाया उवचरि पट्टमाणं ति, तं च उप्सव्वं चरणाणनिमुद्धिमपेवेल, ततो पसत्पञ्चवसाणहाणा तंआदिपसरयलेमायुयाता भवति, पसत्पदम्बलसारी अणुस्मितं चित्तं पसत्पञ्चवसाणो मण्णति, पसत्पञ्चवसाणाया य चरणा ऽऽतविमुदी, चरणा-ऽऽतविमुदीतो य चरत्तपचत्तस्सीमं पट्टी भवति ।

इमामा य महणुकोम-विमग्गिमापिचइइदंसमगाहाआ जहा पेरिण ॥ ४४-५१ ॥

२४. से किं तं हायमाणयं ओहिणाणं ? हायमाणयं ओहिणाणं अप्पसत्थेहिं अज्झवसायट्ठाणेहिं वट्टमाणस्स वट्टमाणन्नरित्तस्स संकिलिस्समाणस्स संकिलिस्समाणचरित्तस्स सव्वओ समंता ओही परिहायति । से तं हायमाणयं ओहिणाणं ।

२४. हाणि त्ति-हस्समाणं, पुव्वावत्थातो अओऽथो हस्समाणं । तं च वड्डमाणविपक्खतो भाणितव्वं । अप्पसत्थेस्सोवरंजितं चित्तं अणेगोसुभत्थचित्तणपर चित्तं संकिलिट्ठ भण्णाति ॥

5

२५. से किं तं पडिवाति ओहिणाणं ? पडिवाति ओहिणाणं जण्णं जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जतिभागं वा संखेज्जतिभागं वा वालगं वा वालगपुहत्तं वा लिक्खं वा लिक्खपुहत्तं वा जूयं वा जूयपुहत्तं वा जवं वा जवपुहत्तं वा अंगुलं वा अंगुलपुहत्तं वा पायं वा पायपुहत्तं वा वियत्थि वा वियत्थिपुहत्तं वा स्यणिं वा स्यणिपुहत्तं वा कुच्चिं वा कुच्चिपुहत्तं वा धणुयं वा धणुयपुहत्तं वा गाउयं वा गाउयपुहत्तं वा जोयणं वा जोयणपुहत्तं वा जोयणसयं वा जोयणसयपुहत्तं वा जोयणसहस्सं वा जोयणसहस्सपुहत्तं वा जोयणसतसहस्सं वा जोयणसतसहस्सपुहत्तं वा जोयणकोडिं वा जोयणकोडिपुहत्तं वा → जोयणकोडाकोडिं वा जोयणकोडाकोडिपुहत्तं वा ← उक्कोसेण लोणं वा पासित्ता णं पडिवाएज्जा । से तं पडिवाति ओहिणाणं ।

10

२५. उप्पण्णोहिनाणस्स पुणो पातो त्ति पडिवाती, नाशेत्यर्थः । तं च खेत्तविसेसोवलंभेणं भण्णाति । ते य इमे-असंखेयंगुलभागादिया । दुप्पभित्ति जाव णव त्ति अंगुलपुहत्तं भण्णाति । दो इत्था कुच्छी । पडिवातिणो नाव उक्कोसो लोणमेत्ते एव ॥

15

२६. से किं तं अपडिवाति ओहिणाणं ? अपडिवाति ओहिणाणं जेणं अलोगस्स एगमवि आगासपदेसं पासेज्जा तेण परं अपडिवाति ओहिणाणं । से तं अपडिवाति ओहिणाणं ।

२६. अपडिवाति त्ति, सो वि क्खेत्तविसेसोवलंभातो चेव णज्जति, अतो भण्णाति अलोगस्स एगमवि त्ति । २० 'अवि' पदत्थसंभावणे, किमुत दुपदेसादिउपलंभे ? इत्यर्थः । [जे० १९४ प्र०] ॥

२७. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । तँत्थ दव्वओ णं ओहिणाणी जहण्णेणं अणंताणि रूविदव्वाइं जाणइ पासइ, उक्कोसेणं

१ अप्पसत्थेहुं अज्झवसायट्ठाणेषु स० ॥ २ ओही हायति ख० स० जे० मो० ॥ ३ 'गासुत्तत्थ' जे० ॥ ४-५ 'ज्जयमा' जे० सु० ॥ ६ पुहुत्त पुहत्त पहुत्त शब्दा सर्वास्वपि सूत्रप्रतिपु क्रमपरिहारेण आकृत्या दृश्यन्ते ॥ ७ विदत्थि वा विहत्थि मो० सु० ॥ ८ धणुं वा धणुपुं जे० मो० सु० ॥ ९ जोयणलक्खं वा जोयणलक्खपुहत्तं जे० मो० सु० ॥ १० → ← एतच्चिद्विधमध्यगत पाठः खं० स० नास्ति ॥ ११ 'मेत्तए वा आ० दा० ॥ १२ स० विनाऽन्यत्र—'पदेसं पासति तेण ख० शु० । 'पदेसं जाणइ पासइ तेण जे० दे० ल० मो० ॥ १३ अविपदत्थो संभा' आ० दा० ॥ १४ तत्थ इति ख० सं० ल० शु० नास्ति ॥

सव्वाइ रुविदव्वाइ जाणइ पासइ १ । खेतओ णं ओहिणाणी जहण्णेण अंगुलस्स असखेज्जतिभाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखेज्जाइ अलोए लोयमेताइ खंडाई जाणइ पासइ २ ।

कालओ ण ओहिणाणी जहण्णेण आवलियाए असखेज्जतिभाग जाणइ पासइ, उक्कोसेण असखेज्जाओ उस्सपिणीओ अवसपिणीओ अतीत च अणागत च कालं जाणइ पासइ ३ ।

भावओ ण ओहिणाणी जहण्णेण अणते भावे जाणइ पासइ, उक्कोसेण वि अणते भावे जाणइ पासइ, सव्वभावाणमणंतर्भागं जाणइ पासइ ४ ।

२७ विस्यरेण स्वपोवसमविसेततो असखेज्जविषमाभिष्साण, ओधिमादिगतिपञ्चमसार्णं वा चतुरसविष-
विस्यरो, ते पइइ इमं कतुविइ समासता म्भति दन्नादि । दन्नामा ओधिष्णाणी नहण्णेण तेयामासंतरे अणते
दन्ने उदम्भति, उक्कोसतो सव्वरुपिदन्नाई । भाणइ धि नाम, तं च णं विसेतमाइग रं णत्थं, सागारमित्यर्थः ।
१० पासति पि देसणं, तं च णं सामण्यमाइगं रं दंसण, अणागारमित्यर्थः । खेच-काम्भो यं सुचस्सिं । भावतो
ओधिष्णाणी जहण्णेण अणते भावे उदम्भति, उक्कोसतो वि अणते, नहण्णपदातो उक्कोसपदे अमंतगुण । उक्कोसपदे
वि के भावा ते सव्वमानाण अणंतमागे वइति ॥

२८ ओदी भवपञ्चतिओ, गुणपञ्चतिओ य वंणिओ एसो ।
तस्स य वहु वियप्पा, दव्वे खेत्ते य काले र्यं ॥ ५२ ॥

से च ओहिणार्णं ।

२८ ओपी म्भ० शाभा । दव्वता इह विगप्पा परमाणुमादिवम्भविससातो । खेचतो वि अयुम्भअ-
खेयमागञ्जिष्पादिया । कास्तो वि आश्रित्यअसखेज्जमागादिया । भावता वि म्भपञ्चमवादिष्पा ॥ ५२ ॥

मणपञ्चमवनाणमिदादि । तस्स सक्ख पणितमादीए [पञ्च १३] । इदादिं सामी विसेतिसमा पुंछुचरेहिं—

२९. [१] से किं त मणपञ्जवणार्णं ? मणपञ्जवणेणं णं भंते ! किं मणुस्साणं

२० उर्णंज्जइ अमणुस्साणं ? गोयमा ! मणुस्साणं, णो अमणुस्साणं । [२] जइ मणु

स्साणं किं सम्मुच्छिममणुस्साणं गन्भवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! णो सम्मुच्छिम

मणुस्साणं, गन्भवकंतियमणुस्साणं । [३] जइ गन्भवकंतियमणुस्साणं किं कम्ममूम

१ ओपय्यमाभेत्तारं च सं विता ॥ २ ओसपिणीओ अस्सपिणीओ च सं ॥ ३ लेखं पि अणते च ॥
४ मागो च । अणित्ता इदिमत्तपदात्तं चाम्भेव पाठो सम्मतः ॥ ५ ओदी कता पौन्ये इत्याद्यावद्व्यक्तिपुंक्ति १०-१८
वाचापुण्योच्चाभि चतुरं च हाताब्जापयोद्वयम् ॥ ६ अणित्ताओ पुणित्ताओ इति इतिक्कत्तं भिदिं पाठ्येण ॥ ७ तस्सेय वं ॥
८ हापवाहापयमागतं सर्वं पत्तिं दशाब्धं इदिमत्तपदात्तं चाम्भेव पाठो सम्मतः एका वाचाञ्चिका उपकम्भते—
केटिय-इह तिक्कत्ता य ओहिणत्तमादिता इति । पासति सव्वभो कतु मेसा इलेव पासति ॥
९ सम्मत्तं ओहि य ॥ १० पाणपञ्चकं सु ॥ ११ पुण्यसुत्तेहि वा ॥ १२ अणं भंते । के सो ॥ १३ मणुसाणं
॥ १४ एवमेअपि अमिअ एण (२५) वरंण देवण ॥ १५ उण्यज्जइ इति च सं नास्ति ॥ १६ कम्ममूमिअ यो सु ।
एवमेअपि वरंण अमिअ एण (२५) देवण ॥

म्भूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं । [९] जह अपमत्तसजयसम्मदिट्टिपज्जत्तगसंखे-
 ज्जवासाउयकम्ममूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं किं इट्टिपत्तअपमत्तसंजयसम्मदिट्टिपज्जत्तग-
 संखेज्जवासाउयकम्ममूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं अणिट्टिपत्तअपमत्तसजयसम्मदिट्टि-
 पज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्ममूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं ? गोयमा ! इट्टिपत्तअपमत्तसजय-
 ५ सम्मदिट्टिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्ममूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं, णो अणिट्टिपत्तअपम
 त्तसजयसम्मदिट्टिपज्जत्तगसंखेज्जवासाउयकम्ममूमगगन्भवकंतियमणुस्साणं मणपज्जवणाणं
 समुप्यज्जइ ।

२० किं मणुस्सा० इत्यादि । सम्भुज्जिमणुस्सा गन्भवकंतियमणुस्साणं षेय वंतपिचादिसु संमंति ।
 कम्ममूमगा पचसु मरहेसु पचसु परनदसु पंचसु महाविदेहेसु य । हेमवतादिसु मिधुवा ते अकर्ममूमगा । तिथि
 10 जोजणक्षते रुचज्जमसमोगादिचा जुल्लिमवत्सिहरिपादपतिद्धिवा एरुक्कादि छप्पणा भंसरदीवगा । किं पज्जत्ताणं
 मपज्जत्ताणं ? ति । पज्जत्ताणी णाम्-सत्ती सामत्थं । सा य पुमास्सत्तोचया उप्पज्जति । ताओ य छ पज्जत्तीता-
 आहार-सरोर-इदिय आणापाणु भासा-मज्जपज्जत्ती वेति । तत्थ एग्गिदियाणं चटरो, विगळिदियाणं पंच, अस्सत्तीणं
 संचनहारतो पच षेय, सत्तीम च छ । तत्थ आहारपज्जत्ती नाम सत्त-रसपरिक्खामणसत्ती आहारपज्जत्ती । सचचादुत्तथा
 परिणामणसत्ती सरोरपज्जत्ती । पंचकमिदियाणं [वे० १९४ धि] मोमा पोमालो विपियु अणामागनिम्बचित्त
 15 निरियकणेज्ज वैम्मापणय्यसत्ती इदियपज्जत्ती । [उत्सास]मोमाज्जोमाणापाणुज्ज गह्व-विस्तिरगतसत्ती आणा-
 पाणुपज्जत्ती । च्छोओगे पोमाले षेभूज्ज मासत्ताए परिणामेत्ता च्छोओगात्ताए निरियसत्ती मामापज्जत्ती । मज्ज-
 ओगे पोमाले षेभूज्ज मत्ताए परिणामेत्ता मज्जोओगात्ताए निरियसत्ती मज्जपज्जत्ती । एताओ पज्जत्तीआ पज्ज-
 त्तयणामकम्मादपणं णिम्बचित्तति, ता जेसिं अत्थि ते पज्जत्तया । अउज्जत्तयणामकम्मोदपणं अजिम्बत्तातो
 जेसिं ते अपज्जत्तया । अपमत्तसंजयता जिणकपिया परिहारविमुद्धिवा अहामदिया पत्तिमापत्तिवन्ना य, एत
 २० सततोचयोओउचत्ततो अपमत्ता । गम्भासिज्जो पुण पमत्ता, कम्मू अणुपयोगसंमत्तातो । अइवा गम्भासिं
 बिम्माता य पमत्ता वि अपमत्ता वि मंतिं परिणामत्तजा । 'इट्टिपत्तसंति आमोसहिमादिअणुत्तरइडिपत्तस
 ममपज्जवणाणं उप्पज्जइ पि । अइवा 'ओहिनामिणो ममपज्जवणाणं उप्पज्जति' पि अण्ये नियमं मपति ॥

३० ते च दुविह उप्पज्जइ, त जहा-उज्जुमती य विउल्लमती य ।

३० रिज्जु मती उज्जुमती, सामज्ज्यादिमि पि मणितं होति । एस मणोपज्जापवित्सेसो पि । ओसत्थं
 25 वित्सेसविहइ उवम्मति, पावीरज्जुवित्सेसविहइ मत्थं उवम्मइ चि मत्थि होति, पढो जेज्ज चित्तिओ पि
 जावति । विपुला मती विपुलमती, बहुवित्सेसमादिमि पि मत्थि भवति । मणोपज्जापवित्सेसो जावति, विहइतो
 महा-जेण पढो चित्तिओ, तं च देस-काम्मादिमणोपज्जापवित्सेसविहइ जावति ॥ अइवा रिज्जु विपुलमतीमं इमं
 इप्पादीहिं वित्सेसत्तकं मत्थि—

१ सामत्ततो य जा ॥ २ जा विचिज्जिदु क्का" जा ॥ ३ त्त्त्मापापाय जा दा ॥ ४ अविहित्ता
 ता जेसिं जा ॥ ५ तं च दुविह उप्पज्जइ इति तं तं मत्थि ॥ ६ उप्पज्जइ इति छ मत्थि ॥ ७ विमत्तमती पं ७

३१. तं समासओ चउव्विहं पणत्तं, तं जहा-द्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।
 तैत्थ द्वओ णं उज्जुमती अणंते अणंतपदेसिए खंधे जाणइ पासइ, ते चेव विउलमती
 अब्भहियतराए जाणति पासति । खेत्तओ णं उज्जुमती अहे जाव इमीसे स्यणप्पभाए
 पुढवीए उवरिमहेद्विल्लइं खुड्ढागपयराइं उड्ढं जाव जोतिसस्स उवरिमत्तले तिरियं जाव अंतोमणु-
 स्सखित्ते अड्ढाइज्जेसु दीव-समुद्देशु सण्णीणं पंचेदियाणं पज्जत्तगाणं मणोगते भावे जाणइ 5
 पासइ, तं चेव विउलमती अड्ढाइज्जेहि अंगुलेहिं अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं
 वितिमिरतरागं खेत्तं जाणति पासति । कालओ णं उज्जुमती जहण्णेणं पलिओ-
 वमस्स असंखेज्जतिभागं उक्कोसेणं पि पलिओवमस्स असंखेज्जतिभागं अतीयमणागयं वा
 कालं जाणति पासति, तं चेव विउलमती अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धतरागं विति-
 मिरतरागं जाणइ पासइ । भावओ णं उज्जुमती अणंते भावे जाणइ पासइ सब्बभा- 10
 वाणं अणंतभागं जाणइ पासइ, तं चेव विउलमती अब्भहियतरागं विउलतरागं विसुद्धत-
 रागं वितिमिरतरागं जाणइ पासइ ।

३२. मणपञ्जवणाणं पुण जणमणपरिचिंतियत्थपायडणं ।

माणुसखेत्तणिवद्धं गुणपच्चइयं चरित्तवओ ॥ ५३ ॥

से तं मणपञ्जवणाणं ।

15

१ द्वओ ४ । द्वओ ल० ॥ २ तत्थ इति खं० सं० ल० नास्ति ॥ ३ अब्भहियतराए विउलतराए विसुद्धतराए
 वितिमिरतराए जाणति जे० डे० मो० ल० । अब्भहियतराए विसुद्धतराए वितिमिरतराए जाणति ख० सं० । एतयो
 पाठभेदयो प्रथमं सूत्रपाठभेद श्रीमलयगिरिपाठं स्ववृत्तापाठतोऽस्ति । द्वितीयं पुन पाठभेदो भगवता श्रीअभयदेवसूरिणा भगवत्या-
 मष्टमशतकद्वितीयोद्देशके मन पर्यवज्ञानविषयकसूत्रव्याख्यानावसरे जहा नंदीए इति सूत्रनिर्दिष्टनन्दिसूत्रपाठोद्धरणे तद्व्याख्याने चाहतोऽस्ति ।
 चूर्णि-हरिमद्रवृत्तिसम्मतस्तु सूत्रपाठः शु० आदर्श एव उपलभ्यते ॥ ४ उज्जुमती जहण्णेणं अंगुलस्स असंखेज्जभागं उक्कोसेणं
 अहे जाव मु० । नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शस्य पाठ, नापि चूर्णिकृता वृत्तिकृद्भ्यां वाऽस्य पाठः स्वीकृतो व्याख्यातो वा
 वर्तते । अपि च श्रीअभयदेवाचार्येणापि भगवत्या अष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीपाठोद्धरणे नाय पाठ उल्लिखितो व्याख्यातो वाऽस्ति ।
 नापि विशेषावश्यकादौ तद्दीकादिषु वा मनःपर्यवज्ञानक्षेत्रवर्णनाधिकारे जघन्योत्कृष्टस्थानचिन्ता दृश्यते ॥ ५ इमीए ल० ॥ ६ उवरि-
 महेद्विल्लेसु खुड्ढागपयरेसु उड्ढ ख० सं० । उवरिमहेद्विल्ले खुड्ढागपयरे उड्ढ ख० सं० विना मलयगिरिवृत्तौ च ॥ ७ तलो
 खं० सं० शु० ॥ ८ समुद्देशु पण्णरससु कम्मभूमीसु तीसाए अकम्मभूमीसु लप्पण्णाए अतरदीवगोसु सण्णीणं डे०
 शु० मो० मु० । श्रीमद्भयदेवाचार्येर्भगवत्यामष्टमशतकद्वितीयोद्देशके नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे एष एव सूत्रपाठ आहतोऽस्ति ॥
 ९ जेहिमंगुं मो० मु० ॥ १० अब्भहियतरं विउलतरं विसुद्धतरं वितिमिरतरं खेत्तं इति हरिमद्र-मलयगिरिवृत्तिसम्मत
 सूत्रपाठं जे० मो० मु० ॥ ११ खेत्तं इति जे० सं० डे० शु० नास्ति । भगवत्यामभयदेवाचार्योद्धृते नन्दीपाठेऽपि नास्ति । १२ च
 भगवत्यां श ८ उ २ नन्दीपाठोद्धरणे ॥ १३ अब्भहियतराणं विउलतरागं इति पदद्वय ख० सं० लसं० नास्ति । भगवत्यामपि
 नन्दीपाठोद्धरणे एतत् पदद्वय नास्ति ॥ १४ अत्र अब्भहियतरागं विउलतरागं वितिमिरतरागं इति पदत्रय ख० सं० ल०
 भगवत्या नन्दीसूत्रपाठोद्धरणे च नास्ति, केवल विसुद्धतराग इत्येकमेव पद वर्तते ॥

३१-३२. सपिप्या मणपेण मणिते मणोखवे अणंते अणंतपदेसिए दम्भद्वताए तमाते य पण्णादिए माचे मणपञ्चनानेण पचक्कलं पचम्भमाणा जाजाति चि मणितं । मणितमत्यं पुष्प पचक्कल प पक्कलवि, जेण मणालबभं सुत्तममुत्तं वा, सा य छदुमत्था स अणुमाणाता [७० १९५ प्र०] पेक्कलवि चि अतो पासणता मणिता । अहवा छदुमत्त्यस एगविहत्तयात्रसमलंमं वि विविधापयोगसमभो मवति, जदेत्येव रिजु विपुल्लमतीण उवयोगा, अतो

५ विसस-सामग्गम्भसु उवउच्चतो जाणति पासइ चि मणित, अ दोसो । विपुल्लमती पुष्प दम्भद्वताए पण्णादिपरि य अपिगतर जाणतीत्यर्थं । उचरिमहेट्टिह्वाइ खुङ्गागपतराई ति इमस्स मापणत्थ इम पण्णविउज्जति-तिरिय-लागम्म उङ्गागपतरा खुङ्गागपतर चि मणिता, ते य सम्भतो रज्जुप्यमाणा । तेसि जे बहुमज्झ वा खुङ्गागपतरा तेसि पि बहुमज्झ नेपुडीव रथणप्यमपुण्ड्रिक्कसमभूमिमागे मदरस्स बहुमज्झ एत्थ अट्ठप्यदेसो रुपगा, -जत्था दिसिचिदि

१० विविभागो पचचो, -एत्तं तिरियभोगमज्झ । एतातो तिरियभोगमज्झाता रज्जुप्यमाणखुङ्गागपतररहिता उचरि तिरियं अमंखेयगुल्लमागमसखेयं गुल्लमागवह्दी, उचरिहुत्तो वि अंगुल्लमसंखेयमागारोहो चेव, एवं तिरियमुत्तरं च अंगुल्लमसंखेयमागवह्दीए ताव लागवह्दी णेतम्भा जाव उह्दल्लमागमज्झं, तातो पुणो वेणेव कमेभं संवहो कातम्पो उवरिआगता रज्जुपमाणो । सत्तो य उह्दल्लोमज्झातो उचरिं हेत्ता य कमेण खुङ्गागपतरा माणितम्भा जाव जाव रज्जुप्यमाणा खुङ्गागपतर चि । तिरियभोगमज्झरज्जुप्यमाणखुङ्गागपतररहिता पि हेत्ता अंगुल्लमसंखेयमागवह्दी

१५ तिरियं, अहवागणइण वि अंगुल्लमससत्तमागा चेव, एवं अहेलागो बहुदेतम्पो जाव अहेलागंतो सव रज्जुभा । सत्तरज्जुप्यपररहिता उपरपरिं षण्ण गुङ्गागपतरा माणितम्भा जाव तिरियभोगमज्झरज्जुप्यमाणा खुङ्गागपतर चि । एवं खुङ्गागपत्त्वेण क्त इम मण्णति-उचरिम ति-तिरियभोगमज्झातो [७० १९५ डि०] अदा जाव प्य चापण सता ताव इमीए रथणप्यमपुण्ड्रीए उचरिमखुङ्गागपतर चि मण्णति । छदुदा अहेलोगे जाव अहेलाइप्यागमवणिणो ते हेट्टिमगुङ्गागपत्तर चि मण्णति, रिजुमती अचो ताव पण्यतीत्यर्थः । अहवा अहलोगस्स उचरिमा खुङ्गागपतरा

२० तिरियलागम्म य इट्टिमा खुङ्गागपतरा ते जाव पण्यतीत्यर्थः ।

अग्गे मणि— उचरिम चि—अंघाणागापरिहिता जे ते उचरिमा । के य ते ? उच्यते— सत्त्वतिरियभोग वणिणो तिरियलागम्म वा अदा पदजात्तमत्तल्लिणा छाव्य चेव जे हेट्टिमा त जाव पण्यतीत्यर्थः, इम व पढति, अहवाइप्यागमणपञ्चनानेणमंभरपाहम्भणत्थता । उक्त थ—

इहापार्त्वीकिचा ग्रामा न नियन्वाउचरिण । मनागतोम्भन्ती भावान् वचि उच्चिन्तामपि ॥ १ ॥

३३

[]

अइशनिपेणग्गमाएण उम्महंगुपमाणाता । कंरं वज्जति ? उच्यते — “उम्महपमापता मिणे दूरं” [पुर सप्यत्ती गा ३३५] ति वयजाता । अंगुल्लमदिवा य जे पमावा त सत्त्व दूरनिप्यत्था इति, भावविषयणजाता य णं म्म । रिजुमतिरवचारपंमप्यमाणाता विपुल्लमती अन्मनियतराग खेवं उचक्कल चि । एगदिमि पि अन्मनियसंभरा भवति चि गयजता अहवा अन्मसं चि तग्गा विपुल्लमतां मण्णति । अहवा जदा पडा पडाता नयाहाएणजता अन्मनितता

२५ मा पुा नियमा घटागागणनेण चिम्भरा भवति एवं चिउत्तमती अन्मनियतराग मणापञ्चितीरद्वारापारं वच ज्ञान्ति, नं च नियमा विपुल्लतरं उच्यथ । अहवा भायाम विरारंभं अन्मनियतराग वारोण चिउत्ततरं एणे

१ अनेतोगापरिहिता डि २ ॥ ३ संमववाहट्टणत्थता वा वा हाववाणी च ॥ ३ अ दातो । रिजु वा अन्मती इति च ॥ अ वा गानं रिजु अ ग च अ वा भावरोः एण्णउत्तो एव अन्मनिय एवे अन्मदिय इ १५० ॥

उपलभत इत्यर्थः । अहवा दो वि पदा एगट्टा । विसिद्धविसुद्धिविसेसदंसगो तरसदो त्ति, यथा शुक्लः शुक्लतर इति । किंच-जहा पगासगदव्वविसेसातो खेत्तविसुद्धि(द्धी) विसेसेणऽक्खिज्जति तहा मणपज्जवनाण-चरणविसेसातो रिजुमणपज्जवणाणिसमी[जे० १९६ प्र०]वातो विपुलमणपज्जवणाणी विसुद्धतरागं जाणति, मणपज्जवनाणाव-रणखयोऽसमुत्तमलंभत्तणतो वा वितिमिरतरागं ति भण्णति । अहवा पुव्ववद्धमणपज्जवनाणावरणखयोऽसमुत्तमलंभ-त्तणतो विसुद्धं ति भणितं तस्सेवाऽऽवरणवज्जमाणस्सऽभावत्तणतो पुव्ववद्धस्स य अणुदयत्तणतो वितिमिरतरागं-ति 5 भण्णति । अहवा दो वि एते एगट्टिया पदा । मणपज्जवनाणस्स सेसं कंठं ॥ इदाणिं केवलनाणं भण्णति, मण-पज्जवनाणाणंतरं सुत्तकमुद्धित्तणतो विसुद्धिलाभुत्तमयो य केवलं भण्णति—

३३. से किं तं केवलणाणं ? केवलणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा-भवत्थकेवलणाणं च सिद्धकेवलणाणं च

३३. से किं तं केवलेत्यादि सूत्रम् । केवलनाणमभेदे वि भेदो भव-सिद्धावत्थादिर्हि अणेगघा इमो 10 कज्जति-मणुस्सभवद्वितस्स जं केवलनाणं तं भवत्थकेवलनाणं । चसदो उस्सणं भेददंसणे । सव्वकम्मविप्पमुक्को सिद्धो, तस्स जं णाणं तं सिद्धकेवलनाणं ॥

३४. से किं तं भवत्थकेवलणाणं ? भवत्थकेवलणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा-सजो-गिभवत्थकेवलणाणं च अजोगिभवत्थकेवलनाणं च ।

३४. मणादितो जोगो, सो य जहासंभवातो, तेण सह जोगेण सजोगी, तस्स जं नाणं तं सजोगिभवत्थ- 15 केवलणाणं । अजोगी-सव्वजोगनिरुद्धो सइलेसभावद्वितो, तस्स जं णाणं तं अयोगिभवत्थकेवलनाणं ॥

३५. से किं तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ? सजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा-पढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयसजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से त्तं सजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

20

३६. से किं तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ? अजोगिभवत्थकेवलणाणं दुविहं पणत्तं, तं जहा-पढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अपढमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च, अहवा चरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च अचरिमसमयअजोगिभवत्थकेवलणाणं च । से त्तं अजोगिभवत्थकेवलणाणं ।

३५-३६. पढमसमयो-केवलणाणुप्पत्तिसमयो चैव, अपढमो वितियादिसमयो-जाव सजोगित्तस्स चरमसम- 25 एत्यर्थः । अहवा एसेवऽत्थो समयविकप्पेण अण्णहा दंसिज्जति-सजोगिकालचरिमसमए चरिमो त्ति-पच्छिमो, ततो परं अयोगी भविष्यतीत्यर्थः । अचरिमो त्ति-चरिमो न भवति, चरिमस्स आदिसमयातो आरव्व भोमत्थगं जाव पढमसमयो ताव अचरमसमया भण्णति, एतेसु जं णाणं तं अचरमसमयभवत्थकेवलनाणं । सेसं कंठं ॥

१ °विसुद्धिविसेसो लक्खि° आ० दा० ॥ २ °चरमयो आ० दा० ॥

३७ से त कि सिद्धकेवलणाणं ? सिद्धकेवलणाणं दुविहं पण्णत्त, त जहा-अणतरसिद्धकेवलणाणं च परपरसिद्धकेवलणाणं च ।

३७ से किं तं सिद्धकेवलणाणोत्थादि एवम् । तस्य सिद्धकथम्भाणं दुविहं-अणतरं परंपरं । तस्य अणतरं वा समयतरं पण, सिद्धत्वप्रथमसमयवर्तिन इत्यय ॥

३८. से किं त अणतरसिद्धकेवलणाण ? अणतरसिद्धकेवलणाण पण्णरसविहं पण्णत्त, त जहा-तित्यसिद्धा १ अतित्यमिद्धा २ तित्यगरमिद्धा ३ अतित्यगरमिद्धा ४ सयबुद्धसिद्धा ५ पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ बुद्धबोहियमिद्धा ७ इत्थिल्लिमिद्धा ८ पुरिसल्लिमसिद्धा ९ णपुसगल्लिमसिद्धा १० मल्लिमसिद्धा ११ अण्णल्लिमसिद्धा १२ गिहिल्लिमसिद्धा १३ एगसिद्धा १४ अणेगमिद्धा १५ । से तं अणतरसिद्धकेवलणाण ।

३८. ते पंचसूत्रविधा तित्यमिद्धाया । 'तित्यमिद्धा' इति जे तित्त्वे सिद्धा ते तित्यमिद्धा, तित्य चातुपञ्चो समणसंघो पदमादिगणनरा वा, मणिन च धारिष-“तित्यं भूतं । तित्यं ? [अ० १९९ दि०] अरादि तित्यं ? गोतमा । अरा वा तित्यंकरे, तित्यं पुत्र चातुपञ्चो समणसघा” [भग व २० ३० ८ सू १८२] तस्मिं तित्यकायमात्रे उपाण्णे तथा वा तित्यकायमात्रात्ता जे मिद्धा ते तित्यसिद्धा १ । अतित्यं-चातुपञ्चसंपन्न अमावा तित्यकायमात्रस वा अमावा । तस्मिं अतित्यकायमात्र अतित्यकायमात्रात्ता वा जे सिद्धा ते अतित्यसिद्धा । तं च अतित्यं तित्यतरं तित्यं वा अणुपाण्णे नहा मरुत्तिसामिणियमित्था २ । गिसमाद्यो तित्यकरा, ते मग्गा तित्यकरणामकम्मदयमात्र द्विवा तित्यकरमात्रातो वा मिद्धा तन्मा त तित्यकरमिद्धा ३ । अतित्यकरा सामन्थकवण्णिया गोसमादि, तस्मिं अतित्यकरमात्रे द्विवा अतित्यकरमात्रात्ता वा मिद्धा अतित्यकरसिद्धा ४ । स्वयमच बुद्धा स्वयं-बुद्धा, सत्तं अणुपाण्णं वा आसरेणादि कारणं पदुय बुद्धा सत्तंबुद्धा । स्फुत्तरासुच्यते-आद्यमत्ययमन्तरेण य प्रतिबुद्धास्ते सयबुद्धा । त य दूविहा-तित्यगरा तित्यगरवतिरिक्ता वा । इह इतिरेहिं अविहारा । किंच-स्वयंबुद्धस्य २० धारसविहा वि उभरी भवति, पुत्राधीतं स सुतं भवति वा ण वा । अति स नतिय ता किं नित्यमा गुरुसंघिदे पडिपज्जति, गच्छ य विहरति । अह पुत्राधीतसुतसंमत्तो अस्ति ता स किं दपत्ता पयच्छति, गुरुसंघिदे वा पडिपज्जति । अ य पैगविहारविहरणजाम्मा, इच्छा व स तो एका चेव विहरति, अग्घहा गच्छे विहरतीत्यर्थः । एतस्मिं भावे द्विवा सिद्धा पत्तात्ता वा मात्रात्ता मिद्धा सयबुद्धसिद्धा ५ । 'पत्तेयबुद्धा' पत्तेयं-आद्य रूपमादि कारणमिससनीय बुद्धाः मत्तकबुद्धा । पडिःमत्तयमतिबुद्धानां च पत्तेयं नियमा विपरीतो जम्मा तन्मा य ते पत्तेयबुद्धा, २० नहा करुद्धमाद्यया । किंच-पत्तेयबुद्धासं जहण्णेण दुविहा उक्कासण शरविधो उभरी नियमा पाउरप्यनज्जा भवति । किंच-पत्तेयबुद्धासं पुत्राधीतं सुतं नियमा भवति, नहण्णं एकारसमा, उक्कासण मित्थवत्तपुत्रा । किं च स देवता पयच्छति, किंभरिक्ता वा भवति । जता [अ १९७ म] मज्जिते-“कथं पत्तेयबुद्धा” [भाज. गा. ११९.] इति । एतस्मिं भाव पत्तातो वा सिद्धा पत्तेयबुद्धसिद्धा ६ । बुद्धवापिता-जे सत्तंबुद्धेहिं तित्यकरादिपरिं बोधिता, पत्तेयबुद्धेहिं वा कम्मिदिपरिं बोधिता ते बुद्धवापिता । अस्मा बुद्धवापिपरिं बोधिता बुद्धबोधिता, एव एवम्मा- २० विपरिं बुद्धामाद्यया भवति । अस्मा बुद्ध इति-प्रतिबुद्धा, तेहिं प्रतिबोधिता बुद्धबोधिता, प्रमाक्षिमिराकार्थिः ।

एतभावे द्विता एतातो वा सिद्धा बुद्धबोधितसिद्धा ७ । 'सलिंगसिद्धा' द्बलिंगं प्रति रजोहरण-मुहपोत्ति-पडिग्गह-
 धारणं सलिंगं, एतम्मि द्बलिंगे द्विता एतातो वा सिद्धा सलिंगसिद्धा ८ । 'अण्णलिंगसिद्धा' तावस-परिवाय-
 गादिवक्कल-कासायमादिद्वलिंगद्विता सिद्धा अण्णलिंगसिद्धा ९ । एवं गिहिलिंगे वि-केसादिअलंकरणादि ए द्ब-
 लिंगे द्विता सिद्धा गिहिलिंगसिद्धा १० । इत्थिलिंगं ति-इत्थीए लिंगं इत्थिलिंगं, इत्थीए उवलक्खणं ति बुत्तं
 भवति । त ति विहं-वेदो सरीरनिव्वत्ती णेवच्छं च, इह सरीरनिव्वत्तीए अधिकारो, ण वेद-णेवच्छेहिं । तत्थ वेदे 5
 कारणं-जम्हा खीणवेदो जहण्णेणं अंतोमुहुत्तातो उक्कोसेण देसणपुव्वकोडीतो सिज्जति, णेवच्छस्स य अणियत्-
 त्तणतो, तम्हा ण तेहिं अहिकारो । सरीराकारणिव्वत्ती पुण णियमा वेदुदयातो णामकम्ममुदयाओ य भवति तम्मि
 सरीरनिव्वत्तिलिंगे ठिता सिद्धा तातो वा सिद्धा इत्थिलिंगसिद्धा ११ । एवं पुरिस-णपुंसकलिगा वि भाणितव्वा
 १२-१३ । एकसिद्ध च्चि-एकम्मि समए एक्को चेव सिद्धो १४ । अणेगसिद्ध च्चि-एकम्मि समए अणेगे सिद्धा,
 दुगादि जाव अट्टसत्ति ति । भाणितं च—

10

वत्तीसा अडयाला सट्ठी वावत्तरी य बोधव्वा । चुलसीती छण्णउती दुरहित अट्टत्तरसत्तं च ॥१॥१५॥

[वृहत्सं गा ३३३]

चोदक आह-णणु एते पण्णरस भेदो छभेदद्विताअण्णोण्णनिरवेक्खा ण भवंति कंठं पंचदसभेद च्चि पण्णत्ता ?
 आचार्य आह-णणु तित्थाऽतित्थपुरिसवि[जे० १९७ द्वि०]भागुपग्ग्गा-ऽणुप्पण्णकालभेदतो वा दो भेदा परोप्प-
 रविरुद्धा १, तथा तित्थगरणामकम्ममुदयातो अभावतो य दो भेदा परोप्परविरुद्धा २, तथा लिंगादिया द्बलिंग- 15
 पडिवत्तिभेदा परोप्परविरुद्धा ३, तथा मोहुत्तरपगडिवेदभेदोदयतो त्थिमादिसरीरलिंगाणिव्वत्ती परोप्परविरुद्धा ४,
 एगा-ऽणेगा वि एककालसद्वचरिता-ऽचरितत्तणतो भिण्णा ५, सयबुद्धादयो वि णाणावरणक्खंओवसमविसेसपडि-
 बोधविसेसत्तणतो प्रतिविसिद्धा ६, एवं तित्थादियाण अण्णोण्णलक्खणसभावद्विताणं पंचदस भेदा पण्णत्ता, किंच-
 जहा मतिणाणे गैचादियाण चरिमपज्जससाणाणं अण्णोण्णाणुंवेधत्तणे वि भेदो इह पि जइ तथा तो को दोसो ?,
 किंच-नांणाणयाभिप्पायत्तणतो सुत्तस्स य अणेगगम-यज्जायत्तणतो अभिधाणभेदत्तणतो य पंचदसभेदकरणं ति ण 20
 दोसो ॥ इदंणिं तं चेव सिद्धकेवलणाणं समतभेदतो अणेगधा विसेसिज्जति—

३९. से किं तं परंपरसिद्धकेवलणाणं ? परंपरसिद्धकेवलणाणं अणेगविहं पण्णत्तं, तं
 जहा-अपढमसमयसिद्धा दुसमयसिद्धा तिसमयसिद्धा चउसमयसिद्धा जाव दससमयसिद्धा
 संखेज्जसमयसिद्धा असंखेज्जसमयसिद्धा अणंतसमयसिद्धा, से तं परंपरसिद्धकेवलणाणं ।
 से तं सिद्धकेवलणाणं ।

25

३९. पढमसमयसिद्धस्स जो वितियसमयसिद्धो सो परो, तस्स वि य अण्णो, एवं परंपरसिद्धकेवलणाणं
 भाणितव्वं । तं च 'अपढमसमय' इत्यादि । नास्य प्रथमः समयो विद्यत इत्यप्रथमः, द्वितीयसमयसिद्ध इत्यर्थः,
 स च परंपरसिद्धविसेसणस्स प्रथमः, तस्स परतो वितियादिसमया भाणितव्वा ॥

१ भेदा विमेदं आ० दा० । अत्रेदमववेयम्-श्रीमद्भिर्हरिभद्रपदै मलयगिरिचरणेश स्वत्त्ववृत्तौ तीर्थसिद्धा-ऽतीर्थसिद्धरूपमे-
 दद्वयान्त पञ्चदशभेदान्तर्भाव सङ्कल्प्यैव चालना-प्रत्यवस्थाने उपन्यस्ते स्त तदनुसारी पाठभेदोऽपि चूर्ण्यादर्शेषु दृश्यते । किञ्च-चूर्णी-
 सत्कप्राचीनतमे आदर्शे पञ्चभेदान्त पञ्चदशभेदान्तर्भावावेदकं छव्मेदद्विता० इत्यादि पाठो वरीश्रुत्यते, आचार्यप्रतिविधानमपि पडिवभागा-
 वेदकमेव विद्यते इत्यस्माभिः छव्मेदद्विता० इति पाठ एव मूले आहतोऽस्ति । अत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥ २ गत्यादिकाना
 चरमपर्यवसानानाम् "गह इदिए य०" तथा "भासग परित्त०" इति आवश्यकनियुक्तिगाथा १४-१५ निर्दिष्टाना द्वाराणाम् इत्यर्थ ॥
 ३ णुवेक्खंताण वि आ० दा० ॥ ४-५-६-७ सिद्धकेवलणाणं ल० ॥ ८ समयो तम्मि सिद्धो आ० दा० ॥

४० त ममासओ चउव्विह पणत्त, त जहा-दंव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।
 तत्थ दव्वओ णं केवलणाणी मव्वदव्वीइ जाणइ पामइ । खेत्तओ णं केवलणाणी
 सव्व खेत्तं जाणइ पासइ । कालओ णं केवलणाणी सव्व काल जाणइ पामइ ।
 भावओ णं केवलणाणी संव्वे भावे जाणइ पासइ ।

५ ४० त मन्व पि षत्तुप्पिइ दम्मात्थिय । 'सम्भदम्भ' ति पम्मा ऽपम्मा ऽग्गासातया, वेदितो बीद्दम्भा
 अणतगुणा, वेदितो वि पुग्गाम्भन्ना अणतगुणा, एत सम्भ सस्सत्ता जाणति । खेत्तं पि भोगा-ऽग्गासदम्भिन्नाम-
 भत्तं सस्सत्तो जाणति । कास पि समय-ऽऽपत्थियादियं तीपयणागतसत्तदं दं वा सस्सत्तो सम्भ जाणति । माभा
 वि दुविषा माभा-जीवमाभा अजीवमाभा य । तत्थ बीवमाभा कम्मदयसत्तपपरिणामितअन्तवणा गति-कसाया
 दिया कम्मदयसत्तवन्ना अणेगविषा, उरसम[ने० १९८ प्र०]-स्यप-स्योपासमनीसत्तपत्तवन्ना अणेगविषा,
 १० पारिभासिता य बीव मन्धा-ऽमन्धवादिषा, अजीवाऽमुत्तदम्भसु भम्मा-ऽपम्मा-ऽग्गासा गति द्विती अन्नाऽसत्तवन्ना,
 अग्गुस्सहुगा य अणंता, पुग्गाम्भन्ना य सुग्गम-बाद्दर-विस्ससापरिणता अस्मिदधनुमादिषा अणेगविषा । परमाणु-
 मादीव य मन्धादिपञ्चा पणादिषा अणंता । एते दम्भादिषा सत्ते सस्सत्ता सस्सत्तय सम्भकासं उव्वसुत्तो सागारा-
 ऽग्गासारसत्तवन्नेहि णाव-दंसणेहि जाणति पासति य । एत्थ केवलमाण-दंसणावयोगेहि बहुधा समयसम्भारं
 भायनुदीए पक्खेता इम मणंति—

१५ केपी मणंति जुगभं जाणइ पासति य केवली नियमा ।
 अण्णे पगतथियं इच्छंति सुतोवदेसेणं ॥ १ ॥
 अण्णे णं वेव बीसु दंसणाविच्छंति जिणधरिंदस्स ।
 जं थिय केवलणाणं तं थिय से दंसणं वेति ॥ २ ॥ [विशेषण- गा १५३ ५४]
 तस्य जे ते मणंति 'जुगभं जाणति पासति य' ते इमं उव्वसि उपविंसंति—

२० जं केवलाइं सादी-अपञ्चसिताइं दो वि भणित्ताइं ।
 तो वेति केइ जुगभं जाणति पासति य सम्भण्णु ॥ ३ ॥

किं—

इइराऽऽपी-णिइणत्त मिच्छाऽऽवरणाकम्भयो ति व जिणत्त ।

इत्तरेतरावरणया अइषा णिक्खरणावरणं ॥ ४ ॥

२५ तइ य असम्भण्णुसं असम्भवरिसिस्तणप्पसंगो य ।

पगतरोवयोगे जिणत्त दोसा पडुविपीता ॥ ५ ॥ [विशेषण- गा १९३ १९५]

एवं परेय बहुधा मणिते आगमवादी उत्तरं इमं आह—

'मणणति, मिण्णासुसुतोवयोगकाले थि तो तिनाणित्त ।

मिच्छा छाव्वी सागरोवमाइं लयोवसतो ॥ ६ ॥ [विशेषण- गा २०२]

१ दम्भो ४ । दम्भो ४ ॥ २ तत्थ इति व वं व इ नाति ॥ ३ व्वाति वा इ ॥ ४ लम्भमाथि
 वं ॥ ५ जु-हुष्णुपादीव वा वा ४

जहा छउमत्थस्स मति-सुता-ऽवधिणाणेसु अंतमुहुत्तकालोवयोगसंभवे उवयोगा-ऽणुवयोगेण य छावट्टिसागरा से ठितिकालो दिट्ठो, तहा जति जिणस्स गाण-दंसणा सादिअपज्जवसाणा उवयोगा-ऽणुवयोगेण भवंति तो को दोसो ? । जति एतं ते गाणुमतं तो इमं ते क्हं अणुमतं भविस्सइ ?—

अह ण वि एतं तो सुण, जहेव खीणंतराइओ अरहा ।
संते वि अंतरायक्खयम्मि पंचप्पगारम्मि ॥ ७ ॥

5

सततं ण देइ [जे० १९८ द्वि०] लभइ व भुंजइ उवभुंजई य सव्वण्णू ।
कज्जम्मि देइ लभइ व भुंजइ व तहेव इहयं पि ॥ ८ ॥

किंच—

दितस्स लभंतस्स व भुंजंतस्स व जिणस्स एस गुणो ।
खीणंतराइयत्ते ज से विग्घं ण संभवति ॥ ९ ॥

10

उवउत्तस्सेमेव य गाणम्मि व दंसणम्मि व जिणस्स ।

खीणावरणगुणोऽयं, जं कसिणं मुणइ पासति वा ॥ १० ॥ [विशेषण गा. २०३-६]

पुणो पर आह—

पासंतो वि न जाणइ, जाणं व ण पासती जति जिणिंदो ।
एवं ण कदाइ वि सो सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ ११ ॥

15

उत्तरं आचार्य आह—

जुगवमजाणंतो वि हु चतुहिं वि नाणेहिं जह चतुष्णाणी ।
भण्णइ, तहेव अरहा सव्वण्णू सव्वदरिसी य ॥ १२ ॥

पर एवाऽऽह—

तुल्ले उभयावरणक्खयम्मि पुंभवयसुभवो कस्स ।
दुविधुवयोगाभावे जिणस्स जुगवं ? ति चोदेति ॥ १३ ॥

20

उत्तरं आचार्य आह—

भण्णति, ण एस नियमो जुगवुप्पण्णेसु जुगवमेवेह ।
होयव्वं उवओगेण, एत्थ सुण ताव दिट्ठंतं ॥ १४ ॥

जह जुगवुप्पत्तीय वि सुत्ते सम्मत्त-मति-सुतादीण ।
णत्थि जुगवोवयोगो सव्वेसु तहेव केवल्लिणो ॥ १५ ॥

25

किंच—

भणितं पि य पण्णत्ती-पण्णवणादीसु जह जिणो समयं ।

जं जाणती ण पासति तं अणुरतणप्पभादीणि ॥ १६ ॥ [विशेषण गा २१५-२०]

जे मणति केवल्लाम वंसणाण एगणं ते इम हेतुजुचि मणति—
जह किर खीणावरणे देसप्राणाण संभवो ण जिणे ।
उभयावरणातीते तह केवल्लवंसणस्साचि ॥ १७ ॥

एस ते हेतुजुची जहा भवसायकं न ससह सहा उत्तर(रं) हेतुजुचीए वेव मणति—
देसणाणोयरमे जह केवलनाणसंभवो मणितो ।
देसदंसणविगमे तह केवलदंसण होतु ॥ १८ ॥
अह देसनाण-दंसणविगमे तय केवल मत्तं नाणं ।
ण मत्तं केवलदंसणमिच्छामेसं णणु तवेदं ॥ १९ ॥ [विशेषण गा १५५-५७]

किंच—

मणति अहोहिणाणी जाणति पासति य भासितं सुत्ते ।
ण य णाम ओहिदंसण-नाणेगणं तह इम पि ॥ २० ॥ [विशेषण गा १७८]

एवं परामिष्याये पडिसिद्धे एगतरोवयोगता सिद्धा सह विमं मणति—
जह पासतु तह पासतु, पासति सो जेण दंसणं तं से ।
जाणइ य जेण अरहा तं से णाण ति येसन्धं ॥ २१ ॥ [विशेषण गा १९२]

किंच-सिद्धभिकारे एगतरो [१९९. ५०] वयोगवंसिगा इमा कुडा गाहा—
नाणम्मि वंसणम्मि य एत्तो एगतयम्मि उवउत्ता ।
मव्वस्स केवल्लिस्सा जुगवं दो णत्थि उवयोगा ॥ २२ ॥ [विशेषण गा २२९]

किंच भावतीय—

उवयोगो एगतरो पणुबीसतिमे सत सिणापस्स ।
मणितो विगडव्यो विथि छट्टुपेसे विसेसेतु ॥ २३ ॥ [विशेषण गा २३२]

किंच—

कस्स न णाणुमतमिणं जिणस्स जति होइ दो वि उवयोगा ।
णूणं ण होति जुगवं उत्तो णिसिद्धा सुत्ते पडुत्तो ॥ २४ ॥ [विशेषण गा २४९]

४१ अह सव्वदव्वपरिणामभावविष्णात्तिकारणमणंतं ।
सासयमप्यडिवाती एगविहं केवलं णाणं ॥ ५४ ॥
केवल्लणाणेणज्ये णाउं जे तत्थ पणवणजोगो ।
ते भासइ तित्थयरो, वंडजोग तयं हंवइ सेसं ॥ ५५ ॥
से तं केवल्लणाणं । से त पव्वस्सणाण ।

१. वरयोगो सुयं इवह सेसि इत्यर्थं पाठः इतिहासो पाठान्तरस्यैव विविधोऽस्ति । तथाहि— बन्धे त्वेवं पडित्त-वरयोगो सुयं इवह सेसि' ए नाम्नाः सुतं भवति 'वेध' भोग्याम् ।' इति वारि-० वृत्तौ । 'बन्धे त्वेवं पडित्त-वरयोगो सुयं इवह सेसि' इत्यावयव-विधौ भोग्यां मायकुण्डकारकत्वात् ए नाम्नाः सुतं भवति, सुतमिति म्भविष्यते इत्यर्थः । इति मध्यगिरिया ॥ २ अर्थे ४ ॥ ३ अत्र धर्म-वित्तव्य से त पव्वस्सं इत्येव पाठः सम्मतः मीमांसकीय कर्त्तारिपि ज्ञेयः ॥

४१. अह सव्वदव्वं गाहा । केवलनाणेणं गाहा । एताओ जहा पेडियाए ॥ ५४ ॥ ५५ ॥ सेसं कंठं ॥ इदार्णि कमागतं बहुवत्तव्वं पारोक्खं भण्णति —

४२. से^१ किं तं परोक्खणाणं ? परोक्खणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आभिणिवोहियणाणपरोक्खं च सुयणाणपरोक्खं च ।

४२. अक्खस्स इंदिय-मणा परा, तेसु जं णाणं त परोक्ख । मति-श्रुते परोक्षमात्मनः, परनिमित्तत्वात्, 5 अनुमानवत् । णणु सुत्ते इंदियपच्चक्खं भणितं ? उच्यते—सच्चमिणं, एत्थं जं इंदिय-मणेहिं वहिल्लिगपच्चयमुप्पज्जति तमेगंतेणेव इंदियाण अत्तणो य परोक्खं, अणुमाणत्तणतो, धुमाओ अग्गिणाणं व । जं पुण सक्खा इंदिय-मणो-निमित्तं तं तेसिं चैव पच्चक्खं, अल्लिगत्तणतो, अत्तणो अवधिमादि व्व, अत्तणो तु तं एगंतेणेव परोक्खं । इंदियाणं पि तं संववहारतो पच्चक्ख, ण परमत्थतो । कम्हा ? जम्हा ढव्विदिया अचेतणा इति । तं दुविहं—मतिणाणं सुतनाणं च । इह मति-सुताणसुवण्णासरुमे कारणं पुव्वुत्तं दट्टव्वं ॥ मति-सुताण य अभेदसामिणिरुवणत्थं इमं सुत्तं— 10

४३. जंत्थाऽऽभिणिवोहियणाणं तत्थ सुयणाणं, जत्थ सुयणाणं तंत्थाऽऽभिणिवोहियणाणं । दो वि एयाइं अण्णमण्णमणुगयाइं तह वि पुण एत्थाऽऽयरिया णाणत्तं पण्णवेत्ति—अभिणिवुज्झइ त्ति आभिणिवोहियं, सुंणतीति सुतं ।

“ मतिपुव्वयं सुयं, ण मती सुयपुव्विया । ”

४३. जत्थ मतिनाणेत्यादि । ‘जत्थ’ त्ति पुरिसे जत्थ व इंदिय-नोइंदियखयोवसमे मतिणाणमत्थि 15 तत्थेव सुतनाणं पि । अहवा जत्थाभिनिवोधियसरूवं तत्थेव सुतं पि नियमा, अण्णोण्णाणुगता भवंतेते । आह—मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगतत्तणतो सामि-काल-कारण[जे० १९९ द्वि०]—खयोवसमतुल्लत्तणतो य एगत्तं पावति, णो दुगपरिकप्पणं ति, अत्रोच्यते, मति-सुताणं अण्णोण्णाणुगताण वि आयरिया भेदमाह दिट्ठंतसामत्थतो, जहा आगासपइट्ठिताणं धम्मा-ऽधम्माण अण्णोण्णाणुगताणं लक्खणभेदा भेदो दिट्ठो तहा मति-सुताण वि सामि-काला-दिअभेदे वि भेदो भण्णति—अभिणिवुज्झतीत्यादि । एवं लक्खणो-ऽभिधानभेदा भेदो तेसिं । अहवा इमो 20 मति-सुतविसेसो—“मतिपुव्वयं सुतं, ण मती सुतपुव्विया” इति, जतो सुतस्स मतिरेव पुव्वं कारणं । कइं ? उच्यते—मतीए सुतं पाविज्जति, ण मतिमंतरेण प्रापयित्तुं शक्यते, गरितं च मतीए पालिज्जति, परिवत्तयतो णो पणस्सइ त्ति” जतो, मतिरेव सुतपुव्वा ण भवति । णणु सुतं पि सोत्तुं मती भवति ? उच्यते—त दव्वसुतं, न भावश्रुतादित्यर्थः । अहवा मति-सुताण भेदकतो विसेसो, मतिणाणं अट्ठावीसद्भेदभिण्णं, सुतणाणं पुण अंगा-ऽ-

१ चूर्णि-वृत्तिकृता से किं तं परोक्खं ? परोक्ख दुविह इति पाठोऽत्र सम्मत, परोक्षज्ञानोपसहारेऽपि त से स परोक्खं इत्येव पाठ स्वीकृतोऽस्ति, किञ्च सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु उभयत्रापि परोक्खणाण इत्येव पाठ उपलभ्यते ॥ २ चूर्णि-वृत्तिकृद्भि किल जत्थ मतिनाणं तत्थ सुतनाणं, जत्थ सुतनाण तत्थ मतिनाण इतिरूप सूत्र मौलभावेनाङ्गीकृतमस्ति । किञ्च—श्रीचूर्णिकृदादिभि मौलभावेनाङ्गीकृतमेतद् जत्थ मतिनाण इत्यादि सूत्र साम्प्रतीनेष्वादर्शेषु नोपलभ्यते । अपि च चूर्ण्यवलोकनेनैतदपि ज्ञायते यत् चूर्णिकृतसमयभाविष्वादर्शेषु पाठमेदयुगलमप्यासीदिति ॥ ३ तत्थ आभिं ख० सं० ॥ ४ इत्थ आयं मो० सु० ॥ ५ पण्णवत्ति शु० । पण्णवत्ति हे० ल० । पण्णवयंति मो० सु० ॥ ६ अभिणिवोज्झतीति ख० । अभिणिवुज्झतीति सं० शु० । अभिणिवुज्झईइ इति पद नास्ति । पुव्वं सुयं ख० हे० विना ॥ १० ण-विघाणं दा० ॥ ११ त्ति, जतो मतिमेव सुतं पवण्णो भवति आ० ॥

जगाद्भेदमिच्छं मणेगहा । अहवा मति-सुताणं इदियोबलद्विदिमागतो मदी इमो-सोर्धिविद्योबन्धी० गाहा
 [विरेया गा १२२] पूर्ववद् व्याख्यया । अहवा मति-सुतमदं मर्गति—बुदीदिद्वे० गाहा । [विरेया गा १०८]
 एवीप गाहाए अत्या मति-सुतविसैसो य जहा विसेसाबस्सगं तहा माथित्तणो । मण्णे वागसमं मतिवाणं सुंभसमं च
 सुतवाणं भवति त च मं घठति, जम्हा वाग-सुंभदिद्वेण मद्नाबस्सव सुतं परिणामा दंसिज्जति, तेम्हा त न
 5 सुज्जते इत्यर्थः । अहवञ्चो मति-सुतमदो—अस्सखाराणुगतं सुतं, अणवस्सरं मतिनाणं ति । अहवाऽऽत्ममत्यायकं
 मतिणाणं, स्व-परमत्यायकं सुतनाण । अहवा मति-सुवाण आपरबम्हाता [खे० २०० प्र०] मदी दिद्वे । तत्त्वतो-
 भसमविसैसातो चैव मति-सुवाण मदी भवति ॥ मणिता मति-सुतविसैसो । इदार्णि जहा मति-सुतवाणाण कज्ज-
 कारणमेवेद्वे भेदो दिद्वे तहा मतीए सुतस्स य सम्म-मिच्छंविसेसो दंसणपरिमाहातो मवइ पि अतो सुचं मण्णति—

४४ अविसेमिया मती मतिणाणं च मतिअण्णाणं च । विसेसिया मती सम्मदिद्विस्स

10 मती मतिणाण, मिच्छदिद्विस्स मती मतिअण्णाणं । अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुय-
 अण्णाण च । विसेमियं सुयं सम्मदिद्विस्स सुयं सुयणाणं, मिच्छदिद्विस्स सुयं सुयअण्णाणं ।

४४ अविसेसिता मतीत्यादि । सामिणा अविसेसिता मती इम वचन्वा—आभिणिबोधिकेत्यादि ।

वसवो समुच्चय । विसेसिता मतीत्यादि । जहा पुण इमेण सामिणा विससिता मती भवति तदा इम वचन्वा-
 सम्मदिद्विस्स मतीत्यादि द्वाप्रसिद्धं । अविसेसितं सुतमित्यादि एत पि उक्कउज्जितं एष चैव वचन्व । अहवा ज्ञाय
 15 विसेसेणेव अविसेसिता मती ताव मती चत्र वचन्वा । सचैव मती ज्ञायऽन्वाणसवविसेसनातो इमं वचन्वा-
 आभिनिबोधिकेत्यादि द्वाप्रसिद्धं । ज्ञाय-अन्वाणसवविसेसेण कइ ? मण्णति—सम्मच-मिच्छसामिणुणपणतो सम्मदिद्वि-
 स्स मतीत्यादि सुचसिद्धं । सुते वि एवं चैव वचन्व । पर आइ—सुच्छयवसमचणतां पढाइवत्पूज य सम्मपरि-
 च्छेदणतो सहादिविसयाण य समुच्चयमातो कइ मिच्छदिद्विस्स मति-सुता अन्वाणं ति मथिता ? उच्यते—
 सद्दसद्विसेसनातो मवरेहु मतिच्छिद्योबन्ममातो । नाणफसामावातो मिच्छदिद्विस्स अन्वाणं ॥१॥

20 मतिपुष्पं सुतं ति काहुं मतिणाणं चैव पुष्पं मणामि—

४५. से किं तं आभिणिबोहियणाणं ? आभिणिबोहियणाणं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा-
 सुयणिसियं च असुयणिसियं च ।

४५ से किं तं आभिनिबोधिकेत्यादि सुचं । तत्त्व 'सुतनिसिस्तं' ति सुत ति—सुचं, तं च सामादियादि
 किंदुसारकअवसायं । एतं दृक्चसुतं गणित । त अणुसरतो अं मतिणाणमुपज्जति तं सुतगिस्ताए उप्पन्न ति सुवातो
 25 वा गिसुतं तं सुतगिसिस्तं मण्णति । तं च उमाहेहा ज्ञाय-वारमाठितं वरुभेदं । 'असुतनिसिस्तं च' चि नं पुण
 दृक्च-मावसुतविरवेकसं आभिनिबोधिकेत्यादि सुचं असुयमावातो समुपपन्नं ति असुतनिसिस्त मण्णति । तं च
 उप्पत्तियादिसुदिपठकं ॥ इम—

१ उम्हा के रा ३५ विसेसत्तं ज्ञाय वा वा ॥ ३ अय गूणे स्थापित एवपाठः सं गो विवेकावस्तुप्रकाशकारेणवृत्तौ
 १५५ पत्र मन्वीरुणगायेदारणे उपलब्धते । योहरिमद्रश्चुरिमापि स्वह्नावपनेव सुत्रादी आकाशतेऽस्ति । विसेसिया सम्मदिद्विस्स
 मती मतिणाणं मिच्छदिद्विस्स मती मतिअण्णाणं । एवं अविसेसियं सुयं सुयणाणं च सुयअण्णाणं च । विसेसियं
 सम्मदिद्विस्स सुयं सुयणाणं मिच्छदिद्विस्स सुयं सुयअण्णाणं । के ३ क ४ । वक्तेर एवपाठो भोक्ता मध्य
 गिरिणा स्त्रीणो आत्मन्यथापत्ति । विसेसिया मती सम्मदिद्विस्स मतिणाणं, मिच्छदिद्विस्स मतिअण्णाणं । अविसेसियं
 सुयं सुयणाणं सुयअण्णाणं च । विसेसियं सुयं सम्मदिद्विस्स सुयणाणं मिच्छदिद्विस्स सुयअण्णाणं । क ॥

४६. से किं तं असुयणिस्सियं ? असुयणिस्सियं चउव्विहं पणत्तं, तं जहा—
उप्पत्तिया १ वेणइया २ कम्मया ३ पारिणामिया ४ ।

बुद्धी चउव्विहा बुत्ता पंचमा नोवलब्भइ ॥ ५६ ॥

पुवं अदिट्ठमसुयमवेइयतक्खणविसुद्धगहियत्था ।

अव्वाहयफलजोगा बुद्धी उप्पत्तिया णाम ॥ ५७ ॥

5

भंरहसिल १ पणिय २ रुक्खे ३ खुंडुग ४ पड ५ सरड ६ काय ७ उच्चारे ८ ।

गय ९ घयण १० गोल ११ खंभे १२

खुडुग १३ मग्गि १४ त्थि १५ पंति १६ पुत्ते १७ ॥ ५८ ॥

भरह सिल १ मिढ २ कुकुड ३ वालुय ४ हत्थी ५ [य] अगड ६ वणसंडे ७ ।

पायस ८ अइया ९ पत्ते १० खांडहिला ११ पंच पियरो १२ य ॥ ५९ ॥

10

महुसित्थ १८ मुद्दि १९ यंके २० य णाणए २१ भिक्खु २२ चेडगणिहाणे २३ ।

सिक्खा २४ य अत्थसत्थे २५ इच्छा य महं २६ सतसहस्से २७ ॥ ६० ॥ १ ।

भरणित्थरणसमत्था तिवग्गसुत्तत्थगहियपेयाला ।

उभयोलोगफलवती विणयसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६१ ॥

णिमित्ते १ अत्थसत्थे २ य लेहे ३ गणिए ४ य कूव ५ अस्से ६ य ।

15

गहम ७ लक्खण ८ गंठी ९ अंगए १० रहिए य गणिया य ११ ॥ ६२ ॥

सीया साडी दीहं च तणं अवसव्वयं च कुंचस्स १२ ।

निव्वोदएँ १३ य गोणे घोडग पडणं च रुक्खाओ १४ ॥ ६३ ॥ २ ।

उवओगदिट्ठसारा कम्मपसंगपरिघोलणविसाला ।

साहुक्कारफलवती कम्मसमुत्था हवति बुद्धी ॥ ६४ ॥

20

हेरणिए १ करिए २ कोलिय ३ डोएँ ४ य मुत्ति ५ घय ६ पवए ७ ।

तुण्णाग ८ वड्ढती ९ पूतिए १० य घड ११ चित्तकारे १२ य ॥ ६५ ॥ ३ ।

१ वेणयिया ख० शु० । वेणत्तिया स० ॥ २ ५८-५९ गाये ख० शु० डे० ल० प्रतिपु पूर्वापरव्यत्यासेन वर्तेते ॥
३ गडग ख० ॥ ४ पय ल० ॥ ५ कुकुड ३ तिल ४ वालुय ५ हत्थि ६ अगड ७ इतिरूपं सूत्रपाठं सर्वास्त्रपि सूत्रप्रतिपू-
लभ्यते । आवश्यकर्निर्मुक्त्यादावपीत्यम्भूत एव पाठ उपलभ्यते, तथैव च तत्र सर्वैरपि चूर्णा-चृत्तिकृदादिभि व्याख्यातोऽस्ति । किञ्चान्न
एतत्सूत्रचूर्णार्थादावव्याख्यानाद् मलयगिरिपादवृत्त्यनुमारी पाठो मूले आहतोऽस्ति ॥ ६ पायस ८ पत्ते ९ अइया १० इति
पाठानुसारेण मलयगिरिणा व्याख्यातमस्ति, न चोपलभ्यतेऽय पाठ कुत्राप्यादर्श ॥ ७ २० पणए २१ भिक्खू २२ य चेडगं
प्रत्यन्तरे ॥ ८ आसे ल० ॥ ९ अगए १० गणिया य रहिए य ११ सर्वास्त्रपि सूत्रप्रतिपु । आवश्यकर्निर्मुक्त्यादौ तद्वृत्त्यादौ च
मूलगत एव पाठ उपलभ्यते ॥ १० निव्वोदपण १३ गोणे शु० ॥ ११ डोवे मो० सु० ॥

४९. से किं तं वंजणोग्गहे ? वंजणोग्गहे चउव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोत्तिदियवंज-
णोग्गहे १ घाणेंदियवंजणोग्गहे २ जिब्भदियवंजणोग्गहे ३ फासेंदियवंजणोग्गहे ४ । से
त्तं वंजणोग्गहे ।

४९. वंजणाणं अवग्गहो वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण सदाइपरिणता दव्वा वेत्तव्वा । वंजणे अवग्गहो
वंजणावग्गहो, एत्थ वंजणग्गहणेण दव्विदियं घेत्तव्वं । एतेसिं दोण्ह वि समासाणं उमो अत्थो—जेण करणभूतेण 5
अत्थो वंजिज्जड तं वंजणं, जहा पठीवेण घडो । एवं सदाइपरिणतेहिं दव्वेहि उवकरणिंदियपत्तेहिं चित्तेहिं संवद्धेहिं
संपसत्तेहिं जम्हा अत्थो वंजिज्जड् चि तम्हा ते दव्वा वंजणावग्गहो भण्णति । एस वजणावग्गहो मुत्तसिद्धो चतुव्विहो ॥

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहे ? अत्थोग्गहे छव्विहे पण्णत्ते, तं जहा—सोइंदिय-
अत्थोग्गहे १ चक्खिंदियअत्थोग्गहे २ घाणिंदियअत्थोग्गहे ३ जिब्भदियअत्थोग्गहे ४
फासिंदियअत्थोग्गहे ५ णोइंदियअत्थोग्गहे ६ । [२] तस्स णं इमे एगट्ठिया णाणा- 10
घोसा णाणावंजणा पंच णामधेया भवन्ति, तं जहा—ओगिण्हणया १ उवधारणया २ सवणता
३ अवलंवणता ४ मेहा ५ । से त्तं उग्गहे ।

५०. [१] से किं तं अत्थोग्गहेत्यादि सूत्रम् । अत्थस्स ओग्गहो अत्थोग्गहो । सो य वंजणावग्गहातो
चरिमसमयाणंतरं एकसमयं अविस्सिट्ठिंदियविसयं गेण्हतो अत्थावग्गहो भवति । चक्खिंदियस्स मणसो य वंजणाभावे 15
पढमं चेव जं अविस्सिट्ठमत्थग्गहणं कालयो एगसमयं सो अत्थोग्गहो भाणितव्वो । सव्वो वेस विभाणेण छव्विहो
दंसिज्जति, ण पुण तस्सोग्गहस्स काले सदादिविसेसवुद्धी अत्थि । णोइंदियो त्ति—मणो । सो य दव्वमणो भावमणो
य । तत्थ मणपज्जत्तिणामकम्मदयातो जोग्गे मणोदव्वे घेत्तुं मणजोग्ग(?ग)परिणामिता दव्वा दव्वमणो भण्णति ।
जीवो पुण मणणपरिणामक्रियावणो भावमणो । एस उभयरूवो मणदव्वालंवणो जीवस्स नाणवावारो भावमणो
भण्णति । तस्स जो उवकरणिंदियदुवारनिरवेक्खो घडाइअत्थसरूवचित्तणपरो वोधो उप्पज्जति सो णोइंदिय-
त्थावग्गहो भवति । 20

[२] घोस त्ति—उदत्तादिया सरविसेसा [जे० २०१ प्र०] घोसा भण्णति । वंजणं त्ति—अभिलावक्खरा ।
ते इमे एगट्ठिया पंच—ओगिण्हणता इत्यादि । एते ओग्गहसामणतो पंच वि णियमा एगट्ठिता । उग्गह-
विभाणे पुण कज्जमाणे उग्गहविभागंसेण भिण्णत्था भवन्ति । सो य उग्गहो तिविहो—वंजणोग्गहो सामण्णत्थावग्गहो
विसेससामण्णत्थावग्गहो य । एगट्ठियाण इमो भिण्णत्थो—वंजणोग्गहस्स पढमसमयपविट्ठपोग्गलाण गहणता
ओगिण्हणता भण्णति, 'उ—प्पावळे' त्ति काहुं १ । वितियादिसमयादिमु जाव वंजणोग्गहो ताव उवधारणता 25
भण्णति २ । एगसामइगसामण्णत्थावग्गहकाले सवणता भण्णति ३ । विसेससामण्णत्थावग्गहकाले अवलंवणता

१ चक्खुदिं ख० सं० ॥ २ घेज्जा मो० सु० ॥ ३ ओगेण्हं मो० सु० ॥ ४ अवघां जे० ॥ ५ अवि सव्विदियं
आ० । अविस्सिट्ठसव्विदियं दा० ॥ ६ बुद्धिमत्थि जे० ॥ ७ विसेसावग्गहो सामण्णं आ० दा० । हारिं वृत्तौ
“ त्रिविधश्चावग्रह — सामान्यावग्रह विशेषावग्रह विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च ” इति आ० दा० प्रतिगतचूर्णिपाठमेदानुसारि मेदनामत्रय दृश्यते ।
किञ्च जेसलमेरुदुर्गस्थप्राचीनतमे ताडपत्रीयादर्शे विसेसावग्गहो इति स्थाने वंजणोग्गहो इति पाठो वर्त्तते । मलयगिरिपादैरपि
नन्दिवृत्तौ व्यञ्जनावग्रह इति जे० प्रत्यनुसारि नाम निष्ठङ्कितमस्ति । तथाहि—“ इहावग्रहस्त्रिधा, तद्यथा—व्यञ्जनावग्रह सामान्यार्थावग्रह
विशेषसामान्यार्थावग्रहश्च । ” पत्र १०४-२ ॥ ८ भण्णति, आपळे आ० दा० ॥

मण्यति ४ । उत्तररुचरितेसमामण्यत्याबमाहेसु जाव मेरया घाचइ ताव मया मण्यइ ५ । अत्य बजगात्रमाहो नत्ये
 तस्य सषणादिया विष्णि एगद्विता भवति । आह—णयु मिण्यस्येदसणे एगद्वित सि विरुद्धं ? उच्यते, ण विरुद्धं,
 नतो सम्भविष्ण्येसु उम्माहस्सेन सख्वं दमिञ्जति ॥ इदामि उम्माहसमण्यतरं इहा—

५१ [१] से किं त ईहा ? ईहा छविहा पण्णत्ता, त जहा—सोतेदियईहा ? चर्चित्त

५ दियईहा २ घाणेदियईहा ३ जिन्मिदियईहा ४ फासेदियईहा ५ णोईदियईहा ६ ।

[२] तीसे ण इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामघेयां भवंति, त जहा—
 आभोगणया १ मगगणया २ गवेसणया ३ चिंता ४ वीमंसा ५ । से तं ईहा ।

५१ [१] सा छविहा सुचसिद्धा ।

[२] इमे तस्सेगद्विया, ते सि ईहासामण्यतो एगद्विता चेव, अत्यविरुष्णणातो पुष्य मिण्यत्था । इमेण

१० विधिणा—आभोगणता इत्यादि । आमाहसमयापरं सम्भूतवितेसत्तामिद्वहमात्तायणं आभोगणता
 मण्यति १ । तस्सेव वितेसत्तयस्स अण्यव-चरेगवम्मसमाभोगणं ममाभा मण्यति २ । तस्सेव-उच्यस्स वाररापम्म
 परिचाभो अण्यवपम्मसमाभोगण ष गवेसणता मण्यति ३ । तस्सेव तद्धम्माजुगतत्तयस्स पुणो पुणो समाभोगणतेण
 चिंता मण्यति ४ । तमेवत्वं जिन्वा उभियादिरेहिं वृक्क-भावेहिं विमरिसतो वीमंसा मण्यति ५ । एव वजुया
 अत्यमासायतस्स उद्धोमतो अंतवहुचकाल सन्वा इहा भवति ॥ इहापरं भवातो—

५२ [१] से किं तं अवाए ? अवाए छविहे पण्णत्ते, त जहा—सोईदियावाए ?
 चर्चित्तदियावाए २ घाणेदियावाए ३ जिन्मिदियावाए ४ फासेदियावाए ५ णोईदियावाए ।

[२] तस्स ण इमे एगद्विया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामघेयां भवंति, तं जहा—
 आउट्टणया १ पचाउट्टणया २ अवाए ३ बुद्धी ४ विण्णोणे ५ । से तं अवाए ।

५२ [१] सा छविहा सुचसिद्धा ।

[२] तस्सगद्विता इम पंच, ते य अवायसामण्यणता वियया एगद्विता चेव, अमिघाणमिण्यणतो पुण

२० मिण्यत्था । [प्र २०१ सि] इमेण विधिणा—आउट्टणता इत्यादि । इहणमावनिवत्तस अयसख्वपठिवाच
 बुद्धस्य य परिच्छयमुपादंतस्स आउट्टणता मण्यति १ । ईहणमावनिवत्तस सि तमत्तयमाभोगवत्तस पुणा पुणो
 गियद्वय पचाउट्टण मण्यति २ । मण्णइ इहाए अण्ययणं कांनु अदधारत्तावपारितरत्तस अदधारपतो भवातो सि
 मण्यइ ३ । पुणा पुणा तमत्तयवपारणावपारितं पुञ्जता पुञ्जी भवइ ४ । तस्मि चवावपारितमत्त विसस पेवरतो
 २५ अदधारपता य विण्णाय सि मण्यति ५ ॥ अवायापरं धारणा—

१ त्यत्ताभा यगं वा ॥ २ चिचिद्ध ६ ॥ ३ अण्णुविं ४ ॥ ४ येजा मो सु ॥ ५ एहिं ईहमावेदि
 ६ । विमरं विमरं, एवोत्तवविदेगद्वोर्हिं एगद्वितावेजा तद्धमत्तापिदेवामिणुयं चत्तिरेकवपरित्ताकोअवत्तवत्तव विमरं,
 मिया-अन्वहादिअव-अभाणेचमिण्ये । " इति हारि पुत्तो । " एव चत्तिरेकवपरित्ताको अण्यवपठिवाच
 चत्तिरेकवपरित्ताकोअवत्तवत्तवविदेगद्वोर्हिं एगद्वितावेजा तद्धमत्तापिदेवामिणुयं चत्तिरेकवपरित्ताकोअवत्तवत्तव
 विमरं " इति धम्मयगिरिवृत्तो ॥ ३ यज्जाय ६ ॥ ७ अण्णुविदिय
 ४ ॥ ८ १-२-११-१२ यज्जाय ६ ॥ ११ विज्जा मो सु ॥ १४ जायद्वयया यथावद्वज्जाया न सु हारि अण्य
 वत्तोच । आउट्टणया पचाउट्टणया ४ ॥ १५ विण्णायं ० यो ॥

५३. [१] से किं तं धारणा ? धारणा छ्विहा पणत्ता, तं जहा—सोइंदियधारणा १ चक्खिदियधारणा २ घाणिंदियधारणा ३ जिन्भदियधारणा ४ फासिंदियधारणा ५ णोइंदिय-
धारणा ६ । [२] तीसे णं इमे एगट्टिया णाणाघोसा णाणावंजणा पंच णामधेया
भवन्ति, तं जहा—धरणा १ धारणा २ ठवणा ३ पतिट्ठा ४ कोट्टे ५ । से तं धारणा ।

५३. [१] सा य छ्विहा मुत्तसिद्धा ।

[२] तस्सेगट्टिता पंच । ते य सामण्णधारणं पडुच्च णियमा एगट्टिया, धारणत्थविकप्पणताए भिण्णत्था ।
उमेण विधिणा—धरणा इत्यादि । अवायाणंतरं तमत्थं अविच्चुतीए जहण्णकोसेणं अंतमुहुत्तं धरंतस्स धरणा
भण्णति १ । तमेव अत्थं अणुवयोगत्तणतो विच्चुत्तं जहण्णेणं अंतमुहुत्तातो परतो द्विसाट्ठिकालविभागेषु संभरतो
य धारणा भण्णति २ । 'ठवण' च्चि ठावणा, सा य अवायावधारियमत्थं पुन्नावरमालोडयं हियतम्मि ठावयंतस्स
ठवणा भण्णति, पूर्णघटस्थापनायत् ३ । 'पतिट्ठ' च्चि सो च्चि अवारितत्थो हितयम्मि प्रभेदेन पडट्ठातमाणो
पतिट्ठा भण्णति, जले उपलप्रक्षेपप्रतिष्ठावत् ४ । 'कोट्टे' च्चि जहा कोट्टेगे साल्लिमादिवीया पक्खित्ता अविणट्ठा
धारिज्जंति तथा अवातावधारितमत्थं गुरुवदिद्वं मुत्तमत्थं वा अविणट्ठं धारयतो धारणा कोट्टगसम च्चि कातुं कोट्टे
त्ति वत्तव्वा ५ ॥

५४. इच्चेतस्स अट्ठावीसतिविहस्स आभिणिवोहियणाणस्स वंजणोग्गहस्स परूवणं करि-
स्सामि पडिवोहगदिद्वंतेण मल्लगदिद्वंतेण य ।

५४. इच्चेतस्सेत्यादि सुत्तं । 'इति' उपप्रदर्शने । 'एतस्स' च्चि जं अतिकंतं अट्ठावीसतिभेदं । ते य के
अट्ठावीसं भेदा ? उच्यते—चउच्चिहो वंजणावग्गहो, छ्विहो अत्थावग्गहो, छ्विहा ईहा, छ्विहो अवायो, छ्विधा
धारणा, एते सव्वे अट्ठावीसं । एत्थ अट्ठावीसडविहस्स मज्झातो जो वजणावग्गहो चउच्चिहो तस्स दिद्वंतदुगेण
परूवणा ॥

५५. से किं तं पडिवोहगदिद्वंतेणं ? पडिवोहगदिद्वंतेणं से जहाणामए केइं पुरिसे 20
कंचि पुरिसं सुत्तं पडिवोहेज्जा 'अमुगा ! अमुग !' च्चि, तत्थ य चोयगे पन्नवगं एवं वयासी—
किं एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? जाव
दससमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? संखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ?
असंखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति ? । एवं वदंतं चोर्यगं पणवगे एवं वया-
सी—णो एगसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छंति, णो दुसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमा- 25

१ घिज्जा मो० सु० ॥ २ त्रिपन्नायत्तमसूत्रानन्तरं श्रीहरिभद्र-श्रीमलयगिरिभ्या व्याख्यात सर्वेष्वपि सूत्रादर्शेषु एक सूत्र-
मधिकं वर्तते । तर्ध्वम्—उग्गहे पक्कसामइय, अतोमुहुत्तिया ईहा, अतोमुहुत्तिए अवाए, धारणा संखेज्ज वा कालं
असखेज्ज वा कालं । पव अट्ठां स० डे० मो० शु० । उग्गहे पक्क समय, ईहा-उवाया मुहुत्तमत्तं ति, धारणा संखेज्जं
वा कालं असखेज्जं वा काल । पव अट्ठां ल० । उग्गह पक्क समय, ईहा-उवाया मुहुत्तमेत्त तु । कालमसख संखं
च धारणा होति णायव्वा ॥ १ ॥ पवं अट्ठां ख० ॥ ३ पवं अट्ठां सर्वासु सूत्रप्रतिषु वृत्त्योश्च ॥ ४ पयस्स अट्ठां आ०
दा० ॥ ५ से ण जहा मो० ॥ ६ केचि शु० ॥ ७ पवं इति ख० स० नास्ति ॥ ८ चोदगं स० ॥ ९ वदासी ख० ॥

गच्छन्ति, जाव णो दमसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति, णो संखेज्जममयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति, असखेज्जसमयपविट्ठा पोग्गला गहणमागच्छति । से चं पढि-
बोहगदिट्ठतेणं ।

५५. से जहाणामयेत्यादि । 'से' चि पढिबोधकस्स जिहेसे । 'महाणामये' चि जहाणा [जे०
२०२ प्र०]म, समवतः आत्माभिप्रायकृतादित्यर्थः । सन्नल्पपुष्पीपमत्वं तत्रपुसारि धुवं वा अप्युद्धिविष्याम
चणपो भयवगच्छमापो सीसो पुच्छावाग्णातो बोत्रको, अइवा तमव मुत्तमत्वं वा 'अपट्ठमाप' ति मण्णमाणो
हरिसचोठपो य चादगो मण्णति । पवणणमविरुद्धं निहोसं मुत्तय पण्णवैतो पण्णका, विरुद्ध-पुण्णरुत्तमुत्त वा
अस्यतो अविरुद्ध ठरिसैता पण्णवति जो सो वा पण्णवगो मण्णति, ययावत् सवपण्णव्रीत्यय । चादको ससय-
मानणो पण्णवगो पुच्छति— 'किं एगसमयादिपविट्ठा' इत्यादि कटं । एवं चादक पुच्छामिप्यायेव वदंतं पण्ण-
१० वगाऽऽ— 'णो एगसमयपविट्ठा' इत्यादि । जो एस पढिसइहो कतो एस सहाइफुडविष्यावजणणवैणं ति ओ
गहणमागच्छति, इइरा पोमासा गहणमागच्छत्यवेत्यर्थः । एवं एगादिसमयपविट्ठयाम्पवढिमिदिसु इमा अनुष्वा-
'असखेज्जसमयपविट्ठा पोमासा गहणमागच्छति' चि । इमस्स अणणुपोगत्तो अणुयागत्वा य । तस्य अमणु
योगो इमो— सहा पवासी सगिण्णवैतो अडाणं पचारेण दसारेण वा वीठीनत्तिहा सगिदं पविट्ठो चि, एवं असखे-
जेहिं समयहिं आगता पविट्ठा कच्छविठेसु पामावा गेण्णति चि, एव अणुणुयागो मवति । इमो अणुयोगत्तो—
१५ पवमसमयादारम्म पतिसमयं पविसमाणेसु असखेज्जइमे समए जे पविट्ठा ते गहणमागच्छति, ते य सहादियि
प्याणजणग चि काट्ट, अतो वेसि गहणव्वपविट्ठं । सो य अखेज्जसमया किंपमाणे असखेज्जए मवति ?
उच्यते— अण्णेव आवसियाए असखेज्जसमयमेसु समयेसु गतेसु ति, उक्कोसेण [जे २ २ दि०] संखज्जायु
आनत्तियामु भाणापाणुकालपुइते वा, उमपवा वि अविरुद्धं ॥ गतो पढिबोधकविट्ठो । इत्थंमि भावामविट्ठो—

५६ [१] से किं त मल्लगदिट्ठतेणं ? मल्लगदिट्ठतेणं से जहाणामए केइं पुरिसे आवाग-
२० सीसाओ मल्लगं गहाय तत्येगं उदगविट्ठं पक्खिवेज्जा से णट्ठे, अण्णे पक्खित्ते से वि णट्ठे,
एवं पक्खिपमाणेसु पक्खिपमाणेसु होही से उदगविट्ठं जे णं तं मल्लगं रवेहेहिति, होही
से उदगविट्ठं जे णं तंसि मल्लगमि वाहिति, होही" से उदगविट्ठं जे" णं तं मल्लगं भैरे-
हिति, होही से उदगविट्ठं जे ण त मल्लगं पवाहेहिति, एवंमेवें पक्खिपमाणेहिं पक्खि-
पमाणेहिं अण्णतेहिं पोग्गलेहिं जाहे तं वजणं पूरित होति ताहे 'हुं' ति करेति णो" चेव

१ गहणयमां के ॥ २ जहाणमिदुत्ते इमि मववदयन्ताव नमाम्भारम् ॥ ३ 'तिव जहा का विट्ठो ? से गहा'
तं ॥ ४ केचि छ ॥ ५ अण्णे विव य रिवा ॥ ६ माये पक्खिपमाणे होही के ॥ ७-९ १) दोदिति य छ ।
हादिर क के ॥ ८ रावेदिर वे अ छ । एवेदिर वे ॥ १० मल्लगे व छ ॥ ११-१४ ओ वं ग । अण्णं
हादिर ॥ १५ भैरेहिति इत्यनन्तरं विहंगवदवमहाणामवमववारीकीकायां १०८ पत्रे कन्धेरायेदन्तं हाही से उदगविट्ठं के च
तंसि मल्लगंसि क इतिदिति इत्यर्थे 'अ अदिदिदि' इत्यनुवच्यते भावव्यवहारे एव सहादरति एवत्रियेण ॥ ११ पत्रमेव ग । अण्णेव
छ ॥ ११ 'मेव पक्खिपमाणेहिं वसतेहिं पोचय अ विजायमवती १०४ पत्र मन्धेपुत्रादीकरमे । 'मेव पक्खिपमाणेहिं
योग ग । 'मेव पक्खिपमाणेहिं पक्खिपमाणेहिं योग वं ॥ १७ 'दो' ति य ॥ १८ वा उवा का गी ॥

णं जाणति के वेसं सदाइ ? , तओ ईहं पविसति तओ जाणइ अमुगे एस सदाइ ? , तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ णं धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं ।

[२] से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं सद्दं सुणेज्जा तेणं सद्दे त्ति उग्गहिए, णो चेव णं जाणइ के वेस सद्दे त्ति, तओ ईहं अणुपविसइ ततो जाणति अमुगे एस सद्दे, ततो णं अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवति, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । →^{१२}एवं अव्वत्तं रूवं, अव्वत्तं गंधं, अव्वत्तं रसं, अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा ← ।

[३] से जहानामए केई^{१३} पुरिसे अव्वत्तं सुमिणं पडिसंवेदेज्जा, तेणं सुमिणे त्ति उग्गहिए^{१४} ण पुण जाणति के^{१५} वेस सुमिणे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणति अमुगे एस सुमिणे त्ति, ततो अवायं पविसइ ततो से उवगयं हवइ, ततो धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखेज्जं वा कालं असंखेज्जं वा कालं । से तं मल्लगदिदृतंतेणं ।

१ के वि एस मो० सु० ॥ २ सद्दे त्ति य० । सद्दे त्ति स० ॥ ३ तओ उवयाणं गच्छति, तओ से उवग्गहो हवइ य० ॥ ४ गच्छति य० स० शु० ल० ॥ ५ संखेज्जकाल असंखेज्जकाल ल० ॥ ६ केयि शु० ॥ ७ सुणेइ तेणं डे० ल० ॥ ८ सद्दे त्ति य० शु० । सदां त्ति जे० डे० ल० मो० ॥ ९ सदाइ, तओ ईहं पविसइ सर्वाउ सत्तप्रतिपु हारि० मलय० वृत्तयोध ॥ १० गच्छति य० स० शु० ल० ॥ ११ पडिवज्जेति संखेज्ज य० स० ॥

१२ → ←—एतच्चिद्धमप्यवत्तिवृत्तस्थाने जे० मो० सु० प्रतिपु रूपगन्ध-रस-स्पर्शविषयाणि चत्वारि सूत्राण्युपलभ्यन्ते । तानि चेमानि—

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रूवं पासिज्जा, तेणं रुवे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रुवे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रुवे त्ति, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्ज वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं गंधं अग्गाइज्जा, तेणं गंधे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस गंधे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस गंधे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्ज वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं रसं आसाइज्जा, तेणं रसे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस रसे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस रसे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्ज वा कालं असंखिज्जं वा कालं ।

से जहानामए केई पुरिसे अव्वत्तं फासं पडिसंवेदेज्जा, तेणं फासे त्ति उग्गहिए, नो चेव णं जाणइ के वेस फासे त्ति, तओ ईहं पविसइ तओ जाणइ अमुगे एस फासे, तओ अवायं पविसइ तओ से उवगयं हवइ, तओ धारणं पविसइ तओ णं धारेइ संखिज्ज वा कालं असंखिज्जं वा कालं ॥

१३ केयि शु० ॥ १४ पासिज्जा मो० ल० शु० ॥ १५ सुमिणे त्ति डे० ल० । सुमिणे त्ति मलयगिरिटीकायाम् ॥ १६ णं नो चेव णं जां मो० सु० ॥ १७ के वि सुं डे० ल० ॥ १८ गच्छति य० स० शु० ल० ॥ १९ पडिवज्जति य० स० ॥

- ५६ [१] तस्य आवागसीसगं ति [आ]वागद्वाभयेव, अहवा भापागद्वाभस्स भास्वणा समता परिपरंत, अहवा भापागद्वाचारियाण ज ठाण स भापागसीसय मण्यति । 'अह्वंतेहि' ति मयमसमयादारभ्य प्रतिसमयं अणता मन्वित्ती त्यता अणता । 'आहे सं वंजणं पूरितं भवति' चि, एत्य वजणमाहणेण साराइपुग्गल्लच्छा द्द्विदियं वा उमयसवधो वा वेतण्य, तिघा चि अ विरोधो । वंजणं पूरियं ति कई ? उच्यते—अदा पुग्गल्लच्छा वंजणं तदा पूरिय ति पमूता ते पोमल्लच्छा जाता, स्व प्रमाणमागता सनिसपपडिबोधसमस्या जाता इत्पर्यः १ । अदा पुंण द्द्विदियं वजणं वहा पूरिय ति कई ? उच्यते—आहे वेहि पोमल्लेहि सं द्द्विदिय आहृतं मरितं वाभितं तदा पूरिय ति मण्यति २ । अदा तु उमयसवधो वंजण तथा पूरिय ति कई ? उच्यते—द्द्विदियस्स पुग्गला अंगीमात्रमागता, पुग्गला य द्द्विदिए अनुपक्काः, एस उमयमावो, एतस्मि उमयमावे पुग्गलेहि इदियं पूरितं, इदिण चि सनिसपपडिबोधकण्यमाणा पुग्गला गहिता, एव उमयसामस्यतो विष्णाणमावो भवतीत्यर्थः ३ । 'हु ति करो' चि वंजणे पूरिते च अत्य गह्वर
- 10 चि धुं भवति । एस एकसमयिमा अत्यावमाहो । सं पुण किंपगारं गेव्वति ? उच्यते—'ना वेव णं जाणति के वि एस सहादी' तकाळे सामण्यमणिरेश, सहादिविसस ण भाणइ चि धुं भवति । किंच—सरुवणाम जाति-गुण-किरिया-विकल्पविमूहं अनारुप्येय गृह्णातीत्यर्थः । एत्य पडिवाचकात्वातो [जे० २०१ प्र०] पुब्बं वंजणोमाहा से भवति । एसा एव वजणोमाहस्स परुवणा क्वा । वजणोमाहस्स परता 'हु ति करोति' चि एतस्मि पडिबोधकाळे एग समइयो अत्यावमाहो से भवति, ततो से कमेव इहा-उवाय-भारणाभो चि । एत्य पडिवाह-मल्लगदिह्वंतेहि वंजणो
- 15 माहस्स अत्यावमाहस्स य त्रिणकालता पुब्बं वंसिता । पर आह—साधु मे पडिबोध-मल्लगदिह्वंतेहि वजण उत्यावमा-हाण मेदो वंसितो, आगरओ पुण सहाइअत्ये पडुणणे ण वजणोमाहा सभिलज्जति, जतो उट्ठामेव सहाइअत्य-विष्णावपुण्यज्जेते, मणिय च सुत्ते 'से अहाणामय केयि पुरिसे'त्यादि । अहवा इमस्स सुत्तस्स इमो सर्वधो—पर आह—यदुक्कं भवता सरुवणाम-भाति-गुण-क्रियाविकल्पविमूह अनारुप्येय गृह्णातीत्येतद् विरुध्यते, कुतः ? यतः सुत्तेमिहिते—से अहाणामतेत्यादि । अहवा इमो सर्वधो—मसुत्तमतिवाचक-मल्लगदिह्वंतेहि वंजण उत्यावमाहाण मेदो
- 20 वंसितो, इह पुण सुत्ते मल्लगदिह्वंतेणेव वंजण उत्यावमाहाण मेदो वंसिज्जति—

[२] 'से अहाणामते त्यादि । सुत्तुचारस्यसवर्णांतरमेव पर आह—एत्य सुत्ते वंजण उत्यावमाहो वा सभिल-

- ज्जति, जतो 'अम्भच सह सुत्ते' चि मणितं, सधमेत्तेवभारिते पढमतो अवाय एव सभिलज्जति चि । आपरिय आह—या तुमं सुत्ताभियार्यं भायसि, णणु अम्भचसहसवर्णातो अत्यावमाहमाहण कतं, जतो अम्भचमणिरेश सामर्थ्यं विकल्परहिय ति मण्यति, तस्स य पुब्बं वंजणावमाहणे मन्वितव्व, अथा एतमाहिणा सोतादिइदियस्स अत्यावमाहो वंजणोमाहमतवण
- 25 ण भवति चि नियमेसो, सो य कास्सहुमचवतो उत्यस्सतपपठेज्जतिह्वंतवो ण मन्विज्जति । योदक आह—मति एयं धो अं सुत्ते मणितं "येण सरे ति आमाहिते" सं कई ? उच्यते—इदं "तेणं सरे ति आमाहिते" चि पवत्ता-सुत्तकारोऽपिपचे इति करमनिहसाता सन्धविसेसविमूहं अत्यावमाहकं [जे० २१ छि०] भवति, गो वेव णं जाणति के वेस मरे ? चि, अ तु अत्यावमस्येयं उच्यते, कम्हा ? उच्यते—एकसमयपातो अत्यावमाहस्स, किंच पण्यवेतो य पण्यवगो संवत्ताराभिमापतो "तेणं सरे चि आमाहिते" चि सुत्ते, ण दासो । भति वा "सरोऽप्य "
- 30 मिति धुदी भवे तो अवातो वेव मने, तच्च न, कई ? उच्यते—गो जतो अत्यावमाहसमयमेचे काळे "सह" इति

१ पुण उवाचरिदियं मन्व-मन्वित्ती बुष्णिगमेवके ॥ २ आउण्यं मरितं वा । "आहृतं" इति हारि० इलो ११

३ अमियकता इत्यर्थः तदा पूरियं ति मण्यते इति मन्व-मन्वित्ती बुष्णिगमेवके ॥ ४ पठारं वा ॥ ५ जाति-किरिया ॥ ६ जतो पत्तमाहिणो वे वा ॥

विसेसणाणमत्थि, अह तम्मि वि समए सद्दोऽयमिति बुद्धी हवेज्ज तो फुडं अवाय एव भवेज्ज, णो य तक्काले अवातो इच्छिज्जति, जतो अत्थपरिच्छेदो असंखेज्जसमयकालिओ भवइ त्ति । अण्णे पुण आयरिया एतं सुत्तं १ विसेसत्थावग्गहे भणति—‘अव्वत्तं सहं सुणेज्ज’ त्ति एस— विसेसत्थावग्गहो, ‘तेण सद्दे ति उग्गहिते’ ति, एतं सुत्तखंडं सामण्णै-सद्दत्थावग्गहदंसंगं, कहं ? उच्यते—जतो भणति “णो चेव णं जाणति के वि एस सद्दे” त्ति संख-संग-गाँलि-ररय-लादिको त्ति, एसो वि अविच्छेदो सुत्तथो । ‘ततो’ अत्थावग्गहसमयागंतरं पढमसमयादिसु ‘ईहं अणुपविसति’ 5 ‘ईहं’ ति केड संसयं मण्णंते, तं ण भवति, संसयस्स अण्णाणभावत्तणतो, मतिणाणंसो य ईह त्ति । आह—को पुण संसयेहाण विसेसो ? उच्यते—इह जं थाणु-पुरिसादिअत्येसुँ पेहितं चित्तं तदत्थपडिवोहत्तेण पडिहतं सुत्त इव चेतो संसयो भण्णाति, तं च अण्णाणं, जं पुण हेतूवत्ति-साधणेहिं सव्वभूतमत्थस्स विसेसधम्माभिमुहाल्लोयणं तस्सेवऽत्थ-स्स अधम्मविमुहं असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदकं चित्तं जं तं ईहा भण्णाति । अणु त्ति—अवग्गहातो पच्छाभावे असं-खेज्जसमइयं परिमाणतो ईहोवयोगं अविच्छेयत्तणतो अंतमुहुत्तकालं ईहति, ततो विसिट्ठमतिनाणखयोवसमभाव- 10 त्तणतो अंतमुहुत्तकालवभंतर एव जाणति ‘अमुते एस सद्दे’ संख-संगादिए त्ति । दुरववोधत्तणतो पुण अत्थस्स अवि-सिट्ठमइण्णाणखयोवसमत्तणतो वा ईहोवयोगअंतमुहुत्तत्ततो अणवगतत्थो पुणो वि अण्णं अंतमुहुत्तं ईहति, [जे० २०४ प्र०] [एवं] ईहोवयोगाविच्छेदसंताणतो बहुए वि अंतमुहुत्ते ईहेज्जा, ण दोसो । ततो ईहाणंतरं अवातो । सो य सद्दाइअत्थपडुप्पणस्स जे परधम्मा तेसु विमुहस्स सधम्मे य अवधारयतो ‘ण एस संगसद्दो, णिद्ध-मधुर-गंभीरत्तणतो संखसद्दोऽय’मित्येवमवगतत्थो [जहण्णतो] असंखेज्जसमयितो उक्कोसतो णियमा एगंतमुहुत्तिओ जो 15 अववोधो अत्थपरिच्छेदो सो अवातो भवति । ततो अवायाणंतरं धारणं पविसइ त्ति । सा य धारणा जहण्णतो असंखेज्जसमते अविच्छुतीए तमत्यं धरेति, उक्कोसतो अतमुहुत्तं, अणुवयोगतो पुण तमत्यं विस्मृतं पुणो वि संभरइ त्ति धारणा । एवं सा संखेज्जवासाउयाणं मुहुत्त-दिवसादिकालसंखाए संखेज्जं कालं भवेज्ज, असंखेज्जवासाउयाणं पुण असंखेज्जं कालं ।

एवं चक्खिंदिए वि रूवं भाणितव्वं, वंजणोग्गहवज्जं । घाण-रस-फासिंदिएसु वि जहा सोइंदिते तहा सव्वं 20 भाणितव्वं । ‘संवेदेज्ज’ त्ति एते सद्दादिइंदियत्ये पडुप्पणे इंदियं स्वं स्वं इंदियत्थं आयखयोवसमणुरूवं सुभम-सुभं वा वेदेज्जं त्ति । अहवा फरिसिंदियवज्जं सेसिंदिएहिं पत्तमिंदियत्थं प्रायसो इट्टमणिट्ठं वा स्वं आत्मानुगतं वेदनं वेदते, न शरीरेण अनुपल्लभं वा वेदयतीत्यर्थः । फासिंदियमत्थं पुण स्वं अनुगतं शरीरानुगतं च दुहा वि फुडं वेदइ त्ति संवेदेज्ज त्ति अतो भणितं ।

एवं मणसो वि सुविणे सद्दादिविसएसु अवग्गहादयो णेया, अण्णत्थ वा इंदियवावारअभावे मणेमाणस्स 25 त्ति । इह सुत्तेण निदरिसणं मणे—

[३] से जहाणांमतेत्यादि सुत्तं । कंठं । सुविणो मे दिट्ठो त्ति सुविणदिट्ठं अव्वत्तं सुमरइ । तच्च प्रतिवो-धप्रथमसमये सुविणमिति संभरतो अत्थावग्गहो, तस्य प्रथमावस्थायां व्यञ्जनावग्रहः, परतो ईहादि । सेसं पूर्ववत् । जगगतो अर्णिदियत्थवावारे वि मणसो जुज्जते वंजणावग्गहो, उवयोगस्स असंखेज्जसमयत्तणयो, [जे० २०४ द्वि०] उवयोगद्वाए य प्रतिसमयमणोदव्वग्गहणतो, मणोदव्व्याणं च वंजणववदेसतो समए य असंखेज्जतिमे मनसो नियमा- 30

१ → ← एतच्चिह्नान्तर्वर्ती पाठः जे० नास्ति ॥ २ °ण्णस्सऽत्था° आ० दा० ॥ ३ °णादिकर° आ० दा० ॥ ४ °सु पविट्ठं चित्तं आ० ॥ ५ वेदेज्ज त्ति । एते सद्दाइ चक्खुइंदियवज्जं सेसिंदिएहिं आ० दा० ॥ ६ °नुपल्लम वा आ० दा० ॥

यं प्रवृत्तं भवेत् । तस्य च प्रथमसमयार्थमतिबोधकाद्यैर्व्यवप्रवृत्तः, तस्य पूर्वमसम्भवेयसमययु व्यञ्जनावप्रवृत्तः । श्लेषमी-
 हादि पूर्ववत् । सीसो पुन्यति-उमाहादीर्षं उ क्मातिक्कमे पगतरभमावे वा किं सहादित्युपरिच्छेदो ण भवति ?
 आचार्याह-आमं, ण भवति, अत एव च क्रमे नियमः, जम्हा णो अगहितं इति तम्हा पुञ्च उम्हाहो, जम्हा य
 अपीहितं षो अगगञ्जति इहाणतरं तम्हा अवापो, जम्हा य अवापाव ण पारिज्जति वर्युं अवापावतरं तम्हा
 ५ पारया । जम्हा य एस क्रमनियमो तम्हा सञ्चो आमिणिषोधिपयानागमो नियमा एव भवति, अत एव च
 कारण्णा सञ्चे अवमाहादयो मतिनाणमदा मवंतीत्यर्थः ॥

५७ तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, त जहा-दं व्वओ ख्वेत्तओ कालओ मावओ ।
 तत्थ दव्वओ णं आमिणिषोहियणाणी आप्सेणं सव्वंदव्वाइ जाणति ण पासति १ ।
 ख्वेत्तओ णं आमिणिषोहियणाणी आप्सेणं सव्वं ख्वेत्तं जाणइ ण पासइ २ । कालओ णं
 10 आमिणिषोहियणाणी आप्सेणं सव्व काल जाणइ न पासइ ३ । मावओ णं आमिणि
 षोहियणाणी आप्सेणं सव्वे मावे जाणइ ण पासइ ४ ।

५७ तं समासतो चउव्विहत्यादि सुचं । 'तं च' मतिनाणं सुषोभसम्भवतो पगविहं पि हेतुं जेयमेद
 यणतो नानामदा दम्हादिया से भवति । 'दव्वतो षं' ति दव्वतो वचञ्चे 'वं' ति वपणालकारे, देसीवपणतो वा
 'वं' अहवा, अपात्रानान्ते पञ्चमी विभक्तिः, तस्य पायतवयमसेलीता दव्वतो षं एवं आमिणिषोधिपयानाणी समति-
 15 'आदेसेण'मित्यादि, इहाऽऽदेसो नाम-प्रकारो । सां य सामण्णता विससतो य । तस्य दम्भनातिसामण्णादेसेणं
 सम्भ्रुञ्जाणि भम्मत्थिकायादियाणि जाणति, विससेत्तञ्चे वि जहा भम्मत्थिकाये भम्मत्थिकायस्स वेसे भम्मत्थि-
 कायस्स पदसेत्सादि केयी जाणति, सञ्चे ष यणति, जहा घुमुमपरिणता भविसतत्त्वा अण्णपयमादिया य । 'प
 पस्सइ' ति सञ्चे सामण्य विसेसादेसद्वित्ते वेम्हादिए, अण्णु-अण्णसुसंसेणेण क्व-सहाइते केयं पासति चि वचञ्चं ।
 इहाऽऽदेसो-सुचं, तस्सादेसतो सम्भ्रुञ्चे जाणतीत्यादि । चोदक आह-जति सुचं कइं मतिनाणं ? ति, उण्यवे-
 20 सुतोव्वदुम-अण्णु अण्णसरतो तम्हापणपुद्धिसामत्तयो [वे २ ५ प्र०] सुतोव्वयोगिणिवेक्त्ता वि मती पवचइ
 चि य सुचादेसो विव्वञ्चते १ । ख्वेत्तं चि सामण्य-विसेसादेसतो । तस्य सामण्यतो ख्वेचयमाणां, त चेण सञ्चग-

१ इव्वओ ४ । इव्वओ ५ ॥ २ तस्य इति एव च सं के क् वासि, जे ह्म तो सु निजामहण्टी लण्णुइते
 २१ एते पुनर्वन्ति ० ३-४-५ ३ एव इव्व-क्के-काल मागिक्ककेउ चउव्वंति एवावेउ जाणति पासति इति पासे जाणति ए
 पासति इति पासेवेन एह मगवत्तयां अण्णसुसंसेणोक्के ३५९ २ एव वरति । अत्रास्यदेवदुष्टीका-“इव्वओ षं” ति इव्ववा-
 श्रिय आमिणिषोधिपयानाण्येण वाऽऽश्रिय इह आमिणिषोधिपयान एव 'आवुषे' ति जावेह-अण्णो एवाम्भ-विक्कण्ण एव च 'आरे
 सेण' कोण्टी इव्वमाअण्ण, न सु उव्वण्णविक्कण्णैवेति ज्ञान, अथवा 'आरेसेण कुवपरिचमिज्जया 'उरंइव्वानि' वमात्थिकापीणि
 'जाणाति' अथवा-आवुषेण्णोअण्णुयते इव्वमाववा-आवुषेण्णोत्तत्त्वात्, 'पासइ' ति वरति अण्णुहापिअवाअण्णुयते अण्णुहापिअवत्तत्त्वात् ।
 ... 'ख्वेत्तओ' ति श्लेषाश्रिय आमिणिषोधिपयानाण्येण श्लेष वाऽऽश्रिय इह आमिणिषोधिपयान एव 'आरेसेण' ति काण्ण
 सुष्णीयविक्रमा वा 'तव्व कत्त' ति कोक्क-उक्केण्णम् । एव कावतो भवतवेति । इहं च उव्व लण्णो इहैव च कावण्णो
 'अ पासइ' ति पाठाअन्तरवापीअम् । एव च क्विदोकाहता [विश्वरूपिणा] व्याख्यात्-“आरेष-प्रकार एव एवाम्भतो
 विक्कण्ण । एव इव्वमातिघातावुषेण्णो तव्वव्याप्ति' वमात्थिकापीणि जाणाति विक्कण्णोअदि ववा वमात्थिकावो वमात्थिकावत्तत्त्वात्
 इत्यादि, न पर्यन्तं सर्वाण्ण वमात्थिकापीण्ण अन्वयापीण्ण वमवेषाण्णवित्तात् परस्परयति । ३५० एते ॥ ७ इति सतरथा
 उण्यन्वाव्यादिया वा वा । अविहाराणं अण्णुव्यादिया इत्यर्थः ० < देसा वसविहे वम्हादिए वा वा ॥

तममुत्तं अवगाहलक्खणं सव्वं जाणति । विसेसतो वि लोगा-ऽलोगुड्ड-ऽह-तिरियादिविसेसखेत्ते जाणति, ण जाणइ य केयी, क्षेत्रं न पइयत्येव २ । काले वि आदेसो सामण्ण-विसेसतो । तत्थ सामण्णतो इमं भण्णति, ण य दरिसणतो, णिच्चमणिच्चं वा मुत्तममुत्तं वा कलासमूहं सव्वदव्वाणि वा कलेइ त्ति कलणं वा कालो, तमेवंविहं सामण्णतो सव्व-कालं जाणति । विसेसादेसो-समया-ऽऽवलिगादि उस्सप्पिणीमादि वा विसेसकाले केयि जाणति, ण जाणति केयि, कालं ण पइयत्येव ३ । भाव इति भवनं भूतिर्वा भावः, एवं सव्वभावे भावजातिमेत्तसामण्णतो जाणति । विसेसादेसतो जीवा-जीवभावे । तत्थ नाण-कसायादिया जीवे, अजीवे वण्णपज्जवादिए अणेगहा वीसस-पयोगपरिणते, एत्थ मति-णाणविसयत्ये जे ते जाणति, सेसे ण याणति, सव्वभावे ण पासइ त्ति, मतिणाणस्स असव्वण्णेयविसयत्तणयो ॥

५८. उग्गह ईहाऽवाओ य धारणा एव होंति चत्तारि ।

आभिणिबोहियणाणस्स भेयवत्थू समासेणं ॥ ७० ॥

अत्थाणं उग्गहणं तु उग्गहो, तह वियालणं ईहं ।

ववसायं तु अवायं, धरणं पुण धारणं विति ॥ ७१ ॥

उग्गह एकं समयं, ईहा-ऽवाया मुहुत्तमद्धं तु ।

कालमसंखं संखं च धारणा होति णायव्वा ॥ ७२ ॥

पुट्टं सुणेति सहं, रूवं पुण पासती अपुट्टं तु ।

गंधं रसं च फासं च बद्ध-पुट्टं वियागरे ॥ ७३ ॥

भासासमसेदीओ सहं जं सुणइ मीसंयं सुणइ ।

वीसेदी पुण सहं सुणेति णियमा पराघाए ॥ ७४ ॥

ईहा अपोह वीमंसा मग्गणा य गवेसणा ।

सण्णा सती मती पण्णा सव्वं आभिणिबोहियं ॥ ७५ ॥

से^१ तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं ।

१ ईह अवाओ स० शु० ल० मो० ॥ २ अत्थाणं उग्गहणम्मि उग्गहो तह वियालणे ईहा । ववसायम्मि अवाओ, धरणं पुण धारणं विति ॥ मो० डे० ल० मु० । हरिभद्रपारै मलयगिरिपारैश्चायमेव पाठमेद^२ निर्दिष्टो व्याख्यातश्चापि वर्तते ॥ ३ उत्तमतं तु हरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्त्यो निर्दिष्टोऽय पाठमेद^३ ॥ ४ मीसियं डे० मो० मु० ॥ ५ ख० स० शु० मो० प्रतिपु से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं इति एकमेव निगमनवाक्यम्, जे० डे० ल० मु० प्रतिपु पुन से तं आभिणिबोहियणाणपरोक्खं, द्वितीय निगमनवाक्य व्याख्यात वर्तते इति श्रुति-चूर्णिकृतामेत्तारदेव निगमनवाक्यमभिमत्तम् । अपि च चूर्णिकृता चूर्णो- “से किं त मतिणाण ?” ति एस आदीए जा पुच्छा तस्स सव्वहा सरूवे वण्णिते इम परिसमत्तिदसग णिगमणवाक्यम् — “से तं मतिणाण ति” इत्यादि सुत्तं [सुत्त ४४ पं० ४] यन्निगमनवाक्यव्याख्यानावसरे निष्टकृतमस्ति तत्रैतत् किल चिन्त्यमस्ति यत्-चूर्णावपि से किं तं आभिणिबोधिकेत्यादि एस आदीए जा पुच्छा ” इत्यादि चूर्णिकृता निरदेदि ? इत्यत्रार्थे तद्विद एव प्रमाणमिति ॥

५८. उग्गह ईहा० गाहा । अत्पाणं० गाहा । उग्गह एक्खं० गाहा । पुट्टं सुणेइ० गाहा । भासा सम० गाहा । ईहा० गाहा । एताभो गाहाभो जहा पट्टियाए [भाब० नि० गा० २-६ तथा गा० १२] तथा माणितम्भा इति ॥७०॥७१॥७२॥७३॥७४॥७५॥

“से किं तं मतिवाणं ?” [सुत्तं ४५] ति एस आदीए जा पुच्छा वस्तु सन्वहा सकूबे बन्धिते इम परिसमिचि-
 5 ईसंगं विगामपवाकम्यम्—“से तं मतिवाणं” ति । अइना सीसो पुच्छति—जो एस वणिज्यसकूबेप ठितो माणिससो सो किंचयचो ? आचार्ये आह—‘स’ इति निरेसे, ‘तं’ ति पुच्छपण्णामरिसणे, तं एतद् ‘मतिवाणं’ ति स्वनामाभ्यान्-
 मित्यर्थः । अइना ‘से’ चि अस्य व्यञ्जनलोपे कृते एतं मतिवाणं ति मचति, एतावद् मतिज्ञानमित्यर्थः ॥

इदानीं सन्वचरण रूपक्रियापारं नपुंसिह कमप्यत्तं सुतणां मण्यति—

५९. से किं तं सुयणाणपरोक्खं ? सुयणाणपरोक्खं चोईसविहं पण्णत्तं, त जहा—
 10 अक्खसुत्तं १ अणक्खसुत्तं २ सण्णिमुयं ३ असण्णिमुयं ४ सम्मसुयं ५ मिच्छसुयं ६ सादीयं ७ अणादीयं ८ सपज्जवसियं ९ अपज्जवसियं १० गमियं ११ अगमियं १२ अगपविट्ठं १३ अणगपविट्ठं १४ ।

६०. से किं [वे २०४ छि०] तं सुतमाणेत्वादि । तं च सुतावरकखयोवसमचपतो एगविहं पि तं
 अक्खरादिमाहे पइव भाव अंतवाहिरं ति चोइसविधं मण्यति । तस्य अक्खरं तिविहं—नाणक्खरं अमिखावक्खरं
 15 वणक्खरं च । तस्य नाम्बक्खरं “सुर संचरणे” न सरतीत्यस्यम्, न मय्यपते अणुपयोगेऽपीत्यर्थः, आसमावचपतो, तं च भाणं अनिसेसतो वेतनेत्यर्थः । आह—एवं सम्मविसेसतो पावमक्खरं कम्भा सुत अक्खरमिति मण्यति ।
 उच्यते—इदिविसेसतो ? । अमिखावक्खरा अक्खरं मण्यता, पइवमवत्, एव ताव अमिखावहेतुमाहयता सुतमिष्णा-
 वस्त अक्खरता मण्यता २ । इदमिं वणक्खरं—वणिज्जति वणेष्यामिहेतो अरयो इति वणो, स चार्थस्य, इहपे
 विप्रवर्णकवत्, अइना व्रभ्ये घृणविशेषवर्णकवत् । वर्यते—अमिष्ण्यतेऽनेनेति वयोऽस्यम् ३ ॥ एतद् सुत्तं—

20 ६०. से किं तं अक्खरसुत्तं ? अक्खरसुत्तं तिविहं पण्णत्तं, तं जहा—सण्णक्खरं १ वंजण
 पक्खरं २ लद्धिअक्खरं ३ ।

६०. से किं तं अक्खरसुत्तं इत्यादि । अक्खरसत्तं सुगतो मासतो वा अक्खरसुत्तं । तस्यऽक्खरकंमो
 अमिखायो वा वणसुत्तं, खयोवसमच्छदी माससुत्तं । तच्च वयोऽसं त्रिविधं सन्वचखरादि । तस्य—

६१. से किं तं मण्णक्खरं ? सण्णक्खरं अक्खरस्स सटाणा ऽऽगिती । से तं सण्णक्खरं ।

25 ६१. ‘सण्णक्खरं’ अक्खरागारविसेसो । सो य त्थादिक्खिविधायो अणेगविधो आगारो । तेसु भा(अ)-
 कारादिआगारेसु जम्हा अकारे अकारसंख्या एव मचति, एवं सेसेसु वि, तम्हा से सन्वचखरा मण्यता, जहा वत्
 पढानारं वट्टं ठकारसंख्या उच्यञ्चतीत्यर्थः ॥

१ अट्टइस भो २ अक्खरं ति त्रिविहं—नाणक्खरं अमिखावक्खरं वणक्खरं च । तस्य नाम्बं ‘सुर संचरणे’ ॥
 ३ आसमावचपतो वा ४ ५ ती सण्णक्खरं । से तं च चं ३ न छ ॥

६२. से किं तं वंजणक्खरं ? वंजणक्खरं अक्खरस्स, वंजणाभिलोवो । से तं वंजणक्खरं ।

६२. व्यक्तीकरणं वंजणं, व्यज्यते अनेनार्थ इति वा व्यञ्जनम्, यथा प्रदीपेन घटः, व्यञ्जनं च तदक्षरं चेति व्यञ्जनाक्षरम्, तच्चेह सर्वमेव भाष्यमाणं अकारादि हकारान्तम्, अर्थाभिव्यञ्जकत्वाच्छब्दस्य । तमेवं अक्खरं अत्थाभिव्यंजकं वंजणक्खरं भवति, जहा घटः पटः इत्यादि २ ॥

६३. से किं तं लद्धिअक्खरं ? लद्धिअक्खरं अक्खरलद्धियस्स लद्धिअक्खरं समुणज्जइ, 5
तं जहा—सोइंदियलद्धिअक्खरं १ चक्खिंदियलद्धिअक्खरं २ घाणेंदियलद्धिअक्खरं ३ रसणि-
दियलद्धिअक्खरं ४ फासेंदियलद्धिअक्खरं ५ णोइंदियलद्धिअक्खरं ६ । से तं लद्धिअक्खरं ।
से तं अक्खरसुयं १ ।

६३. 'लद्धक्खरं' ति अक्खरलद्धी जस्सऽत्थि तस्स इंदिय-मणोभयविण्णाणतो इह जो अक्खरलाभो उप्प-
ज्जति तं लद्धिअक्खर । तं च पंचविहं सोइंदियादि । जहा सोइंदियलद्धिओ सइं सोतुं संख इति अक्खरदुयलाभो 10
भ[जे० २०६ प्र०] वति, एवं सव्वत्थ लद्धिअक्खरं भाणितव्वं ३ । इह सण्णा-वंजणक्खरे दो वि दव्वसुत्तं गहितं,
सुतविण्णाणकारणत्तातो, लद्धक्खरं भावसुत्तं, लद्धीए विण्णाणमयत्तणतो भयणा वा १ ॥ इदाणि अणक्खरसुत्तं—

६४. से किं तं अणक्खरसुयं ? अणक्खरसुयं अणेगविहं पणत्तं, तं जहा—

ऊससियं णीससियं णिच्छूढं खासियं च छीयं च ।

णिस्सिधियमणुसारं अणक्खरं छेलियादीयं ॥ ७६ ॥

से तं अणक्खरसुयं २ ।

15

६४. अणक्खरसदसवणतो करतो [१ वा] अणक्खरसुत्तं भवति । तं च अणेगविहं इमं—

ऊससितं० गाहा । पूर्ववत् कंठा [आव० नि० गा० २०] ॥७६॥ २ । इदाणि सण्णिमसण्णिसुत्तं—

६५. से किं तं सण्णिसुत्तं ? सण्णिसुत्तं तिविहं पणत्तं, तं जहा—कालिओवएसेणं १
हेऊवएसेणं २ दिट्ठिवादोवदेसेणं ३ ।

20

६५. सण्णिस्स सुत्तं सण्णिसुत्तं । असण्णिस्स सुत्तं असण्णिसुत्तं । तत्र संज्ञाऽस्याऽस्तीति संज्ञी । सो य
सण्णी तिविहो—'कालिओवदेसेण' इत्यादि । चोदक आह—जइ सण्णासंबंधयो सण्णी तो सव्वे जीवा सण्णी, जतो
एगिंदियाण वि दस आहारादिसण्णातो पढिज्जंति ? आचार्याह—इहोहसण्णा थोवत्तणतो णाधिक्रियते, जहा णो
कैरिसावणेण धणवं भवइ त्ति, सेसआहारादिसण्णाओ वि भूयिष्ठतरा वि णाधिक्रियते, अणिट्ठत्तणतो, जहेह हुंड-
संठितो ण मुत्तित्तणतो खूवं भण्णति । एते अधिकृतसण्णाए अणुवणयदिट्ठंता । इमे उवणयदिट्ठंता—जहा बहुधणो 25
धणवं, पसत्थणिव्वत्ति-देहसुत्तित्तणतो य खूवं भण्णति, तहेव महती सुमा य संज्ञाऽधिक्रियते । सा य संज्ञान संज्ञा-
मनोविज्ञानम्, तत्सम्बन्धात् सन्नीत्यर्थः ॥ उक्तः प्रसङ्गः । प्रकृतमुच्यते—

१ लावो वंजणक्खर । से त्त ख० स० ल० शु० ॥ २ अस्मिन् सूत्रे सर्वत्र लद्धियक्खरं इति स० शु० मो० ॥
३ णतो कारणतो वा आ० दा० । अनक्षरशब्दध्वणत 'कुर्वतो वा' मापत इत्यर्थ ॥ ४ कार्वापणेन ॥

६६. से किं त कालिओवप्सेणं ? कालिओवप्सेणं जस्सं णं अत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से ण संपिण्णि ति ल्हमइ, जस्सं णं णत्थि ईहा अपोहो मग्गणा गवेसणा चिंता वीमसा से णं असपणीति ल्हमइ । से तं कालिओवप्सेणं ? ।

६६ 'कालिओवप्सेण' ति ईहाऽऽदिपदलोको न्हृद्यो, तस्मुत्तरणे 'दीहकालिओवप्सेणं' ति वचम्बं । दीह-
 5 भायत, कालिओ ति विसेसण । कस्स ? उच्यते-उवदेसस, जहा जिममत्रणे सुहुत्तकालिओ दीहकालिओ वा प्यामंडवो क्वतो तथा दीहकालिओवप्सेणं ति माणित्तवो । उवदिसणमुवदेसो, उपदेसो वि वा आदसो वि वा पण्यस्य वि वा परस्य वि वा एग्घा । दीहकालिओ उवदेसो दीहकालिओवदेसो, सेण दीहकालिओवदेसेणं जस्स सण्णा मवति सा आदिपदलोकातो कालिओवदेसेण सण्णीत्यर्थः । अहा कालिओ-आभारादि सुवं तदुवदसेण सण्णी मण्यति । सो य इमरिसो-ओ य अतीवकळे सुदीहे वि [जे० २०६ दि०] इदं वदिति कृतमशुयुत्त वा सुमरति, षट्माणे य इंदिय-
 10 णोइदिपण वा अण्यवरं सहाइअत्यसुवत्तं अण्णत-उदरेगभम्मेहि ईहइ चि ईहा । तस्सेन परभम्मपरिभागे सभम्मासु गतावपारणे य 'अवोहो' ति भन्नातो । विसेसभम्मणेसणा मग्गणा, जहा मधुर-गंभीरत्तणतो एस संखसर इति । बीसस-प्ययोगुम्भयणिबमणिबं सेत्यादि गवेसणा । ओ यऽज्जागते य चित्तयति 'कहं ना तं तत्थ कावत्तं ?' इति अण्योप्यासंबवणाशुगतं चिचं चिंता । बीत-वर-इह-यत्त्वयहिता-उदितमिरिसो वीमसा । अहा 'किमेयं ?' ति ईहा । पिण्णयावपरितो अत्यो अवोहो । अभिससियत्तयस्स मणो-नयय-कापरिं जायया मग्गणा । अभिससितत्त्वे चेव
 15 अपरुपिण्णमाणे गवेसणा । अणेमाहा सकुप्पकरुणं चिंता । इन्द्रमपेणु वीमसा, जहा पिषमणिबं दित्तमरिठं पूरं कठं योवं बहु इत्यादि । अहा सकुप्पतो चेव विविधा भामरिसणा वीमसा । अहा 'अवोहो' ति अवातो । सेसा इहाएगहिंया । जस्संभ अण्यवरकिक्कण मणोवप्पमशुगतं चिचं पावति एस कालिओवदेसेण सणि पि । सो य अणंते मणोओगे खेवे वेणुं मणेत्ति, एतलदिसंण्यो मणविष्णाणावरअखपोवसमेसुत्तवतो य अहा भक्खुमतो पदीवादिप्यासेण फुडा अणोरसदी मवति तथा मण्यखपोवसमसदिमतो मणोवप्पगसासेण मणोउहेहिं ईदिपरिं
 20 फुडमत्तं उवत्तमतीत्यर्थः । कालिओवदेसण्णीविषयत्तं असण्णी, जहेह अविमुद्धचक्खुमतो मंदमदप्यासांसे ऋणोक्कम्मी अमुदा एवं सम्मुच्छिमपेवेदिपअसण्णित्त, ठकोसलपोवसमे वि अण्यमणोवप्पमाहवसासामत्ते मपरिजामत्तवतो य असण्णित्तो अविमुद्धमप्या य अयोपसम्भोत्त्यर्थः । ततो ति अविमुद्धा चतुरिदियाय, ततो तेइदियाणं, ततो वि अविमुद्धा वेइदियावं अत्युपसम्मी । जस्स य जइ इदिया स तथा तेसु अवमहाविदुस पचत्ते । विगस्सिदियाय वि आवेसंतरतो मणोवप्प[जे० २७ प] म्हाणं अमुद्धमप्यत्तवतो य माणित्तम्बं । सो य मणो तेसि अणो चेव
 25 वट्ठवो, अमुद्धत्तणतो, असीसवदु अज्ञानवद्धा । तयो वेइदियेहिंतो पि समीवातो अन्नत्तरं विष्णाणं पमिदियाय, अहा मत्त-सुच्छिय विसमावित्तस य तथा पमिदियाण सण्णभा मणामावे विष्णावं सत्तमहणं । कालिओवदेससण्णित्तो एते सम्मुच्छिमादपो सन्वे असण्णी मवेतीत्यर्थः ? ॥ इदंणि—

६७ से किं त हेऊवप्सेणं ? हेऊवप्सेणं जैस्स णं अत्थि अभिसधारणपुब्बिया

१ वसउत्थिय पं च म सु ॥ २ अवोहो वे मो सु ॥ ३ सण्णित्त वे जो सु ॥ ४ वस उत्थिय पं च म सु ॥ ५ अवोहो वे मो सु ॥ ६ पणी छं पं च म सु ॥ ७ अत्त-परेह-परत्त्वयहिता-उदितमिरेवं इत्यर्थः ॥ ८ इत्युपसमणे वा । इत्यमप्ये वा ॥ ९ सं वा वचति एस वे वा वा । वावति इति पठयु मो पुष्पीयस्यो वेनः ॥ १० महोत्तवतो वा वा ॥ ११ गसा कया वा ॥ १२ अण्यवद्धा वा ॥ १३ जस्सउत्थिय पं च म सु ॥

करणसत्ती से णं सण्णीति लब्भइ, जस्स णं णत्थि अभिसंधारणपुव्विया करणसत्ती से णं असण्णि त्ति लब्भइ । से त्तं हेऊवएसेणं २ ।

६७. 'हेतूवदेसेणं' ति हेतुः कारणं निमित्तमित्यनर्थान्तरम्, 'उव्वदेसेणं' ति पूर्ववत् । हेतूतो सण्णा भवति त्ति जेण तेण सो हेतुउव्वदेसेण सण्णी भवति । 'जस्स' त्ति जीवस्स, 'णं' वाक्यालंकारे देसीवयणओ वा आत्म-स्वरूपप्रदर्शनवचनोपन्यासे वा, अव्यक्तेन विज्ञानेन अभिसन्धार्यं पूर्वं ततः विज्ञानमथैव 'करणशक्तिः' करणं—क्रिया शक्तिः—सामर्थ्यं, अथवा करणे शक्तिः करणशक्तिः, अथवा करण एव शक्तिः करणशक्तिः । तच्च अभिसंधारणं संवित्त्य संवित्त्य इद्वेषु विसयवत्थूसु आहारादिषु प्रवर्त्तते, अणिट्ठेषु य णियत्तंते । एवं सदेहपरियालणहेतो पव-त्तंति । ते य पायं पडुप्पण्णकाले, ण तीता-ऽणागतकालावलंविणो भवंति, उस्सण्णमेवं, केरियं तु तीता-ऽणागतकाला-वलंविणो वि भवंति, ते पुण ण दीहकालाणुसारिणो । किंच—तेसु वि आगतो सुहुमो संताणचोदको अविस्सरणहेतू दट्ठव्वो । एवं ते विकल्लेदिया सम्मुच्छिमपंचेदिया या(य) हेतुवायसण्णी भणिता, ते पडुच्च असण्णी जे णिचेट्ठा इट्ठा-ऽणिट्ठविसय[अ]विणियट्ठवावारा मत्त-मुच्छिय-विसोवयुत्तादिसारिच्छचेतणट्ठिता पुढवादिएगिंदिया इत्यर्थः २ ॥

इदार्णि—

६८. से किं तं दिट्ठिवाओवएसेणं ? दिट्ठिवाओवएसेणं सण्णिसुयस्स खओवसमेणं सण्णी लब्भति, असण्णिसुयस्स खओवसमेणं असण्णी लब्भति । से त्तं दिट्ठिवाओवएसे-णं ३ । से त्तं सण्णिसुत्तं ३ । से त्तं असण्णिसुत्तं ४ ।

६८. दिट्ठिवाओवदेसेणं ति दृष्टिः—दर्शनम्, वदनं वादः, उपदेशनमुपदेश इति, अनेन दृष्टिवादोपदेशेन संज्ञीत्यभिधीयते । सो य सम्मदिट्ठी सण्णी, तस्स सम्मदिट्ठिणो सण्णिसस जं सुत्तं तं सण्णिसुत्तं, तेण सण्णिसुत्त-खयोवसमभावेण जुत्तत्तणतो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति । अहवा दिट्ठिवायसण्णि त्ति मिच्छत्तस्स [जे० २०७ द्वि०] सुतावरणस्स य खयोवसमेणं कतेणं सण्णिसुत्तस्स लंभो भवति, एवं सो दिट्ठिवातसण्णी लब्भति, तस्स सुत्तं दिट्ठि-वातसण्णिसुत्तमित्यर्थः । तं खयोवसमियभावत्थं समदिट्ठिं सण्णि पडुच्च मिच्छदिट्ठी असण्णी भणितो । सो य मिच्छ-त्तस्सुदयतो अस्सण्णी भवति, तस्स सुत्तं असण्णिसुत्तं । तं च सुत्तअण्णाणावरणखयोवसमेणं लब्भति, एवं दिट्ठिवातअ-मण्णीत्यर्थः, तस्स सुत्तं दिट्ठिवातअसण्णिसुत्तं । एवं दिट्ठिवाते सण्णि-असण्णिसु सुत्तखयोवसमभोवो(वा) सुत्तं वेतव्वं इति । पर आह—खयोवसमभावट्ठित(तो) सण्णित्तणतो लक्खिज्जति खाटगभावट्ठितो केवली किण्ण सण्णि ? त्ति, उच्यते—अतीतभावसरणत्तणतो पडुप्पण्णमावाण य बुज्जणतो अणागतभावचित्तणतो य सण्णि त्ति, तं तहा जिणे अणुसरणं णत्थि, जेण सो सव्वदा सव्वधा सव्वत्थ सव्वभावे जाणतीत्यर्थः, तम्हा केवली णोसण्णीणोअसण्णी भवति । पुनरप्याह परः—इह मिच्छादिट्ठिणो वि केरियं हिता-ऽहितनाणवावारसण्णासंजुत्ता दीसंति किं ते असण्णिणो भणिता ? उच्यते—तस्स जा सण्णा सा जतो कुच्छिता, जहेद कुच्छितवयणमवयणं कुच्छितसीलमसीलं वा, तहा तस्स सण्णा कुच्छितत्तणतो असंज्ञैव दट्ठव्वा, अण्णं च तस्स मिच्छत्तपरिगहातो नाणमनाणमेव दट्ठव्वं । भणितं च—

१ सण्णि त्ति लं डे० शु० । सण्णी लं त्र० स० जे० ॥ २ असण्णी लं ख० स० डे० ल० शु० ॥ ३ 'हेतु-वाओवदेसेणं' आ० दा० ॥ ४ सण्णी भवति आ० दा० ॥ ५ एवं तेषि विकल्लेदियाणं सम्मुच्छिमपंचेदियाण या हेतुवायसण्णा भणिता आ० दा० ॥ ६-७ 'वादोव' उ० । 'वातोव' स० ॥ ८ 'सुययतो जे० ॥ ९ 'भावसुत्तं आ० दा० ॥

“सदसद्रविसेसयातो” [क्लिमा० गा० ११५] गाहा । कंठा । एवं पि ते अस्यी । आह-परिदियाणं ओह
 सय्यां चैव अतो ते अस्यी चैव, तेहिंतो वेईदियाइ जाव सम्मुच्छिमपवेदी एते भिसिद्धतरसण्णाए हेतुपायस्यी
 मथिया, कास्तिववेदसे पुण पइस ये बि अस्यी, विष्णाणअभिसिद्धचत्तो, दिट्ठिवातोवदसं पुण पइस कास्ति-
 कोपदेसा वि अस्यी अभिसिद्धचणतो चैव, अतो णज्जति दिट्ठिवात्सयणी सञ्चुचमा, मुचे य उँवरि ठवितो, लुष-
 भेठं, कामिय-हेतुसयणीणं पुण ठक्कमकरण कम्हा ? उच्यते-सक्यस्य मुचे सण्णिआरणं जं क्तं तं कास्तिववदस-
 सण्णिस, अतः सर्वत्र तत्सन्व्यवहारोपनार्य आदौ कास्तिं वे० २०८ प्र०] क्कअएण क्कतमित्पयं । किच-सण्णि
 अस्यीण समनस्का-अमनस्का इति क्रमब दक्षितो मवति, अप्न विकळेन्द्रिया अमनस्का इति अन्वयमनोद्वयग्रहण
 सामर्थ्यम्, प्रतिविद्यते पुनर्मनस्त्वेपाम् । यस्मादुक्तम्—

कुमि-कोट-पवहाया' समनस्का जइमाधुमेदा । अमनस्काः पञ्चविधा पृथिधीकायादयो वीढाः ॥ १ ॥

10

[इति ॥]

मणितं सण्णि-असण्णिसुतं ३ । ४ । इदामि सम्म-मिच्छासुतं । तत्त्व सुचं—

६९. [१] से कि त सम्मसुतं ? सम्मसुत जं इमं अरहंतेहि भगवतेहि उप्पण्णणाण-
 दसणघरेहिं तेलोकचहित मइय-पूइएहिं तीय-यँसुण्णण मणागयजाणएहिं सव्वण्णूहिं सव्व-
 र्दस्सीहिं पणीयं दुवाल्संगं गणिपिढग, तं जहा-आयारो १ सूयगढो २ ठण ३ समवाओ
 ४ विवाहपण्णत्ती ५ णायाघम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगढदसाओ ८ अणुत्तरो
 ९ ववाइयदसाओ १० पण्हावागरणाई १० विवागसुतं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

15

[२] इच्चयं दुवाल्संगं गणिपिढगं चोइसपुव्विस्स सम्मसुतं, अभिण्णदसपुव्विस्स
 सम्मसुत, तेण परं मिण्णेसु भयणा । से तं सम्मसुतं ५ ।

६९. [१] से किं तं सम्मसुतेत्यादि । 'दे' इति भगिबिद्धस गहयं, 'इम' ति पचक्कमावे । इंदय
 २० नमसय-य्यणादि अरहंतीति अरहंता, अरियो वा ईता अरिहंता । तेसिं शुभसंपदाए धिसेसभं-‘भगवतेहिं’ धम्म
 णस-अत्य-सुच्छी-पयच-विमवा एते छ प्पदस्या भगसण्णा, ते जेसि अत्यि ये भगवतो । केवस्सनाय-ईसयाव आन-
 रणरूपते कचण्णाण-ईसया उच्यज्जति, ते य जुगवपुण्णणे सम्ममणागतदं अणुप्पण्णसरुवे विराररणे सप्यदच्च
 शुण-पञ्चर-विसस-सामणीविसए वि जुगवपवत्ते णाण-ईसणघरे ते तेहिं नाण-ईसणेहिं तीयदाए सप्यदच्च-शुण-
 मावे आरंथि, तदा पइण्णणे अणागते य जावति, तिकासने दच्च भाव य पइण्णणे काळ नाणतीत्ययं । हिंसदो
 २५ सर्ववचनेषु करणायं बहुवचनमतिपादकः । तेभोक् ति-तिष्णि लोगा तेभोक्, ते य ऊर्वा-उपस्तिर्यक्, अप्न ठभि-
 षासिग्रहणम् । भवनवासिनो अहेमागनिवासी, वणपर-ओति-तिरियच-अणुम्मा तिरियमोक्निवासी, ऊर्ध्व पैमानिक ।

१ क्कमा, तद्वप्यतातो ते अस्यी आ वा ॥ २ एतेहिं दूरतरसण्णीय हेतुया आ ३ अयदि वे ४
 ४ एत्थापनार्ये आ ५ तस्य सम्मसुतं आ वा ॥ ६ क्कमित्पिक्कत-सहित-पूरणीहं वर्याय एतत्पिणु इतिअ
 वनमणित्तुइरिहोय । क्कित्ठिण्णम्मक तुक्कामे नेतरत्तमे तुक्कामार्ये । केवल अणुवोच्यारिक्कत्तमे क्कित्ठिण्णम्मक तुक्काम [सं १-१] ॥
 ७ पइण्णु नो तु ८ ईसीहिं सं ११ अउइस न ८ १० न्ये म व सं ६ न ॥ ११ वजमथि
 विसय वे ०

एवं प्रायोदृष्ट्या अहेलोडयग्रामसंभवाद् वाच्यम् । 'चदितं' ति चादितं प्रेक्षितं निरीक्षितं दृष्टमित्यनर्थान्तरम्, त्रैलोक्येन [जे० २०८ द्वि०] चदिता-मनोरथदृष्टिदृष्टा, अथवा गोशीर्षचन्दनादिना चर्चिता । त्रैलोक्यस्य मनोदिता महिता, अथवा महिमाकरणेन महिता, सा च महिमा महाजनसमुदयेन गीत-नृत्य-नाटकाद्यनेकप्रेक्षणकरण-विधानैः । अणलिय-मणवज्ज-सम्भूतत्थ-विसारयवयणेहिं थुत्ता पृड्या । अथवा अन्योन्यविषयप्रसिद्धा तेषु एकार्य-वचना । 'पणीतं' ति तिमत्तिसट्टपवादिमते अभूतत्थरूवे वज्जेऊण इमं जहत्यं दुवालसंगं पणीतं, जह णवणीतं 5 दहियातो, भूतत्येण वा जुत्तं प्रकरिसेण णीतं प्रणीतं । 'दुवालसंगं' इत्यादि कंटं ।

इहंगगतं आयारादि, अणंगगतं च आक्खमगादि । एतं सव्वं दव्वट्टितणयमतेण सामिणा असंवद्धं पंचत्थि-काया इव णिच्चं सम्मगुत्त भण्णति । अहवा एतं चेव दुवालसंगादि सामिणा संवद्धं भयणिज्जं सम्मगुत्तं मिच्छगुत्तं वा उच्यते-सम्मदिट्टिस्स सम्मगुत्तं, मिच्छदिट्टिस्स मिच्छगुत्तं । इमं चेव सुत्तपरिमाणतो णियमिज्जति—

[२] जो चोदसपुञ्जी तस्स सामादियादि विंदुसाग्पज्जवसाणं सव्वं नियमा सम्मगुत्तं, ततो ओमत्थगप- 10 रिहाणीए जाव अभिण्णदसपुञ्जी एताण वि सामादियादि सव्वं सम्मगुत्तं सम्मगुणत्तणतो चेव भवति । मिच्छदिट्टी पुण मिच्छणुभावत्तणतो अभिन्नदसपुञ्जे ण पावति, दिट्ठंतो जहा अभवो अभव्वाणुभावत्तणतो ण सिज्जतीत्यर्थः । 'तेण परं' ति अभिण्णदसपुञ्जेदितो हेट्ठा ओमत्थगपरिहाणीए जाव सामादितं ताव सव्वे सुत्तद्वाना सामिसम्मगुण-त्तणतो सम्मगुत्तं भवति, ते चेव सुत्तद्वाना सामिमिच्छगुणत्तणतो मिच्छगुत्तं भवति ५ ॥ इदानीं मिच्छगुत्त—

७०. [१] से किं तं मिच्छगुत्तं ? मिच्छगुत्तं जं इमं अण्णाणिएहिं मिच्छदिट्टिएहिं 15 सच्छंदबुद्धि-मतिविर्यपियं, तं जहा-भारहं रामायणं हंभीमासुरक्खं कोडल्लयं संगमदियाओ खोडंमुहं कण्णासियं नीमसुहुमं कण्णगसत्तरी वड्ढेसिसियं बुद्धवयणं वेसितं कविलं लोगायतं सद्वित्तं माढरं पुंराणं वांगरणं णाडगादी, अहवा वावत्तरिकलाओ चत्तारि य वेदा संगोवंगा ।

१ वा । कदं तं चेव सम्मसुयं मिच्छसुय वा ? उच्यते आ० दा० । वा । कदं ? उच्यते जे० ॥ २-३ मिच्छा-सुयं दे० ल० मो० सु० ॥ ४ इत आरभ्य चत्तारि य वेदा संगोवगापर्यन्तं सूत्रमिदं समग्रमपि अनुयोगद्वारेषु वर्तते [सू० ४१] ॥ ५ मिच्छदिट्टीहिं जे० मो० सु० विना ॥ ६ 'चिगप्पि' जे० मो० सु० ॥ ७ हंभीमासुरक्खं ख० ढ० शु० । हंभीमासुरक्खं मो० । भीमासुरक्खं जे० सु० । "हंभीयमासुरक्खे माढर कोडिल्लदवनीतिसु ।" अस्य व्यवहारभाष्यगार्थस्य मलयगिरिकृता व्याख्या—'भम्भ्याम् आसुवुक्षे माढरे नीतिशाले कौटिल्यप्रणीतासु च दण्डनीतिषु ये कुशला इति गम्यते ।" [व्यवहार० भाग ३ पत्र १३२], अत्र प्राचीनासु व्यवहारभाष्यप्रतिषु "हंभीयमासुरक्ख" इति पाठो वर्तते । "आभीयमासुरक्खं भारह-रामायणादि-उवएसा । तुच्छा असाधनीया सुयअण्णाणं ति ण वेत्ति ॥ ३०३ ॥ [सकृत्तच्छाया-] आभीतमासुरक्खं भारत-रामायणाद्युपदेशा । तुच्छा असाधनीया थुत्ताज्ञानमिति इदं नृवन्ति ॥ ३०३ ॥ [भाषार्थ-] चौगशास्त्र तथा हिंसाशास्त्र, भारत, रामायण आदिके परमार्थशून्य अत एव अनादरणीय उपदेशोको मिथ्याभ्युत्तज्ञान कहते हैं ।" [गोमटसार-जीवकाण्ड पत्र ११७] । "निर्घण्टे निगमे पुराणे इतिहासे वेदे व्याकरणे निरुक्ते शिक्षाया छन्दस्त्रिन्या यज्ञकल्पे ज्योतिषे सारख्ये योगे क्रियाकल्पे वैशिके वैशेषिके अर्थविद्याया वार्हस्पत्ये आम्भिये आसुय्ये मृगपक्षिवृते हेतुविद्यायाम्" इत्यादि [ललितविस्तरे परि० १२ ३३ पद्यानन्तरम् पत्र १०८] ॥ ८ कोडिल्लयं मो० सु० ॥ ९ सयमं दे० ल० । सहमं शु० । सगडमं सु० । अनुयोगद्वारेषु संगमदियाओ सतमदियाओ इत्येते नामान्तरे अपि प्रत्यन्तरेषु दृश्येते ॥ १० घोडमुहं शु० । ख० सं० प्रत्योरेतन्नामैव नास्ति । अनुयोगद्वारेषु पुन घोडगमुहं, घोडयसुहं, घोडयसहं, इत्यधिक नाम शु० ॥ १३ वत्तिसे' शु० ॥ १४ तैसिअं ख० सं० जे० दे० मो० । तेरासिअं सु० ॥ १५ काविलिय दे० ल० मो० । काविलं अनु० ॥ १६ णागायतं स० ॥ १७ पोरारणं दे० ॥ १८ वागरण इति नामानन्तर भागवतं पायंजली पुस्तकदेवयं लेहं गणियं इत्यधिक पाठः जे० दे० सु०, नाय पाठोऽनुयोगद्वारेष्वपि ॥

[२] इचेताइं सम्मद्विद्विस्स सम्मत्तपरिगगहियाइं सम्मसुयं । इंचेयाइ मिच्छद्विद्विस्स मिच्छत्तपरिगगहियाइ मिच्छंसुतं ।

[३] अहवा मिच्छद्विद्विस्स वि एंयाइ चेष सम्मसुयं, कम्हा ? सम्मत्तहेउत्तणओ, जम्हा ते मिच्छद्विद्विणो तेहिं चेष सैमएहिं चोइया समाणा केइ सपक्खदिट्ठीओ वमेति । से तं मिच्छंसुयं ६ ।

७० [१] से किं तं मिच्छंसुयं इत्यादि । अण्णाणं इतेहिं [६० २०९ प्र०] अण्णाणितेहिं । अण्णाणं-अनापो निवरीयत्यबोधो वा तेष इतो-अपुन्यतेत्यर्थः । मिच्छादिहिं इतोहिं मिच्छादिद्विद्वेहिं, मिच्छ सि-अमृत, दिदि सि-वरिसणं, मिच्छादिद्विणा अणुगतोहिं ति भणितं भवति । स-इत्यात्मनिर्वेधः, छन्दः-अभियायः, क्वंभवतस्सेव वा अत्वस्स जो बोहो स बुद्धिः-अप्रवृत्तमाप्नु, उत्तरम ईहादिविक्रपा सम्भवे मती । अहवा नात्तावरमस्योक्त्तसमावो 10 बुद्धी, सो चेष जहा मणोइवणुसारतो पयचइ तदा मती भण्यति । एष आत्तामिमायबुद्धिमतिभिः यच्छुतं भिविषयकल्पनाविकल्पितमिति रचितं, तत्र भारपादि जाय चचारि य वेदा संगोत्रगा, सम्भेते खोगसिद्धा, खोगतो चेषेवेत्तिं सक्रम भाणितवन् । एष सम्भ मिच्छभापद्वितं ति क्खंतुं मिच्छंसुतं भाणितवन् । एतस्मि सम्म-मिच्छंसुत विकल्पे चतुरो विक्रपा भाणितवन् इमेव विधिजा—

[२] सम्मंसुतं सम्मद्विद्विओ सम्मंसुतं चेष १, सम्मंसुतं मिच्छद्विद्विओ मिच्छंसुतं २, मिच्छंसुत सम्मद्विद्विओ 15 सम्मंसुतं ३, मिच्छंसुतं मिच्छद्विद्विओ मिच्छंसुतं चेष ४ । 'इचेयाइं सम्मद्विद्विस्स सम्मत्तपरिगगहियाइं सम्मंसुतं' एत्य सुत्तं परम-सइयविक्रपा वद्वन्वा । 'इचेयाइं' ति सम्म मिच्छंसुताइं, अहवा मिच्छंसुताइं चेष । सेतं कंतं । 'मिच्छद्विद्विस्स' इच्छादिमुत्ते वितिय-चतुस्यविक्रपा वद्वन्वा । तत्य परमविक्रपे सम्मंसुतं सम्मत्तणोपे सम्मं परिभासयतो सम्मंसुतं चेष भवति १ वितियविक्रपे वि अहा खंडंखंडंखंडं खीरं पिचअरोइयतो थ सम्म भवइ तहा मिच्छंसुदयतो सम्मंसुते मिच्छामिभिचेसतो मिच्छंसुतं भवति २ ततियविक्रपे तिफलादिमिद्विं पि उठउठ उठका- 20 रकारिचणतो सम्मं भवति तहा मिच्छंसुते मिच्छमापोवसंभावतो सम्मंसुते इत्तरमाधुप्यायकरण्यचणतो तं से सम्मंसुतं भवति ३ चरिमविक्रपे मिच्छंसुतं, त चेष मिच्छामिभिचेसतो मिच्छंसुतं चेष भवति ४ ।

[३] तस्स वा मिच्छद्विद्विओ त चेष मिच्छंसुत सम्मंसुत भवति । कम्हा एवं भण्यति ? उच्यते-परिणाम विसेसतो, जम्हा ते मिच्छद्विद्विणो 'तेहिं [६० २ ९ दि०] चेष' पुन्नावरियन्तेहिं मिच्छंसुतमणिदेहिं 'चोइता' भयिता 'समाया' इति सन्त', बोधपाणत्तं आत्तमेकामावस्यायां सन्त इत्यर्थः । पुन्नं तं सात्तण पडिबण्यो तं से 25 सपखो, तस्मि ना दिट्ठी तं 'वमेति' परिबयंति, छण्टेति सि बुत्तं भवति । जम्हा एव तम्हा त पुन्ममिच्छंसुतं सम्मंसुत से भवति । पर आह-एवाअणमसंसावसामणो सम्मत्त-सुत्ताण को पतिविसेसो जेण भण्यति 'सम्मत्त-परिगगहियाइं सम्मंसुत' ? उच्यते-अहा जाय-इसणायं अरबोधसामणो मेदो तहा सम्म-सुत्तायं पि भविस्सति ।

१ एवापि चेष सम्मं कर्त्तुं सुचरितु । इतिअत्रोक्त्तवैव सुक्ताम् सम्मतेज्जित ॥ २ एवायं मिच्छं कर्त्तुं सुचरितु । इतिअत्रोक्त्तवैव सुक्ताम् सम्मत्तः ॥ ३ 'मिच्छद्विद्विपरि' क ॥ ४ मिच्छंसुत्तुयं के भो ह । अयि च-अण्णसुत्त-मिच्छाणुत्तुयिचोत्तुयं सुत्तं कर्त्तुं सुचरितु सुत्तोरपि च अण्णसुत्तवैव वत्ते ॥ ५ एवायं चेष इति कं तं के के क ह भाति । भीहरिमत्तावापयंति नात्तवं वत्तं क्खेत्तः ॥ ६ इत्या तेहिं के न भिना ॥ ७ सत्तमपरिहिं के ॥ ८ चरितं के भो । भीमकवयिदिगगरीरे क्खत्ताइइवरेण क्खत्ताण्णत्तः ॥ ९ मिच्छाणुत्तुयं के भो ह ॥ १० तत्य आततयेण वा अतवस्स थ वा ॥ ११ त्मकसावस्यायाः स वा ॥ १२ तस्सेस पण्णो के- ॥ १३ अण्णवत्त वा वा ॥

कहं ? उच्यते—जहा विसेसाणं बोधमवात-धारणे नाणं, अवग्रहेहावोघे च दंसणं तथा इमं । तत्ते जा रुती तं सम्मत्तं, तत्थेव जं रोचकं तं सुत्तं । एवं मिच्छत्परिगहे वि वत्तव्वं ६ ॥ इदाणि सादि-सपज्जवसाणे—

७१. से किं तं सादीयं सपज्जवसियं ? अणादीयं अपज्जवसियं च ? इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं विउच्छित्तिणयट्टयाए सादीयं सपज्जवसियं, अविउच्छित्तिणयट्टयाए अणादीयं अपज्जवसियं ।

5

७१. से किं तं सादीयं इत्यादि । इह पज्जातट्टितो वोच्छित्तिणतो, तस्स मतेणं दुवालसंगं पि सादि सपज्जवसाणं । कहं ? जहा णरगादिभवमवेक्खातो जीवो व्व । दव्वट्टितो पुण अव्वोच्छित्तिणतो, तस्स मयेणं दुवालसंगं पि 'अणादि अपज्जवसाणं च' त्रिकालवत्थायी, जहा पंचत्थिक्काय व्व ॥ एसेवऽत्थो दव्वादिचतुक्कं पडुच्च चित्तिज्जति । तत्थ—

७२. तं समासओ चउव्विहं पण्णत्तं, तं जहा-दव्वओ खेत्तओ कालओ भावओ । 10
तत्थ दव्वओ णं सम्मसुयं एगं पुरिसं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, वहवे पुरिसे पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं १ । खेत्तओ णं पंच भरहाइं पंच एखयाइं पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, पंचं महाविदेहाइं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं २ । कालओ णं ओसप्पिणिं उस्सप्पिणिं च पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, णोउस्सप्पिणिं णोओसप्पिणिं च पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ३ । भावओ णं जे जया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति 15
दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति ते १० तथा पडुच्च सादीयं सपज्जवसियं, खाओवस-
मियं पुण भावं पडुच्च अणादीयं अपज्जवसियं ४ ।

७२. दव्वतो सम्मसुत्तं एगपुरिसे सादि जं पढमताए पढति; सपज्जवसाणं देवलोगगमणातो, गेलण्णतो वा णट्ठे, पमादेण वा, केवलणाणुप्पत्तितो वा, मिच्छादंसणगमणतो वा सपज्जवसाणं, अहवा एगपुरिसस्सेव सादिसपज्जवसाणत्तणतो । दव्वतो चेव वहवे पुरिसे पडुच्च अणादि अपज्जवसाणं, अण्णोण्णट्टितसंताणाविच्छेयत्तणतो, 20
मणुयत्तणं व जहा । खेत्ततो भरहेरवएसु तित्थगर-वम्म-संघातियाण उप्पाद-वोच्छेदत्तणतो सादि सपज्जवसाणं, महाविदेहेसु अवुच्छेदत्तणतो [अणादि अपज्जवसाणं] । कालतो ओसप्पिणीए [जे० २१० प्र०] तिसु, उस्स-
प्पिणीए दोसु साधंतं, णोओसप्पिणिणोउस्सप्पिणिततियं महाविदेहकालपलिभागं पडुच्च तिसु वि कालेसु अव-
ट्टितत्तणतो अणादि अपज्जवसाणं । इदाणि भावतः—'जे' इति अणिद्विद्वस्स णिदेसो । 'जदा' इति काले पुव्वण्हे
अवरण्हे वा, दिया रातो वा पुर्व्वि जिणेहिं पण्णत्ता भावा, पच्छा त एव गौतमादिभिः 'आघविज्जंती'त्यादि, 25

१ साणं अवोधिअवातकरणे णाण आ० मो० ॥ २ इच्चेइयं मो० सु० ॥ ३ वुच्छिं मो० सु० ॥ ४ अवुच्छिं मो० सु० ॥ ५ तत्थ इति पद ख० स० डे० ल० शु० नास्ति ॥ ६ परावं स० शु० ॥ ७ पच विदेहाइं ल० ॥ ८ णं उस्सप्पिणिं ओसप्पिणिं च जे० मो० सु० । नाय पाठश्चूर्णि-वृत्तिकृतां सम्मत ॥ ९ णोओसप्पिणिं णोउस्सप्पिणिं च ल० । हारि०श्रुतौ एतदनुसारैव व्याख्यातमस्ति ॥ १० ते तथा भावे पडुच्च जे० डे० मो० । ते भावे पडुच्च ल० । चूर्णिकृता ते तदा पडुच्च इति पाठान्तरनिर्देशेन सह ते तथा पडुच्च इति पाठ आहतोऽस्ति । वृत्तिकृत्तया पुन ते तथा पडुच्च इत्येव पाठोऽङ्गीकृतोऽस्ति ॥

‘आपबिञ्जति’ आख्यायन्ते सामञ्जसो [विसेसतो] विसेसतामञ्जसो वा, पञ्चविञ्जति मेवमभेदेर्हि, तेषि मेवम-
 मन्त्रार्थं सख्यमन्त्राभं पुरुषणा, दसिञ्जति उवमामेतेष्व ङहा गो तहा गवय इति, पिर्दसर्णं हेतु-दिट्टुवेर्हि, उपर्दसमा
 उवणयोवसपारेर्हि सञ्चणएर्हि वा । अहवा एगट्टिहा एते । ‘ते’ इति पञ्चविञ्जाम गिरेसो । ‘तहा’ इति पञ्चवर्गो
 पञ्चविञ्जो वा पट्टुव सादि सपञ्जवसाणं भवति । तस्य पञ्चवर्गं पट्टुव उवपमेतो सरविसेसतो पयत्तपो आसख-
 5 विसेसतो य सादि सपञ्जवसाणं । पञ्चविञ्जो पट्टुव गतीतो ठाणतो दुपदेसादिभेदतो वरेगपदेसादिमन्त्राहतो
 एगसमयादिमन्त्राणतो ङ्णादिपञ्चवे य आसख सादि सपञ्जवसाणं । पार्दत्तं वा “ते तदा पट्टुव” ‘तया’ इति
 काल भन्नाद्यपर्यवसितम् । भावतः सुतज्ञान सायोपक्रमिके माने नित्यं कर्तव्यं स्वामित्वमन्वय इति ।

७३ अहवा भवसिद्धीयस्स सुयं सार्दियं सपञ्जवसियं, अमवसिद्धीयस्स सुयं अणा
 दीयं अपञ्जवसिय ।

10 ७३ अहवा सादि सपञ्जवसाण सपञ्चिपकल्पवत्सु मंगवतुळे पदममगे सम्मसहितसुतभावो विंतेयञ्चो,
 भणेगेविर्दं वा खयोवसमभाव पट्टुव दम्भादिउवयाणं वा पट्टुव पदममगो भवति । विंतिपमगो सुष्णो, अहवा
 अमन्त्राणं अन्नागात्तदसंभागेण सुतभावो भाणितञ्चो । चरिम-सतियमगेसु अविसिद्धसुतभावो अमन्त्र-अञ्चे पट्टुव
 जोएतञ्चो । अमवसिद्धीयस्स इत्यादि सुतसिद्धं । इह चरिम-सतियमगेसु अन्नादिसुतभावो विद्वो सुतापि
 कारतो, इमरा मतिभावो वि द्दुञ्चो, मति-सुताण अण्योण्णाणुगतचणतो । सो य अन्नादियामभावो अण्यो
 15 अमण्णाणो २१ धि० मणुकोसो वा इवेअ, उञ्कोसो व भवति, कन्हा ? अन्हा उकोसनामभावो केपळ्ळियो
 भवति ॥ तस्स य सुचे इमं पमाण परिञ्जति—

७४ सव्वागासपदेसग्ग सव्वागासपदेसेर्हि अणंतगुणियं पञ्जवगन्सुखं गिण्फज्जइ ।

७४ सव्वागासपदेस इत्यादि सूत्रं । सव्वमिति-अपरिसेससम्पन्ना अविधिकेव भवति, सव्वं आकासं
 सव्वाकासं, सव्वागासस्स पदेसा सव्वागासपदेसा, अं एतेसि अन्ना-अ परिमाणं ति पुत्तं भवति, एत सव्वागासप-
 20 देसरासियन्मं अणत्तेण रासिथा अण्णेण सुवित्तं तादे णं रासिपमाणं सम्मति तं सव्वपञ्जाण अन्ना भवति ।
 पञ्जाया गाम-एकेकस्साऽऽगासपदेसस्स जायंतो अकारुद्धयादी पञ्जाया ते पण्णाए सव्वे संपिठिता, तेषि
 संपिठिताण णं अन्ना एतत्पमाणं अकस्सं सम्मति ।

[अ पत्तर प ङळ]

इह अकस्सं ति दुविर्दं-धाण अकारादिद्वन्द्वसुतवस्सर व । तस्य नायमकस्सं ति अधिसेसतो सव्वनायमकस्सं,
 25 अन्हा तं जीवातो उय्यव्य अण्णाभावत्तवतो मो कस्सति चि, इह पुण सम्पपञ्जापत्तुल्लवत्ततो क्वद्वभाण
 वेत्तव्वं, अन्हा केपलं सव्वद्वन्वपञ्जापविष्मचित्तमत्तये भवति । तं व केपलं णेये पवत्ता, तस्स वि परिमाणं इमेणं
 वेव विधिणा भाणितव्वं—‘सव्वागासपदेसमा’ इत्यादि पूर्ववत् । ते य सव्वद्वन्वपञ्जाया समासतो तीस इमज
 विधिमा—गुरु सहु गुरुसहु अगुरुसहु एते चदुरो, पंच ङण्णा, दो गंधा, पंच रसा, अद्ध फासा, अजिरियत्स
 सटापसठिता छ सटाया, एते सुत्तद्वव सव्व सभवेति । अण्णदव्वेसु अगुरुसहु वेव एको पञ्जापो समवत् ।

१ “आविञ्जति” ति आङ्गोस्ता आकाशान्ते, सामान्य-विशेषाणां कथ्यन्त इत्यर्थः” इति द्वारि-अभिवृत्तौ । “आविञ्जति”
 ति आङ्गोस्ता आकाशान्ते, सामान्य-विशेषाणां कथ्यन्ते इत्यर्थः” इति मध्य-अभिवृत्तौ । २ सायि सप तं ।
 साई सप न ३३ पञ्चवर्गवर् ३ मो सु विजावपट्टी ११६ तये अविद्वत्तादेवरे । नावं वाक्कम्भि-वृत्तिवृत्तां तस्यत् ३

एत्थ य एक्के भेदे अणंता भेदा संभवन्ति । किंच मुत्तदब्बेसु णतविसेसतो अणियोगधरा अट्ठावीसं मूलपज्जाए भणन्ति । कइं ? उच्यते—ते चैव तीसं सव्वगुरु-लहुपज्जाएहिं विहूणा । जतो भणित्तं—

निच्छयतो सव्वगुरुं सव्वलहुं वा ण विज्जते दब्बं ।

ववहारतो तु जुज्जति वादरखंधेसु णण्णेसु ॥ १ ॥ [कल्पमा गा. ६५]

णिच्छयणयमतेण सव्वधा गुरुं लहुं वा नत्थि दब्बं । जदि ह्वेज्ज तो तस्स पडमाणस्स ण विरोधो केणइ 5
ह्वेज्ज, सव्वलहुस्स वा उप्पयमाणस्स, जतो य णिच्चपडणं उप्पयणं वा ण विज्जति तम्हा [जे० २११ प्र०] सव्वधा
गुरुं लहुं वा दब्बं नत्थि । ववहारणयादेसेणं पुण दो वि अत्थि, जहा—सव्वगुरु कोडिसिला वज्जं वा, सव्वलहुं च
धूम-उल्लुगपत्तादी । एवं ववहारणयादेसतो वादरपरिणामपरिणतेसु खंधेसु गुरुभावो लहुभावो य भवति ।
'णण्णेसु' त्ति ण सुहुमपरिणामेसु त्ति वुत्तं भवति ॥

के पुण सुहुमपरिणता दब्बा ? के वा वादरपरिणता ? उच्यते—परमाणूतो आरद्धं एगुत्तरवड्ढित्तेसु ठाणेसु 10
जाव सुहुमो अणंतपदेसिओ खंधो, एतेसु ठाणेसु सुहुमपरिणता दब्बा लब्भन्ति, एतेसिं च अगरुलहुपज्जाया
भवन्ति । वादरो पुण परमाणूतो आरब्भ जाव असंखेज्जपदेसितो खंधो ताव ण लब्भति, परतो वादरपरिणामो
खंधो लब्भति, सो य जहण्णो वि अणंतपदेसिओ नियमा भवति, तातो एगुत्तरवड्ढिया अणंता अणंतट्ठाणावड्डिया
वादरा खंधा । ते य ओराल-विउब्बा-SSहार-तेयवग्गणासु भवन्ति, णियमा य ते गुरुलहुपज्जाई भवन्ति । सीसो
पुच्छति—जे रुविगुरुलहु दब्बा अगुरुलहु य तेसिं के थोवा वहु वा ? उच्यते—थोवाणि गुरुलहुदब्बाणि, तेहिंतो 15
रुवीअगरुलहुयदब्बा अणंतगुणा । कइं पुण ते अणंतगुणा भवन्ति ? उच्यते—थूराणं अणंतपदेसिताणं खंधाणं सट्ठाणे
अणंतातो वग्गणातो, सुहुमाणं पि अणंतातो वग्गणातो, थूरवग्गणठाणेहिंतो उवरिं भासादिवग्गणट्ठाणेसु एक्केके
अणंतातो वग्गणातो, हेट्ठतो वि थूरवग्गणट्ठाणाणं परमाणूणं एक्का वग्गणा, एवं जाव दसपदेसियाणं संखेज्जपदे-
सियाणं संखेज्जातो वग्गणातो, असंखेज्जपदेसिताणं असंखेज्जाओ वग्गणाओ, एतेणं कारणेणं गुरुलहुदब्बेहिंतो
रुवीअगरुलहुदब्बाणि अणंतगुणाणि भवन्ति । आदेसंतरेण वा वादरठाणेसु वि सुहुमपरिणामो अविरोद्धो त्ति 20
भाणितव्वो । उक्तं च—

गुरुलहुदब्बेहिंतो अगरुलहुपज्जया अणंतगुणा ।

उभयपडिसेहिता पुण अणंतकप्पा [जे० २११ द्वि०] वहुविकप्पा ॥ २ ॥ [कल्पमा गा ६७]

गुरुलहुपज्जायजुत्ता जे दब्बा तेसिं चैव जे गुरुलहुपज्जाया तेहिंतो रुविअगरुलहुयदब्बाण जे अगरुल-
हुयपज्जाया ते आधारअणंतगुणत्तणतो अणंतगुणा एव भवंतीत्यर्थः । 'उभयपडिसेहिता णाम' अगरुयलहुया । 25
'पुण' विसेसणे । किं विसेसेति ? उच्यते—अरुविदब्बाधारा इत्यर्थः । अहवा 'उभयपडिसेहिता णाम' वादर-
सुहुमभाववज्जिता जे दब्बा, अरुविण इत्यर्थः । तेसु 'अणंतकप्पा णाम' अणंतप्रकारा । कइं ? उच्यते—आकासत्थि-
काए देस-पदेसपरिकप्पणाए, एवं धम्मादिमु वि । 'वहुविकप्प' त्ति तेसिं अणंतकप्पाणं एक्केको अणंतप्रकारो ।
कइं पुण ? उच्यते—जम्हा एक्केके आगासप्पदेसे अणंता अगरुलहुयपज्जाया भवन्ति तम्हा ते वहुविकप्प त्ति । ते
य सव्वण्णुवयणतो सद्धेया इति ॥

रुवि-अरुविद्व्याय य पञ्जायभ्यबहुत्वं इम मष्णति-रुविद्व्यायं जे य अगस्त्यरूपज्ञाया ते पञ्जाछेदेव पिंडिता, एतेरितो एकस्स खेन अमुत्तद्व्यस्त जे अगस्त्यरूपज्ञाया ते अर्थात्पुण्य मन्तीत्यर्थः । एतव सीतो मणति-रुवितेरेहि पुष्य भागेहि सुत्तद्व्याय पिंडितपञ्जापरितो अमुत्तद्व्याय अगस्त्यरूपज्ञाया अन्तगुणा भवति ? उत्पद्यते-नास्त्यत्र परिभार्ण, बहुधा पि भर्णतएवं गुणित्वाभाणे अमुत्तद्व्यपञ्जाएसु न्तिय परिमाण ॥

५ एवंगते परिमाणार्थे इम मष्णति—

कथं ह्येज्ज निरोधो अगस्त्यरूपज्ञायाण तु अमुत्ते ? ।

अर्थात्तमसजोगो नरितं पुष्य सन्धिचक्रस्त ॥ ३ ॥ [कथ्यमा गा ६९]

जतो अमुत्तद्व्याय बहुधा वि अन्तपथ गुणित्वाभाणे पेज्ञायण य भवति । ततो 'केनेति' कनान्धेन प्रकारेण 'ह्यज्ज' ति भव 'जितोहा नाम' परिमाण ? परिच्छेदेत्यर्थं, किं सुत्तद्व्यरितो अमुत्तद्व्याय अगस्त्यरूपज्ञायपरिमाण भवित्तसि ? किं, नेत्युच्यते, 'अर्थात्तमसजोगो' 'अर्थात्' अतीव अमुत्तद्व्यायाणे जम्हा सजोगो । [अ० २१२ प्र०] 'अर्थियं' ति यत्र । 'पुण' विससणे । किं विससयति ? रुविद्व्ये । तदित्यनेन अमुत्तद्व्यपपत्तो, तस्स विपत्तो-मुत्तद्व्यपगारा, तेसु पञ्जाययावत्पत्तो अमुत्तद्व्यसु य पञ्जायाव अतीवबहुत्तपत्तो, अता सुत्तद्व्येरेहिता अमुत्तद्व्यपज्ञायण परिभाषकरत्वंसजोगो एवंतेणेन य शुद्धते, य पत्तेत्यर्थं ॥

एवं तु अगतेरि अगस्त्यरूपज्ञाएहि संजुत्तं ।

इति अमुत्तं द्वाय अरुविकायाय तु पत्तुत्वं ॥ ४ ॥ [कथ्यमा गा ७०]

१५ 'एवमिति' यथसुक्तं । ससं कंठ । यपरि 'अरुविकायाय तु पत्तुत्वं' ति पञ्मा ५पञ्मा-५५गास जीवाव ति एतेसि बहुत्वं वि नियमा पथेय अर्थात् अगस्त्यरूपज्ञाया भवति । इति ? उत्पद्यते-जम्हा एतेसि एकेको पसेतो अगतेरि अगस्त्यरूपज्ञाएहि संजुत्तं चाम्हा पञ्मा-५पञ्मेगतीवत्स य असलेखपदेसचपता असलेखमणता पथेय भवति । आमासपदेसमपरिभाषणतो पुण तस्स न्तिय परिमाणं, तदा वि सन्नह्यरतो भयता उक्ता इत्यर्थः ॥

२० एवं ताव ह्ययमन्तसुक्तम् । अयेदानीं तत् केवञ्चानं ययाजन्तं तमसुच्यते—

उत्पद्यतीं वाहा । [कथ्यमा गा ७१] सत्त्वं रुविद्व्या-अरुविद्व्याय य नावतिया गुरुत्वरूपज्ञाया सत्त्वे अरुविद्व्याय य जे अगस्त्यरूपज्ञाया एते सत्त्वे लुगवं जायति पासति य जतो, एवमन्तं केवञ्चनाममन्तरं ति सप्तसगामिहितम् ।

इदानीं 'अकारादिद्व्यसुत्तमन्तरं' ति जति अविसेसतो पाणमन्तरसुक्तं जेयं वा तदा वि रुविद्व्यतो जहा २५ पंक्त्यं तदा सत्त्वरं वंजमन्तरं मन्तरं वा मष्णति । तत्र 'सत्त्वरं' अन्तरं अन्तरं सति-वर्षति सति वा इत्यतो सत्त्वरं अकारादि, वंजमन्तरं वा पुत्रमभिधानं सति, वा वा सत्त्वरंमन्तरेण अत्यो समरित्त्वं वि सत्त्वरं । अकारादि मन्तरमन्तरा, अन्तरेण तन्नामं इति मदीपन घटादिचद् व्यंभनास्रम् । तर्हि खेन सत्त्वंमन्तरंरेरि तदा अत्यो मन्त्रिकति अमित्यप्येते वा तदा ते मन्त्रिकन्तर मष्णति । इह एकेकस्स अकारादिअकारात्तमन्तरस्स सत्त्वरपञ्जायमन्तर इम-अकारस्स य पञ्जाया जहा वीह-इत्यन्तरेण, तत्र वीहो [अ० २१२ इ] उदात्ताऽनुदात्त-रित्तमन्तरं, एवं इत्यन्तरेणपि, पुनरप्येकेको सामानासिका निजुनासिकम्, इत्यत्र अष्टादशमन्तरं । एवं सप्तसगामय वि जहासंमन्तरं मन्तरं भावितव्या । अथावा सत्त्विसेसतो एकेकमन्तरस्स अर्थात् सत्त्वाया । एतव अकारस्स

१ पञ्जायया जे वा २ अमुत्तद्व्याया जे वा ३ तत्त्वरंमन्तरस्स वा वा ४ तत्त्विसेसतो जे वा ५

अकारजातीसामण्णतो सपज्जाया अट्टारस, सेसा परपज्जाया, एवं संखेज्जा पज्जाया । अहवा अकारादिसरा ककारादिवंजणा केवला अण्णसहिता वा जं अभिलावं लभे स तस्स सपज्जायो, सेसा तस्स परपज्जाया, ते य सव्वे वि अणंता । जतो सुत्ते भणितं—“अणंता गमा अणंता पज्जाया” । [सू० ८५ त ९४ आदि] भणितं च—

पण्णवणिज्जा० गाहा [कल्पमा गा. ९६४] । अक्षरलंभेण० गाहा [विशेषा. गा १४३] । अणभिलप्पाण अभिलप्पा अणंतभागो, तेसिं पि अणंतभागो सुतनिवद्धो इति । अहवा अकारादिअक्षराण पज्जाया सव्वदव्व- 5 पज्जायरासिप्पमाणमेत्ता भवंति । कहं ? उच्यते—जे अभिलावतो संजुत्ता-ऽसंजुत्तेहिं अक्षरेहिं उदत्ता-ऽणुदत्तेहि य सरेहिं जावतिए अभिलावे अभिलप्पे य लभति ते सव्वे तस्स सपज्जाया, सेसा सव्वे तस्सेव परपज्जाया । आकास मोत्तुं सव्वस्स सपज्जएहिंतो परपज्जाया अणंतगुणा । आकासस्स सपज्जएहिंतो परपज्जाया अणंतभागे । पर आह—कहं तस्सेव परपज्जाया य ? णणु विरुद्धं, उच्यते—सव्वक्षराण घडाइवत्थुणो वा दुविहा पज्जाया चित्तिज्जंति—संवद्धा असंवद्धा य । तत्थ अकारस्स अकारपज्जाया अकारभावत्तणतो अत्थित्तेण संवद्धा, घडागारावस्थायां 10 घटपर्यायवत्; ते चेव णत्थित्तेण असंवद्धा, नत्थित्तस्स अभावत्तणतो, जहा घटाकारावस्थायां मृत्पर्यायवत् । अकारे इकारादिपर्याया णत्थित्तेण संवद्धा, अकारे णत्थित्तभावत्तणतो, जहा मृदवस्थायां पिंडाकारपर्यायवत्; ते चेव अत्थित्तेण असंवद्धा, अत्थित्तअभावत्तणतो, घटाध्वस्थायां पटपर्यायवत् । एवं अक्षरेसु घडाइपज्जाया वि चित्तिज्जा, घडादिसु य अका(? क्व)रपज्जाया, इच्चेवं एकेकमक्षरं सव्वपज्जायमं ॥ [जे० २१३ प्र०]

एवं सर्वात्मकाः सर्वपर्यायाः, अतो भण्णाति—सव्वगासपदेसगं अणंतगुणितं पज्जवगं अक्षरं निप्फज्जति ॥ 15 एवं नाणक्खरं अकारादिअक्षरं णेयअक्षरं च तिण्णि वि अणंताऽभिहिता । एत्थ नाणक्खरं जं तं जीवस्स संसारत्थस्स ण कताइ ण भवति त्ति । जतो भणितं —

७५. सव्वजीवाणं पि य णं अक्षरस्स अणंतभागो णिच्चुग्घाडियओ, जति पुण सो वि आवरिज्जा तेणं जीवो अजीवतं पावेज्जा ।

सुट्ठु वि मेहसमुदए होति पभा चंद-सूराणं ।

से तं सांदीयं सपज्जवसियं । से तं अणादीतं अपज्जवसितं ७ । ८ । ९ । १० ।

७५. सव्वजीवाणं पि य णं इत्यादि सुत्तं । सव्वजीवगहणे वि सति 'अवि' पदत्थसंभावणे, किं संभावयति ? इमं—सिद्धे मोत्तुं, चसइतो य भवत्थकेवली मोत्तुं । 'णं'कारो वाक्यालंकारे । अक्षरं ति—नाणं, तस्स अणं-

१ रेसु णत्थित्तभावत्तणतो घडाइपज्जाया आ० दा० । रेसु घटेसु घड इव पज्जाया मो० ॥ २ ज्ञायमयं । एवं आ० दा० । ज्ञायमयं । एवं सर्वत्रका. सर्वं मो० ॥ ३ द्वादशारनयचक्रवृत्तौ इदं सूत्रमित्थं वर्त्तते—सव्वजीवाणं पि य णं अक्षरस्स अणंततमो भागो णिच्चुग्घाडित्तओ ।

तं पि जदि आवरिज्जिज्ज तेण जीवा अजीवत पावे । सुट्ठु वि मेहसमुदये होइ पभा चंद-सूराणं ॥१॥ अत्रैव च नयचक्रप्रत्यन्तरे अणंतभागो इति जीवो अजीवतं इति च पाठभेदोऽप्युपलभ्यते ॥ ४ डिओ सं० चूर्णि च विना ॥ ५ अत्र चूर्णिकृता चूर्णो जति पुण सो वि धरिज्जेज्ज इत्यादि गायैवोल्लिखिताऽस्ति, नयचक्रोद्धरणेऽपि पाठभेदेन गायैव दृश्यते, अस्मत्स्वीकृतसूत्रप्रतिषु ये विविधा पाठभेदा वर्त्तन्ते, यच्च पाठस्य स्वरूपमीक्ष्यते, एतत्सर्वविचारणेन सम्भाव्यते यदत्र सूत्रे. गायैव अष्टता प्राप्ताऽस्ति । वृत्तिस्तोराचार्ययो पुनरत्र किं गय गाथा वा मान्याऽस्ति ? इति न सम्यगवगम्यते, तथापि वृत्तिस्वरूपावलोकनेन गायैव तेषां सम्भवेति सम्भाव्यते ॥ ६ सो वि धरिज्जेज्जा सं० शु० । सो वाऽऽवरिज्जेज्ज सं० ॥ ७ तेण जे० मो० सु० ॥ ८ अजीवतं सं० ॥ ९ पावेज्ज सं० ॥ १० सादि सपं सं० शु० । सआदि सपं सं० ॥

समागो निभुग्याद्वियतो, सो केचरुस्स न समवति, केचन्मस्स अभिमागसपुण्यणतो य; ओपीए वि ण समवति, अन्नतमागस्स अमावणतो, अन्धेः असख्ययमकृतिसमवादित्यर्थः; मयपज्जवनाणे वि रिजु-विपुल्लुमेइसंमवतो अन्नतमागो ण मवति, किं च अथधि-मणपज्जवाण भिभुग्याइअमावणतो इइ अणधिकारो; परिसिट्ठे मत्ति-सुंवे पि 'अक्खरस्स अणतमागो निभुग्याद्विययो' अभिकृतसुतस्स वा अक्खरस्स अणतमागो निभुग्याद्वियता। नत्थ सुतं तस्य मत्तिभाण पि वेचन्व । 'बिच्च' ति सक्ककालं । 'उग्याद्वितता' पि णाऽऽवरिज्जति । सो य अणतमागो पुइवादिपरिगवियाण वि पचच्च निभुग्याठा, अइवा सम्भ्रजइणो अणतमागो निभुग्याठा पुइविकाइए, वैतन्यमात्र-मात्मनः । तं च उक्कोसपीणिद्विसहितनाण-अंसणानरजोदए पि णो आवरिज्जति ।

एतं पुण सो वि चरिज्जेअ तेण जीनो अजीवय पावे । सुट्ठु वि मइससुदए होति पहा चद-अराय ॥१॥

[कल्पमान्ये गा ७४]

10 जम्हा सो णाऽऽवरिज्जति तम्हा जीनो जीवत्तं ण परिचयति । सो य कम्हा णाऽऽवरिज्जति? उप्पये-दप्प समावसरूपणतो । इइ दिट्ठता भहा—सुद्धं वि मेइण्णादिए अये कंद-अरप्याहा मइपेइछे मणुं दण्व ओमासति, तथा अणतेहिं षाण-अंसणानरजकम्मपुग्गाछेहिं एक्केहो आतप्यदेसो आवेदियपरिवेदितो ते कम्मावरमपइछे मेणुं नाणस्स अणतमागो उम्भरति, [४० २१३ छि] ततो य से अक्खत्तं नाणमक्खत्तं सम्भ्रजइण मवति । ततो पुइविकाइ-तेहिंतो आउक्काटियाण अणतमागेण विमुद्धतर नाणमक्खत्तं, पत्तं कमेत्तं तेउ-आउ-अणस्सति-वेइदिय-तेइदिय-चट्ठि-
15 दिय-असम्पिपंचेदिय-सम्पिपंचेदियाण य विमुद्धतर मक्खतीत्यर्थः । ७ । ८ । ९ । १० ॥ मन्थितं सादि सपज्जवसित्तं अग्गादि अपज्जवसित्तं च । एत्थेव मसगता अक्खरपइत्तं मणित ।

एच बहुवचत्वं अक्खरपइत्तं समासतोऽभिहितं । वित्यरतो से अत्थं द्विण-चोरसपुम्बिया कएए ॥ १ ॥

[॥ अक्खरपइत्तं सम्मत्तं ॥]

इदार्णि गमिया-आमियं—

20 ७६ से किं तं गमियं? गमियं दिट्ठिवाओ । अगमिय काल्पित सुय । से तं गमिय । से तं अगमियं ११ । १२ ।

७६ गमबहुवचणतो गमिय । तस्स सकलज-आदि-मज्ज उवसाणे वा किंचिविसेसनुत्तं सुत्तं दुगादिस-तग्गात्ता समय परिज्जमाणं गमिये मण्यति, त च एवयिइसुसण दिट्ठिवाता । अणोणवसरामिभापहितं अं परिज्जति त अमियं, तं च मायसो आघारादिं कासियसुत्त ११ । १२ ॥

25 उक्तं गमिया आमियं । इदार्णि अगा-अण-पविट्ठं—तं च गमिया आमियं धेय समासतो अंगा-अंगपविट्ठं मण्यति । कइं ? उप्पये—सक्खसुतस्स सग्गात्तवगतधमता ।

७७ अइवा त ममासओ दुविहं पण्णत्तं, त जहा-अंगपविट्ठं अंगेवाहिरं च ।

७७ अइया अरिंरतमग्गाचदिद्राणुसारिं सुत्तं ज तं ममामतो बुबिहं इत्यादि सुत्तं ।

१ पइत्तं वा वा २ पइत्तं बहु वा वा ३ अइया इति नं लं कं उ मासि ४ इ इ वा अंगं ५ अंगपविट्ठं एव च चं इ कं उ ॥

पायदुगं जंधोरु गातदुगद्धं तु दो य वाहूयो । गीवा सिरं च पुरिसो वारसअंगो सुतविसिट्ठो ॥ १ ॥

[]

इच्चेतस्स सुतपुरिसस्स जं सुतं अंगभावभागट्ठितं तं अंगपविट्ठं भण्णाति । जं पुण एतस्सेव सुतपुरिसस्स वडरे-
गट्ठितं तं अंगवाहिरं ति भण्णाति । अहवा—

गणहरकत्तमगतं जं कत्त येरेहिं वाहिरं तं च । णियतं वंगपविट्ठं अणियत्त सुत्त वाहिरं भणितं ॥ १ ॥ 5

[]

७८. से किं तं अंगवाहिरं ? अंगवाहिरं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—आवस्सगं च आव-
स्सगवइरित्तं च ।

७९. से किं तं आवस्सगं ? आवस्सगं छव्विहं पण्णत्तं, तं जहा—सामायियं १ चउ-
वीसत्थओ २ वंदणं ३ पडिक्कमणं ४ काउस्सगो ५ पच्चक्खाणं ६ । से तं आवस्सयं । 10

७८-७९. से किं तं अंगवाहिरमित्यादि । कंठं ॥

८०. से किं तं आवस्सयवइरित्तं ? आवस्सयवइरित्तं दुविहं पण्णत्तं, तं जहा—कालियं
च उक्कालियं च ।

८०. आवस्सगवतिरित्तं दुविहं—कालियं उक्कालियं च । तत्थ 'कालियं' जं दिण-रातीणं पढम-
चरिमपोरिसीसु पढिज्जति । जं पुण कालवेलवज्जं पढिज्जति तं उक्कालियं ॥ तत्थ— 15

८१. से किं तं उक्कालियं ? उक्कालियं अणेगविहं पण्णत्तं, तं जहा—दसवेयालियं १
कप्पियाकप्पियं २ चुल्लकप्पसुत्तं ३ महाकप्पसुत्तं ४ ओवाइयं ५ रायपसेणियं ६ जीवाभिगमो
७ पण्णवणा ८ महापण्णवणा ९ पमायप्पमादं १० नंदी ११ अणुओगदाराइं १२ देविदत्थओ
१३ तंदुलवेयालियं १४ चंदावेज्जयं १५ सूरपण्णती १६ पोरिसिमंडलं १७ मंडलप्पवेसो १८
विज्जाचरणविणिच्छओ १९ गणिविज्जा २० ज्ञाणविभत्ती २१ मरणविभत्ती २२ आयवि- 20
सोही २३ वीयरायसुत्तं २४ संलेहणासुत्तं २५ विहारकप्पो २६ चरणविही २७ आउरपच्चक्खाणं
२८ महापच्चक्खाणं २९ । से तं उक्कालियं ।

८१. उक्कालियं अणेगविहं दसवेयालियादि । कप्पमकप्पं च जत्थ सुत्ते वणिज्जति तं कप्पियाकप्पियं
२ । कप्पं जत्थ सुत्ते वणितं तं कप्पसुत्तं, अणेगविहचरणकप्पणाकप्पयं [जे० २१४ प्र०] च कप्पसुत्तं । तं
दुविहं—चुल्लं महत्तं च । चुल्लं ति—लहुतरं अवित्थरत्थं अप्पगंथं च चुल्लकप्पसुत्तं ३ । महत्तं महागंथं च महा- 25

१-२ अणंगपविट्ठं ख० सं डे० ल० शु० ॥ ३ वंदणं ख० सं डे० ल० शु० ॥ ४ कावोसगो ख० ॥ ५ "ओवाइयं"ति
प्राकृतत्वाद् वर्णलोपे औपपातिकम्" इति पाक्षिकसूत्रवृत्तौ । उववाइयं शु० मु० ॥ ६ रायपसेणीयं ख० । रायपसेणइय डे०
ल० शु० ॥ ७ चक्खाण २९ पवमाइ । से तं जे० मो० मु० । पवमाइ इति सूत्रपद चूर्णि-वृत्तिरुद्धिर्नास्ति व्याख्यातम् । अपि
च जेसु प्रती अत्रायं "दीकायामिदं न दश्यते" इति टिप्पनकमपि वर्तते ॥

- कप्पसुत्त ४ । एवेव [पेण्णबणा] पण्ययणत्थो सवित्थरा ८ । अण्णे य सवित्थरात्था जत्थ मणित्ता सा महा-
पण्णबणा ९ । मज्जादियो पंचविहो पमातो, तेसु वेव आमोगपुञ्चिया उवरती अण्यमातो, एते जत्थ सवित्थरात्था
दंसिज्जति तमअण्ययणं पमादण्यमादं १० । घूरचरितं पण्यविअत्ते जत्थ सा सूरपण्णत्ती १६ । पुरितो चि-संइ
पुरिमिसरीर वा, ततो पुरिसातो निण्णम्मा पारिसी, एवं सण्यस्स वत्थुको भद्दा स्ममाया ष्छाया भवति तदा
५ पोरिसी भवति, एतं पोरिसिममाथ उचराययत्स अंते दक्खिन्नायाणस्स य आदीए एक्क दिअं भवति, अतो परं ष्छ
एक्कमट्टिमागा अणुस्स दक्खिन्नायाणे वड्ढंति, उचरायणे य इत्तंति, एवं मंडळे मडळे अण्णोम्मा पोरिसी जत्थ
अण्ययणे दंसिज्जति तमअण्ययण पोरिसिमंडळं १७ । चवस्स घूरस्स य दादिणुचरेसु मंडळेसु जहा मंडळातो मडळे
पबेसो तदा बणिज्जति जत्थअण्ययणे तमअण्ययण मंडळलण्यबेसो १८ । चिअ चि-नायं, चरण-चारिणं, विविपो
विसिद्धो वा मिअयो-सम्मात्रो स्वरूपमित्यथा, फलं वा निअयो, त जत्थअण्ययणे बणिज्जति तमअण्ययण विअ
१० चरणबणिज्जिअयो १९ । सवाम-बुद्धाडलो गण्णो गण्णो, सो नत्स भत्थि सो गणी, विअ चि-आजं, तं प
भोइसनिमिचगत गातुं पत्तयेसु इमे क्खे करति, तं जहा-पव्वाथाय १ सामाइयारोरुअं २ उट्ठावणा ३ घुवस्स
उरुस-समुवेसा ५ण्णत्तो ४ गणारोणं ५ दिसाणुणा ६ खेत्तेसु य भिअम-पबेसा ७, एमाइया क्ख्या जेसु तिदि
करय-अवखुच-बुद्धच-ओगेसु य जे जत्थ करमिअ [४० २१४ दि०] ते जत्थअण्ययणे बणिज्जति तमअण्ययण
गणिविअ २० । घिरमअण्यवसावं ज्ञाव, विमयणं विमची, समेदं ज्ञाव जत्थ बणिज्जति अण्ययणे तमअण्ययणं
१५ ज्ञाणविमची २१ । मरुअं-पाणपरिआयो, विमयणं-विमची, पत्तयमपत्तयाभि समेदायि मरवाभि जत्थ
बणिज्जति अण्ययणे तमअण्ययण मरणविमची २२ । आत चि-आत्मा, तस्स वित्तोही तणेण चरमपुणेहिं य
आलोयणाविहाणेण य जहा भवति तदा जत्थ अण्ययणे बणिज्जति तमअण्ययण आतविसोही २३ । सरागो
धीतरागा य एतेसिं जत्थ सक्ककप्पा, विसेसतो धीतरायस्स, तमअण्ययण धीतरागास्तुत्तं २४ । माघातो निअयातो
वा मचमंछेहो क्खयाविमापसंछेहो य भा जहा कातव्यो तदा बणिज्जते जत्थअण्ययणे तमअण्ययण संछेहणास्तुत्तं
२० २५ । विहरअं विहारो, तस्स कप्पा-विधि चि वुचं भवति, सो मिणकप्पे वेरकप्पे वा, मिणकप्पे पडिम-अडामंइ
परिहारिया य वट्ठमा, एतेसिं सवित्थरो विधी जत्थ अण्ययणे [बणिज्जति] तमअण्ययण विहारकप्पो २६ ।
चरण-चारिणं तस्स विधी चरणविधी, समेदो चरमविधी बणिज्जति जत्थ अण्ययणे तमअण्ययण चरणविधी २७ ।
आठरो-गिआवा, तं किरियातीतं भातुं गीतत्था पचक्खायंति, दिणे दिणे इअत्तासं करंता अंते य सण्यइअत्ता-
पताए मचे वेरमं जनेवा मचे निअणस्स मचवरिमपचक्खायं करंति, एतं जत्थअण्ययणे सवित्थरं बणिज्ज
२५ तमअण्ययणं आठरपचक्खायणं २८ । वेरकप्पेणं जिणकप्पेव वा विहरिया अंते वेरकप्पिया वारस पासे संछेहं
करेवा, मिणकप्पिया पुअ विहारेणेन [४० २१५ प्र] संलीहा तदा वि जहावुचं संछेहं करेवा निअयातात्तं सचेहा
थेव मचचरिसं पचक्खंति, एत सवित्थरं जत्थअण्ययणे बणिज्जति तमअण्ययण महापचक्खायणं २९ । एते
अण्ययणा महाभिपाणत्था मणिया ॥

उत्तं उट्ठासियं । इदामिं कालियं—

- ३० ८२ से किं त कालियं ? कालियं अणेगविह पण्णत्तं, तं जहा-उत्तरअण्ययणाइ १
दसाओ २ कप्पो ३ ववहारो ४ णिसीह ५ महाणिसीह ६ इसिभासियाइ ७ जंभुहीवपण्णत्ती

१ 'धीतादीयं अण्ययणं महापण्णत्तं' इति दारिअत्तो ८ २ कालियं अणेगविहं ? कालियं अणेगविहं अनेग च
चं ३ । भाव पाठ्युग्नि-वृत्तिवृत्तां अण्ययणेण ॥

८ दीवसागरपण्णत्ती ९ चंदपण्णत्ती १० खुड्डियाविमाणपविभत्ती ११ महल्लियाविमाणपविभत्ती
 १२ अंगचूलिया १३ वंगचूलिया १४ विवाहचूलिया १५ अरुणोववाए १६ गरुलोववाए १७
 धरणोववाए १८ वेसमणोववाए १९ देविदोववाए २० वेलंधरोववाए २१ उट्टाणसुयं २२ समु-
 ट्टाणसुयं २३ नागपरियाणियाओ २४ निरयावलिंयाओ २५ कप्पवडिसियाओ २६ पुप्फियाओ
 २७ पुप्फचूलियाओ २८ वण्हीदसाओ २९ ।

5

८२. से किं तं कालियं इत्यादि सुत्तं । जं इमस्स निसीहस्स सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं तं महाणिस्सीहं
 ६ । सोहम्मादिमु जे विमणा ते आवलितेतरट्टिते प्रतिविभागेण विभयइ जमज्जयण तं विमाणपविभत्ती
 भण्णति । ते य दो अज्जयणा-तत्थेगं सुत्तत्थेहिं संखित्तर खुड्डं ति ११, वितियं सुत्तत्थेहिं वित्थिण्णतरं महल्लं
 ति १२ । अंगस्स चूलिता जहा-आयारस्स पंच चूलातो, दिट्ठिवातस्स वा चूला १३ । वग्गो ति विवक्खाव-
 सातो अज्जयणादिसमूहो वग्गो, जहा अंतकडदसाणं अट्ट वग्गा, अणुत्तरोववातिदसाणं तिण्णि वग्गा, तेसिं चूला 10
 वग्गचूला १४ । वियाहो भगवती, तीए चूला विवाहचूला, पुव्वंभणितो अभणियो य समासतो चूलाए अर्थो
 भण्यतेत्यर्थः १५ । अरुणे णाम देवे तस्समयनिवद्धे अज्जयणे, जाहे तं अज्जयणं उवउत्ते समणे अणगारे परियट्ठेति
 ताहे से अरुणे देवे समयनिवद्धत्तणतो चलितासणे जेणेव से समणे तेणेव आगच्छित्ता ओवयति, ताहे समणस्स
 पुरतो अंतद्धिते कतंजली उवउत्ते सुणेमाणे चिट्ठति, समत्ते य भणति-सुभासितं, वरेह वरं ति, इहलोगणिप्पिवासे
 से समणे पडिभणति-ण मे वरेण अट्टो त्ति, ताहे से पदाहिणं करेत्ता णमसित्ता य पडिगच्छति १६ । एवं गरुले 15

१ वंगचू ख० स० ल० शु० ॥ २ वियाहं शु० ल० ॥ ३ उववपपदान्तानि सूत्रनामानि अस्मदादतास्वष्टासु सूत्रप्रतिपु
 चूर्ण्यादर्शेषु हारि०वृत्तौ मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकसूत्रयशोदेवीयवृत्तौ च कमव्यख्यासेन न्यूनाधिकभावेन च वर्तन्ते । तथाहि—
 अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेसमणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उट्टाणं जेसु० मोसु०
 सुसु० । अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए धरणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेसमणोववाए उट्टाणं डे० ।
 अरुणोववाए वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेसमणोववाए उट्टाणं स० शु० । अरुणोववाए
 वरुणोववाए गरुलोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए उट्टाणं ख० । अरुणोववाए वेलंधरोववाए देविदोववाए वेस-
 मणोववाए उट्टाणं ल० । अथ च—अरुणोववाए इति सूत्रनामव्याख्यानानन्तर हरिभद्रवृत्तौ “एव वरुणोववादादिषु वि भाणियव्व”
 इति, मलयगिरिवृत्तौ च “एव गरुडोपपातादिष्वपि भावना कार्या” इति, पाक्षिकसूत्रवृत्तौ च “एव वरुणोपपात-गरुडोपपात-
 वैश्रमणोपपात-वेलंधरोपपात-देवेन्द्रोपपातेष्वपि वाच्यम्” इति निर्दिष्ट दृश्यते । चूर्ण्यादर्शेषु पुन पाठमेदत्रय दृश्यते—१ श्री-
 सागरानन्दसूरिसुव्रिते चूर्ण्यादर्शे [पत्र ४९] “एव गरुले वरुणे वेसमणे सक्रे-देविदे वेलधरे य त्ति” इति, २ श्रीविजयदान-
 सूरिसम्पादिते सुव्रितचूर्ण्यादर्शे [पत्र ९०-९] “एव वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलधरे सक्रे-देविदे य त्ति” इति ३ अस्मा-
 भिरादृते शुद्धतमे जेसलमेरुसत्के तालपत्रोयप्राचीनतमचूर्ण्यादर्शे च “एव गरुले धरणे वेसमणे सक्रे-देविदे वेलधरे य त्ति” इति
 च । श्रीसागरानन्दसूरीयो वाचनामेद आदर्शान्तरेषु प्राप्यते, श्रीदानसूरीयो वाचनामेदस्तु नोपलभ्यते कस्मिंश्चिदप्यादर्शे इत्यत सम्मा-
 व्यते—श्रीमद्दिदानसूरिभि सुव्रितसूत्रादर्श-चूर्ण्यादर्शान्तर-हारि०वृत्ति-पाक्षिकसूत्र्याथवलोक्नेन प्थाठगलनसम्भावनाया सूत्रनामप्रक्षेप कममेद-
 ध्यापि विहितोऽस्तीति । अस्माभिस्तु जेसलमेरीयचूर्णिप्रत्यनुसारेण सूत्रपाठे मूले स्थापितोऽस्तीति ॥ ४ ॥ परियावणियाओ जे० स० डे० शु० ।
 ५ परियावलिंयाओ ख० मो० ल० ॥ ५ ॥ याओ कप्पियाओ कप्पवडिं सर्वासु सूत्रप्रतिपु । श्रीमता चूर्णिकृता कप्पियाओ इति
 नाम आदृत नास्ति । किञ्च-सर्वासुपि नन्दिसूत्रप्रतिपु एतश्राम दृश्यते, श्रीहरिभद्रसूरि-मलयगिरिवृत्तयोः पाक्षिकसूत्रटीकायां
 चापि एतश्रामव्याख्यान वर्तते । तथाहि—“कप्पियाओ” त्ति सौधर्मादिकल्पगतवक्त्रव्यतागोचरा ग्रन्थपद्धतय कल्पिका उच्यन्ते ।”
 नन्दीहारि०वृत्तिः । एतत्समानेव व्याख्या मलयगिरिवृत्तौ पाक्षिकटीकाया च वर्तते ॥ ६ ॥ वण्हीदसाओ इति नाम्न प्राक्
 वण्हीयाओ इत्यधिकं नाम शु० । नेद नाम चूर्णि-चूर्ण्यादिषु व्याख्यात निर्दिष्ट वाऽस्ति ॥ ७ ॥ एव गरुले वरुणे वेसमणे सक्रे-
 देविदे वेलधरे य त्ति आ० मो० । एव वरुणे गरुले धरणे वेसमणे वेलंधरे सक्रे-देविदे य त्ति दा० ॥

- १७ घरणे १८ वेसमणे १९ सकेवेवेदे २० वेळघरे २१ य पि । 'उद्वाणसुते' ति अम्हयव सिंगाबायंऊजे
 जस ण गामस पा नाव रायभाणीए वा एगइसस वा समणे आसुते के उवउचे तं उद्वाणसुते चि अम्हयव
 परियेति एकं दो तिष्णि वा बारे ताहे से गामे वा नाव रायभाणी वा हुस वा उद्वेति, उम्हस चि सुवं मयति
 २२ । से वेव समणे [बे० २१५ द्व०] तस गामस पा नाव रायभाणीए वा दुद्वे समणे पसणे पसवळेस्ते
 ५ सुवासण्य उवउचे समुद्रासुते परियेति एकं दो तिष्णि वा बारे ताहे से गामे वा नाव रायभाणी वा नावासेति ।
 समुद्रासुते चि पसवे वारसोवातो समुद्राणसुते चि मणित । अयणा पुम्हद्वियं पि क्वसंकप्यस नावासेति
 २३ । 'णागपरियाणिय' चि अम्हयणे भाग चि-नागइभारे, वेसु समयनिबर्दे अम्हयण, त अदा समणे उवयुचे
 परियेति तथा अकृतसकप्यस पि त भागइभारा तत्यत्वा वेव परियाणति, अंति णमसति मयिबहुमाव ष
 करेति, सिंगाबायकजेसु य परया मयतीत्यर्थः २४ । निर्यावलितासु आबलियपविद्वेतेरे य निरया तनामिणे
 १० य मर तिरिया पसगतो षणिज्जति २५ । सोहमीसाणकप्येसु ते कप्यविमाया ते कप्यवदेसया ते षण्णिता, वेसु
 य वेधीमो वा जेव तथोविसेसेव उवयव्वा ता षण्णिता, तामो य कप्यवदेसिया मणिया २६ । सजमभाव-
 विगसितो पुफ्फितो, सजमभावविजुतोऽपुफ्फितो, अमारभाव परिद्वेत्ता पम्हज्जाभावेण विगसितो पम्हा सीय
 जो, तस इहमवे परमव य विम्हव्या दंसिज्ज अत्य ता पुफ्फिया २७ । एसेवस्यो तविसेसो पुफ्फव्हाए
 दंसिज्जति २८ । अयगवपिणो जे कुले ते अयगसइसोवाता षणिणो मणिया, तेसि चरियं गती सिम्हवा य
 १५ अत्य मणिता ता षण्हवसतो । एस चि-भवत्या अम्हयव्या वा २९ ॥

८३ एवमाइयाइं चउरासीतीपइण्णगसइस्साइं भगवतो अरइओ उंसइस्स आइतित्यए
 रस, तहा संस्वेज्जाणि पइण्णगसइस्साणि मज्झिमगाणं जिणवराण, चोइस पइण्णगसइ
 स्साणि भगवतो वद्धमाणसामिस्स । अहवा जस जत्तिया सिस्सा उपपत्तियाए वेणतियाए
 कम्मयाए पारिणामियाए चउव्विहाए सुद्धीए उववेया तस तत्तियाइं पइण्णगसइस्साइ, पसेय
 २० बुद्धा वि तत्तिया चेव । से च कालियं । से च आवस्सयवइरितं । से च अणंगपविट्ठ ।

८५ भगवतो उसमस चउरासीतिसमवसाइस्सीतो होत्वा, पइण्णगज्जयमा वि सव्भे कालिय-उक्कालिया
 चउरासीतिसइस्सा । इदं ? जतो ते चउरासीति समणसइस्सा अइतममउवविद्वे भं सुतमपुसरिणा किं
 पिअइंते ते सव्भे पइण्णगा, अहवा सुतमपुस्सरतो अयणो वयणकोसल्लेव भं भम्मवेसणादिदु मासंते तं सव्भं
 पइण्णगं, भम्हा अर्धसमपज्जयं सुचं दिद्व । तं च वयम नियमा अम्हवरगमाशुपाती मयति तम्हा तं [बे० २१९ प्र०]
 २५ पइण्णग । एवं चउरासीती पइण्णगसइस्सा मयतीत्यर्थः । एतेव विविधा मज्झिमवित्थगराभं संसेज्जा पइण्णगस-
 इस्सा । समणस वि भगवतो भम्हा चोइस समवसाइस्सीतो उक्कोसिया समवसंपदा तम्हा चोरस पइण्णगज्जय-

१ पाठि सं । २ भगवतो अरइओ चिरिउसइसामिस्स मज्झिमगाणं जिणायं संस्वेज्जाणि पइण्णगसइ
 स्साणि चोइस सं ३ । भगवतो अरइओ इसइस्स समणायं मज्झिमगाणं इभवे इ । सव्भो उवइरिस्सि-
 (चिरि)स्स समवसस मज्झिमगाणं एवादि च । वयाभावकेणं वादेराथं मज्झिमगाणं इवापुत्तसकेन तयम्होऽपि
 केउरोऽपि पाठे बुत्तित्तो लम्हा । इतिउसइसामिस्स इति पाठे एव पाठे एवोऽपि । बुत्तित्ता पुः सं ३ पाठ्यकारेण
 प्पत्तवत्तवत्तति सम्भावंत । ३ चिरिउसइसामिस्स इति पाठे एवोऽपि । ४ सीधा च सं बुत्त विवा ॥

णसहस्सा भवन्ति । अहवा 'जत्तिया सिस्सा' इत्यादि सुत्तं । इह सुत्ते अपरिमाणा पइण्णगा पइण्णगसामिअपरिमाण-
त्तणतो, किंच इह सुत्ते पत्तेयबुद्धप्पणीतं पइण्णगं भाणितव्वं । कम्हा ? जम्हा पइण्णगपरिमाणेण चैव पत्तेयबुद्धपरि-
माणं कीरइ त्ति भणितं 'पत्तेयबुद्धा वेत्तिया चैव' त्ति । चोदक आह-णणु पत्तेयबुद्धा सिस्सभावो य विरुज्जते ?
आचार्याह-तित्थगरणीयसासणपडिवन्नत्तणतो तस्सीसा भवन्तीत्यर्थः ॥

भणितं कालितसुत्तं अंगवाहिर च । इदार्णि अंगपविट्टं—

5

८४. से किं तं अंगपविट्टं ? अंगपविट्टं दुवालसविहं पण्णत्तं, तं जहा-आयारो १ सूय-
गडो २ ठाणं ३ समवाओ ४ वियाहपण्णती ५ नायाधम्मकहाओ ६ उवासगदसाओ ७ अंतगड-
दसाओ ८ अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ पण्हावागरणाइं १० विवागसुत्तं ११ दिट्ठिवाओ १२ ।

८४. से किं तं अंगपविट्टं इत्यादि सूत्रम् ॥

८५. से किं तं आयारे ? आयारे णं समणाणं णिगंथाणं आयार-गोयर-विणय-वेणइय- 10
सिक्खा-भासा-अभासा-चरण-करण-जाया-माया-वित्तीओ आघविज्जंति । से समासओ पंच-
विहे पण्णत्ते, तं जहा-णाणायारे १ दंसणायारे २ चरित्तायारे ३ तवायारे ४ वीरियायारे ५ ।
आयारे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा,
संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए पढमे अंगे, दो
सुयक्खंधा, पणुवीसं अज्झयणा, पंचासीती उद्देसणकाला, पंचासीती समुद्देसणकाला, अट्टा- 15
रस पयसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा,
अणंता थावरा । सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्ण-
विज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं नाया,
एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवण्णा आघविज्जइ । से तं आयारे १ ।

८६. [से किं तं आयारे इत्यादि सुत्तं] । आयरणं-आयारो । गोयरो-भिक्षागहणविधानं । विणयो- 20
णाणातियो तिविहो वावण्णविधानो वा । वेणइया-सीसा, तेसिं जहा आसेवणसिक्खा । भासा-सच्चा असच्चा मोसा
य । अभासा-मोसा सच्चा मोसा य । चरण-"वत्तसमिति०" गाहा [] । करणं-"पिंडस्स जा

१ इह तित्थे अपरिमाणा इति पाठो मलयगिरिसुत्तं चतुर्थेऽध्याये ॥ २ सूयगड स० ॥ ३ विवाहं ख० विना ॥
४ वाइणा ल० ॥ ५ चूर्णी संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, इति पाठो व्यत्यासेन व्याख्यातोऽस्ति ॥
६-७ सीइ ल० ॥ ८ स्सार्ति शु० । स्साणि मो० मु० ॥ ९ चूर्णिक्कता पवआया इति पाठो न गृहीतो न च व्याख्यातोऽस्ति,
किन्तु श्रीहरिभद्रसूरिणा श्रीमलयगिरिणा च एष पाठो गृहीतोऽस्ति, साम्प्रत च प्राप्तासु सर्वास्त्रपि नन्दीसूत्रमूलप्रतिपु एष पाठो
दृश्यते । समवायाङ्गसूत्रवृत्तावमयदेवसूरिभिः पवआया इति पाठो नन्दीसूत्रवृत्तेनाऽऽहतो व्याख्यातश्चापि दृश्यते । तैरेव च तत्र स्पष्ट
निर्दिष्टं यद्-असौ पाठो न समवायाङ्गसूत्रप्रतिपु वर्तते इति । एतच्चैवं सूचयति यत्-चूर्णिकारप्राप्तप्रतिभ्यो भिन्ना एव नन्दीसूत्रप्रतयो
हरिभद्रादीना समक्षमासन्, तथाऽभयदेवसूरिप्राप्तासु समवायाङ्गसूत्रप्रतिपु एष पाठो नासीत् । सम्प्रति प्राप्यमाणसु च समवा-
याङ्गसूत्रस्य कतिपयासु प्रतिपु दृश्यमान एष पाठोऽभयदेवसूरिनिक्षिप्त-व्याख्यातपाठानुरोधेनैवाऽऽयात इति सम्भाव्यते ॥ १० वणया
आं ख० ल० ॥ ११ आचारे ल० ॥

- किसोही०" गाहा [मन्व. भा. उ. १ गा २८९]। आय चि—सजमनवा, तस्स साहयत्वं आहारो मात चि—माषाजुषो
 वेसग्गो । वर्तनं वृषो । एतं सम्ब आयाप 'आपविञ्जइ' चि भाम्भ्यायते । सुचमत्पस्स य पदाब्बं नायणा सा परिवा,
 म्भंवा ण मवति, भादि-अतोवर्धमत्तपवा । भइवा ओसपिपि-उत्सपिपिकालं वा पइव परिचा, तीवा ज्यागत
 सम्बद्दं च पइव अयता । उवकमादि णामादिगिक्खेवकरणं च अपियोगरारा, ते आयापे संखेज्जा, तेसि पम्बक-
 5 गवयणगौररुणतो । वदो—उदनाती । 'पठिक्खीओ' चि द्दग्गादिपदत्थम्भुवगमो पठिमा ऽमिमाइपित्सेसा य
 पठिक्खीओ, ते समासतो सुत्तपठिक्खी संखेज्जा । तिक्खिा जेक्क निक्खेवमादिनिष्पुती तेक्क सखेज्जा । गव वमवेरा
 पिंवेसभा सेज्जा इरिया मासजाया सत्थेसणा पाठेसणा [जे० २१९ द्वि०] भोमाइपठिमा सत्तसत्तिकाया माषवा
 विमोची, एते एषं गिसीइयका पणुवीस अञ्जपणा । पचासीती उरेसणकाला । एत्तं ? उप्पते—अंभास्स सुत्तवर्त्त-
 पस्स अञ्जपणस्स उरेसास्स, एते चउरो भि एषो उरेसणकालो । एषं सत्थपरिष्वाए सत्त उरेसणकाला, साग-
 10 विनयस्स छ, सीतोसपिञ्जस्स चट्टो, समचस्स चट्टरा, लोगसारस्स छ, धुयन्स पंच, महापरिष्वाए सत्त, विमो-
 हावत्थस्स अद्ध, उववाणसुत्तस्स चट्टो, पिंवेसभाए एकारस, सज्जाए तिग्गि, इरियाए तिग्गि, मासजाताए दो,
 सत्थेसणाए दो, पाठेसभाए दो, उमाइपठिमाए दो, सत्तिकायाणं सत्त, मानणाए एक्को, विमोचीए एक्का, एते सम्भे
 पचासीति । चोदक आइ—नदि दो सुत्तवर्त्तवा पणुवीसं अञ्जपणा य अहारस पदसइस्सा पदग्गेयं मवति तो सं मपित
 "जवमवेरमाग्गो अट्टारसपवत्तसिस्सतो वदा ।" [आजा० लि गा० ११] चि एतं विक्कइति ? आचार्यं माइ—पणु-
 15 एत्थं नि मणित्तं 'सर्पचत्वा अट्टारसपवत्तसिस्सतो वेदा' चि, इह सुत्तालावपपठेहि सारितो पइ बहुतरा य इत्थं
 म्भेत्यर्थः । आइवा दो सुत्तवर्त्तवा पणुवीस अञ्जपणा य, एतं आयापसहितस्स आयापस्स पमाण मणित्तं । अट्टारस
 पदसइस्सा पुण पवमसुत्तवर्त्तपस्स जवमवेरमइयस्स पमाण । त्रिचित्तपवद्दा य सुत्ता, सुत्तदेसतो सि अत्थो
 भाणित्तवत्तो । अक्खरपणाए संखेज्जा अक्खरा । अमिषत्तामिषेपत्तता गमा मरंति ते य मभंता इमेण
 विषिणा—सुत्तं मे आउत्तं तेणं मगवता, तं सुत्तं मे आउत्त, तर्हि सुत्तं मे आ०, आ सुत्तं मे आ०, तं सुत्तं मया आ०,
 20 तदा सुत्तं मदा आ , तर्हि सुत्तं मदा आ०, एवमादिगमेहि मन्थमाय मभंत्तगमं । अक्खरपण्णएहि अत्थपण्णएहि
 य मभंत्तं । परिचा तसा, अर्धंवा च मवति । म्भंवा वासरा पवण्णइसहिता । सासत्त चि पंचत्थिकाइयाइया । क्व
 चि—किप्पिमा, पयोगठो वीससापरिणामता [जे० २१७ प्र] वा जहा अम्भमा अम्भक्कलादी । एते सम्भं आयापे
 सुत्थेक्क निक्कदा । निष्पुत्ति-साहगि-वेत्तदाहरवादिएहि य गिकाइया । किंच एते अण्णे य 'निजणप्पत्ता' जिण-
 प्पत्तीया माहा 'आपविञ्जति' जाव उव्वंसिञ्जति—एतेसि पदायं पूर्ववत् ध्यायया । एषंविदमायां अरिजित्तं से
 25 इरित्ते 'एय' ति जहा आयापे निक्कदा पक्खिता य तदा सव्वदक्क-माभाक्क पाता मवति । त्रिक्खिं चि—अणेगधा
 भाजमाणो विष्णाता मवति । म्भणपाषाडुगेहिरो वा विसिद्धत्तरे विसिद्धपरा वा भाजमायां विष्णाता मवति । सेस
 निगममाद्युपं कंठं । से सं आयापे १ ॥

८९ से किं त सूयगडे ? सूयगडे णं लोए सुइज्जइ, अलोए सुइज्जइ, लोया ज्लोए
 सुइज्जइ, जीवा सुइज्जंति, अजीवा सुइज्जंति, जीवा ऽजीवा सुइज्जंति, सममए सुइज्जइ,
 30 परसमए सुइज्जइ, ससमय-परसमए सुइज्जइ । सूयगडे णं आसीतस्स किरियावादिसयस्स,
 चउरासीइए अकिसियेवादीणं, सत्तट्ठीए अण्णाणियवादीणं, धत्तीसाए वेणइयवादीणं, तिण्हं

तेसद्द्वानं पावादुयसयाणं वृहं किञ्चा ससमए ठविज्जइ । सूयगडे णं परिता वायणा, संखेज्जा
अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ
पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए विइए अंगे, दो सुयक्खंधा, तेवीसं अज्झयणा, तेत्तीसं
उद्देसणकाला, तेत्तीसं समुद्देसणकाला, उत्तीसं पदसहस्साणि पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा,
अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-णिकाइया 5
जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पणविज्जंति परुविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव-
दंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुवणा आघविज्जइ ।
से तं सूयगडे २ ।

८६. से किं तं सूयगडेत्यादि युत्तं । 'सूइज्जइ' चि जथा णट्ठा सूइ तंतुणा सूइज्जइ, उवल्लभतेत्यर्थः ।
अहवा जहा सूयी पढं सूतेइ तहा सूयगडे जीवादिपदत्था सूइज्जंति । 'वृहं' किञ्च चि प्रतिव्यूहं, तेण प्रतिव्यूहेन ते 10
परुपवादी णिप्पट्ट-पसिणे कातुं सममयस्स सबभावे ट्ठाविज्जति । उद्देसयपरिमाणं नातुं उद्देसणकाला जाणंजा ।
सेसं कंठं । से तं सूयगडे २ ॥

८७. से किं तं ठाणे ? ठाणे णं जीवा ठविज्जंति, अजीवा ठविज्जंति, जीवा-ऽजीवा
ठाविज्जंति, → लोए ठविज्जइ, अलोए ठविज्जइ, लोया-ऽलोए ठविज्जइ, ← ससमए
ठाविज्जइ, परसमए ठविज्जइ, ससमय-परसमए ठविज्जइ । ठाणे णं टंका कूडा सेला 15
सिहरिणो पवभारा कुंडाइं गुहाओ आगरा दहा णदीओ आघविज्जंति । ठाणे णं एंगाइयाए
एगुत्तरियाए वुड्डीए दसद्द्वानगविवड्ढियाणं भावाणं परुवणया आघविज्जंति । ठाणे णं परिता
वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगां, संखेज्जाओ निज्जु-
त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए तइए अंगे,
एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, एकवीसं उद्देसणकाला, एकवीसं समुद्देसणकाला, वावत्तरिं 20
पदसहस्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा,
अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पणविज्जंति

१ तेवद्द्वानं ख० स० जे० डे० ल० । हरि०युत्तौ समवायाङ्गसूत्रादिषु च तेसद्द्वानं इति पाठो वर्तते ॥ २ पासंद्धिय
सयाण जे० डे० मो० मु० । श्रीमलयगिरिभिरयमेव पाठ आहतोऽस्ति । ३ विद्विण शु० । विइए ल० ॥ ४ उज्जति ख० शु० ल०
डे० ॥ ५ → ← एतच्चिह्नमध्यवर्ती पाठ जे० मो० मु० प्रतिषु ससमय-परसमए ठाविज्जइ इति पाठनन्तरं वर्तते ॥ ६ ठाणे णं
इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥ ७ एंगाइयाणं एगुत्तरियाणं दसठानं स० डे० ल० शु० ॥ ८ षणा जे० मो० ॥ ९ उज्जति ख०
संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं ख० स० ल० शु० समवायाङ्गसूत्रे च । सिलोगा,
पज्जवा इति नास्ति ॥

परुविज्जति दंसिज्जति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुर्वणा आघविज्जइ । से तं ठाणे ३ ।

८७ से किं तं ठाणेस्त्वादि घृत्तं । 'ठाविज्जति' चि स्वरूपत स्याप्यंते, मङ्गाप्यंतेत्यर्थः । छिष्ण तदं टक । कृद्धं ति-अहा वेतइइस्सोरि नव सिद्धायत्ताइया कृद्धा । इमवतादिया सेत्ता । सिद्धरेण सिद्धी, अहा केतइयो । अ कृद्धं उपरि अंबलुअय व पम्मारं, अ वा पम्भयस्स उपरिमाणे इत्थिइमागिइ कृद्धं निमायं तं पम्मारं । गंगादिया इद्धा । विमिसादिया एहा । रूप्य-सुवण्ण-रत्तणादिया भागरा । पोद्धरीयादिया वैषा । ग्गा-सिधुमादियाओ णदीओ । सेसं कठ । से तं ठाणे ३ ॥

८८ से किं त समवाए ? समवाए ण जीवा समासिज्जति, अजीवा समासिज्जति, जीवा ऽजीवा समासिज्जति, लोए समासिज्जति, अलोए समासिज्जति, लोया ऽलोए समासिज्जति, ससमए समासिज्जति, परसमए समासिज्जति, ससमय-परसमए समासिज्जति । समवाए ण एगाइयाणं एगुत्तरियाणं अणगसयविवट्ठियाण भावार्णं परुवणा आघ-विज्जति । दुवाल्लंसगस्स य गणिपिडगस्स पंळवग्गे समासिज्जति । समवाए णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा मिलोगां, संखेज्जाओ णिज्जू-चीओ संखेज्जाओ पडिवतीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं अंगइयाए चउत्थे १५ अगे, एगे सुयक्खंवे, एगे अज्जयणे, एगे उद्वेसणकाले, एगे समुद्वेसणकाले, एगे चोयाले पदसयसइस्से पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अर्णता गमा, अर्णता पज्जवा, परित्ता तसा, अर्णता यावरा, सासत-कड णिवद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति दंसिज्जति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जात । से एवआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरुर्वणा आघविज्जति । से तं समवाए ४ ।

८९ से किं तं समवाए इत्थादि । समवाए निषखेवो चतुम्भियो । वृत्ते सधियादिवृत्तसमवाठो, भाष-समवाठो इमं वेव अं । अहा अत्य वा एगत्वं ओदइयाइ इह मावा सणियादियसनीगा वा भावसमवाठो । भाषसमवाए वा इमं गिरुत्तं-भीवा 'समासिज्जति' सम आसइज्जति । सम ति-ण विसमं, अहावरियतं अमूनादि रिक्तं इत्यर्थः । आसइज्जति-भाभीर्यंते, बुद्धया ज्ञानेन शब्दंतेत्यर्थः । अहा समास चि-इहसग्गेऽमिहित- १० २१७ दि० सम्भपदत्थाण समासतो विपरिसो चि । सेसं कठ । उक्तं समवायः ४॥

१ अथवा अ त क इ ण २ उज्जति अं अं के अ ण ३ अहा एवर्कः ॥ ४ कसविद्धस्त मो के ण ५ पडवन्तो सं । पडवन्तो इत्यन्वयो—'एवा इवकाएव व गच्छिउत्तव्य 'अज्जन्तो' ति पर्यवरीमाण वसिधेवादिउवदसंकेतस्य क्वा वरिता उता' इत्यादि । पर्यवत्तव्य व 'अज्ज' ति निर्रेण उज्जवत्तव्य पर्यवत्तव्य इत्यादिनिधिति । अथवा उता इव अज्जन्ता-अवकाएवरीमाणस्य ।' इति समवायाइहसग्गुत्तिः १११-१ ५ने ३ वायस्स अं न के मो ण ७ केत्तं के-विनाऽप्यन-सिद्धेया, संखेज्जाओ संगहणीओ । से तं अं अं अ इ । सिद्धीया संवेगसाओ जिज्जूचीओ, संखेज्जाओ पडिवतीओ । से तं मो सु ण ८ अथवा अ ण ९ उज्जति अं अं ॥

८९. से किं तं वियाहे ? वियाहे णं जीवा वियाहिज्जंति, अजीवा वियाहिज्जंति, जीवा-अजीवा वियाहिज्जंति, लोए वियाहिज्जति, अलोए वियाहिज्जति, लोया-अलोए वियाहिज्जति, ससमए वियाहिज्जति, परसमए वियाहिज्जति, ससमय-परसमए वियाहिज्जति । वियाहे णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगां, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । 5
से णं अंगट्ठयाए पंचमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, एगे सातिरेगे अज्झयणसते, दस उदेसग-सहस्साइं, दस समुदेसगसहस्साइं, छत्तीसं वागणसहस्साइं, दो लक्खा अट्ठासीतिं पयसह-स्साइं पयग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परू-विज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, 10 एवं चरणकरणपरूवणा आघविज्जइ । से तं वियाहे ५ ।

८९. से किं तं वियाहेत्यादि । 'वियाहे' ति व्याख्या, इह जीवाद्यो व्याख्यायंते । इह सतं चैव अज्झ-यणसण्णं । गोतमादिएहिं पुट्टे अपुट्टे वा जो पण्हो तव्वागरणं [च] । सेसं कंठं । से तं वियाहे ५ ॥

९०. से किं तं णायाधम्मकहाओ ? णायाधम्मकहासु णं णायाणं णगराइं उज्जाणाइं चेइयांइं वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहलोग-पर- 15 लोगिया रिद्धिविसेसा भोगपरिच्चागा पव्वज्जाओ परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं संले-हणाओ भत्तपच्चक्खाणाइं पाओवगमणाइं देवलोगगमणाइं सुकुलपच्चायाइंओ पुणवोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । दस धम्मकहाणं वग्गा । तत्थ णं एगमेगाए धम्मकहाए पंच पंच अक्खाइयासयाइं, एगमेगाए अक्खाइयाए पंच पंच उवक्खाइयासयाइं, एगमेगाए उवक्खाइयाए पंच पंच अक्खाइओवक्खाइयासयाइं, एवमेव सपुव्वावरेणं अद्धुट्ठाओ कहाण- 20 गकोडीओ भवंति ति मक्खायं । णायाधम्मकहाणं परित्तां वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,

१-२ विवाहे जे० मो० सु० ॥ ३ विवाहस्स णं जे० हे० मो० सु० ॥ ४ हे० विनाअन्यत्र—सिलोगा, संखेज्जाओ संगहणीओ । से णं ख० स० ल० शु० । सिलोगा, संखेज्जाओ निज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से ण जे० मो० ॥ ५ स्साइं, चउरासीइं पयसहस्साइं पयग्गेणं, इति समवायाङ्गसूत्रे पाठ । अत्राभयदेवीया टीका—“चतुरशीति पदसहस्राणि पदाग्नेति, समवायापेक्षया द्विगुणताया इहानाश्रयणात्, अन्यथा द्वे लक्षे अष्टाशीति सहस्राणि च भवन्तीति ।” इति ११६-१ पत्रे । तथैतदर्थसमर्थकं ‘विवाहपण्णत्तीए ण भगवतीए चउरासीइं पदसहस्सा पदग्गेणं’ इति समवायाङ्गे ८४ स्थानके सूत्रपाठोऽपि वर्तते ॥ ६ वणया ल० ॥ ७ उज्जंति सं० सं० ल० ॥ ८ विवाहे ख० स० विना ॥ ९ चेतियार्ति वणसंडातिं शु० ॥ १० पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ इह-पारलोइया इद्धिविसेसा जे० मो० सु० । ‘धम्मायरिया धम्मकहाओ इहलोइय-परलोइयइड्डी-विसेसा’ इति समवायाङ्गे ॥ ११ पव्वज्जापरियागा ख० स० हे० ल० शु० । “पव्वज्जाओ सुयपरिग्गहा तवोवहाणाइं परियागा सलेहणाओ” इति समवायाङ्गे ॥ १२ वग्गा पण्णत्ता । तत्थ स० ॥

संखेज्जा वेदा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ सगहणीओ,
 संखेज्जाओ पडिवचीओ । से णं अंगट्टयाए छट्ठे अंगे, दो सुयक्त्तवा, एगूणवीस गात
 ज्झयणा, एगूणवीस उद्देसणकाला, एगूणवीसं समुद्देसणकाला, संखेज्जाईं पेयसद्दस्ताईं पय
 ग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणता गमा, अणंता पज्जवा, परिता तसा, अणंता थावरा,
 5 सासत-कट्ट-णिवद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति पक्खविज्जंति
 दंसिज्जंति णिदसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवमाया, एव णाया, एव विण्णाया, एवं
 चरण-करणपस्वेणा आघविज्जंति । से तं णायाधम्मकहाओ ६ ।

१० से किं तं णायाधम्मकहेस्यादि सुत्तं । एकूणवीसं गातज्झयणा, णाय चि-आहरणा, विट्ठित्तिपो
 वा बज्जति जेइत्थो वे णाता, एते पढमसुत्तखवे । अहिसादिल्लखणस्स धम्मस्स क्हा धम्मक्खा, धम्मियाओ
 10 वा क्हाओ धम्मक्खाया, अक्खणाण चि पुत्तं भवति, एते वित्थियसुत्तखवे । पढम वित्थियसुत्तखवे भगित्तमं
 णाता-धम्मक्खाय णगरादिया मण्णति । वित्थियं सुत्तखवे दस धम्मक्खाणं यमा । यमा चि-समूहो, तन्निसे-
 सणविस्सिद्धा दस मण्णय्या खेव ते दट्ठवा । एगूणवीसं णाता, दस य धम्मक्खाओ । तस्य णातेसु भादिमा दस
 णाता खेव, ण तेसु भवत्तादियादिसयवो । ससा णव णाता, तेसु एकके णाते च्चालीसं च्चालीस अक्खला
 इयाओ भवति, तस्य चि एककेए अक्खलाइयाए पंच पंच उक्खलाइयासताईं भवति, तसु चि एककेए उक्खला-
 15 इयाए पंच पंच अक्खलाओक्खलाइयसताईं भवति, एव एते भव काळीओ । एताओ धम्मक्खासु सोहेत्थ चि काट्टं
 एकाम्पसीसाए णाताव दसव्व य धम्मक्खाण विसमो क्खवि-वस णाता दंस भव य धम्मक्खाओ दसहिं परोप्परं
 सुद्धा । एरं विसेसे कृते सेसा भव णाता, ते भव च्चालीसाए गुणिता णाता विष्णि सता सद्धा अक्खलाइयाणं, एते
 धम्मक्खाइयपेवसतेहिंता सोपिता, तस्य ससं च्चालं सत, तं उक्खलाइयपेवसतेहिं गुणितं णाता उक्खलाइयाणं सचरिं
 20 सहस्ता, ते पंचहिं अक्खलाइयोक्खलाइयसतेहिं गुणिता एव णाता अद्दुद्धातो अक्खलाइयोक्खितो । 'पद्दगेण' ति
 उक्खलाइयपेवसतेहिंता सोपिता, तस्य ससं च्चालं सत, तं उक्खलाइयपेवसतेहिं गुणितं णाता उक्खलाइयाणं सचरिं
 सहस्ता, ते पंचहिं अक्खलाइयोक्खलाइयसतेहिं गुणिता एव णाता अद्दुद्धातो अक्खलाइयोक्खितो । 'पद्दगेण' ति
 उक्खलाइयपेवसतेहिंता सोपिता, तस्य ससं च्चालं सत, तं उक्खलाइयपेवसतेहिं गुणितं णाता उक्खलाइयाणं सचरिं
 20 सहस्ता, ते पंचहिं अक्खलाइयोक्खलाइयसतेहिं गुणिता एव णाता अद्दुद्धातो अक्खलाइयोक्खितो । 'पद्दगेण' ति
 उक्खलाइयपेवसतेहिंता सोपिता, तस्य ससं च्चालं सत, तं उक्खलाइयपेवसतेहिं गुणितं णाता उक्खलाइयाणं सचरिं
 सहस्ता, ते पंचहिं अक्खलाइयोक्खलाइयसतेहिं गुणिता एव णाता अद्दुद्धातो अक्खलाइयोक्खितो । 'पद्दगेण' ति

११ से किं त उवासगदसाओ ? उवासगदसासु णं समणोवासगार्णं णगराइ उज्जा
 णाइ चेइयाइ वैणसंढाइ समोसरणाईं रायाणो अम्मा पिपेरो धम्मकहाओ धम्मायरिया

25 इहैलोग-परलोइया रिदिविसेसा भोगपरिखायीं परियागा सुयपरिग्गहा तवोवहाणाईं सील-
 व्वय-गुण वेरमण-पच्चक्खाण-योसहोववासपडिवज्जणया पडिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ

१ से मी सु विनाअण-सिद्धोगा संखेज्जाओ संखेज्जीओ । से नं प लं क इ । सिलोगा, संखेज्जाओ
 विज्जुत्तीओ संखेज्जाओ पडिवचीओ । से नं के ॥ १ बीसं अण्णयणा क के हे क मी सु अण्णयणे व ।
 च्चिक्खता मज्झयगिरिणा च म्हे लोडल एव पाठे आक्खलाओ । ३-४ एगूणवीसं ल ॥ ५ संखेज्जा पयसद्दस्ता,
 के मी ॥ ६ पयसपयसद्द उवसग्गा ॥ ७ अण्णया प पं क इ ॥ ८ उवदंसि कं पं के इ क ॥ ९ इत्थ य धम्म
 के ॥ १० वेत्थियाति इ ॥ ११ अण्णंताईं के ल इ णाति ॥ १२ पिपेरो धम्मापरिया धम्मक्खाओ के मी सु ॥
 १३ इहोइय-पक्खेइया इक्खि के मी सु ॥ १४ वा पक्खजाओ परि' के के क इ ॥

भक्तपञ्चक्खाणां पाओवगमणां देवलोगगमणां सुकुलपञ्चायार्इओ पुणवोहिलाभा अंत-
किरियाओ य आघविज्जंति । उवासगदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा,
संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ,
संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगड्याए सत्तमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा,
दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पयग्गेणं । संखेज्जा 5
अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड-णिवद्ध-
णिकाइयां जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदं-
सिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा
आघविज्जंति । से त्तं उवासगदसाओ ७ ।

९१. से किं त उवासगदसातो इत्यादि मुत्तं । उवासक च्चि-सावता । तेसिं अणुव्वत्त-गुण-सीलव्वत्तोव- 10
देसणा दसमु अज्झयणेमु अक्खात च्चि उवासगदसा भणिता । तामु मुत्तपदग्गं एकारस लक्खा वावण्णं च सह-
स्सा पदग्गेणं । मुत्तालावयपदेहिं संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं । सेसं कंठं । से त्तं उवासगदसाओ ७ ॥

९२. से किं तं अंतगडदसाओ ? अंतगडदसासु णं अंतगडाणं णगराइं उज्जाणाइं चेतियाइं 15
वणसंडाइं समोसरणाइं रायाणो अम्मा-पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया इहंलोग-परलोगिया
रिद्धिविसेसा भोगंपरिच्चागा पंवज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाइं संलेहणाओ
भक्तपञ्चक्खाणां पाओवगमणां ३ देवलोगगमणां सुकुलपञ्चायार्इओ, पुणवोहिलाभा
अंतकिरियाओ य आघविज्जंति । अंतगडदसासु णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोग-
दारा, संखेज्जा वेढा, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ संगह-
णीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगड्याए अट्टमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, अट्ट

१ संखेज्जाओ संगहणीओ जे० मो० नास्ति ॥ २ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ स० हे० ल० शु० नास्ति ॥ ३ संखेज्जा
पदसहस्सा जे० मो० मु० ॥ ४ पदसयसहस्साइं समवायाङ्गे ॥ ५ वणया ल० ॥ ६ उज्जति ख० स० हे० ल० ॥ ७ अक्खाहज्जति
त्ति आ० दा० ॥ ८ वणसडाइं इति स० स० हे० ल० शु० नास्ति ॥ ९ पियरो धम्मायरिया धम्मकहाओ जे० ल० मो० मु० ॥
१० लोइय-परलोइया इद्धिविं मो० । लोइय-परलोइया इद्धिविं जे० मु० ॥ ११ भोगपरिमोगा ख० ल० शु० ॥ १२ पव्वज्जा
परियागा सुतं ख० । पव्वज्जा सुतं ल० ॥ १३ → ← एतच्चिद्धमप्यवर्त्ता पाठ मो० मु० नास्ति ॥ १४ दसाणं जे० स० ॥
१५ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० मु० नास्ति ॥ १६ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ इति ख० स० ल० शु० नास्ति ॥

१७ पगे सुयक्खंधे, दस अज्झयणा, सत्त वग्गा, दस उद्देसणकाला, दस समुद्देसणकाला, संखेज्जाइं पद-
[सत्त]सहस्साइं पयग्गेणं इति समवायाङ्गसूत्रे पाठः । अत्राभयदेवीया टीका—

“नवरं ‘दस अज्झयण’ ति प्रथमवर्गपेक्षयैव घटन्ते, नन्द्या तथैव व्याख्यातत्वात् । यथेह पम्यते ‘सत्त वग्ग’ ति तत् प्रथमवर्गादन्यवर्गा-
पेक्षया, यतोऽत्र सर्वेऽप्यष्ट वर्गा, नन्द्यामपि तथापठितत्वात् । तद्वृत्तिश्चयम्—‘अट्ट वग्ग’ ति अत्र वर्गं समूहं, स चान्तकृतानामध्यम-
नाना वा । सर्वाणि चैकवर्गगतानि युगपदुद्दिश्यन्ते ततो भणितं ‘अट्ट उद्देसणकाला’ इत्यादि ॥” इह च दश उद्देशनकाला अभिधीयन्ते
इति नास्याभिप्रायमवगच्छामः । तथा संख्यातानि पदशतसहस्राणि पदाम्प्रेणेति, तानि च किल त्रयोविंशतिर्लक्षाणि चत्वारि च सहस्रा-
णीति ।” १२१-२ पत्रे ॥

वग्गा, अद्ग उद्देसणकाला, अद्ग समुद्देसणकाला, संस्वेज्जाइ पयसहस्साई पदग्गेणं, संस्वेज्जा
अक्स्वरा, अर्णता गमा, अर्णता पज्जवा, परिता तसा, अर्णता थावर, सासत-कह णिबद्ध
णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति दसिज्जति णिदंसि
ज्जति उवर्दंसिज्जति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-क्खणपरुवेणा
^{१०} आघविज्जति । से च अंतगद्धमाओ < ।

१२. से किं त अतगद्धदासातो इत्यादि ध्रुष । अतक्कदस चि-कम्मओ संसारस्स पा भंतो कद्धो
जेहिं ते अतक्कदा, ते य वित्तकरादी, दस चि-पद्मवग्गे दस अद्दपय चि तैस्सत्सत्तो अतक्कदस चि । अद्दा
दस चि-अवत्या, उदंते वा अवत्या सा वणिज्जति चि अतो अतक्कदसा । सरीरा-उद्दुदसाय पा दसत्वं अतक्कतो
चि अंतक्कदसा । णवरं 'अंतक्कदकिरियाओ' चि अस्य व्याख्या-अतक्कदाय किरिया अंतक्कदकिरिया, बहुव वा
¹⁵ अतक्कदकिरियाओ चि भणित्वा । किरिय चि-क्रिया, कया इत्यर्थः । अद्दा किरिय चि-कम्मसपपाक्रिया, सा य
सेहेसिभवत्याए । अद्दा किरिय चि-सद्धुमकिरियअज्ञाण । अद्दा प्रातिक्रम्येसु अंतक्कडेसु किरिय चि-कम्मवर्धो,
सा य इरियावहितो चि मणित् वोटि । एतं च आघविज्जति । पयो चि-समूहो, सो य अतक्कदाय अद्दपयाण
पा । सव्वे अद्दपयाण लुगवं उरिसिदि । तासु ध्रुषपदमा तपीस मक्खा चतुरो य सद्दसा पद्दग्गेणं । सखेज्जाधि
वा पद्दसहसाणि ध्रुषालावगपद्दग्गेण । सेस कंठं । से च अतगद्धदासा < ॥

¹⁵ १३. से किं त अणुत्तरोववाइयदमाओ ? अणुत्तरोववाइयदमासु ण अणुत्तरोववाइयाणं
णगराई उज्जाणाई चेइयाई वणसंडाई समोसरणाइ रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मा
यरिया इह्लोग-परलोगिया सिद्धिविसेसा भोगपरिवागा पव्वज्जपरियागा सुतपरिमाहा
तवोवहाणाई पढिमाओ उवसग्गा संलेहणाओ भत्तपच्चक्खाणाई पाओवगमणाई अणुत्तरो
ववाइयत्ते उववत्ती सुक्कुल्यच्चायादीओ पुणवोहिलाभा अंतकिरियाओ य आघविज्जति ।
²⁰ अणुत्तरोववाइयर्दसासु णं परिता वोयणा, संस्वेज्जा अणुयोगदाग, संस्वेज्जा वेदा, संस्वेज्जा
सिलोगा, संस्वेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संस्वेज्जाओ संगहणीओ, संस्वेज्जाओ पढिवत्तीओ ।
से ण अंगद्दयाए णवमे अंगे, एंगे सुयक्खवे, तिण्णि वग्गा, तिण्णि उद्देसणकाला, तिण्णि
समुद्देसणकाला, संस्वेज्जाई पयसहस्साई पयग्गेणं, संस्वेज्जा अक्स्वरा, अर्णता गमा, अणता
पज्जवा, परिता तसा, अर्णता थावरा, मासय-कह णिबद्ध णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा

१. अत्तया यं = १२ 'विराजति' यं एं के ए ए = ३ अतगद्धदासातः ०५ अतगद्धदासातः इति नो सु एव
कते ॥ ५ धम्मापरिया धम्मकहाओ नो सु ० १ ओरप-वग्गेइया के नो सु ॥ ७ अणुत्तरोववाओ सु ।
अणुत्तरोववाय चि एं के ० ८ इत्थं के के नो ० १ वाया म ० १० संस्वेज्जाओ विज्जुत्तीओ इति ॥
नाति ॥ ११ संस्वेज्जाओ संगहणीओ के नो नाति ॥ १२ संस्वेज्जाओ पढिवत्तीओ एं यं ॥ ७ नाति ० १३ पयो
सुपक्खवै इय अद्दपयाण तिण्णि वग्गा, इत्थं उद्देसणकाला इत्थं समुद्देसणकाला संस्वेज्जाए पयसहस्साई
पयग्गेणं प० इति समवायाहे । अद्दपयवैयपादा—'इत्थं अद्दपयवैयपादा इत्थं वग्गे इत्थं अणुत्तरोववाइयत्ते इत्थं
एतेरधत्तता अर्थेण, एतेर य अद्दपयवैयपादा इत्थं एतेर अर्थेण, अणुत्तरोववाओ न वायत इति' १२१-१२२ ॥

आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंइ । से तं अणुत्तरोववाइयदसाओ ९ ।

९३. से किं तं अणुत्तरोववातियदसा इत्यादि मुत्तं । णत्थि जस्समुत्तरं सो अणुत्तरो, उववज्जणमूववातो 5
उप्पत्तीत्यर्थः, अणुत्तरो उववातो जस्स सो अणुत्तरोववाडो, तेसि बहुवयणातो [जे० २१८ द्वि०] अणुत्तरोव-
वाइय त्ति, वग्गे वग्गे य दसअज्जयण त्ति अतो अणुत्तरोववातियदसा भणिता । संसारे मुभमायं पडुच्च अणुत्तरं,
अहवा गतिचतुक्कं पटुच्च अणुत्तरं, अहवा देवगतीए चेव अणुत्तरं । अणुत्तरदेवेसु जेसि उववातो तेसि णगरादिया
कहिज्जंति । उह वग्गो त्ति-समूहो, सो य अज्जयणाणं, वग्गे वग्गे दस अध्ययना इत्यर्थः । तेसि पडग्गं छातालीसं
लक्खा अट्ट य सहस्सा, संखेज्जाणि वा पदसहस्साणि । मेस कंठं । से तं अणुत्तरोववाइयदसा ९ ॥

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं ? पण्हावागरणेसु णं अट्टुत्तरं पसिणसयं, अट्टुत्तरं 10
अपसिणसयं, अट्टुत्तरं पसिणा-अपसिणसयं, अण्णे वि विविधा दिव्वा विज्जा-
तिसया नाग-सुवण्णेहि य सद्धि दिव्वा संवाया आघविज्जंति । पण्हावागरणाणं परित्ता
वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेद्व, संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जु-
त्तीओ, संखेज्जाओ संगहणीओ, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ । से णं अंगट्टयाए दसमे अंगे,
एगे सुयक्खंधे, पणयालीसं अज्जयणा, पणयालीसं उद्देसणकाला, पणयालीसं समुद्देसण- 15
काला, संखेज्जाइं पदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा, अणंता गमा, अणंता पज्जवा,
परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया जिणपण्णत्ता भावा आघविज्जंति
पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उवदंसिज्जंति । से एवंआया, एवं
णाया, एवं विण्णाया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जंइ । से तं पण्हावागरणाइं १० ।

९४. से किं तं पण्हावागरणाइं इत्यादि मुत्तं । पण्णो त्ति-पुच्छा, पडिवयणं वागरणं, प्रत्युत्तर- 20
मित्यर्थः । तस्मिं पण्हावागरणे अंगे पचासद्वाराट्टा व्याख्येयाः परप्पवादिणो य । अणुत्त-वाहुपसिणादियाणं च
पसिणाणं अट्टुत्तरं सत । किंच-जे विज्ज-मता विधीए जविज्जमाणा अपुच्छिता चेव सुभासुभं कथयंति तारिसाणं
अपसिणाणं अट्टुत्तरं सत । अंगुट्टादिपसिणभावं अपसिणभावं च वाकरंति तारिसाणं पसिणा-अपसिणविज्जाणं
अट्टुत्तरं सत । अहवा अणंतरा जे कहंति ते पसिणा, परपरे पसिणापसिणा, तं पुण विज्जाकहित कहंतस्स परपरं

१ °वणया ल० ॥ २ °विज्जति ख० सं० दे० ल० शु० ॥ ३ °सय, तं जहा—अंगुट्टपसिणाइं, वाहुपसिणाइं
अहागपसिणाइं, अण्णे वि जे० दे० ल० मो० मु० । नाय पाठधूर्णि-वृत्तिकृद्भिर्देहीतो व्याख्यातो वा विद्यते ॥ ४ वि विचित्ता
दिव्वा सर्वाखु सूत्रप्रतिपु । हारि० वृत्ता एव पाठो व्याख्यातोऽस्ति । मलयगिरिपादा पुन चूर्णिकारमनुष्ठता सन्ति ॥
५ दिव्वा शु० सं० एव वर्तते ॥ ६ दिव्वा सघाणा संघणंति इति चूर्णिकृद्भिर्दिष्ट पाठमेव, दिव्वा सन्धाना सन्धानन्ति
इत्यर्थः ॥ ७ संखेज्जाओ संगहणीओ इति जे० मो० नास्ति ॥ ८ संखेज्जाओ पडिवत्तीओ ख० सं० ल० शु० समवायाओ
च नास्ति ॥ ९ °विज्जंति ख० सं० दे० ल० शु० ॥

मपति । अण्ये य विविधा विज्ञातिसत्ता कश्चिज्जति । किंष गागा सुहृष्या अण्ये य मषणवासियो ते विज्ज-मंता-
गरिसिता आगता साहुणा सर सवदति-मत्वं करेति । पाठंतरं वा "विष्णा सभाणा सभर्णति" तदु-सुखा मपति,
वरदाभ गमितादि वा कुर्वति । दसममगस्त पदमां वागउरिं सवत्ता सात्स य सहस्ता पदगोणं, संखेज्जाणि वा
पदसहस्ताणि । संसं कंठं । सं स पण्हावागरणाई १० ॥

५ १५. से किं त विवागसुत ? विवागसुते ण सुकड-दुकडाणं कम्मणं फल-विवांगा
आघविज्जति । तस्य णं दस दुहविवागा, दस सुहविवागा ।

से किं त दुहविवागा ? दुहविवागोसु ण दुहविवागाण णगराई उज्जाणाई वणसंढाई
चेइयाई समोसरणाई रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइय-परलोइया
रिद्धिविसेसा निरयगमणाई दुहपरपराओ संसारभंवपवाचा दुकुल्यभायाईओ दुलहवोहियत्तं
१० आघविज्जति । से स दुहविवागा ।

से किं तं सुहविवागा ? सुहविवागोसु णं सुहविवागाण णगराई उज्जाणाई वणसंढाई
चेइयाई समोसरणाई रायाणो अम्मा पियरो धम्मकहाओ धम्मायरिया ईहलोइअ-परलोइया
रिद्धिविसेसा भोगपस्त्रागा पञ्चज्जाओ परियागा सुतपरिग्गहा तवोवहाणाई संलेहणाओ
मत्तपश्चक्खाणाई पाओवगमणाई देवलोमगमणाई सुहपरंपराओ सुकुल्यभायादीओ पुणवो-
१५ हिलाभा अंतकिस्स्याओ य आघविज्जति ।

विवागसुते णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुयोगदारा, संखेज्जा वेदा, संखेज्जा
सिलोगा, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ सगहणीओ, संखेज्जाओ पडिबत्तीओ ।
से ण अंगद्वयाए एकारसमे अंगे, दो सुयक्खंघा, वीसं अज्जयणा, वीसं उधेसणकाला, वीसं
समुहेसणकाला, संखेज्जाई पदेसहस्ताई पदगोणं, संखेज्जा अन्त्सय, अणंता गमा, अणंता
२० पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासय-कड णिवद णिकाइया जिणपण्णात्ता भावा आघ-
विज्जति पण्णविज्जति परुविज्जति दसिज्जति णिदंसिज्जति उवदंसिज्जति । से एवआया,
एवं पाया, एवं विण्णाया, एव चरण-करणपरुवणा आघविज्जति । से सं विवागसुतं ११ ।

०५. से किं तं विवागसुत इत्यादि । विविधो पाकः विपचनं वा विपाकः, कर्मणां सुमममुमो वा

१ विवागे आघविज्जति से यो सु ० १ से किं तं दुहविवागा इति सं सु ० १० ॥ समयायाहे प्रथमवर्षे
वत्ते ० १ धम्मापरिया धम्मकहाओ सं से से न यो सु ० ५ इहकोग-परलोगिया सं ० ५ इविदपि यो-
सु ० १ यममे स ० ७ यवपंधाया सं न समयाया ० ८ से सं दुहविवागा । से किं तं सुहविवागा ? इति
सं सु ० १० ॥ समयायाहे सु वत्ते ० १ धम्मापरिया धम्मकहाओ सं से ० १० इहकोग-परलोगिया इरिद्धिविसेसा
से यो सु ० ११ उजा पति सं ० १२ विवागसुतपरस सं से यो सु ० १३ परसत्तसत्त
कमपायां ० १४ विज्जति सं से से न सु ० ॥

जम्मि मुत्ते विपाको कहिज्जति तं विपाकसुत्तं । विपाकसुत्तस्स सुत्तपदग्गं एगा पदकोडी चुलसीति च लक्खा वत्तीसं च सहस्सा पदग्गेणं, संखेज्जाणि वा पदसहस्साइं पदग्गेणं [जे० २१९ प्र०] । मेसं कंठं । से तं विवागसुत्तं ११ ॥

९६. से किं तं दिट्टिवाए ? दिट्टिवाए णं सव्वभावपरूवणा आघविज्जति । से समा-
सओ पंचविहे पण्णत्ते, तं जहा—परिकम्मे १ सुत्ताइं २ पुव्वगए ३ अणुओगे ४ चूलिया ५ । 5

९६. से किं तं दिट्टिवाते त्ति । दृष्टिर्द्वर्गनम्, वदनं वादः, दृष्टीना वादो दृष्टिवादः, तत्र वा दृष्टीनां पातः दृष्टिपातः, सभेदभिण्णाओ सव्वणतद्विष्टीओ तत्थ वदंति पतंति च त्ति अतो दिट्टियातो । सो य पंचभेदो-परिकम्मादि ॥

९७. से किं तं परिकम्मे ? परिकम्मे सत्तविहे पण्णत्ते, तं जहा—सिद्धसेणियापरिकम्मे
१ मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ओगादसेणियापरिकम्मे ४ उवसंपज्जण-
सेणियापरिकम्मे ५ विप्पजहणसेणियापरिकम्मे ६ चुंतअचुतसेणियापरिकम्मे ७ । 10

९८. से किं तं सिद्धसेणियापरिकम्मे ? सिद्धसेणियापरिकम्मे चोदसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पादो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६
रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२ नंदा-
वत्तं १३ सिद्धावत्तं १४ । से तं सिद्धसेणियापरिकम्मे १ । 15

९९. से किं तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे ? मणुस्ससेणियापरिकम्मे चोदसविहे पण्णत्ते,
तं जहा—माउगापयाइं १ एगद्वियपयाइं २ अट्टापयाइं ३ पादो ४ आमासपयाइं ५ केउभूयं ६
रासिवद्धं ७ एगगुणं ८ दुगुणं ९ तिगुणं १० केउभूयपडिग्गहो ११ संसारपडिग्गहो १२
णंदावत्तं १३ मणुस्सावत्तं १४ । से तं मणुस्ससेणियापरिकम्मे २ ।

१००. से किं तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ? पुट्टसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे पण्णत्ते, तं
जहा—पादो १ आमासपयाइं २ केउभूयं ३ रासिवद्धं ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउ-
भूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णंदावत्तं १० पुट्टावत्तं ११ । से तं पुट्टसेणियापरिकम्मे ३ ।

१०१. से किं तं ओगादसेणियापरिकम्मे ? ओगादसेणियापरिकम्मे एक्कारसविहे

१ विज्जति स० स० डे० ल० ॥ २ परिकम्म जे० मो० मु० विना ॥ ३ सुयाइं स० ॥ ४ ओगादणसे० समवायाहे ॥
५ विजहणसे० स० स० ल० शु० । विप्पजहसे० समवायाहे ॥ ६ चुयमचुयं ल० शु० । चुयाचुयं डे० ॥ ७ अट्टपं स० ॥
८-९ परिग्गहो ल० ॥ १० सिद्धावद्ध स० । सिद्धवद्ध समवायाहे ॥ ११ परिग्गहो जे० ॥ १२ संसादडं स० । मणुस्स-
वद्धं समवायाहे ॥ १३ पयाइं पवमादि । से त्त पुट्टं स० स० । पयाइं २ इच्चाइ । से त्त पुट्टं ल० ॥ १४ परिग्गहो जे० ॥

पण्णत्ते, त जहा—पादो १ आमामसपयाइं २ केउमूय ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउमूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्तं १० ओगादावत्त ११ । से सं ओगादसेणियापरिकम्मे ४ ।

१०२ से किं त उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ? उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे एकार ५ सविहे पण्णत्ते, त जहा—पादो १ आमामसपयाइ २ केउमूयं ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउमूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्तं १० उवसंपज्जणावत्तं ११ । से सं उवसंपज्जणसेणियापरिकम्मे ५ ।

१०३ से किं तं विप्यंजहणसेणियापरिकम्मे ? विप्यंजहणसेणियापरिकम्मे एगारस विहे पण्णत्ते, त जहा—पादो १ आमामसपयाइं २ केउमूयं ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुणं ६ तिगुणं ७ केउमूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्तं १० विप्यजहणावत्तं ११ । से सं विप्यजहणसेणियापरिकम्मे ६ ।

१०४ से किं तं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ? चुयमचुयसेणियापरिकम्मे एगारसविहे पण्णत्ते, तं जहा—पादो १ आमामसपयाइं २ केउमूयं ३ रासिबद्ध ४ एगगुणं ५ दुगुण ६ तिगुणं ७ केउमूयपडिग्गहो ८ संसारपडिग्गहो ९ णदावत्तं १० चुयमचुयावत्तं ११ । से सं चुयमचुयसेणियापरिकम्मे ७ ।

१०७-१०४ तत्त्व परिकम्मे सि भोमाकरणं, जहा गणितस्स सोमस परिकम्मा, ठमाहितसुत्तयो सस गणितस्स भोमो मवति । एवं गहितपरिकम्मसुत्तयो सेसमुत्तादिविद्धिपावसुत्तस्स भोमा मवति । त च परिक म्मसुत्तं सिद्धसेणियापरिकम्मादिमूमेदयो सचविहं, उचरमेदयो वेसोतिविहं मात्तुयपदाती । तं च सच्चं समूहं चरमं सुत्तवता घोच्छिम्भं, जहागतसमदात्तं वा वचं ॥ किंच—

१०५. [इहेइयाइ सत्त परिकम्माइं, छ सममइयाइं, सत्त आजीवियाइ,] छ चउफणइ-याइं, सत्त तेरासियाइं । से सं परिकम्मे १ ।

१०६ एतेसि सच्चं परिकम्माच्च छ आदिमा परिकम्मा ससमइका, स्वसिद्धावपइापना एवेत्यर्थः । आजीविकापसंइत्या गोसाभ्यपचित्ता, तेसि सिद्धेतमठेव खुता-उपुत्तसहिता सत्त परिकम्मा पण्यविज्जंति । इदंयि परिकम्मे णवर्षिता—गेगामो दुविहो-सगहितो भसंगहितो य, संगहितो स्माइं पयिहो, भसंगहितो ववहारं, तम्हा

१ केउमूय ३ इयादि । से सं ओगाद ४ सं के क २ पयिहो ने ३ ३ पादो १ इयादि । से सं उव ५ सं के क ७ ५-६ विज्जहण ४ सं क छ ७ ३ पादो १ इयादि । से सं विज्जहण ४ सं के क ७ ७-८ चुयमचुय के के क ७ ९ पादाइ । से सं चुय पं सं के क ७ १० चुयमचुय के क । खुतावुव के ११ एव्यं चउरमभोइपण्यसिं एव्यं एव्यसिं म वत्तं । खुवि-वृत्तिइत्तिः उपरात्त वत्तव इति संमवायाइत्तएव एताओज्जयो-कुट्टेत्ति ॥ १२ पादं वरपादं । से सं सं ॥

संगहो ववहारो रिजुसुतो सदाइया य एक्को, एवं चतुरो, णया । एतेहिं चतुहिं णएहिं छ ससमइकाइं परिकम्माइं चित्तिज्जंति चि अतो भणितं—'छ चतुकणइयाइं' ति । ते चेत्र आजीविका तेरासिया भणिता । कम्हा ? उच्यते— जम्हा ते सर्वं जगं त्रयात्मकं इच्छंति, जहा—जीवो अजीवो जीवाजीवश्च, लोए अलोए लोयालोए, संते असंते संतासंते एवमादि । णयचिताए वि ते तिविहं णयभिच्छंति, तं जहा—इव्वट्टितो पज्जवट्टितो उभयट्टितो, अतो [जे० २१९ द्वि०] भणियं—'सत्त तेरासियाइं' ति सत्त परिकम्माइं तेरासियपासंडत्था तिविधाए णयचिताए चितयंतीत्यर्थः १ ॥

१०६. से किं तं सुत्ताइं ? सुत्ताइं वावीसं पण्णत्ताइं, तं जहा—उज्जुसुतं १ परिणयापरिणयं २ बहुभंगियं ३ विजयचरियं ४ अणंतरं ५ परंपरं ६ मासाणं ७ सज्जहं ८ संभिण्णं ९ आयच्चायं १० सोवत्थिप्पण्णं ११ णंदावत्तं १२ बहुलं १३ पुट्ठापुट्ठं १४ वेयावच्चं १५ एवंभूयं १६ भूयावत्तं १७ वत्तमाणुप्पयं १८ समभिरूढं १९ सव्वओभइं २० पण्णासं २१ दुप्परिग्गहं २२ । 10

१ सुत्ताइं वावीसाइ पण्णत्ताइं, तं जहा स० स० । सुत्ताइ अहासीति भवतीति मक्खायाइं, तं जहा सम० ॥

२ द्वाविंशतिसूत्रनाम्नां नन्दिस्त्रप्रत्यन्तरेषु पाठमेदोऽधदल्लिखितकोष्ठकाद् ज्ञातव्य —

ख० प्रति	स० प्रति	जे० प्रति	डे० प्रति	ल० प्रति	मो० प्रति	शु० प्रति
१ उज्जुसुत	०	०	०	०	०	०
२ परिणयापरिणय	०	०	०	०	०	०
३ बहुभंगिय	०	०	बहुभंगीय	बहुभंगीय	०	०
४ विज्झवियच्चिय	विज्झायव्वाविय	विजयचरिय	विजयविधत्त	विजयविधत्त	विजयचरिय	वियच्चवियत्त
५ अणतरं	०	०	०	०	०	०
६ परंपरं	०	०	०	०	०	०
७ समाण	मासाण	मासाण	समाणसं	समाणसं	सामाण	समाएसं
८ सज्जह	सज्जह	सज्जह	ज्जह	ज्जह	सज्जह	ज्जह
९ भिण्ण	०	०	सभिण्ण	सभिण्ण	०	०
१० आयच्चाइ	आयच्चाय	आहच्चाय	आहव्वय	आहव्वय	आहव्वाय	आहव्वाय
११ सावट्ठिपत्त	सोवत्थिप्पण्ण	सोमत्थिप्पण्ण	सोवत्थियवत्त	सोमत्थिप्पण्ण	सोवत्थिअ घट	सोवत्थिप्पण
१२ णंदावत्त	०	मदावत्त	०	०	०	०
१३ बहुल	०	०	०	०	०	०
१४ पुट्ठापुट्ठ	०	०	पुच्छापुच्छ	०	०	०
१५ वेयावच्च	०	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्त	वियावत्त	०
१६ एवंभूय	०	०	०	०	०	०
१७ भूयावत्त	दूयावत्त	दूयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त	दुयावत्त
१८ १	वत्तमाणय	वत्तमाणप्पय	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पत्त	वत्तमाणुप्पय	वत्तमाणुप्पत्त
१९ समभिरूढ	०	०	०	०	०	०
२० सव्वओभइ	०	०	०	०	०	०
२१ पण्णास	०	०	०	०	०	०
२२ दुपरिग्गह	दुप्पडिग्गह	दुप्पडिग्गह	परिग्गह	०	दुप्पडिग्गह	०

अत्र शून्येन पाठमेदाभावो ज्ञातव्य, न तु पाठाभाव इति ॥

इंचेयाइ वावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ १, इंचेयाइं वावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं २, इंचेयाइ वावीसं सुत्ताइ तिगणइयाइ तेरासियसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइ ३, इंचेयाइ वावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाडीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुव्वावरेण अट्टासीतिं सुत्ताइं भवन्तीति मन्सायं ।
 ५ से च सुत्ताइं २ ।

१०६ 'सुत्ताइ' ति उच्चसुत्ताइयाइं वावीसं सुत्ताइं । ताणि य सुत्ताइं सम्बन्धाण सम्बन्धजाण सम्बन्धताण सम्बन्धविक्रपाण य वंसगाणि, सम्बन्धस य पुन्वगतसुत्तस अत्यस्तस य ह्ययग ति, अतो ते ह्ययगचातो सुत्ता भणिता जहामिषाअत्याते । ते य इदांमिं सुत्त-उत्थता वासिच्छिण्णा, महागतसप्रदायता वा वया । त चेव वावीसं सुत्ता विमागतो अट्टासीतिं सुत्ता भवति इमण विष्मिया-वावीसं सुत्ता छिण्णच्छेदणतामिषायतो । कइं छिण्णच्छेदणतो चि भण्यति ?
 10 उच्यते-जो जया सुत्तं छिण्ण छेदेण इच्छति, जहा-"प्रमो मंगलमुक्कं०" ति सिम्मागो [दरुणे अ १ गा १] । एत सिम्मागो सुत्त उत्थता पत्तेय छेदेव टिठा, जा बितियादिसिम्मागे अवेवखइ चि सुत्तं भवति । छिण्णो छेदो भस्स स भवति छिण्णच्छेदं, प्रत्येकं कन्वितपययेत्थय्यं । एते एवं वावीसं ससमतसुत्तपरिवाडीए सुत्ता टिठा । एते चेव वावीसं अच्छिण्णच्छेदणतामिषायतो भावंमियसुत्तपरिवाडीए टिठा । अच्छिण्णच्छेदणतो जहा-एसेन दुग्गुत्थियपइमसिम्मागो अत्यतो बितियाइसिम्मागे अवेवखमायो, बितियादिया य पइम अच्छिण्णच्छेदणतामिषायता भवति । एवंपि वावीसं
 15 सुत्ताअस्सररयणविमागट्ठिता पि अत्ययो अण्णोअनववखुमाणा अच्छिण्णच्छेदणपट्ठित चि भण्यति । वापसिताए पि वावीसं चेव सुत्ता, 'तेरासियाव तिक्रयइयाइ' ति भिक्खयाभिमायतो चिन्वयेत्थय्यं । जहा ससमये वि वापसिताए वावीसं चेव सुत्ता अट्टकइया । एवं चरुो [जे० २२० प्र०] वावीसातो अट्टासीतिं सुत्ता भवति । से च सुत्ताइ २ ॥

१०७ से किं तं पुव्वगते ? पुव्वगते चोइसविहे पण्णत्ते, तं जहा-उप्पादपुव्वं ?
 20 अंगोणीय २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिपवातं ४ नाणपवात ५ सक्खपवादं ६ आयपवादं ७ कम्मपवादं ८ पच्चकसंज्ञां ९ विज्जेणुपवादं १० अवसं ११ पौणासुं १२ किरियाविसालं १३ लोकाधिदुमार १४ । उप्पायस्स णं पुव्वस्स दस वत्थु चत्तारि सुँल्लवत्थु पण्णत्ता १ । अंगोणीयस्स णं पुव्वस्स चोइस वत्थु बुवाल्स सुँल्लवत्थु पण्णत्ता २ । वीरियस्स णं पुव्वस्स अट्ट वत्थु अट्ट सुँल्लवत्थु पण्णत्ता ३ । अत्थिणत्थिपवायस्स णं पुव्वस्स अट्टास

१-३-५-७ इंचेयाइं मो सु ॥ २-४-६-८ सुत्ताइ इति परं अं सं एव जगते सम्बन्ध समवायाहेऽपि नास्ति ॥
 ९ भवति इवमन्सायं अ ॥ १० अण्णोविचं च ॥ ११ कजापणावावं अं सं जहा ॥ १२ विस्साजु अं अ मो सु ॥
 १३ पावावं के । पावावं के अ मो सु ॥ १४ अस्सिअ एते उप्पायस्स णं पुव्वस्स वापोणीयस्स अ पुव्वस्स,
 वीरियस्स अं पुव्वस्स इमादिहेऽ उट्टकसति एवामन्सायेऽ उप्पायपुव्वस्स अं अण्णोणीयपुव्वस्स अं वीरियपुव्वस्स अं
 इवमि. पाठेरी मो सु एतत्तं ॥ १५ वत्थुवत्थु अ । वत्थिवाचत्थु अं के मो सु ॥ १६ अण्णोवायस्स के अ ॥
 १७ वत्थुवत्थु अ अ । वत्थिवाचत्थु के के मा सु ॥ १८ वत्थुवत्थु अ । वत्थिवाच के के मो सु ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पणत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स वारस वत्थू पणत्ता ५ । सच्च-
 प्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पणत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू
 पणत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पणत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स
 वीसं वत्थू पणत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पणत्ता १० । अवंझस्स
 णं पुव्वस्स वारस वत्थू पणत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पणत्ता १२ । 5
 किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पणत्ता १३ । लोगविंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणु-
 वीसं वत्थू पणत्ता १४ ।

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽह्वारसेव ४ वारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।

सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पणरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥

वारस एकारसमे ११, वारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।

तीसा पुण तेरसमे १३, चोदसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।

आइलाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणक्काले गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो 15
 पुव्वं पुव्वगतसुत्तत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणित्ता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइक्केमेण रयंति
 द्वेति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुव्वगतसुत्तं चेव पुव्वं रडत्तं
 पच्छा आयाराड । एवमुक्ते चोदक आह—णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणित्तं—“सव्वेसिं
 आयारो” गाहा [आचाराङ्गनि गा ८] । आचार्याऽऽह—सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठवणा, इमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणित्तं,
 पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोदस पुव्वा पणत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वदव्वाणं 20
 पज्जवाण य उप्पायभावसंगीकाळं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । त्रितियं अग्गेणीयं, तत्थ
 वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं—परिमाणं वण्णिज्जइ त्ति अग्गेणीत्तं, तस्स पदपरिमाणं
 छण्णउत्ति पदसतसहस्सा २ । त्रितियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं प्रवदति त्ति
 वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तारिं पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा
 णत्थि, अहवा सित्तवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणित्तं, तं पि पदपरि- 25
 माणतो सट्ठिं पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि मतिणोणाडपंचकस्स सप्रभेदं प्रखवणा जम्हा
 कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं—सजमो सच्च-

१ चुल्लवत्थू ल० शु० । चुल्लियावत्थू जे० डे० मो० मु० ॥ २ विज्जाणुं जे० ल० मु० ॥ ३ पाणायुस्स स० ।
 पाणाउस्स जे० डे० ल० मो० मु० ॥ ४ चुल्लवं मो० शु० सम० ॥ ५ चुल्लिया सं० विना ॥ ६ त्याहादाभिप्रायत ॥

इक्षेयाइ बावीसं सुत्ताइं छिण्णच्छेयणइयाइं ससमयसुत्तपरिवाहीए सुत्ताइं १, इक्षेयाइं
 बावीसं सुत्ताइं अच्छिण्णच्छेयणइयाइ आजीवियसुत्तपरिवाहीए सुत्ताइं २, इक्षेयाइ बावीसं
 सुत्ताइ तिगणइयाइ तेरासियसुत्तपरिवाहीए सुत्ताइ ३, इक्षेयाइ बावीसं सुत्ताइं चउक्कणइयाइं
 ससमयसुत्तपरिवाहीए सुत्ताइं ४, एवामेव सपुब्बावरेणं अट्टासीति सुत्ताइं भवंतीति मक्खत्तायं ।
 ५ से तं सुत्ताइं २ ।

१०६ 'सुत्ताइं' ति उब्बसुत्ताइयाइं बावीस सुत्ताइ । ताणिय सुत्ताइ सम्भरुत्तण सम्भरुत्तणय सम्भरुत्तणय
 सम्भरुत्तणयिक्कण्णाय य दसगाणि, सम्भरुत्त य पुब्बगतसुत्तस अत्यस्स य इयम धि, अतो ते इयणत्तातो सुत्ता मग्गिता
 महाभिवाणत्पाते । से य इदार्णि सुत्त उत्तयो वोच्छिण्णा, अहागतसमदायतो वा यथा । से वेव बावीसं सुत्ता विमागतो
 भट्टासीति सुत्ता मग्गिति इमेण विधिना-बावीस सुत्ता छिण्णच्छेयणत्तामिप्यायतो । इदं छिण्णच्छेयणतो वि मग्गति ।
 10 उत्तयेते-भो भयो सुत्तं छिण्ण छेयेव इच्छति, अहा-"धम्मो मंगलमुक्खं०" ति सिस्सोगो [दसमे अ १ गा १] । एस
 सिस्सोगो सुत्त उत्तयो पचेय छेदेण ठितो, भो बितियादिसिस्सोगे अनेक्खइ पि पुष्प मग्गति । छिण्णो छेयो मत्स स मग्गति
 छिण्णच्छेयं, मत्सेकं कल्पितपपैतेत्यर्थ । एते एव बावीस ससमयसुत्तपरिवाहीए सुत्ता ठिता । एते वेव बावीस
 अच्छिण्णच्छेयणत्तामिप्यायतो आजीवियसुत्तपरिवाहीए ठिता । अच्छिण्णच्छेयणतो महा-एसेव दुमपुत्तियपदमसिस्सोगो
 अत्ततो बितियाइसिस्सोगे अनेक्खमाणो, बितियादिया य पदमे अच्छिण्णच्छेयणत्तामिप्यायतो मग्गति । एतं पि बावीसं
 15 सुत्ता अत्तररयणभिमागट्ठिता पि अत्ययो अत्तोप्यमनेक्खमाणा अच्छिण्णच्छेयणत्तामिप्यायतो मग्गति । एतं पि बावीसं
 बावीसं वेव सुत्ता, 'तेरासियाणं विक्रमइयाइं' ति भिक्खनामिमावतो ब्रित्तंतेत्यर्थः । तथा ससमये वि अपधिंठाए
 बावीस वेव सुत्ता चउक्कणइया । एवं चतुरो [वे० २२० प्र०] बावीसातो भट्टासीति सुत्ता मग्गति । से च
 सुत्ताइ २ ॥

१०७ से किं तं पुब्बगते ? पुब्बगते चोइसविहे पण्णत्ते, त जहा-उप्पादपुब्बं ?
 20 अंगोणीय २ वीरियं ३ अत्थिणत्थिप्यवातं ४ नाणप्यवात ५ सक्खप्यवादं ६ आयप्यवादं ७
 कम्मप्यवादं ८ पक्खत्तौणं ९ विज्जेणुप्यवादं १० अवंशं ११ पौणायु १२ किरियाविसालं १३
 लोगविदुसार १४ । उप्पायस्स णं पुब्बस्स दस वत्थु चत्तारि सुँल्लयवत्थु पण्णत्ता
 १ । अंगोणीयस्स णं पुब्बस्स चोइस वत्थु दुवालस्स सुँल्लवत्थु पण्णत्ता २ । वीरियस्स णं
 पुब्बस्स अट्ठ वत्थु अट्ठ सुँल्लवत्थु पण्णत्ता ३ । अत्थिणत्थिप्यवायस्स णं पुब्बस्स अट्ठारस्स

१-३-५-७ इवइयाइं मो सु ॥ २-४-६-८ सुत्ताइ इति परं अं च एव वत्ते मग्गत्त समवायाहेऽपि भास्ति ॥
 ९ मग्गति इयमक्कणाय अ ॥ १० अंगोणीयं प ॥ ११ क्खण्णत्तवाइं अं वी विच ॥ १२ विज्जायु अं अ मो सु ॥
 १३ पाप्पाइं अं । पाप्पाइं अं अ मो सु ॥ १४ अत्थिणत्तं इति उप्पायस्स णं पुब्बस्स, अंगोणीयस्स अ पुब्बस्स
 वीरियस्स अं पुब्बस्स इयमिक्केय चतुरं वत्तसि एवमात्तवत्तिय उप्पायपुब्बस्स णं अंगोणीयपुब्बस्स अं वीरियपुब्बस्स अं
 इयमिक्केय, पाप्पाइं मो सु इत्तं ॥ १५ सुँल्लवत्थु अ । सुँल्लवत्थु अं अं मो सु ॥ १६ अंगोणीयवत्तं अं अ ॥
 १७ सुँल्लवत्थु अं अ । सुँल्लवत्थु अं अं मो सु ॥ १८ वत्तं अ । सुँल्लवत्थु अं अं मो सु ॥

वत्थू दस चुल्लवत्थू पण्णत्ता ४ । णाणप्पवादस्स णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ५ । सच्च-
 प्पवायस्स णं पुव्वस्स दोण्णि वत्थू पण्णत्ता ६ । आयप्पवायस्स णं पुव्वस्स सोलस वत्थू
 पण्णत्ता ७ । कम्मप्पवायस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता ८ । पच्चक्खाणस्स णं पुव्वस्स
 वीसं वत्थू पण्णत्ता ९ । विज्जणुप्पवादस्स णं पुव्वस्स पणरस वत्थू पण्णत्ता १० । अवंझस्स
 णं पुव्वस्स बारस वत्थू पण्णत्ता ११ । पाणायस्स णं पुव्वस्स तेरस वत्थू पण्णत्ता १२ । 5
 किरियाविसालस्स णं पुव्वस्स तीसं वत्थू पण्णत्ता १३ । लोगविंदुसारस्स णं पुव्वस्स पणु-
 वीसं वत्थू पण्णत्ता १४ ।

दस १ चोदस २ अट्ठ ३ ऽहारसेव ४ बारस ५ दुवे ६ य वत्थूणि ।

सोलस ७ तीसा ८ वीसा ९, पण्णरस १० अणुप्पवायम्मि ॥ ७७ ॥

बारस एकारसमे ११, बारसमे तेरसेव वत्थूणि १२ ।

तीसा पुण तेरसमे १३, चोदसमे पण्णवीसा उ १४ ॥ ७८ ॥

चत्तारि १ दुवालस २ अट्ठ ३ चेव दस ४ चेव चुल्लवत्थूणि ।

आइलाण चउण्हं, सेसाणं चुल्लया णत्थि ॥ ७९ ॥

से त्तं पुव्वगते ३ ॥

१०७. से किं तं पुव्वगतं ? ति, उच्यते—जम्हा तित्थकरो तित्थपवत्तणकाळे गणधराण सव्वसुताधारत्तणतो 15

पुव्वं पुव्वगतसुतत्थं भासति तम्हा पुव्व त्ति भणिता, गणधरा पुण सुत्तरयणं करेन्ता आयाराइकमेण रयंति
 द्वेति य । अण्णायरियमतेणं पुण पुव्वगतसुत्तत्थो पुव्वं अरहता भासितो, गणहरेहि वि पुव्वगतसुत्तं चेव पुव्वं रइत्तं
 पच्छा आयाराइ । एवमुक्ते चोदक आह—णणु पुव्वावरविरुद्धं, कम्हा ? जम्हा आयारनिज्जुत्तीए भणितं—“सव्वेसिं
 आयारो” गाहा [आचाराङ्गनि गा ८] । आचार्याऽऽह—सत्यमुक्तम्, किंतु सा ठवणा, डमं पुण अक्खररयणं पडुच्च भणितं,
 पुव्वं पुव्वा कता इत्यर्थः । ते य उप्पायपुव्वादिया चोदस पुव्वा पण्णत्ता । पढमं उप्पायपुव्वं ति, तत्थ सव्वदव्वाणं 20
 पज्जवाण य उप्पायभावसंगीकाउं पण्णवणा कता, तस्स पदपरिमाणं एका पदकोडी १ । त्रितियं अग्गेणीयं, तत्थ
 वि सव्वदव्वाण पज्जवाण य सव्वजीवविसेसाण य अग्गं—परिमाणं वण्णिज्जइ त्ति अग्गेणीत्तं, तस्स पदपरिमाणं
 छण्णउत्ति पदसतसहस्सा २ । त्रितियं वीरियप्पवायं, तत्थ वि अजीवाणं जीवाण य सकम्मेतराण वीरियं प्रवदति त्ति
 वीरियप्पवादं, तस्स वि सत्तारि पदसतसहस्सा ३ । चउत्थं अत्थिणत्थिप्पवादं, जं लोये जहा अत्थि जहा वा
 णत्थि, अहवा सित्तंवादाभिप्पादतो तदेवास्ति नास्तीत्येवं प्रवदतीति अत्थिणत्थिप्पवादं भणितं, तं पि पदपरि- 25
 माणतो सट्ठि पदसतसहस्साणि ४ । पंचमं णाणप्पवादं ति, तम्मि मतिणाणाडपंचकस्स सप्रभेदं प्रखवणा जम्हा
 कता तम्हा णाणप्पवादं, तम्मि पदपरिमाणं एका पदकोडी एगपदूणा ५ । छट्ठं सच्चप्पवादं, सच्चं—सजमो सच्च-

१ चुल्लवत्थू ल० शु० । चुल्लियावत्थू जे० डे० मो० सु० ॥ २ विज्जाणुं जे० ल० सु० ॥ ३ पाणायुस्स स० ।
 पाणाउस्स जे० डे० ल० मो० सु० ॥ ४ चुल्लवं मो० शु० सम० ॥ ५ चुल्लिया स० विना ॥ ६ स्याद्वादाभिप्रायत ॥

- पपञ्च वा, त सचं जत्य समेदं सपञ्चिककथं च वणिज्जति सं सचप्यवार्दं, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोठी छप्य दाधिया ६ । सचमं आयप्यवार्दं, आय चि-आत्मा, [अ० २२० रि०] सो जोगहा जत्त जप्यरिसणेहिं वणिज्जति सं आयप्यवार्दं, तस्स वि पदपरिमाण छेवीसं पदकोठीयो ७ । अद्धम कम्मप्यवार्दं, णाणानरपाइयं अद्ध बिधं कम्म फाति-द्विति-अणुमाग-प्यदेसादिपरिं भेदेहिं अणोहि य उचरुत्तरमेदेहिं जत्य वणिज्जति सं कम्मप्य ५ वाद, तस्स वि पदपरिमाण एगा पदकोठी असीति च पदसहस्ताणि मपेति ८ । अद्धम पदकम्भाणं, तम्मि सद्धपञ्चकत्ताणमरुच वणिज्जति चि अतो पद्धकत्ताणप्यवार्दं, "तस्स य पदपरिमाण चदुरासीति पदसहसहस्ताणि मवति ९ । दसमं विज्जणुप्यवार्दं, तत्य य अणोणे विज्जातिसया वणिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकाठी दस य पदसहसहस्ताणि १० । एगादसम अर्वाञ्च ति, बंधं णाम-गिण्फळं, अ बंधमवर्धं, सफळेत्यर्थं, सध्वे णाम-सक-समममोगा सफला वणिज्जति, अप्यसत्या य पमादाधिया सध्वे अद्धमफला वणिता, अता अर्वाञ्च, 10 तस्स वि पदपरिमाण छवीसं पदकोठीयो ११ । बारसमं पाणापुं, तत्य आयुं-भाजविभाण सध्व समेदं अणोणे य माणा वणिता, तस्स पदपरिमाण एगा पदकोठी छप्यञ्च च पदसहसहस्ता १२ । तेरसम किरियाधिसाल, तत्य कायकिरियाधियाओ विसाल चि-ममेदा, सममकिरियाओ यं छंदकिरियविहाना य, तस्स वि पदपरिमाणं पत्र कोठीयो १३ । ओइसमं छोगविंदुसार, सं च इमम्मि ओए सुतओए वा विंदुमिच अक्खरस्स [सारं-] सध्वुचमं सध्वक्खरसध्विनावपवित्तचत्तो सोमविंदुसारं, तस्स पदपरिमाण अहहतेरस पदकोठीयो १४ । ३ ॥

15 इदाणि अणिओगो चि—

१०८. से किं तं अणुओगे ? अणुओगे दुविहे पणत्ते, तं जहा—मूलपदमाणुओगे य गंधियाणुओगे य ।

१०८ अनुयोग इत्येतद् अनुसूयो योताः अनुयोग इति । एवं सर्वं एव सूत्रार्थं वाच्यः । इह जन्म-मरु पर्याय शिष्यादियोगविशेषात्ताऽनुयागो वाच्यः । स च द्विविधः—मूलपदमाणुयोगो गणिकाविक्षिप्तम् ॥ तत्य—

- 20 १०९. से किं त मूल्यदमाणुओगे ? मूल्यदमाणुओगे णं अरहंताणं भगवताणं पुव्व भवा देवेलोगगमणाइ ऊंअं चवणाइं जम्मणाणि य अभिसेया रायवरसिरीओ पव्वज्जाओ, तवा य उग्गा, केवलनाणुप्ययाओ तित्यपवत्तणाणि य मीसा गणा गणधरा य अज्जा य पवत्तिणीओ य, संघस्स चउच्चिहस्स जं च परिमाणं, जिण मणपज्जव ओहिणाणि-समत्तसुय णाणिणो य वादी य अणुत्तरगती य उत्तरवेउच्चिणो य मुणिणो जत्तिया, जत्तिया सिद्धा, 20 मिद्धिपहो जह य देसिओ, जच्चिर च काल पादोवगओ, जो जहिं जत्तियाइ भत्ताइ छेयंइत्ता अंतगहो मुणिवरुत्तमो तमरंओघविण्णमुओ मुक्खसुहमणुत्तरं च पत्तो, एते अने य एवमादी भावा मूल्यदमाणुओगे कहिया । से सं मूल्यदमाणुओगे ।

१ छवीसं के २२ य बंधकिरिय के विष्णु ॥ ३ वैश्वाम ३ न सु ओ सु ॥ ४ ज्ञायतं ॥ ५ अचरु वेदव्यथा य मुनिजो इति सं तय वराल ॥ ६ छेइत्ता के ६ न ओ सु ॥ ७ एवुच के ॥ ८ सुइं च अणुत्तरं पत्तो सं न ॥ ९ पद्धममे दे सु ॥

अणुओगसुयं मूलपदमाणुओगो गडियाणुओगो य] सिरिदेववायगविरह्य णंदीसुत्तं ।

१०९. 'मूलपदमाणुओगो' त्ति, इह मूलभावस्तु-तीर्थकरः, तस्य प्रथमं-पूर्वभवादि, अहवा [जे० २२१ प्र०] मूल एव प्रथमः मूलपदमाणुओगो । एत्थ तित्थगरस्स अतीतभवभावा वट्टमाणभवे य जम्मादिया भावा कहिज्जंति । अहवा मूलस्स जे पढमा भावा ते मूलपदमाणुओगो भण्णाति । एत्थ तित्थकरस्स जे भावा प्रसूतास्ते परियाय-सुत्त-सिस्साइया भाणितव्वा ॥-

११०. से किं तं गंडियाणुओगे? गंडियाणुओगे णं कुलगरगंडियाओ तित्थगरगंडियाओ 5
चकवट्टिगंडियाओ दसारगंडियाओ बलदेवगंडियाओ वासुदेवगंडियाओ गणधरगंडियाओ
भहवाहुगंडियाओ तवोकम्मगंडियाओ हरिवंसगंडियाओ ओसप्पिणिगंडियाओ उस्सप्पिणि-
गंडियाओ चित्तंतरगंडियाओ अमर-गर-तिरिय-निरयगइगमणविविहपरियट्टणेसु एवमाइयाओ
गंडियाओ आघविज्जंति । से तं गंडियाणुओगे । से तं अणुओगे ४ ।

११०. गंडियाणुओगो त्ति इक्खुमादिपर्वगंडिकावत् एक्काहिकारत्तणतो गंडियाणुओगो भणितो । ता य 10
कुलकरादियाओ, विमलत्राहणादिकुलकरणं "पुव्वभव जम्म णाम प्पमाण०" गाहा [आव नि गा. १४९] एवमादि
जं किंचि कुलकरस्स वत्तव्वं तं सव्वं कुलकरगंडियाए भणितं । एवं तित्थकरादिगंडियासु वि । 'चित्ततर-
गंडिय' त्ति चित्रा इति-अनेकार्थी, अंतरे इति-उसभ-अजियतरे ता दिट्ठा, गडिका इति-खंडं, अतो चित्ततरगंडिका
भणिता । तासिं पेरुवणे पुव्वायरिएहिं इमा विधी दिट्ठा—

आदिच्चजसादीणं उसभस्स पयोपदे णरवतीणं । सगरसुत्ताण सुबुद्धी इणमो संखं परिकहेति ॥१॥ 15

चोइस लक्खा सिद्धा णिवईणेको य होति सव्वट्ठे । एवेक्केट्ठणो पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥२॥

पुणरवि चोइस लक्खा सिद्धा निवतीण दोण्णि सव्वट्ठे । दुगठाणे वि असंखा पुरिसजुगा होंति णातव्वा ॥३॥

जाव य लक्खा चोइस सिद्धा पण्णास होंति सव्वट्ठे । पण्णासट्ठणो वि तु पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥४॥

एगुत्तरा तु लक्खा सव्वट्ठे णेय जाव पण्णासा । एक्केकुत्तरठाणे पुरिसजुगा होंतऽसंखेज्जा ॥५॥ १ ।

विवरीयं सव्वट्ठे चोइस लक्खाइं निव्वुतो एगो । स चेत्र य परिवाडी पण्णासा जाव सिद्धीए ॥६॥ २ । 20

तेण पर दुलक्खादी दो दो ठाणा य समग वच्चति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं इणमो तासिं विही होइ ॥७॥

दो लक्खा सिद्धीए दो लक्खा णरवतीण सव्वट्ठे । एवं तिलक्ख चतु पंच जाव लक्खा असंखेज्जा ॥८॥ ३ ।

सिवगति-सव्वट्ठेहिं चित्ततरगंडिया ततो चउरो । एगादेगुत्तरिया एगादिविउत्तरा वितिया ॥९॥

तति एगादितिउत्तर तिगमादिविउत्तरा चतुत्थेवं । [जे० २२१ द्वि०] पढमाए सिद्धेको दोण्णि य सव्वट्टसिद्धम्मि ॥१०॥

ततो तिण्णि णरिदा सिद्धा चत्तारि होंति सव्वट्ठे । इय जाव असंखेज्जा सिवगति-सव्वट्टसिद्धेहिं १ ॥११॥ 25

ताहे विउत्तराए सिद्धेको तिण्णि होंति सव्वट्ठे । एवं पच य सत्त य जाव असंखेज्ज दो वि त्ति २ ॥१२॥

एग चतु सत्त दसगं जाव असंखेज्ज होंति दो वि त्ति । सिवगति-सव्वट्ठेहिं तिउत्तराए तु णेतव्वा ३ ॥१३॥

१ परुवणा पुव्वायरिएहिं इमा दिट्ठा आ० दा० ॥ २ पगुत्तरा उ ठाणा सव्वट्ठे चेत्र जाव पण्णासा । एक्केकुत्तराणे दा० ॥ ३ सव्वट्ठणो य आ० ॥ ४ तेसिं हारिण्वत्तो ॥ ५ दोण्णि त्ति दा० ॥ ६ एरा पत्थ णेयव्वा आ० ।
राए मुणेयव्वा दा० ॥

ताहै-विष्णादित्रिउचरार अउजचीस हू वियग ठावेतूं । पढम गतिय हू खेवो सेसेसु ईमो मवे खेवो ॥१४॥
 दुग पय पनगं सेरस सचरस दुवीस छ ब अद्वेव । बारस चोरस तर अद्वीस छवीस पजुवीसा ॥१५॥
 एकारम तेवीसा सीताळा सतरि सचसचरि या । इग दुग सचासीवी एगचरिमेड वाबडी ॥१६॥
 अउजचरि चठवीसा छाताळ सत तहैव छवीसा । एते रासीखेवा तिंगभंठवा नहाकमसा ॥१७॥
 5 सिषगवि-सम्बद्धेई दो दो ठाण विससुचरा जेया । भाब उणतीसठाणे उणतीसं पुय छवीसाए ॥१८॥
 विससुचरा य पढमा एबमसंतल विससुचरा जेया । सम्बन्त्य वि अंतिङ्ग अण्याए आदिम ठाज ॥१९॥ गर्वं ॥
 अउजचीसं बारा ठावेतु बलिय पढमए खेवो । सेसे अद्वीसाए सम्बन्त्य दुगादियो खेवो ॥२०॥
 सिषगवि पढमादीए बितियाए तहै य होति सम्बद्धे । इय एगंतरिताई सिषगवि-सम्बद्धाणार् ॥२१॥
 एबमसंखेजाभो षिचंतरगंडियाभो जेतव्या । जाब भितसपुराया बभित्ताबणपिता समुप्यण्यो ४ ॥२२॥
 10 एए गार्हाई षिचतरगंडिया समचा । इमा एतासिं ठबजा-

सिद्धा सक्ता	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४
सम्बद्धे सक्ता	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०

एवं भाब असंखेजा पुरिसङ्गा सिद्धा । अतो परं—

सिद्धा सक्ता	१	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	५०
सम्बद्धे सक्ता	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४	१४

एवं पि असंखेजा पुरिसङ्गा सिद्धा । एते बि सक्ता—

सिद्धा सक्ता	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२
सम्बद्धे सक्ता	२	३	४	५	६	७	८	९	१०	११	१२

एवं भाब असंखेजा भाबसिया दुगादिपुष्टरा दो [अ० २२२ अ] वि गण्यवि ॥

सिद्धा	१	३	५	७	९	११	१३	१५	१७	१९
सम्बद्धे	२	४	६	८	१०	१२	१४	१६	१८	२०

एवं असंखेजा । एगावेष्टरा पढमा षिचंतरगंडिया जेया ॥

सिद्धा	१	५	९	१३	१७	२१	२५	२९	३३	३७	४१
सम्बद्धे	३	७	११	१५	१९	२३	२७	३१	३५	३९	४३

एवं असंखेजा । एगादित्रिउचरा वितिया षिचंतरगंडिया ॥

१ इमो मवे खेवो वा ॥ २ विष्णादित्रिउचरा अउजचीस पय पनगं सेरस सचरस दुवीस छ ब अद्वेव । बारस चोरस तर अद्वीस छवीस पजुवीसा ॥१५॥
 अउजचरि चठवीसा छाताळ सत तहैव छवीसा । एते रासीखेवा तिंगभंठवा नहाकमसा ॥१७॥
 सिषगवि-सम्बद्धेई दो दो ठाण विससुचरा जेया । भाब उणतीसठाणे उणतीसं पुय छवीसाए ॥१८॥
 विससुचरा य पढमा एबमसंतल विससुचरा जेया । सम्बन्त्य वि अंतिङ्ग अण्याए आदिम ठाज ॥१९॥ गर्वं ॥
 अउजचीसं बारा ठावेतु बलिय पढमए खेवो । सेसे अद्वीसाए सम्बन्त्य दुगादियो खेवो ॥२०॥
 सिषगवि पढमादीए बितियाए तहै य होति सम्बद्धे । इय एगंतरिताई सिषगवि-सम्बद्धाणार् ॥२१॥
 एबमसंखेजाभो षिचंतरगंडियाभो जेतव्या । जाब भितसपुराया बभित्ताबणपिता समुप्यण्यो ४ ॥२२॥

सिद्धा	१	७	१३	१९	२५	३१	३७	४३	४९	५५
सन्वहे	४	१०	१६	२२	२८	३४	४०	४६	५२	५८

एवं जाव असंखेज्जा । एगादितिउत्तरा ततिया चित्तंरगंडिया ॥

सिवागति	३	८	१६	२५	११	१७	२९	१४	५०	८०	५	७४	७२	४९	२९
सन्वहे	५	१२	२०	९	१५	३१	२८	२६	७३	४	९०	६५	२७	१०३	

5

सन्वहे	२९	३४	४२	५१	३७	४३	५५	४०	७६	१०६	३१	१००	९८	७५	५५
सिवागति	३१	३८	४६	३५	४१	५७	५४	५२	९९	३०	११६	९१	५३	१२९	

सेसं गाहाणुसारेण णेतव्वं जाव असंखेज्जा ४ ॥

१११. से किं तं चूलियाओ ? चूलियाओ आइल्लाणं चउण्हं पुव्वाणं चूलिया, अव-
सेसा पुव्वा अचूलिया । से तं चूलियाओ ५ ।

10

१११. 'चूल' ति सिहरं । दिट्ठिवाते जं परिकम्म-मुत्त-पुव्व-अणुयोगे य ण भणितं तं चूलासु भणितं । ताओ य चूलाओ आदिट्ठपुव्वाण चतुण्हं जे चूलवत्थू भणिता ते चेव सन्वुवरि द्विवाता पढिज्जंति य, अतो ते सुयपव्वय-चूला इव चूला । तेसिं जहक्कमेण संखा चतु वारस अट्ट दस य भवंति ५ ॥

११२. दिट्ठिवायस्स णं परित्ता वायणा, संखेज्जा अणुओगदारा, संखेज्जा वेढा,
संखेज्जा सिलोगा, संखेज्जाओ पडिवत्तीओ, संखेज्जाओ णिज्जुत्तीओ, संखेज्जाओ 15
संगहणीओ । से णं अंगट्टयाए ढुवालसमे अंगे, एगे सुयक्खंधे, चोदस पुव्वा, संखेज्जा
वत्थू, संखेज्जा चुल्लवत्थू, संखेज्जा पाहुडा, संखेज्जा पाहुडपाहुडा, संखेज्जाओ पाहुडि-
याओ, संखेज्जाओ पाहुडपाहुडियाओ, संखेज्जाइं पंदसहस्साइं पदग्गेणं, संखेज्जा अक्खरा,
अणंता गमा, अणंता पज्जवा, परित्ता तसा, अणंता थावरा, सासत-कड-णिवद्ध-णिकाइया
जिणपणत्ता भावा आघविज्जंति पण्णविज्जंति परूविज्जंति दंसिज्जंति णिदंसिज्जंति उव- 20
दंसिज्जंति । से एवंआया, एवंगाया, एवंविण्णया, एवं चरण-करणपरूवणा आघविज्जं-
ति । से तं दिट्ठिवाए १२ ।

११२. संखेज्जा वत्थू पणुवीमुत्तरा दो सता । 'संखेज्जा चूलवत्थू' ति चतुत्तीसं ॥

१-२ चूलिया ख० स० ल० शु० ॥ ३ चूलिया, सेसाइ पुव्वाइ अचूलियाइं, से तं जे० मो० मु० ॥ ४ चूलिया
ख० स० ल० शु० ॥ ५ दिट्ठिवाए ण ख० स० ल० शु० ॥ ६ अंगट्टयाए ख० शु० ॥ ७ वारसमे जे० मो० मु० ॥ ८ पुव्वाइं
जे० मो० मु० ॥ ९ चूलवत्थू ख० स० सम० विना ॥ १० पदसतसहं सम० ॥ ११ विज्जंति स० जे० ॥

११३ ईशेइयमि दुवाल्लमंगे गणिपिढगे अणता भावा अणता अभावा अणता हेऊ
 अणता अहेऊ अणता कारणा अणता अकारणा अणता जीवा अणता अजीवा अणता
 भवसिद्धिया अणता अभवसिद्धिया अणता सिद्धा अणता असिद्धा पण्णत्ता । संगहणिगाहा-

भावमभावा हेउमहेऊ कारणमकारणा चेव ।

जीवाऽजीवा भवियमभविया सिद्धा असिद्धा य ॥ ८० ॥

११६ अणता भाव चि भवनं भूतिनां भाव', ते य जीवाऽजीवात्मका अर्थात् प्रतिबद्धा । 'अप्यता
 अभाव' चि अमवन अभावः अमूर्तिनां । जहा जीवा अजीवत्वेण अभाषो, अजीवा य जीवत्वेण, पढो पढत्वेण, पढो
 य पढत्वेण, एमादि अर्थता अमाना प्रतिबद्धा । अहा जे अहा जाअया भावा तेसि पडिपक्खतो वाअया चेव
 अणता अभावा मवति । 'अणता हेहु' चि पंच-दसायथसंयणेसु पक्खअम्मत्तं सपक्खन्वत्तं अमिन्नसित्तमत्तसापकं
 10 पयय हेतु मण्णति, अहा सम्भजुचिनुत्तं वपय हेतु मण्णति, अहा सम्भे जिणपयणपहा हेतु, प्रतिपाठकत्तयो,
 पियोसहेतुवपय व, सुचस्स य अणत्तं ७० २२२ धि मंगत्तवतो, एव अणता हेतु । अणितपडिक्खत्ततो य
 अर्थात्ता चेव अहेतु । 'अणता कारण' चि फज्जसापयं कारण ति, ते य पयोग-नीससातो अर्थात्ता मायित्त्वा । मं व
 अस्स असापकं उं वत्स अकारण, जहा चक्कं-डाअयो पडस्स, एवं अणता अकारणा । 'अणता जीवा' इत्यादि कंठं ॥

११४ ईशेइयं दुवाल्लसंगं गणिपिढगं तीए काळे अणता जीवा आणाए विराहेत्ता
 15 चाउरत्तं संसारकंतारं अणुपरियट्टिसु । ईशेइयं दुवाल्लसंगं गणिपिढगं पडुपण्णकाळे परित्ता
 जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत्तं संसारकंतारं अणुपरियट्टिति । ईशेइयं दुवाल्लसंगं गणिपिढगं
 अणागत्ते काळे अणता जीवा आणाए विराहेत्ता चाउरत्तं संसारकंतारं अणुपरियट्टिसंति ।

११४ इशेयं दुवाल्लसंगं गणिपिढगं तीते काळे अणता जीवा आणाए विराहेत्ता इत्यादि ।
 'दुवाल्लसंगं गणिपिढगं' ति तिभिर्हि पक्खत्तं-सुचतो अत्यतो तदुमपयो य । एयेव भावा तिभिहा-सुचाया अस्याया

१ इशेयमि अं ॥ २ काएया जीवा । अजीव भवियऽमविया ततो सिद्धा अं ॥ ३ एयावव-वत्ता-
 वक्खत्ताभावेनो-अस्समागो सुआधैकाधिककस्सुअमित्ति-पूर्वि-इअपिचर-इत्यादिक्को प्रक्खत्तमो-अभावात्तीक-“एवमा-हेतु-विट्ठोपसंहा-
 मियमत्तं” हा मिअविज्जति कामपक्ख पच्छिं इत्थं हि वा । एवा “पटिप्पा पक्को अक्खतो १ पटिप्पात्तुत्तो १ हेऊ १ हेवत्तुत्तो १ विट्ठो
 ५ विट्ठोपिट्ठो १ उपसंहातो १ उपसंहाविट्ठो ८ विपयत्तं ९ विपयवविट्ठो इत्तयो १ १” इति [“अपत्ति पंचाशतक इति
 सुआधैकाधिककस्सुअमित्तिपाया ११ अक्खत्तं उपसंहातो पक् १] । “अहा भावम-हेतु-विट्ठोपसंहा-मियमत्तात्तामेव पचावत्तेव अहेउअ
 क्खत्तं एव एवावत्तेव । एवा-“इत्थं हि एवावत्तेव पक्खत्तं इत्थं हि, उं-अत्तिवा पक्को अक्खतो १ पटिप्पात्तुत्तो विट्ठो
 १ एव हेऊ एत्तयो अक्खतो १ हेवत्तुत्तो अक्खतो अक्खतो १ विट्ठो पक्को अक्खतो ५ विट्ठोपिट्ठो अक्को १ उपसंहातो एत्तयो
 ७ उपसंहाविट्ठो अक्को विपयत्तं पक्को ९ विपयवविट्ठो इत्तयो १ १” इति बुद्धचिखत्तये पक् १-२९ । ‘एवावत्ताव
 अट्ठिअवत्तं नवीचम्-“अट्ठिअ-हेतुआहोसव-मियमत्तात्तात्तात्ता [म्यावर १-१-११] सुआधैकाधिककस्सुअमित्ति पक् ११ ।
 एवा-“ ते व एत्त १ विपयो १ हेऊ १ विज्जतो ४ विपक्क ५ पक्खित्तो १ १ विट्ठो ७ उपसंहा ८ एत्तवित्तो ९ विपयत्तं १ व ४
 ११० ॥” सुआधैकाधिककस्सुअमित्ति । अस्या अभावात्ती हादिअत्तं अत्तवत्तवत्तीका । एत्तवत्तेव एवावत्तेव अमित्ति मियमत्तं
 ४ इत्तये सपक्खत्तमत्त-सपक्खत्त-अमित्तसित्तसंज्ञसापकं वा ० ५ पाक्कत्तवतो वा वा १ इशेयं अं ३ ।
 एमत्तं अत्तं इत्तं इत्तं ॥

तदुभयआणा य एव एगट्टिता तदा वि अभिघ्राणतो विसेसो कज्जति-यदा आज्ञाप्यते एभिः तदा आज्ञा भवति, तंतुं पटव्यपदेशवत् । आज्ञाप्यते यया हितोपदेशत्वेन सा आज्ञा इति । इदानीं एतेसि विराहणा चित्तिज्जति-जं मुत्ततो दुवालसंगं गणिपिडगं तं अत्थतो अभिनिवेशेण अण्णहा पणवेतो ताए अत्थाणाए मुत्तं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, गोठ्ठामाहिलवत् । अहवा जं अत्थतो दुवालसंगं गणिपिडगं तं मुत्ततो अभिनिवेशेण अण्णहा पढंतो ताए मुत्ताणाए अत्थं विराहेत्ता तीते काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा जमालिवत् । अहवा आणं ति-पंचविहायारायरणसीलस्स गुरुगो हितोपदेशत्रयणं आणा, तमण्णधा आयरंतेण गणिपिडगं विराधितं भवति, एवं तीए काले अणंता जीवा संसारं भमितपुव्वा, एसो अक्खरसमो अत्थो । इमो अणक्खरसमो-आणाए विराधेत्ता इति जहा छायाए भुंजित्ता गनो, णो छायाए करणभूयाए भुंजित्ता, किंतु छायाया भुक्त्वा गतेति, एवं आज्ञायां विराधनं कृत्वा । सा य आणा इमा-‘इच्चेयं दुवालसंगं गणिपिडगं आणाए विराहेत्ता’ । सेसं पूर्ववत् । पडुप्पण्ण-अणागतेसु वि मुत्तेसु एव चैव वत्तव्वं, णवरं पडुप्पण्णे काले परित्ता जीवा इति, अणंता असंखेज्जा य [जे० २२३ प्र०] ण भवंति, सण्णिमणुयाणं संखेज्जत्तगतो ॥

११५. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अतीतकाले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वित्तिव्वंइंसु । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं पडुप्पण्णकाले परित्ता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वित्तिव्वंयंति । इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं अणागए काले अणंता जीवा आणाए आराहेत्ता चाउरंतं संसारकंतारं वित्तिव्वंतिस्संति ।

११६. तिमु वि आराधणमुत्तेसु एवं चैव वत्तव्वं ॥

११६. इच्चेइयं दुवालसंगं गणिपिडगं ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ ण भवति ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए सासते अक्खए अव्वए अव्वट्ठिए णिच्चे । से जहाणांमए पंचत्थिकांए ण कयाति णाऽऽसी ण कयाति णंत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवंति य भविस्सति य, धुवा णीया सासता अक्खया अव्वया अव्वट्ठिया णिच्चा, एवामेव दुवालसंगे गणिपिडगे ण कयाइ णाऽऽसी ण कयाइ णत्थि ण कयाइ ण भविस्सति, भुवि च भवति य भविस्सति य, धुवे णिअए सासते अक्खए अव्वए अव्वट्ठिए णिच्चे ।

११६. ण कताइ णाऽऽसीत्यादि । त्रिकाले नास्तित्त्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । ‘भुवि च’ इत्यादि त्रिकाले अस्तित्त्वभावप्रतिषेधकं सूत्रम् । त्रिकालभावित्तगतो चैव अचलभावत्वाद् ध्रुवं मेवादिवत् । ध्रुवत्तगतो चैव जीवादि-

१ एए एगं दा० ॥ २ ततुभि. पटं व्यय, देववत्तवत् आ० दा० ॥ ३ तीए काले जे० सु० ॥ ४-५-६ वीइव्वं जे० मो० । वीतीव्वं शु० ॥ ७ णीते ख० ल० शु० ॥ ८ णामे ख० ॥ ९ काया ख० डे० ल० शु० ॥ १० ण भवंति ख० ल० शु० ॥ ११ णीते ख० ल० शु० ॥

मयपदस्येष्टु नियुक्तं नियतं जहा लोकरूपेण पंचास्तिकायेष्विव । मियतचणतो चैव 'सासतं' अक्षत् मपतीतिशाम्भतम्,
 मविसमया-ऽऽपलिक-सुहृत् दिनादिष्विव काम । सासतचणतो चैव बायणादिषु 'अकल्प' नास्य स्यो अस्यम्,
 रंगा-सिनुप्रचारेष्विव पौडरीक-इन्द्रत् । अकल्पचणतो चैव 'अव्यय' नास्य व्ययो अभ्ययम्, मानुषोष्वाद् बहिससुद्रत् ।
 अभ्ययचणतो चैव स्वममाणे अवद्वित् ज्वदीमादिषुत् । अवद्वितचणतो चैव सञ्चहा चित्तज्जमान 'निष्' माकाञ्चत् ।
 5 अविनाशीत्यर्थः । अहवा एते घुषादिया एगद्विता । चोदक भाइ-इषेयं दुषास्संग घुषादिपदपरुषितं किमाणागेञ्चं
 दिद्वेततो वा सञ्चं ? आचार्याऽऽइ-जम्हा निषेा अण्य्याहावादिषो तम्हा तेसिं मयणं सञ्चं आजाते चैव शञ्च, कर्हिचि
 दिद्वेततो चि गञ्च । इह दुषास्संगस्त घुषादिपरुषितस्य सापको इमो दिद्वेतो-सै महानामतेत्यादि ष्टं ॥

११७ से समासतो चउव्विहे पण्णते, त जहा-द्व्वओ खेत्तओ कालओ भावओ ।
 तत्थ दव्वओ ण सुयणाणी उवउत्ते सञ्चदव्वाइं जाणइ पांसइ । खेत्तओ णं सुयणाणी उवउत्ते
 10 सञ्च खेत्तं जाणइ पांसइ । कालओ ण सुयणाणी उवउत्ते सञ्च कालं जाणइ पांसइ । भावओ
 ण सुयणाणी उवउत्ते सञ्चवे भावे जाणइ पांसइ ।

११७. तं च दुषास्संगसुत्तं षट्ठुम्भिरं दव्वादि । अमिण्णदसपुष्पादियाण भाव सुत्तनाणकेसली ते पइ
 मणितं । दव्वतो ण सुत्तनाणी सुत्तनाणेणोषपुषो सुत्तविण्णीए सञ्चदव्वादिं भावति पासति य । षणु पास
 चि चितोहो ? उच्यते-जम्हा अदिद्वण्य चि मेम्मादियाण सुत्तथाणपासणताए भागारमासिइइ, वा यादिद्वं विल्लइ,
 15 पण्णनाणए य मथिता सुत्तथाणपासणत चि, ण चितोषो । भारतो पुण जे सुत्तनाणी ते सञ्चदव्वनाण-वासणतासु
 मत्ता । सा य मयणा मविचिसेसतां जाणितव्वा । एवं खेत्त-काञ्च-भाषेसु चि [षे० २२३ दि०] माणितव्वा ॥

सुत्तनाणदसमस्य मथ्यति—

११८ अक्खर १ सण्णी २ सम्मं ३ सादीय ४ खल्ल सपज्जवसियं ५ च ।
 गमियं ६ अंगपविट्ठं ७ सत्त वि एए सपडिवन्त्ता ॥ ८१ ॥

[भाष० नि० गा १९]

आगमसत्यगहणं जं बुद्धिगुणेहिं अंद्दहिं दिट्ठं ।
 चित्ति सुयणाणलमं तं पुव्वविसारया धीय ॥ ८२ ॥
 सुत्तसुइ १ पडिपुच्छइ २ सुणेइ ३ गिण्णइ ४ य ईहए ५ यौवि ।
 ततो अपोहए ६ वा धारेइ ७ करेइ वा सम्म ८ ॥ ८३ ॥
 20 मूर्यं १ हुंकार २ वा वादकाग ३ पडिपुच्छ ४ वीमसा ५ ।
 ततो परमंगपारायण ६ च परिणिट्ठ ७ मत्तमए ॥ ८४ ॥

१ जिष्वा वाऽप्यह्वा भा ० इ लस्य एति गं ६ म ० निष्वाङ्गुदत्ते २ वं मति ॥ ३ ५-७-९, य पासर
 हारोत्ता ० ४ १-८ वास्य ण निष्वाङ्गुदत्ते २ व ॥ १० अद्विदि चि दिद्वं ६ म ॥ ११ मदि च । वा चि
 ६ म ॥ १२ वा गं ॥

सुत्तथो खलु पढमो, वीओ णिज्जुत्तिमीसिओ भणिओ ।
तइओ य णिरवसेसो, एस विही होइ अणुओगे ॥ ८५ ॥

[आव० नि० गा० २१-२४]

से त्तं अंगपविट्ठं । से त्तं सुयणाणं । से त्तं परोक्खणाणं ।
॥ से त्तं णंदी सम्मत्ता ॥

5

११८. अक्खर० गाहा । एसा चोइसविहसुतभावपरुवणा कता ॥ ८१ ॥ एत्थं आयारादिगेणधरागम-
पणीतस्स पत्तेगवुद्धभासितस्स वा तहाकालाणुभावतो वल्ल-वुद्धि-मेधा-ऽऽयुहाणि जाणिऊण जे य सुत्तभावा
आयरिपहिं निज्जूढा तेसु गहणविही दंसिज्जइ—

आगम० गाहा ॥८२॥ इमे ते अट्ट बुद्धिगुणा—

सुस्सूसति० गाहा ॥८३॥ विणेतस्स अन्थसवणे इमा विही—

मूयं हुंकार० गाहा ॥८४॥ गुरुणो अणुयोगकहणे इमा विही—

सुत्तथो खलु० गाहा ॥८५॥

10

जं ण भणितमूणं वा अत्तिरित्तं वा वि अहव विवरीत्तं ।
त्तं सम्मऽणुयोगधरा कहेत्तु कात्तं मम क्वंत्तिं ॥ १ ॥

णि रे णै ग म त्त ण ह सं दा जि या पसुपतिसंखगजट्टिताकुला ।

कमट्टिता धीमतर्चितियक्खरा, फुडं कहेयंतऽभिधाण कत्तुणो ॥ छ ॥

15

शंकराज्ञो पंचसु वर्षशतेषु व्यतिक्रांतेषु अष्टनवतेषु नंद्यध्ययनचूर्णी समाप्ता इति ॥ छ ॥ छ ॥ ग्रन्थाग्रम् १५०० ॥





प्रथमं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रान्तर्गतानां सूत्रगाथानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क	गाथा	सूत्राङ्क	गाथाङ्क
अक्षर सण्णी सम्भं [आव नि गा १९]	११८	८१	ओही भवपञ्चतियो	२८	५२	जेसि इमो अणुओगो	५	३२
अद्भुतभरहृष्णो	५	३७	कम्परयजलोहविणि-	२	७	णाणम्मि दसणम्मि य	५	२८
अणुमाणहेउद्विदुत- [आव नि गा ९४८]	४६	६६	कालियसुयअणुओग-	५	३४	णागवररयणदिप्यंत-	२	१७
अत्यमहृथवस्वाणि	५	४०	काले चउण्ह वुड्ढी [आव नि गा ३६]	२३	५०	णिमित्ते अत्यसत्ये य [आव नि गा ९४४]	४६	६२
अथाणं उगहण [आव नि गा ३]	५८	७१	केवलगाणेणऽये	४१	५५	णियमूसियकणयसिला-	२	१३
अभए सेट्टि कुमारे [आव नि गा ९४९]	४६	६७	[आव नि गा ७८]	४६	६८	णेरतियदेवतित्थकरा पत्र-२० [टीकाद्वयसम्मत गाथा, आव नि गा ६६]	२०	टि०८
अयलपुरा गिक्खते	५	३१	खीरमिव जहा हंसा पत्र-१२ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	२	६	णेञ्जुडपहसासगय पत्र-७ [टीकाद्वयसम्मत गाथा]	७	टि०६
अह सन्वदन्वपरिणाम- [आव नि गा. ७७]	४१	५४	गुणभवणगहण ! सुय-	२	६	तत्तो य भूयदिन्न पत्र-१० [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	१०	टि०७
अगुलमावलियाण [आव नि गा ३२]	२३	४६	गुणरयणुजलकडयं पत्र-५ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	५	टि०१०	तत्तो हिमवतमहत- ५ ३३		
आगमसत्थगहण [आव नि गा २१]	११८	८२	गोविंदाण पि णमो पत्र-१० [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	१०	टि०७	तवनियमसच्चसजम- पत्र-११ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	११	टि०११
ईहा अपोह वीमंसा [आव नि गा १२]	५८	७५	चत्तारि दुवालस अ- १०७ ७९			तवसंजममयलंछण ! २ ९		
उगह ईहाऽवाओ [आव नि गा २]	५८	७०	चलणाहण आमडे ४६ ६९			तवियवरकणगचपय- ५ ३६		
उगह एक्क समय [आव नि गा ४]	५८	७२	[आव नि गा ९५१]			तिसमुदखायकिंत्ति ५ २६		
उप्पत्तिया वेणइया [आव नि गा ९३८]	४६	५६	जच्चजणघाउसम- ५ ३०			दस चोदस अट्टुऽट्टा- १०७ ७७		
उवओगदिदुसारा [आव नि गा ९४६]	४६	६४	जयड जगजीवजोपी- १ १			नगर रह चक्क पउमे पत्र-५ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	५	टि०१०
ऊससिय नीससियं [आव नि गा २०]	६४	७६	जयड सुयाण पमवो १ २			न य कन्थड निम्माओ पत्र-१२ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	१२	टि०५
एलावच्चसगोत्तं	५	२४	जसमदं तुगिय वदे ५ २३			पढमेत्थ इंदभूती ४ २०		
			जावतिया तिसमया- २३ ४४			परतिथियगहपह- २ १०		
			[आव नि गा ३०]			पुट्टु सुणेति संदं ५८ ७३		
			जा होड पगइमहुरा पत्र-१२ [चूर्णि-टीकाद्वयानाहता गाथा]	१२	टि०५	[आव नि गा ५]		
			जीवदयासुदरकद- २ १४					
			जे अण्णे भगवते ५ ४२					

पावा	घनाड	यावाड	गावा	घनाड	यावाड	पावा	घनाड	यावाड
पुष्प अदिट्टमसुय [आव. नि. वा ११९]	४६	५७	महुस्तिथ सुरिष्के [आव. नि. वा १४२]	४६	६०	संनमतवर्तुवार	२	५
बारस एकारसमे	१०७	७८	मडिय मोरियपुत्ते	४	२१	संभरवरकल्पगन्धिमउग्न-	२	१५
भण्णी करग करग	५	२७	मिउमडवसंपण्णे	५	३५	सावगणमहुयपरि	२	८
मदं भिइवेलापरी	२	११	मूय हुकरं वा [आव. नि. या ११]	११८	८४	सीया साडी वीइ व [आव. नि. या १४५]	४६	३३
मदं सन्वडगुओ	१	३	वदामि अम्बरभम्म [पूर्वि-येकाइवावाटा यावा]	पत्र-८	टि १०	सुकुमाककोमस्तके	५	४१
मदं सीस्त्रमडागू	२	४	वदामि अम्बरभिस्य [पूर्वि-येकाइवावाटा यावा]	पत्र-८	टि०१०	सुत्तचो स्वत्त पडमो [आव. नि. या. १४]	११८	८५
मरगिभरणसमाथा [आव. नि. वा. १४१]	४६	६१	वदे उसम अम्भिय	३	१८	सुस्वत्त पडिपुत्त [आव. नि. या. ११]	११८	८३
मरहम्मि अदमासो [आव. नि. या. १४]	२३	४८	विणममयपवरसुणिवर [१९ यावाअम्भयवरवपडमेवा]	पत्र-५	टि०८	सुहम्मं अम्भियेसामं	५	२२
मरह् सिअ पणिय रुक्खे [आव. नि. या. १४]	४६	५८	विणममयपवरसुणिवर	२	१६	सुहुमो य होइ कास्से [आव. नि. या १०]	२३	५१
मरह् सिअ मिअ कुक्कुड [आव. नि. या. १४१]	४६	५९	विमस्मणउइभम्मं	३	१९	सेक्कण कुडग वाक्खणि [आव. नि. या ११६]	३	४३
माचमभावा हेउम-	११३	८०	सम्मरंसणवइरवड	२	१२	इत्थम्मि सुहुवंती	२३	४७
मासासमसेटीओ [आव. नि. या. ९]	५८	७४	सम्भवहुअगामिनीवा [आव. नि. या ११]	२३	४५	हारिबोत्ते साई [आव. नि. या ११]	५	२५
मूयच्चिबय्यमग्गे	५	३८	संजेग्गम्मि उ काळ [आव. नि. या. १५]	२३	४९	हेरिणिय करिसय [आव. नि. या. १४०]	४६	६५
मूणपक्कयाण पुण [आव. नि. या. ७६]	३२	५३						

द्वितीयं परिशिष्टम्

नन्दीसूत्रचूर्ण्यन्तर्गतानामुद्धरणानामकारादिवर्णक्रमेण अनुक्रमणिका

गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क	गाथादि	पत्राङ्क
अउणत्तरि चउवीसा	७८	एवमसखेज्जाओ	७८	जह जुगमुप्पत्तीय वि	२९
अउगत्तीस वारा	७८	एव तु अणतेहिं	५४	[विशेषणवती गा २१९]	
अक्खरलभेण समा	५५	[कल्पभाष्य गा ७०]		जह पासतु तह पासतु	३०
[विशेषणवती गा १४३]		एव बहुवत्तव्व	५६	[विशेषणवती गा १९२]	
अण्णे ण चैव वीसु	२८	[नन्दीचूर्णो]		जं केवलाइं साटी-	२८
[विशेषणवती गा १५४]		कस्म व्ण णाणुभतमिण	३०	[विशेषणवती गा १९३]	
अण भोजने	१४	[विशेषणवती गा २४६]		जाव य लक्खा चोइस	७७
[पाणि धातु १५२४]		किंचिन्मत्तगाही	१३	जुगवमजाणतो वि हु	२९
अणू व्याप्ती	१४	[कल्पभाष्य गा ३६९]		[विशेषणवती गा २१६]	
[पाणि धातु १२६५]		कमिक्कीटपत्तगाधा	४८	णववमचेमइओ	६२
अह ण वि एत तो सुण	२९	[]		[आचाराङ्क निं गा ११]	
[विशेषणवती गा २०३]		केण हवेज्ज निगेधो	५४	णुद प्रेरणे	१७
अह देसणाणदसण	३०	[कल्पभाष्य गा ६९]		[पाणि धातु १२८३]	
[विशेषणवती गा १५७]		केयी भणंति जुगव	२८	ततिग्गादि तित्तर	७७
आदिच्चजसादीण	७७	[विशेषणवती गा १५३]		तत्तो तिण्णि णरिंदा	७७
इहराऽऽर्याणिहणत्त	२८	केवलमेग सुद्ध	१४	तह य असव्वणुत्तं	२८
[विशेषणवती गा १९४]		[विशेषणवती गा ८४]		[विशेषणवती गा १९५]	
इहाऽऽथोलौकिका ग्रामा	२४	गणहरकतमगगतं	५७	ताहं विउत्तराए	७७
[]		[]		तित्थं भते ! तित्थं ?	२६
उवउत्तस्सेमेव य	२९	गमणपरावत्तेगो	१३	[भगवती श २० उ ८ सू. ६८२]	
[विशेषणवती गा २०६]		[]		तियगादिविउत्तराए	७८
उवयोगो एगतरो	३०	गुणदोसविसेसणू	१२	तुल्ले उमयावरण-	२९
[विशेषणवती गा २३२]		[कल्पभाष्य गा ३६५]		[विशेषणवती गा २१७]	
उवल्लही अगुरुल्लहू	५४	गुरुल्लहुदव्वेहिंतो	५३	तेण पर दुलक्खादी	७७
[कल्पभाष्य गा ७१]		[कल्पभाष्य गा ६७]		दिंत्तस्स लभत्तस्स व	२९
उस्सेहपमाणतो मिणे देहं	२४	चोइस लक्खा सिद्धा	७७	[विशेषणवती गा २०५]	
[बृहत्सङ्ग्रहणी गा ३३५]		जति पुण सो वि वरिज्जेज्ज	५६	दुग पण णवग तेरस	७८
एक्कारस तेवीसा	७८	[कल्पभाष्य गा ७४]		देसणाणोवस्से	३०
एग चतु सत्त दसग	७७	जह किर खीणावरणे	३०	[विशेषणवती गा १५६]	
एगुत्तरा तु लक्खा	७७	[विशेषणवती गा १५५]			

पात्रादि	पत्राद	पात्रादि	पत्राद	पात्रादि	पत्राद
दो स्मृत्वा सिद्धीय	७७	पुगमि चोदस स्मृत्वा	७७	षठसमिति०	६१
धम्मो मगल्लसुद्धं	७४	पुब्बमम धम्म पाण	७७	[]
[दस्यु म. १ पा. १]		[आशस्वच्छि गा. १४९]		विवरिय सम्भुद्धे	७७
नागमि वसणमि य	३०	मग्गि वि य पण्णती	२९	सिसमुद्धरा य फट्ठा	७८
[विधेयवती गा २२९]		[विधेयवती गा. २२]		सुतर्त ण देह् झम्ह	२९
निच्छम्लो सम्भुद्धं	५३	मग्गति अहोहिणाणी	३०	[विधेयवती गा १४]	
[धम्ममाय गा १५]		[विधेयवती गा १०८]		सदसदविधसगतो	४८
पगतीमुद्धमभागि	१३	मग्गति ण एस गियमो	२९	[विधेयवती गा. ११५]	
[धम्ममाय गा १६०]		[विधेयवती गा २१८]		सम्भे सत्ता ण हत्थ्या	२
पग्गविग्गिन्ना भावा	५५	मग्गति विग्गमुद्धुत्तो	२८	[आचारज्ज भु. १ म ४]	
[धम्ममाय गा ११४]		[विधेयवती गा १२]		सम्भेसि आधारे	७५
पायदुगा म्पेत्त	५७	ममा मकुद्ध मरल	१	[आचारज्ज वि गा. ८]	
[[सिबगति पट्ठादीय	७८
पासंतो मि ण भाण्ण	२९	रुय पचेमकुद्धा	२६	सिबगति-सम्भुद्धेहि वि-	७७
[विधेयवती गा २१५]		[आशस्वच्छि गा. ११२५]		सिबगति-सम्भुद्धेहि दो	७८
पिबस्स वा वितीही	६१	रुवित्सज्जने	१५		
[म्भहारमाय म १ पा २८९]		[वरसा म. १ सु. २८]			

३

तृतीयं परिधिष्टम्

नन्दीसूत्रचर्चिगतानि पाठान्तर-भेदान्तरनिदर्शकानि स्थानानि

पात्रादि	पत्राद	पात्रादि	पत्राद
अण्णामरियमलेण	७५ १७	अह्वा	१७-१३
अण्णे	२२ २२ ३२ ३	अह्वा पाठो	१२ २
अण्णे पुण	८ ११	वेह	४१ ६
अण्णे पुण आधरिया	४१ २	पाबंत्तरं इम	२ १४
अण्णे मज्जंति	९ २५ २४-२१	पाबंत्तरं	८ ११ ५२ ६ ७ २

चतुर्थ परिशिष्टम्

नन्दीसूत्र-तच्चूर्ण्यन्तर्गतानां ग्रन्थ-ग्रन्थकार-स्थविर-नृप-श्रेष्ठि-नगर-पर्वतादीना-
मकारादिवर्णक्रमेणानुक्रमणिका

[अस्मिन् परिशिष्टे * एतादृक्पुष्पिकायुतानि नामानि नन्दीसूत्रमूलगतानि ज्ञेयानि, ० एतादृक्शून्ययुतानि नामानि उद्घरणस्थानत्वेनास्माभिर्निर्दिष्टानि ज्ञेयानि, शेषाणि च नामानि चूर्णि-टिप्पणिसत्त्वानि ज्ञेयानि]



विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*अकपित	[निर्ग्रन्थ-गणघर]	७	अणुत्तरोववाडयदसा [जैनागम]		६९	०अंगविज्जा	[जैनागम]	३टि०
०अगस्त्यसिंह	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८०टि०	*अणुत्तरोववाडयदसाओ ,,		४८,६१,	*अंतगडदसाओ	,,	४८,६१,६७
*अग्निभूति	[निर्ग्रन्थ-गणघर]	७			६८,७०	अंतगडदसातो	,,	६८
*अग्निवेश	[गोत्र]	७	*अत्थिणत्थिप्पवात [जैनपूर्वागम]		७४	अधगवण्ही	[राजा]	६०
अग्निवेश	,,	७	अत्थिणत्थिप्पवाद ,,		७५	*आउरपच्चक्खाण [जैनागम]		५७
*अगोगिय	[जैनपूर्वागम]	७४टि०	०अनुयोगद्वार [जैनागम]		४८टि०,	आउरपच्चक्खाण	,,	५८
*अगोणीय	,,	७४			४९टि०	०आचाराह्न	,,	२,२टि०
अगोणीय	,,	७५	*अमय [राजपुत्र]		३४	०आचाराह्ननिर्युक्ति	,,	६२,७५
अजितजिण	[तीर्थकर]	७८	०अमयदेव [निर्ग्रन्थ-आचार्य]		२३टि०,	आजीविक	[दर्शन]	७२,७३,७४
*अजिय	,,	६			४२टि०,६५टि०,	*आजीविय	,,	७२,७४
अजिय	,,	७७			६७टि०,६८टि०	आतविसोही	[जैनागम]	५८
अज्ज	[गोत्र]	८	*अभिणदण [तीर्थकर]		६	आदिच्चजस	[राजा]	७७
*अज्जणागहत्थि	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	९	*अमरगइगमण-			०आमीयमासुरुक्ख [शास्त्र]		४९टि०
अज्जणागहत्थि	,,	९	गडियाओ [दृष्टिवादप्रविभाग]		७७	०आम्मिर्थ	,,	४९टि०
अज्जधम्म	,,	८टि०	*अयलभाता [निर्ग्रन्थ-गणघर]		७	आयप्पवात [जैनपूर्वागम]		७६
*अज्जमगू	,,	८	*अर [तीर्थकर]		७	*आयप्पवाद	,,	७४,७५
अजरक्खिय	,,	८टि०	अरुण [देव]		५९	*आयविसोही	[जैनागम]	५७
अज्वडर	,,	८टि०	*अरुणोववाए [जैनागम]		५९	*आयार	,,	४८,६१
*अजसमुह	,,	८	०अर्यविधा [शास्त्र]		४९टि०	आयार	,,	४६,४९,६२,
*अज्जाणदिल	,,	८	*अवह [जैनपूर्वागम]		७४,७५			७५,८३
अज्जाणदिल	,,	८टि०	अवह		७६	आयारनिज्जुत्ती	,,	७५
*अणतइ [तीर्थकर]		७	अंगचूलिता [जैनागम]		५९	आरिस	,,	२६
*अणुओगदाराइ [जैनागम]		५७	*अगचूलिया		५९	०आर्यजीतघर [निर्ग्रन्थ-स्थविर]		८टि०

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
० आर्यमनु	[मिमन्थ-रथविर]	८८०	० एरबय	[क्षेत्र]	५१	कासय	[गोत्र]	७८
० आर्यसमुद्र	"	८८०	० एखावय	[गोत्र]	७	* किरियाविसाक्ष	[जैनधर्म]	७४ ७५
० आकस्यकर्तृपिका	[ज्ञानम्]	११८०	० एखावय	"	८	किरियाविसाक्ष	[जैनधर्म]	७६
० आकस्यकर्तृपिका	"	२२६, ४९, ४७५१	* एखावय	"	७८०	कुन्मसगणिया	[इतिहासप्रमाण]	७७
० आकस्यकर्तृपिका	[ज्ञानम्]	२०८०,	रेखापथ	"	८८०	* कुन्मसगणियाओ	"	७७
	२७८०, ३३८०		* ओबाइय	[ज्ञानम्]	५७	* कुन्म	[लोकेत]	७
० आकस्यकर्तृपिका	"	३४८०	० ओसपिणिगिर्माओ	[इतिहासप्रमाण]	७७	* कोइय	[शास्त्र]	४९
० आकस्य	"	४९	* कुबायण	[गोत्र]	७	* कोइय	"	४९८०
* आकस्य	"	५७	कुबायण	"	७	० कोइय	[शास्त्र]	४९८०
* आसुरक	[शास्त्र]	४९८०	* कुलासठरि	[शास्त्र]	४९	* कोसिय	[गोत्र]	८७८०
० आसुर्य	"	४९८०	* कुप्य	[ज्ञानम्]	५८	कोसिय	"	८
० आसुर्य	"	४९८०	* कुप्यविसियाओ	"	५९	* क्रियाकर्म	[शास्त्र]	४०८०
० इतिहास	"	४९८०	कल्पवैसिया	"	६	* सुदिहायरि	[मिमन्थ-रथविर]	९
* इतिहासियाई	[ज्ञानम्]	५८	कल्पयुत	"	५७	सुदिहायरि	"	९
* इवयुति	[मिमन्थ-रथविर]	७	* कुपासिय	[शास्त्र]	४९	* सुविद्याविभागपदिमि	[ज्ञानम्]	५९
* उद्गाणमुय	[ज्ञानम्]	५९	* कुपियामा	[ज्ञानम्]	५९८०	सुविद्याविभागपदिमि	"	५९
उद्गाणमुत	"	६०	* कुपिमाकर्मिय	"	५७	* सोइय	[शास्त्र]	४९
* उच्छमयगाई	"	५८	कुपिमाकर्मिय	"	५७	* सोइय	"	४९८०
* उष्णयुय	[ज्ञानम्]	७४	* कुम्पयगडि	[ज्ञानम्]	९	* गगभरगडियाओ	[इतिहासप्रमाण]	७७
उष्णयुय	"	७५	* कुम्पयबाद्	[ज्ञानम्]	७७ ७५	* गमिय	[शास्त्र]	४९८०
उद्दक	[रथविर]	४	कुम्पयवाद	"	७६	* गमिविज्ञा	[ज्ञानम्]	५७
* उषवाइय	[ज्ञानम्]	५७८०	करक	[मिमन्थ-रथविर]	२६	गमिविज्ञा	"	५८
* उषासागदसामो	"	४८ ९१ ६९ ६७	करितायण	[ज्ञानम्]	४५	गरुड	[क्षेत्र]	५९
उषासागदसामो	"	६७	० कुन्मोन्य	[ज्ञानम्]	१२ १३, ५३ ५४	* गङ्गमन्थार	[ज्ञानम्]	५९
* उगम-ह	[लोकेत]	६६		"	५५ ५६	गेमा	[लोकेत]	६७, ८२
उगम	"	७६ ७७	कविय	[कवि]	२६	गेडिकानुप्रोग	[इतिहासप्रमाण]	७६
* उरसन्निगिर्माओ	[इतिहासप्रमाण]	७७	* कविय	[शास्त्र]	४९	* गडियाओ	"	७६ ७७
			* कविय	"	४०८०	गडियाओ	"	७७
पगुह	[ज्ञानम्]	७७	* कविय	"	४९८०	गोन्म	[मिमन्थ-रथविर]	८१
पगुह	[क्षेत्र]	७७ ५१	* कविय	"	४९८०	गोनम	[मिमन्थ-रथविर]	२६ ६९
			* कविय	[गोत्र]	७	गोनम	[शास्त्र]	७
						* गोमटसार	[ज्ञानम्]	४९८०

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*भरह	[क्षेत्र]	१८,५१	*महागिसीह	[जैनागम]	५८	*रायपसेणिय-सेणीय-सेणइय		
भरह	"	२२,५१	महागिसीह	"	५९	[जैनागम]	५७,५७टि०	
*भागवत	[शास्त्र]	४९टि०	*महापच्चक्खाण	"	५७	रिसम	[तीर्थकर]	२,२६
भारध	"	५०	महापच्चक्खाण	"	५८	*रुयग	[गिरि]	१८
*भारह	"	४९	*महापण्णवणा	"	५७	रुयग	"	२४
भूतदिण्ण	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	१०,११	महापण्णवणा	"	५८	*रेवइणक्खत्त	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	९
*भूयदिण्ण	"	११	*महाविदेह	[क्षेत्र]	५१	रेवतिवायग	"	९
भूयदिन्न	"	१०टि०	महाविदेह	"	२२,५१	*लेह	[शास्त्र]	४९टि०
मधुरा	[नगरी]	९	*महावीर	[तीर्थकर]	१टि०,२	लोगविंदुसार	[जैनपूर्वागम]	७४,७५,७६
*मरणविभत्ति	[जैनागम]	५७	महावीर	"	७	*लोगायत	[शास्त्र]	४९,४९टि०
मरणविभत्ति	"	५८	*मंडलप्पवेस	[जैनागम]	५७	णागायत		
०मलयगिरि	[निर्ग्रन्थ-आचार्य]	३टि०,	मंडलप्पवेस	"	५८	लोहिच्च-लोभिच्च	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	११
		४टि०७टि०८टि०,	*मडिय	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७	*लोहिच्च	"	११
		१०टि०,१७टि०,	मदर	[गिरि]	२४	*वइसेसिय-वति०	[शास्त्र]	४९,४९टि०
		२०टि०,२३टि०,	*माढर	[गोत्र]	७	*वगचूलिया-वग०	[जैनागम]	५९,
		२७टि०,३२टि०,	माढर	"	७			५९टि०
		३३टि०,३४टि०,	"	[शास्त्र]	४९	*वग्घावच्च	[गोत्र]	७
		३५टि०,३७टि०,	माधुरा वायणा	[जैनागमवाचना]	९	*तुगिय		
		४३,टि०,४८टि०,	मानुपोत्तर	[गिरि]	८२	*वच्छ	"	७
		५०टि०,६०टि०,	*मुणिसुव्वय	[तीर्थकर]	७	वच्छ	"	७
		६३टि०,६६टि०,	*मूलपढमाणुओग	[दृष्टिवादप्रविभाग]	७६	*वण्हिदसातो	[जैनागम]	६०
		६७टि०	मूलपढमाणुयोग	"	७६,७७	वण्हीदसाओ	"	५९
०मलयगिरिवृत्ति	[नन्दीसूत्रटीका]	३टि०,	०मृगपकिरुत्त	[शास्त्र]	४९टि०	*वण्हीयाओ	"	५९टि०
		३६टि०,३९टि०,	*मेतज्ज-यज्ज	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७,७टि०	*वद्धमाग+सामी	[तीर्थकर]	७,६०
		४०टि०,५२टि०,	मेरु	[गिरि]	४,८१,८२	*वरुणोववाए	[जैनागम]	५९टि०
		५८टि०,५९टि०	*मोरियपुत्त	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७	*ववहार	"	५८
*मल्लि	[तीर्थकर]	७	०यज्जकल्प	[शास्त्र]	४९टि०	*वाउमूति	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७
*महल्लियाविमाणपविभत्ती	[जैनागम]	५९	योग	"	४९टि०	*वागरग	[शास्त्र]	४९
महल्लियाविमाणपविभत्ती	"	५९	रतणप्पभा	[नरक]	२४,२९	*वायगवस	[निर्ग्रन्थवश]	९
*महाकप्पसुत्त	"	५७	*रयणप्पभा	"	२३	वायगवस	"	९
*महागिरि	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७	*रयणावली	[शास्त्र]	४९टि०	*वायभूइ	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७टि०
महागिरि	"	८	*रामायण	"	४९	वासिदु	[गोत्र]	८

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
*भरह	[क्षेत्र]	१८, ५१	*महागिसीह	[जैनागम]	५८	*रायपसेणिय-सेणीय-सेणहय		
भरह	"	२२, ५१	महागिसीह	"	५९	[जैनागम]	५७, ५७ टि०	
*भागवत	[शास्त्र]	४९ टि०	*महापञ्चक्रवाण	"	५७	रिसभ	[तीर्थकर]	२, २६
भारथ	"	५०	महापञ्चक्रवाण	"	५८	*रुयग	[निरि]	१८
*भारह	"	४९	*महापण्णवणा	"	५७	रुयग	"	२४
भूतद्विण [निर्ग्रन्थ-स्थविर]		१०, ११	महापण्णवणा	"	५८	*रेवटणस्वत्त [निर्ग्रन्थ-स्थविर]		९
*भूयद्विण	"	११	*महाविदेह	[क्षेत्र]	५१	रेवतिवायग	"	९
भूयद्विन्न	"	१० टि०	महाविदेह	"	२२, ५१	*लेह	[शास्त्र]	४९ टि०
मयुरा	[नगरी]	९	*महावीर	[तीर्थकर]	१ टि०, २	लोगविंदुमार [जैनपूर्वागम]	७४, ७५, ७६	
*मरणविभक्ति [जैनागम]		५७	महावीर	"	७	*लोगायत } [शास्त्र]	४९, ४९ टि०	
मरणविभक्ति	"	५८	*मटल्पपवेस	[जैनागम]	५७	णायत }		
०मलयगिरि [निर्ग्रन्थ-आचार्य]		३ टि०,	मडल्पपवेस	"	५८	लोहिच्च-लोमिच्च [निर्ग्रन्थ-स्थविर]	११	
		४ टि०, ७ टि०, ८ टि०,	*मडिय	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७	*लोहिच्च	"	११
		१० टि०, १७ टि०,	मटर	[निरि]	२४	*वडसेसिय-वति० [शास्त्र]	४९, ४९ टि०	
		२० टि०, २३ टि०,	*माढर	[गोत्र]	७	*वगचूलिया-वग० [जैनागम]	५९,	
		२७ टि०, ३२ टि०,	माढर	"	७		५९ टि०	
		३३ टि०, ३४ टि०,	"	[शास्त्र]	४९	*वगवावच्च } [गोत्र]	७	
		३५ टि०, ३७ टि०,	मायुरा वायणा [जैनागमवाचना]		९	*तुगिय }		
		४३ टि०, ४८ टि०,	मानुपोत्तर [निरि]		८२	*वच्छ	"	७
		५० टि०, ६० टि०,	*मुणिसुन्वय [तीर्थकर]		७	वच्छ	"	७
		६३ टि०, ६६ टि०,	*मूलपदमाणुवोग [दृष्टिवादप्रविभाग]		७६	*वण्हिदसातो [जैनागम]		६०
		६७ टि०	मूलपदमाणुयोग	"	७६, ७७	वण्हिदसातो	"	५९
०मलयगिरिवृत्ति [नन्दीवृत्तटीका]		३ टि०,	०मृगपक्षिरुत [शास्त्र]		४९ टि०	*वण्हियाओ	"	५९ टि०
		३६ टि०, ३९ टि०,	*मेतज्ज-यज्ज [निर्ग्रन्थ-गणधर]		७, ७ टि०	*वण्हिमाग+सामी [तीर्थकर]		७, ६०
		४० टि०, ५२ टि०,	मेरु [निरि]		४, ८१, ८२	*वरुणोववाए [जैनागम]		५९ टि०
		५८ टि०, ५९ टि०	*मोरियपुत्त [निर्ग्रन्थ-गणधर]		७	*ववहार	"	५८
*मडि	[तीर्थकर]	७	०यज्ज-रूप [शास्त्र]		४९ टि०	*वाउभूति [निर्ग्रन्थ-गणधर]		७
*महल्लियाविमाणपविमत्ती [जैनागम]		५९	योग	"	४९ टि०	*वागरग [शास्त्र]		४९
महल्लियाविमाणपविमत्ती	"	५९	रतणप्पभा [नरक]		२४, २९	*वायगवस [निर्ग्रन्थवश]		९
*महाकप्पसुत	"	५७	*रयणप्पभा	"	२३	वायगवस	"	९
*महागिरि [निर्ग्रन्थ-स्थविर]		७	*रयणावली [शास्त्र]		४९ टि०	*वायमूड [निर्ग्रन्थ-गणधर]		७ टि०
महागिरि	"	८	*रामायण	"	४९	वासिदु	[गोत्र]	८

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
० वासिष्ठ	[गोर]	८ टि०	० वृत्तिवृत्-कर्तृ [मन्वी-	१ १ टि०, १ २ टि०,		० सन्वित्त	[शास्त्र]	४९
० वासुदेवशुद्धियाओ [परिवादप्रविभाग]	७७		यीकाकरी-	१ ५ टि०, १ ६ टि		सारपाहुड	[वनशास्त्र]	९
० वासुपुत्र	[लोकेकर]	६	धीररिम-	२ ३ टि, ३ ० टि०,		० समबाज	[वैनायम्]	४८, ६ १, ६ ४
० विजयुष्मत्	[वनपूर्वाम्]	७६	यञ्जगिर्वा	३ १ टि०, ३ ३ टि,		समबाय	"	६४
० विजयुष्मत्	"	७४ ७५	बाबो	५ ० टि०, ५ २ टि		० समबायाज्ञ	, ६ ३ टि०, ६ ५ टि०,	
० विजयचरणनिगिच्छम् [वनागम्]	५७			५ ७ टि०, ५ ८ टि०			६ ६ टि०, ६ ७ टि,	
० विजयचरणनिगिच्छम्	"	५८		६ टि०, ६ ७ टि०,			६ ८ टि, ६ ९ टि०,	
० विजयुष्मत् [वनपूर्वाम्]	७४ टि०,			६ ९ टि०, ७ २ टि०			७ ० टि, ७ १ टि०	
	७५ टि०		० वेतइ	[गिरि]	६४		७ २ टि०, ७ ४ टि	
० वितथ [निप्रत्य-यनकर]	७		० वेद	[शास्त्र]	४९	समबायाज्ञसूत्रवृत्ति	"	७ ४ टि०
० विसम [लोकेकर]	७		० वेद	"	४९ टि०	० सम्युदाणसुय	"	५९
० विसम्बाहण [कुम्भकर]	७७		० वेद	"	५०	सम्युदाणसुय	"	६
० विवाह [वैनायम्]	६५		० वेदवे	[वेज]	६०	० ससि	[लोकेकर]	६
० विवाहपुला	"	५९	० वेदभूतोवबाप	[वैनायम्]	५९	० संशिक्ष	[निप्रत्य-स्वविर]	८
० विवाहसुत	"	७ ७ १	० वेदसगो	[वेज]	६०	संशिक्ष	"	८
० विवाहसुय	"	४८ ६ १ ७	० वेदसगोवबाप	[वैनायम्]	५९	० संती	[लोकेकर]	७
० विवाह	"	६ ५ टि०	० वेदसिर्वा	[शास्त्र]	४९	० संम	"	७
० विवाहवृद्धिया-निवाह	"	५९ ५ ९ टि०	० वेदसिर्वा	[शास्त्र]	४९ टि	० संमूय	[निप्रत्य-स्वविर]	७
० विरोधज्वली [वैनायम्]	२८ २९ ३		० वेदसिर्वा	[शास्त्र]	४९ टि	संमूय	"	७
० विरोधावस्थक [वैनायम्]	२ ३ टि०		० वैशिक		४९ टि०	० संशिक्षासुत	[वैनायम्]	५७
	८ २ टि		० वैशेषिक	"	४९ टि	० साई	[किर्मान्-स्वविर]	८
० विरोधावस्थक-मूढामाष्यमूढा	} ३ ८ टि ४ २ टि ५ २ टि	३ २ टि०	० मन्वहारामाय [वनायम्]	४ ९ टि० ६ १		सागरामन्वहृत् [निप्रत्य-वाषाव]	५ ९ टि०	
० रिपटीका-वृत्ति		४ २ टि०	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	साती	[निप्रत्य-स्वविर]	८
० रिपटीका-वृत्ति		५ २ टि	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	० सामज	"	८
० रिपटीका-वृत्ति	"	३ २	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	सामज	"	८
० रिपटीका-वृत्ति	"	५७	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	० सामाश्रय	[वैनायम्]	३ २, ४ ९
० रिपटीका-वृत्ति	"	५८	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	सांख्य	[शास्त्र]	४ ९ टि
० रिपटीका-वृत्ति	"	५८	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	० सिभंस	[लोकेकर]	६
० रिपटीका-वृत्ति	"	५७	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	सिधु	[मदी]	६ ४ ८ २
० रिपटीका-वृत्ति	[लोकेकर]	२	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	० सीम	[लोकेकर]	६
० रिपटीका-वृत्ति	[वनपूर्वाम्]	७ ४ ७ ५	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	० सीह	[निप्रत्य-स्वविर]	९
० रिपटीका-वृत्ति	"	७ ५	० म्याफरग	[शास्त्र]	४ ९ टि०	संशिक्षावक	"	९

विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्	विशेषनाम	किम् ?	पत्रम्
सुद्वित	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८	सेज्जभव	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७	* हागिय	[गोत्र]	८
सुपडिवद्र	"	८	हर	[देवविशेष]	४	हागिय	"	८
*सुपास	[तोर्यम्]	६	हरि	"	४	० हागि० वृत्ति [हरिभद्रसूत्रिण-		३ टि०,
*सुप्पभ	"	६	० हरिभद्रमृरि [निर्ग्रन्थ-आचार्य]		३ टि०,	नन्दीसूत्रवृत्ति]		५ टि०, ९ टि०,
सुवुद्धि	[अमात्य]	७७			४ टि०, ७ टि०, ८ टि०,			३६ टि०, ३९ टि०,
*सुमति	[तोर्यम्]	६			१०, टि०, २० टि०,			४० टि०, ५२ टि०,
सुवग्ग	[देव]	७०			२३ टि०, २७ टि०,			५९ टि०
*सुहथि	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७			३२ टि०, ३७ टि०,			
सुहथि	"	८			४२ टि०, ४३ टि०,			
*सुहम्म	[निर्ग्रन्थ-गणधर]	७			४८ टि०, ५० टि०,			
सुहम्म-धम्म	"	७, ७ टि०			६० टि०, ८० टि०			
सुहस्ती	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	८ टि०	* हरिभद्रमृरियाजो [दृष्टिवादप्रतिभाग]		७७	० हिमवन्तस्थविरावली [जिनशास्त्र]		८ टि०
सूयगड	[जेनागम]	४८, ६१, ६२, ६३	* हंभीमासुररुक्त्व		[शास्त्र] ४९,	हिमवंत	[गिरि]	१०, ६४
*सूरपणगति	"	५७	* भीमासुररुक्त्व		४९ टि०	* हिमवत-स्वमासमण		[निर्ग्रन्थ-स्थविर] १०
सूरपणगति	"	५८	० भभीयमासुररुक्त्व		४९ टि०	हिमवत+स्वमासमण	"	१०
*सेज्जभव	[निर्ग्रन्थ-स्थविर]	७	० हभीयमासुररुक्त्व		४९ टि०	० हेतुविद्या	[शास्त्र]	४९ टि०
						हेमवत	[क्षेत्र]	२२

पञ्चमं परिशिष्टम्

न-दीसूत्र-तत्पूर्व्यन्तर्गतानां विषय-व्युत्पत्त्यादिव्योक्तकानां
शब्दानामकारादिवर्णभ्रमेणानुक्रमिका

[अस्मिन् परिशिष्टे *एतादृशव्युत्पत्तिकानिद्वाहिता शब्दा नदीसूत्रान्त सूत्रेभ्यो एव म्याह्यता
हेया, + एतादृशव्युत्पत्तिकानिद्वाहिता शब्दा पूर्णिकता ग्रन्थसन्दर्भ एव प्रयोहिता
हेया, एताद्य शब्दा सूत्रान्तर्गता पूर्णिकता म्याह्यता कर्षबोद्धव्या ।]



शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
अ		+अभिषेका	७६-१५	अभिलाषनस्तर	४४-१७
अकारण	८०-१३	अणाशुभामिक	१७-२१	अरहूत	४८-२०
अक्रिय [अरिबन्धराठी]	४-९	अणुक्रूरुदण	१७-२	अस्मात् [कर्षणं शब्द]	१६-२२
अकम् [अद्य म्यातो] वाचस्पत्य-		अणुपरा	६९-४	अबागद	५-१५
ताए अत्ये अमर ति ह्यथ जीवो		अणुपराशब्दाइय	६९-५	अबध्द	६४-१९
अकम्पो वाचस्पत्ये वाचस्पति ति		अनेगसिद्ध	२७-९	अबधि	१३-२३ २४
अकिल मवति । अहवा "अद्य		अणंतर	२६-३	अबयण [इच्छितावर्ष]	४७-२७
माकम्" इच्छनस्य वा सम्बन्धे		अण्मिसिद्ध	२७-२	अबलसम्पत्ता	६५-२६
अकम् ति अकम्पो पाठ्यनि		अण्णाण	५-६	अवष्टि	१५-११
मुकम्प च्चवर्ष ।]	१४-१५ १६	अण्णाणि [अण्णत्वं इत्		अवात	३६-२३ ४१-१६
अकम्प [कम्]	५५-२३	अण्णाणि]	५०-७	अवाय	३४-२०
अकम्प [अविगणित विरतिवार]	३-१७	अनिध	२६-१३	*अवाय	४३-११
अकम्प [अण्णोन्वयपरानिधवर्द्धिते		अनिधरुगसिद्ध	२६-१७	अवि	५४-२७
अ कश्चित् ति अकम्प]	५६-२४	अनिधसिद्ध	२६-१५	अकोट [पराधम्पारिकाण	
अण [अरिमात्र]	५२-१९ ।	अण	११-२३	सकम्पानुष्णात्पाराधि व	
	७५-२२	अधिगन्धिभयबाद्	७५-२५	अकोट ति अकम्प]	४६-११, १६
अण्णान्त	७५-२२	अण्णकम्प	३५-१३ १४ १५	अदं	७६-८, ९
अण्णमरामयमकम्पवन्तानां	२५-२८	अणुपरा [अणुपरो बोध		अदण्डिगुण	४५-२१
अण्णम्	२५-२७	अणुपरा]	७६-१८	अदिति [इच्छितावर्ष]	४७-२७
अण्णमिदमयोपण्णम्	२५-१६	अण्णम्प	२२-१९	अणुपरी त्त	३७-२६
अण्णोमी [अण्णोमीवददा		अण्णम्प	८०-७	अण्णम्प	५७-३५
अण्णोमीवददा]	२५-१६	अण्णम्प	१३-१८	अण्णम्प	५७-४, ५
अण्णम्प [अण्णम्प वा]	८-९				

शब्द	पत्र-पक्ति	शब्द	पत्र-पक्ति	शब्द	पत्र-पक्ति
अंगुलपुहत्	१९-१५	इदिय	१४-२८	उववात	६९-४
अंतकड	६८-७	इंदियपञ्चकख	१४-२९	उवासग	६७-१०
अतकडदसा	६८-८, ९	इदियपज्जति	२२-१५	उवासगदसा	६७-११
अंतगतमोधिण्णाण	१६-५, ६	ईहा [१ ज पुण हेत्तुवत्ति-	३४-२०,	उरसण्ण	१८-२०
		साधणेहि सन्भूतमत्थस्स	४१-९;		
आ		विसेसधम्माभिमुहालयणं	४६-१०,	ए	
आउट्टणता	३६-२२	तस्सेवऽत्थस्स अधम्मविमुह	१३	एकसिद्ध	२७-९
आउर	५८-२३	असम्मोहमविफलमत्थपरिच्छेदक		ओ	
आउरपञ्चक्खाण	५८-२५	चित्त ज त ईहा (पत्र ४१),		ओगिण्हणता	३५-२५
आघविज्जइ [आख्यायते]	६२-२	२ अतीतकाळे सुवीहे वि इद		ओमत्थग	२५-२७
आणा-ज्ञा	८१-२, ६	तदिति कृतमणुभूत वा सुमरति,		ओसण्ण	२२-२४
आणापाणुपज्जति	२२-१५	वड्डमाणे य इदिय-णोइदिएण वा			
आणुगामिय	१५-२७	अण्णतर सदाइअत्यसुवल्लद्ध अण्णत-		क	
आतविसोही	५८-१७	वइरेगधम्मोहि ईहइ ति ईहा (पत्र		कड [कित्तिम]	६२-२१
आता	५८-१६	४६), 'किन्नेय ?' ति ईहा (पत्र		कणिया [बाहिरपत्ता]	४-२
आदेस [१-प्रकार, २-सुत्त]		४६)]		+कणहुइ	२२-२०
	४२-१५, १९	*ईहा	४३-१०	कप्प	५८-२०
आमिणिवोधिक	१३-१८, १९,	उ		कप्पवड्डेसिया	६०-११
	२०, २१	उद्	६-५	कप्पसुत	५७-२४
आभोयणता	३६-१०	उक्का [दीविया]	१६-२२	कप्पिया	५९टि०५
आय	१३-२६	उक्कालिय	५७-१५	कप्पियाकप्पिय	५७-२३
आयप्पवात	७६-३	*उग्गह	४३-१०	कम्म	३-२३
आयार	६१-२०	उग्घाडितत [उद्घाटितक]	५६-५	कम्मप्पवाद	७६-४
आल [अधिकयोगयुक्त]	४-३	उज्जल	६-१५	+कयार [देश्य स कच्चर]	३-१७
आवागसीसग ['आवागसीसग' ति ४०-१, २		उज्जुमई	२२-२४	करणजक्ति	४७-५, ६
आपागट्टाणमेव, अहवा आपाग-		उट्टाणसुत	६०-१	कल्पिका	५९टि०५
ट्टाणस्स आसण्ण समता परिपेरंत,		उप्पायपुव्व	७५-२०	कहण	१२-१
अहवा आपागसुत्तारियाण ज ठाण		उवउज्जत	२४-५	कत	६-१८
त आपागसीसय भण्णति]		उवदेस [उवदिसणसुवदेसो,	४६-६	कारण	८०-१२
आसइज्जति [आश्रीयन्ते]	६४-२३	उपदेसो ति वा आदेसो		कालिखोवएससण्णी	४६-१७, २०
आहारपज्जति	२२-१३	त्ति वा पण्णवण ति वा		कालिय	४६-८, ५७-१४
		परूवण ति वा एग्गट्टा]		किरिया	६८-१०, ११, १२
इ		उवदसणा	५२-२	किरियाविसाल	७६-११, १२
इड्ढिप्पत्त	२२-२१	उवधारणता	३५-२५		
इत्थिल्लिगासिद्ध	२७-८	उवरिमखुड्डागपतर	२४-१८		

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
कुच्यी [सो इत्या (क्षिप्रस्त- १९-१५ प्रमाशब्द)]		ख		घामा [संभवमता]	६२-१
कुम्भस्य [१ कुम्भिकतो जयसो ९-१३ कुम्भसो; सो न कुम्भकानो १ शीघ्रस्य, ३ रत्नसिद्धेयो]		खरण	५८-८, २२	जित्त [द्वयं]	८-९
कूट	६४-४	खरणविही	५८-२२	जित्त	१-२०
कोट्ट	३७-११	परिम	२५-२६	जित्तमात्र	२८-८
स्त		पहित (दि०) [मनोरथचक्रिण]	४९-१	कोइ [समावृत्तित्तो कसंतो १६-२३ कपटी]	
साणी	११-२०	चित्त [चित्तजद वेण तं चित्त]	५-१९	कोइगि	१-१७
सुइ	५९-८	चित्ततरंगडिका	७७-१३	क्ष	
सुहागपतर	२४-८	चित्त	७७-१३	क्षान	५८-१४
रा		चिता [को कडमापते न ३६-१३; किलमि 'क्यं वा त ४६-१३, इत्य कतर्भं १ इति १५ अन्तोन्मातेकानुगत चित्तं चिता १ अयेवहा संकल्पकरणं चिता (पत्र - ४१)]		क्षणविमयी	५८-१५
राम	५८-१०	चुट्टी [अतो पञ्चसिद्धि ल्यपिथी]	१६-२२	ट	
रग्निसिजा	५८-१४	सुइ	५७-२५	टक	६४-४
रगिन(दि०) [कनात]	११६-११	सुइकल्पसुइ	५७-२५	ठ	
रम्म [सैमकेसप]	११-३	सुइ	७९-११	ठगणा	३७-९
रामिस	५६-२३	सुइक	३८ ६, ७	षा	
रमेतणा [१ शीघ्रकल्पसो- ३६-१२ अन्तविकल्पसिचं येरवावि ४६-१२, धनेरवा, २ अन्तविकल्पये १५ येर अन्तविकल्पसो धनेरवा धनेरवा (पत्र ४१)]		सुइदित	५०-२३	ण	४२ १३, १४; ४७-४, ५; ५५ २३
रंकिका	७७-१३	उमुमाय	२४-३	णदिपोस	१-५
गाइ	५-१५	ऊद	५०-८	णदी	१-२, ८
निदिदिगिसिद	२७-४	ज		णग	६०-७
गुण	४-३	अग [१ अणदीपो १ १७-२ १, ३ (पत्र १), २ अणतमि- कोये ३ अण-अण्टी (पत्र २)]		णगपरिपामिस	६०-७
अगुणपचडिस- इय	२०-१३; २३-१४	अतमयागा [संभवमता]	३-५	णज-नाग	१३-११ १२, १३; २०-९
अगुणपचिडणा	१५-१८	अन्तकट्टित	१७-३	णाण्यमाव	७५-२७
गुइ [कवादि धाकमिथि गुइ]	२-२	अन्त	१ १७, २-२	णाय	६६-८
गोचर	३१-२	अन्त	४-१	णित्त	५६-५
घ		अन्त	९-६	णित्तं	४-१
घेइ	३५-२१	अन्त	९-६	पोइवि	३५-१६
				पोइविकवाक्याइ	३५-१९
				पोइविपचकस	१५-११
				ठ	
				ठर	२५-१

शब्द	पत्र-पक्षि	शब्द	पत्र-पक्षि	शब्द	पत्र-पक्षि
+तवोमता=तपोमया	३-९		प	पमादप्पमाद	५८-२,३
तित्थ	२६-११,१२	पटण्णाग	६०-२३,२४	परपरसिद्धकेवलणाणं	२६-२, २७-२२
तित्थकरसिद्ध	२६-१६	पउर	६-११	परिकड्ढिय	१७-३
तित्थसिद्ध	२६-१०	पगम्भ	११-६	परिकम्म	७२-१६
तिरियलोगमञ्ज	२४-१०	पच्चक्ख	१४-१७,३१-८	परिघोलण	१७-२३
तिसमयाहारग	१८-३	पच्चक्खणाणप्पवाद	७६-६	परिवुड	४-५,२०
तूरसघात	१-४	पच्चाउट्टण+ता	३६-२३	परोक्खणाण	३१-५
तेलोक	४८-२५	पज्जत्तय	२२-१८	पल्लव	६४ टि०५
थिर	४-२	पज्जती	२२-११	पसत्थञ्जवसाण	१८-२१
		पज्जय	१३-२५	पसिण	६९-२४
		पज्जव	१३-२४	पसिणापसिण	६९-२४
दरित	६-५	पज्जात	१३-२६	पंक	४-१
दन्वमण	३५-१७	पडिवत्ती	६२-५	पाणायुं	७६-१०
दन्विदिय	१४-२८	पट्टिवाती	१९-१४	पारियल्ल	३-९
दस-सा	६८-७,८	पढमसमयसजोगिभवत्थ-		पावयणी	१२-५
दसा	६०-१५	केवलणाण	२५-१८	पासओ अतगय	१६-१०
दसण	२०-१०	पढमसमयअजोगिभवत्थ-		पासणता	२४-३
दसिज्जति	५२-२	केवलणाण	२५-२२	पासतो	१७-२
दिट्ठिवाओवदेस	४७-१६	पणगजीव	१८-३	पुफ्फचूला	६०-१३
दिट्ठिवातअसण्णी	४७-२०	पणीत	४९-५	पुफ्फिया	६०-१३
दिट्ठिवातसण्णी	४७-१९	पणोल्लण	१६-२३	पुरतो	१६-२३
दुआघरिस	४-१०	पण्णत्त	१३-१३,१४,१५,१६,१७	पुरतो अतगय	१६-९,११, १७-५
दृष्टिपात	७१-७	पण्णवग	३८-७,८	पुव्व	७५-१६
दृष्टिवाद	७१-६	पण्णवणा	५८-१	पूड्य	४९-४
धम्मकहा	६६-९,१०	पण्णविज्जति	५२-१	पेत	१७-२२
धरणा	३७-७	पण्णा	१३-१४,१६	पोरिसिमडल	५८-७
धारणा	३४-२१, ३७-९, ४१-१८	पण्ह	६९-२०	पोरिसी	५८-४
*धारणा	४३-११	पत्तिट्ठा	३७-१०	प्रजापना	५८ टि०१
नाण	२०-९	पत्तेयवुद्ध	२६-२३		
नाणक्खर	४४-१५	पत्तेयवुद्धसिद्ध	२६-२८	फ	१७-१२
निरियावळिया	६०-९	पदीव	१६-२३	व	२-९
		पम्भार	६४-५	वुद्धवोचित	२६-२८
		पभव	२-२१		

शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति	शब्द	पत्र-पंक्ति
सुखबोधिसिद्ध	२७-१	मरण	५८-१५	कमाचूला	५९-११
सुदि	५०-९, १०	मरणविमती	५८-१६	कडुद्रु	९-४
सुदी	३३-२४	महाय	११-२०, २१	कडुडी	१८-२०
स		महास	५९-८	कण	५-२१
मगलत	४८-२१	महाकल्पमुद्र	५७-२५	कण्ठस्सर	४४-१८
मत्रम्	२-२७	महाप्या	२-२३	कण्ठिदसाओ	६०-१५
मन्मथकैकलागा	२५-११	महापञ्चमण	५८-२७	धर्मति	५०-२५
मन्मथप्रतिम	२०-१३	महापण्यवणा	५८-१	कय	८-५
माव	८०-६	महित	४९-२, ३	कर	५-१६, ३-१८
मावमण	३५-१८	मङ्कल्पवेस	५८-८	कत्रण	३५-२१
माविदिय	१४-२९	मंठा	१७-१३	कनकणस्सर	४५-१
मासापत्रादि	२१-१६	माठा	६२-१	कनकमन्त्र	४५-४
म		मापुरा वायगा	९-२४	कनकोमाह-गावमह	३५-४, ५, १३
मगगा [१ विषेष्टवचन	३६-११	मिष्टा	५०-७	कस	९-५
अन्वय-वद्वेगवचनमा-४६-११, १४		मिष्टादिद्वित	५०-७	कागम	६९-२०
लोचने मगगा मन्वति (पत्र ३३)		सुरिया	९-१०, १२	कातगा-यागा	९-५
विषेष्टवचनविमता मगगा, ९-५		मूत्रपत्रमाणुयोग	७७-२, ३	कायक-ग	९-२, ११
मित्तविषयस्तु धर्मोदभवकाण्डे		मथा	३६-१	विउक्तराग	२३-६, ९, ११, २४-२९, ३०, ३१
कावका मगगा (पत्र ४६)]					
मगगाओ अन्वय १६-१०, १४, १७-३		र			
मगगाओ	१७-१	रय	३-२३	विजय	२-१६
मन्मथ-य	१६-२, ७, ८, २०, १७-९	रनि	६-११	विजयुपवात	७६-७
मन्मथमिति	२२-१७	रमण [कद्रुपरेतो रमणे शिखरभोग्यस्त]	२४-९	विजय	५८-८, १०
मन्मथवर्गा-मार्ग	१३-२३, २८	रुद्र	५-१४	विजयापरणविगिष्य	५८-१०
मन्मथव	१३-२७	स		विजयुत	६-१४
मन्मथव+माग	१३-२५, २८	सदिमान्त्र	४५-१०	विगिष्य	५८-९
मन्मथव+माग	१३-२७	समा	४-१५	विगगाग	३६-२५
मन्मथ	२४-२	सोगविदुसार	७६-१४	विगिष्यराग	२३-७, ९, ११, २५-४५
मन्म	५०-९, १०	समाग	११-२२	विधि	१३-१३
मन्मिमाणा	३०-९, १०	समागकडा	११-२०	विषाक	७-२३
मन्मिमाणा	३०-९, १०	समा	५९-१०, ६३-११, ६८-१०, ६९-८	विषाकमुद्र	७१-१
मन्मवय	१३-२५			विषुम्पती	२४-२६
				विषली	५८-१४, १५

शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति	शब्द	पत्र-पङ्क्ति
विमाणपविभक्ती	५९-७	श		मन्त्रजग	२-२७
वियाणञ	१-१८, १९	श्रुतम्	१३-२२	सन्धयहुअगणिजीव	१८-५
वियाह	६५-१२	स		सन्धतो	१७-११, १२
वियाहचुला	५९-११	सद्वन्नेसभाव	२५-१६	सकिञ्चिद्	१९-५
वि-रायते	६-११	नक्षत्र्यवाद	७६-१	सजा	४५-२६
विविध	६२-२५	सजोगिभव-वकेत्रलगाण	२५-१५	संज्ञाणचोदक	४७-९
विमाल	७६-१२	सजोगी	२५-१५	संस्पर्श	९-२६
विमुद्रतराग	२३-६, ९, ११; २५-३, ५	सञ्ज्ञाय	११-४	सलेहगामुन	५८-१९
विहार	५८-२०	*सण्णत्तर	४४-२४	संभवट्ट [पम]	२४-१२
विहारकम्प	५८-२१	सण्णत्तर	४४-२६	सपर	६-९
वीतरागमुत	५८-१८	सण्णिसुत	४५-२१, २६	समय	४१-८
वीमसा [१ गिणा-अणिच्चादि- एहि दव्य-भावेहि विमरिसतो ४६-१३, वीमसा भण्णति (पत्र ३६), १५, १६ २ आत-पर-इह-परत्ययहिता- अट्टिविमरिसो वीमसा (पत्र ४६), ३ अहया संकप्पतो चेय विविधा आमरिसणा वीमसा (पत्र ४६) ।]	३६-१३	सण्णा-सज्जी	४५-२१, २६	सिद्धकेवलगाण	२५-१२; २६-१
वीरियप्पवाद	७५-२३	सतत्त [स सागएय]	२८-८	मुन	१३-२२
चूह	६३-१०	सतवुद्ध	२६-१८	मुतगिम्मिस	३२-२५
वृत्ती	६२-२	सम्भाव	११-१३, १४	मुत्त	७४-७
वेला	४-१९	सम	६४-२२	मुयवण्णगाण	३२-१०, ११
वेढ	६२-५	समत्ता	१७-१३	मुयणाण	३२-१०, ११
वेणइय	६१-२१	समाण	५०-२४	मुसवण	} १२-२, ३
व्यञ्जन	४५-२	समुद्राणमुय	६०-६	मुस्सवग	
व्यञ्जनाक्षर	४५-३	समता	१७-१२	नृपणत्ती	५८-३
		सम्मत्त	५१-२		
		सयवुद्धसिद्ध	२६-२३		
		सरीरपज्जती	२२-१४		
		सललित	२-१५		
		सल्लिगसिद्ध	२७-१		
		सवण	१२-२		
		सवणता	३५-२६		
				हायमाण-हूस्समाण	१९-४
				हेट्ठिमखुञ्जागपतर	२४-१९
				हेतू	८०-१०
				हेतूवदेसअसण्णी-हेतुवायस	४७-१०, ११
				हेतूवदेससण्णी-हेतुवायस	४७-४, १०



शूर्पिसमन्वितस्य नन्दिसूत्रस्य

शुद्धिपत्रकम्

शुद्धम्	पर्यायः	बाह्यम्	शुद्धम्	शुद्धम्	पर्यायः	बाह्यम्	शुद्धम्
१	८	मावो	मावो(ी औवो)				
१	१९	मवति—	मवति ।	१०	१४	१३	१३
२	११	ति	ति—	१०	१०	५-६-११	५-६
३	५	ववो	ववो	१०	१८	९	९ वस्तु परि
३	५	निववो	निववो,				पेरंतेहि परिं
५	१९	वा उज्ज्व	वाउज्ज्व				पेरंतेहि सर्वांश्च
५	१९	विठिज्ज्व	विठिज्ज्व				सुत्राद्यैश्च हारि
६	११	मवुः	मवुः				मन्त्र ४ १०
७	३	वसम	वसमं	१०	३८	१०	११
८	१८	दुग्धिवारवो	दुग्धिवारवो	१०	३८	१२	१२-१३ ओद्दिवाचं
८	१०	वडाविविच	वडाविविच				दे ४ १४
९	१९	वोहामा	वोहामा	१०	१९	१३	१५
१	१	वमाममे	वमाममे	१८	१		
११	८	मूवविव	मूवविव	१	८	वामो	वा व
११	१	वमामपा	वमामपा	१	१४	वामामां	वामा-मामं
११	१४	वारेव	वारेव । वरिंसा	११	१	व वीं दिव्यवो	निवपवोगिन्धी ।
११	१९	वृवदि किमप्रवरेव	वृवदि किमप्रवरेव	११	३	वपववति	वपववति
मन्त्र १ परावतेरवो वमो १ वेदा व ४ बहुपरवावता ५ ।				११	१	वावावव	वावाव
१४	१४	व	व	११	१०	वते	वत
१४	१८	वमेव	वमेव ।	११	११	व	वं
१४	१९	।	॥	११	११	वृविज्ज्व व	वृवि-व
१४	१०	।	॥	१४	११	वर्चना	वर्चना
१६	३	वज्ज्ववर्गं । वे	वज्ज्ववर्गं । मज्ज्ववर्गं वे	१४	१४	ववरि	वव ववरि
१	२ ३	वा(वो)वाव	वावाव(वो वाव व)	१४	१५	वाव	
१०	३	"द्विव ।	"द्विव [वा] ।	१४	१५	वस्पव	वस्त व
१०	९	वमवा	वं मवा	१५	५	वतारवृज्ज्वो	वतारवृज्ज्वो
१०	१९	विमव्वा	वि वव्वा	१५	५	वमिठ	वमिठ ।
१०	१३	वे	व	१५	५	वाम-वि	वामं वि
१०	१६	वव परिवेरंदि } वव वेरंदि	वव वेरंदि	१६	१	वामं व	वाम व ।
		परिवेरंदि } वेरंदि		१६	५	वे तं दि	वे तं दि तं
१०	१०	ववद्वव	ववद्वव	१६	५	वमति	वमति
१०	१०	ववमेव	ववमेव	१६	११	"द्विवव	"द्विव व
१०	१८	ववद्वव	ववद्वव	१६	१८	वमोव	वमो (वम व)
१०	१८	ववद्वव	ववद्वव	१६	१३	ववव	ववव
१०	२	ववद्वव	ववद्वव	१	१	"विव, ववव	"विव । ववव[वव]व
१०	२	ववद्वव	ववद्वव	१९	१९	वववव	ववव-ववव
१०	१२	ववव	ववव	२	१५	विवद्ववि	विवद्ववि
१०	१२	ववव	ववव	३	३	वुव	वुव

पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्	पृष्ठम्	पङ्क्तिः	अशुद्धम्	शुद्धम्
३१	२०	एव लक्षणा-ऽभिधा°	एवल्लक्षणाऽभिधा	४६	१३	चित्त	चित्ता
३१	२५	त	त	४६	१९	°जोगे	°जोगे
३२	१५	सप्येय	स प्येय	४७	११	°विसय[अ]वि°	°विमयवि°
३२	२८	°वृत्तौ	°वृत्तौ	४७	२०	समदिष्टि	सन्मदिष्टि
३२	२९	°वृत्ता°	°वृत्ता°	४८	८	सामर्थ्यम्,	सामर्थ्यम्
३६	१६	णोद्दियावाए ।	णोद्दियावाए ६ ।	५४	३०	तस्त्रिमेदः,	°तस्त्रिमेदः,
३८	१९	मद्गदिष्टतेण ?	मद्गदिष्टते ण ?	५६	०५	यग°	चऽग°
		मद्गदिष्टतेण	मद्गदिष्टते ण	५९	३	देविदो°	देविदो°
३९	१	सद्दाइ ?	सद्दाइ.	५९	७	विमणा	विमणा
३९	५	सद् सित्,	सद् ? सित्,	५९	३०	शु० ।	शु० हारिष्टतौ च ।
३९	१०	सुमिणे	सुमिणे ?	६०	२३	पद्गगगा	पद्गगगा
३९	१५	सद्दा सित्	सद्दो सित्	६१	२८	यत्	यत्
३९	१५	सद्दाइ,	सद्दाइ ?	६३	१०	'बूह' क्तिष	'बूह क्तिष'
४०	१४	°बोह-	°बोहग-	६६	८	आहरणा,	आहरणा
४३	१०	उग्गहो,	उग्गह,	६८	११	सहुम°	सुहुम°
४४	२	भाणितग्वा	भाणितग्वा	८२	१	भवतीविशा°	भवतीवि शा°
				८९	६	°दिप्पणि°	°दिप्पणी°

PRAKRIT TEXT SERIES

PUBLISHED WORKS

1. ANGAVIJJĀ.

-Demy Quarto size Pages-8+94+872 Price Rs. 21/-

Angaviijā is published for the first time by the Prakrit Text Society. It is critically edited by Muni Shri Punyavijayaaji, with English Introduction by Dr. Motichandra and Hindi Introduction by Dr. V. S. Agarwal.

Angaviijā is an ancient Prakrit Text relating to prognostication on the basis of bodily signs. The work is of unknown authorship but was considered to be of high antiquity and great sanctity having been delivered by Mahāvira himself. Its internal evidence points to its having been finally compiled at the end of the Kushan period, about 4th Century A. D.

It is highly important document firstly for the history of Prakrit language and secondly for the cultural history of India. It contains hundreds of lists of all descriptions, for example seats, postures, utensils, containers, flowers, trees, personal names, food and drinks, bedsteads, conveyances, textiles, ornaments, jewellery, coins, birds, animals, arrows, weapons, boats, gods, goddesses, etc.

2. PRĀERITA-PAINGĀLAM. Part I.

-Demy Octavo size Page-700 Price-Rs 16/-

Prāeritapaingalam is a text on Prakrit and Apabhramśa Metres. It is critically edited with three Sanskrit commentaries on the basis of the two earlier editions and further available manuscript material by Dr. Bholashankar Vyas, a distinguished member of the Hindi Department of the Banaras Hindu University. He has also added Hindi translation with philological notes and glossary of Prakrit and Apabhramśa words.

3. CAUPPANNAMAHĀPURISACARIYAM

-Demy Quarto size Pages-8+68+884 Price Rs. 31/-

Cauppannamahāpurisacariyam is a great biographical work by Āchārya Sūnka of the 9th Century A. D. It is critically edited by Pt. Amritlal Mohanlal, Research scholar of Prakrit Text Society. Its Introduction is written by Dr. K. L. Bruhn.

It gives the lives of 54 great men revered by the Jains, viz. 24 Tirthankaras, 12 Chakravartins, 9 Baladevas and 9 Vāsudevas.

4. PĀKRITAPAINGĀLAM Part II

-Demy Octavo size Pages 16+16+592+12 Price Rs. 15/-

The Part I of this work on Prakrit metres is published as the Second Volume of the Prakrit Text Series. Part II contains the editor's comprehensive Introduction dealing with the problems of the Prākṛitapaingalam together with a critical and comparative study of the metres that form the subject matter as well as, the exact nature of the language of the original text, and also a literary assessment of the portion which the author intended to serve as illustrations to the Mātrika and Varnika metres dealt with by him.

ĀKHYĀNAKAMANIKOŚA.

-Demy Quarto size Pages 8+16+25+422 Price Rs. 21/-

Ākhyānakamanikōśa is critically edited for the first time by Muni Shri Punyavijayaaji. It is written by Nemichandra and is commented upon by Amrādeva of the 12th Century A. D. This book is a mine of historical and legendary stories in Prakrit and Apabhramśa.

6. PAUMACARIA Part I.

-Demy Quarto size Pages 8+40+376 Price Rs. 18/-

This is the earliest Prakrit version of the story of Rama. It was written in about the third Century A. D. by Vimala. The work is printed with Hindi translation. It is edited by Muni Shri Punyavijayaaji and translated by Prof. S. M. Vora, M. A., Jainadarsanāchārya. Its Introduction is written by Dr. V. M. Kulkarni.

